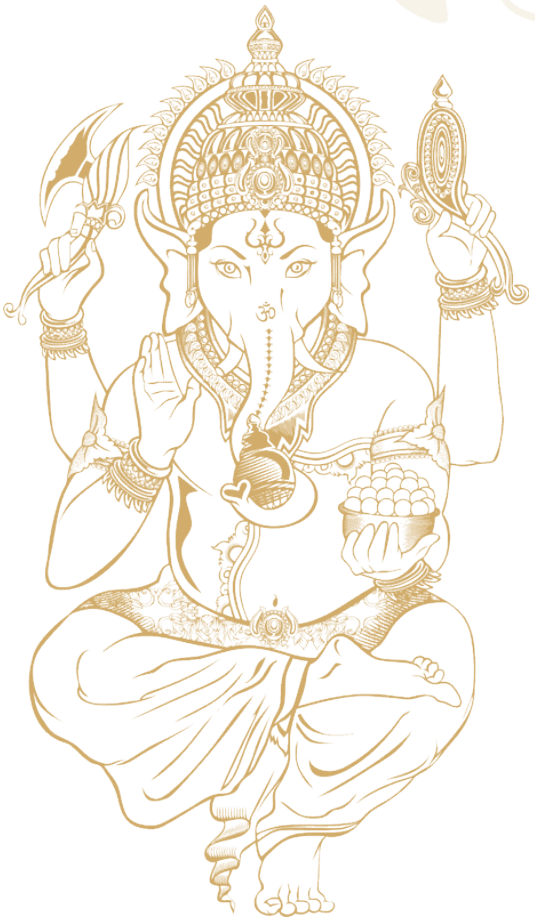

Pradeep

05 Mar 1987

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**05/03/1987**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**07:15:00 घंटे**
इष्ट	02:23:21 घटी
स्थान	**Jeypore**
राज्य	Orissa
देश	India

अक्षांश	18:52:00 उत्तर
रेखांश	82:38:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:00:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:15:32 घंटे
वेलान्तर	-00:11:41 घंटे
साम्पातिक काल	18:04:40 घंटे
सूर्योदय	06:17:39 घंटे
सूर्यास्त	18:04:50 घंटे
दिनमान	11:47:11 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	20:16:24 कुम्भ
लग्न के अंश	07:48:46 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मीन – गुरु
राशि–स्वामी	**मेष – मंगल**
नक्षत्र–चरण	**भरणी – 3**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	ऐन्द्र
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ले–लेखपाल
पाया(राशि–नक्षत्र)	रजत – स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

दादा का नाम	fsgdg
पिता का नाम	gdh
माता का नाम	ghjt
जाति	435
गोत्र	siuyyj

चैत्रादी संवत शक	2043 / 1908
माह	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
सूर्योदय कालीन तिथि	6
तिथि समाप्ति काल	02:35:25
जन्म तिथि	6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल	14:08:07 घंटे
जन्म नक्षत्र	भरणी
सूर्योदय कालीन योग	ऐन्द्र
योग समाप्ति काल	13:08:03 घंटे
जन्म योग	ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण	कौलव
करण समाप्ति काल	13:54:48 घंटे
जन्म करण	कौलव
भयात	46:15:42
भभोग	63:28:30
भोग्य दशा काल	शुक्र 5 वर्ष 4 मा 13 दि

घात चक्र

मास	कार्तिक
तिथि	1-6-11
दिन	रविवार
नक्षत्र	मघा
योग	विष्कुम्भ
करण	बव
प्रहर	1
वर्ग	सिंह
लग्न	मेष
सूर्य	कर्क
चन्द्र	मेष
मंगल	सिंह
बुध	वृष
गुरु	कन्या
शुक्र	तुला
शनि	मिथुन
राहु	वृश्चिक

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	07:48:46	461:49:07	उ0भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	———
सूर्य			कुंभ	20:16:24	01:00:08	पू0भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	23:05:13	12:31:19	भरणी	3	2	मंग	शुक्र	शनि	सम राशि
मंग			मेष	14:53:27	00:41:07	भरणी	1	2	मंग	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
बुध	व	अ	कुंभ	09:35:27	00:50:10	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
गुरु			मीन	06:52:00	00:14:15	उ0भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	स्वराशि
शुक्र			मक	08:21:49	01:10:19	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृशि	26:55:11	00:02:34	ज्येष्ठा	4	18	मंग	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मीन	18:06:07	00:01:49	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
केतु	व		कन्या	18:06:07	00:01:49	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	02:43:48	00:01:24	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	———
नेप			धनु	13:58:12	00:01:10	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	———
प्लू	व		तुला	16:09:53	00:00:44	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	———
दशम भाव			धनु	07:23:28	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	राहु	--

व – वक्री स – स्थिर

अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:37

लग्न–चलित

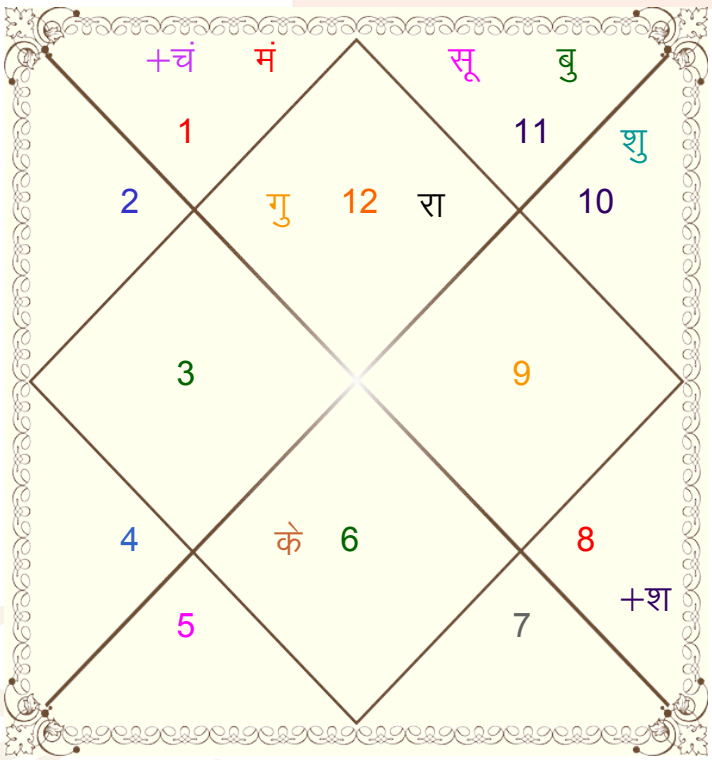

चन्द्र कुंडली

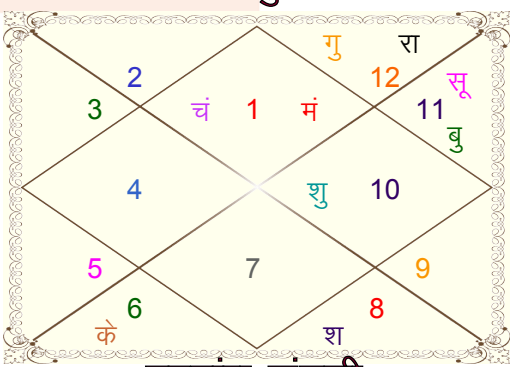

नवमांश कुंडली

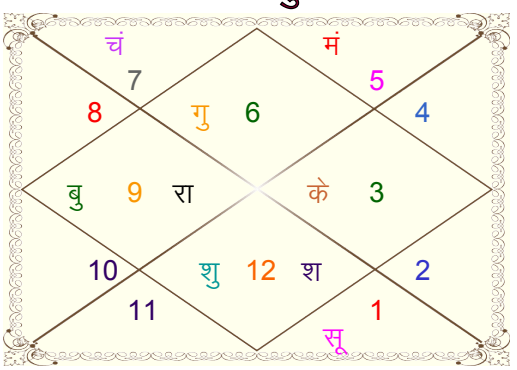

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	22:44:33	मीन	07:48:46
2	मीन	22:44:33	मेष	07:40:20
3	मेष	22:36:07	वृष	07:31:54
4	वृष	22:27:41	मिथुन	07:23:28
5	मिथुन	22:27:41	कर्क	07:31:54
6	कर्क	22:36:07	सिंह	07:40:20
7	सिंह	22:44:33	कन्या	07:48:46
8	कन्या	22:44:33	तुला	07:40:20
9	तुला	22:36:07	वृश्चिक	07:31:54
10	वृश्चिक	22:27:41	धनु	07:23:28
11	धनु	22:27:41	मकर	07:31:54
12	मकर	22:36:07	कुम्भ	07:40:20

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	07:48:46
2	मेष	13:01:13
3	वृष	11:56:26
4	मिथुन	07:23:28
5	कर्क	02:58:08
6	सिंह	02:14:50
7	कन्या	07:48:46
8	तुला	13:01:13
9	वृश्चिक	11:56:26
10	धनु	07:23:28
11	मकर	02:58:08
12	कुम्भ	02:14:50

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू0फाल्गुनी	उ0फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू0भाद्रपद	उ0भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

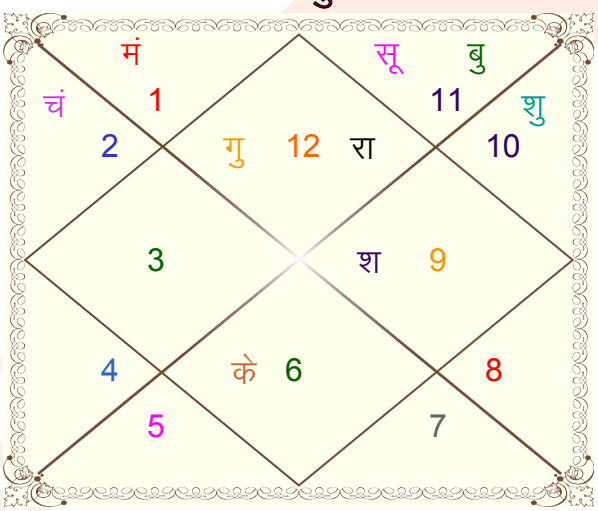

भाव कुंडली

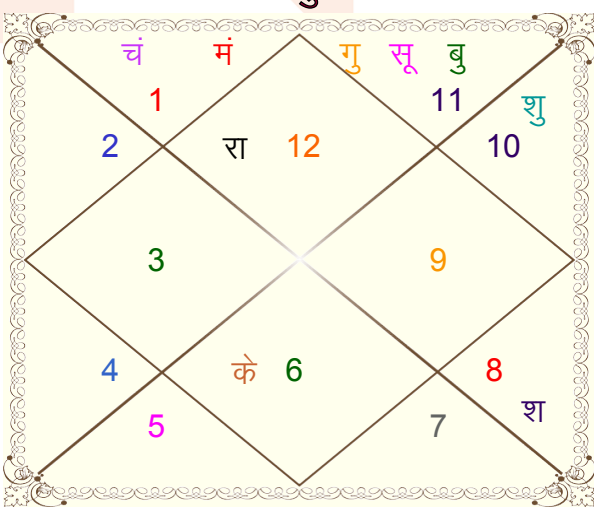

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	..... कारक			..... अवस्था			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	वृद्ध	खल	कौतुक	7.24	16 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	वृद्ध	शान्त	आगम	4.25	73 %
मंग	मातृ	भ्रातृ	युवा	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	4.30	49 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार	विकल	प्रकाश	0.00	36 %
गुरु	कलत्र	धन	वृद्ध	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	3.61	46 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	6.01	60 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	खल	नृत्यलिप्सा	1.59	42 %
राहु	–––	ज्ञान	कुमार	निपीदित	प्रकाश	0.00	31 %
केतु	–––	मोक्ष	कुमार	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	31 %
कुल						**26.99**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू0फाल्गुनी	उ0फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू0भाद्रपद	उ0भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

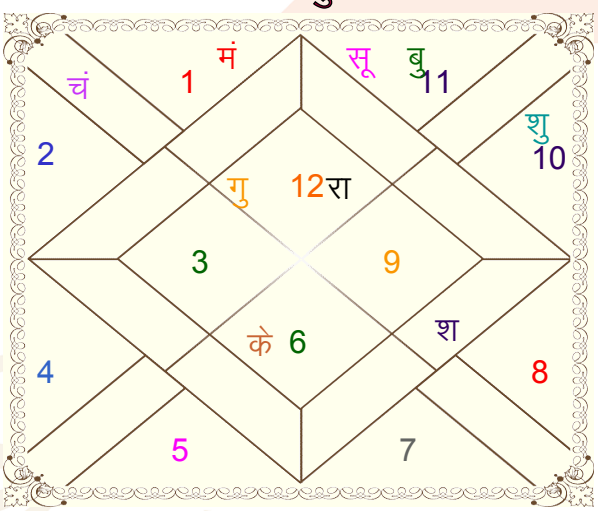

लग्न–चलित

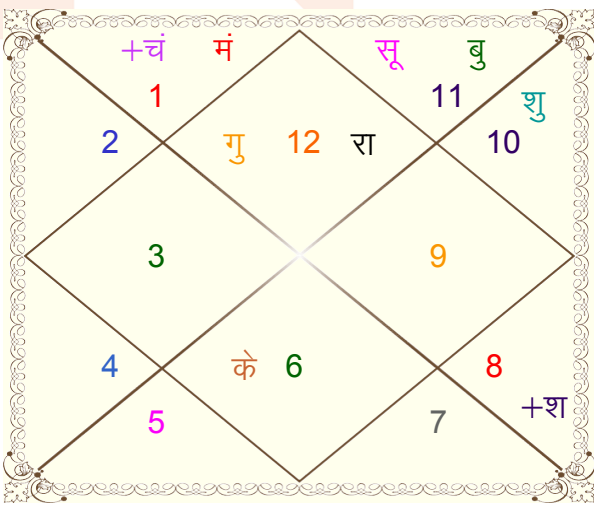

सुदर्शन चक्र

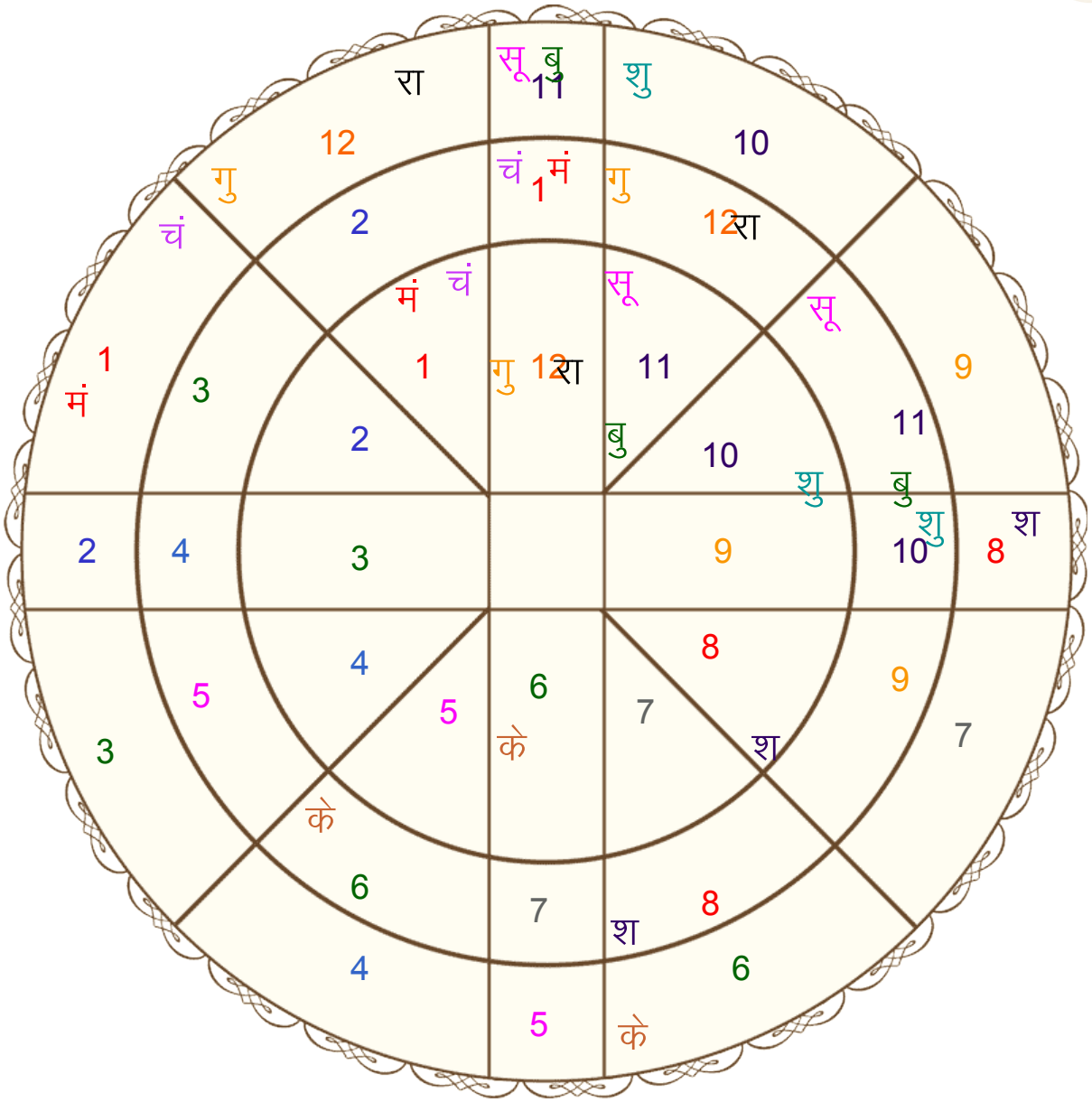

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 2 मास 18 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	20:22:32	शनि	गुरु	गुरु	शनि
चंद्र		मेष	23:11:21	मंग	शुक्र	शनि	चंद्र
मंग		मेष	14:59:35	मंग	शुक्र	शुक्र	शनि
बुध	व	कुंभ	09:41:36	शनि	राहु	गुरु	शुक्र
गुरु		मीन	06:58:09	गुरु	शनि	बुध	गुरु
शुक्र		मक	08:27:57	शनि	सूर्य	शुक्र	मंग
शनि		वृश्चि	27:01:19	मंग	बुध	गुरु	शुक्र
राहु		मीन	18:12:16	गुरु	बुध	बुध	गुरु
केतु	व	कन्या	18:12:16	बुध	चंद्र	बुध	शुक्र
हर्ष		धनु	02:49:56	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
नेप		धनु	14:04:20	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंग
प्लू	व	तुला	16:16:02	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मीन	07:54:54	गुरु	शनि	केतु	शनि
2	मेष	13:07:21	मंग	केतु	बुध	शनि
3	वृष	12:02:34	शुक्र	चंद्र	राहु	राहु
4	मिथु	07:29:37	बुध	राहु	राहु	शनि
5	कर्क	03:04:17	चंद्र	गुरु	राहु	चंद्र
6	सिंह	02:20:59	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
7	कन्या	07:54:54	बुध	सूर्य	शुक्र	शुक्र
8	तुला	13:07:21	शुक्र	राहु	बुध	शुक्र
9	वृश्चि	12:02:34	मंग	शनि	चंद्र	शुक्र
10	धनु	07:29:37	गुरु	केतु	राहु	मंग
11	मक	03:04:17	शनि	सूर्य	शनि	शनि
12	कुंभ	02:20:59	शनि	मंग	केतु	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:34:29

फॉरच्युना : वृष 10:43:44

लग्न कुंडली

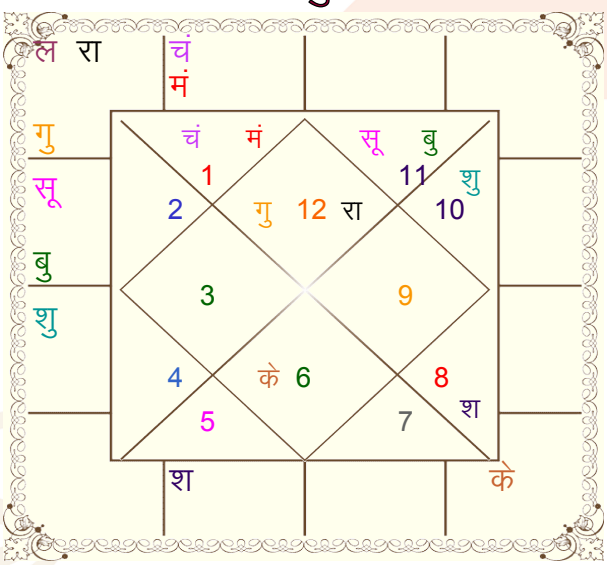

भाव कुंडली

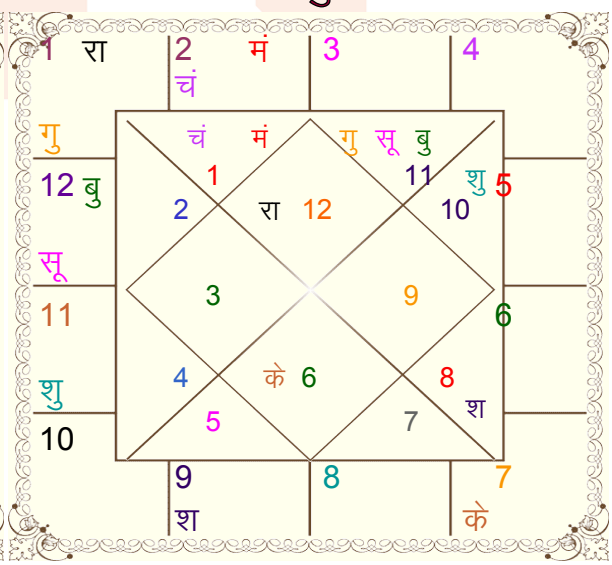

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य– बुध, गुरु– राहु,
2	चंद्र, मंग, केतु,
3	चंद्र– मंग– शुक्र–
4	बुध– शनि– राहु–
5	चंद्र– केतु–
6	सूर्य– शुक्र–
7	बुध– शनि– राहु– केतु,
8	चंद्र– मंग– शुक्र–
9	मंग– गुरु, शनि,
10	सूर्य– गुरु–
11	चंद्र, मंग, गुरु– शुक्र, शनि–
12	सूर्य+ बुध, गुरु+ शुक्र, शनि+ राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 6- 10- 12+
चंद्र	2, 3- 5- 8- 11,
मंग	2, 3- 8- 9- 11,
बुध	1, 4- 7- 12,
गुरु	1- 9, 10- 11- 12+
शुक्र	3- 6- 8- 11, 12,
शनि	4- 7- 9, 11- 12+
राहु	1, 4- 7- 12,
केतु	2, 5- 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व–सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	बु	रा	सू	गु
2	के	चं मं	--	मं
3	--	--	चं मं	शु
4	--	--	श रा	बु
5	--	--	के	चं
6	--	--	शु	सू
7	--	के	श रा	बु
8	--	--	चं मं	शु
9	गु	श	--	मं
10	--	--	सू	गु
11	चं मं	शु	गु	श
12	सू शु श रा	सू बु गु	गु	श

ग्रह कारक सारिणी–1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	6	7,11	कुम्भ	12
चंद्र	5	3	मेष	2
मंग	2,9	12	मेष	2
बुध	4,7	---	कुम्भ	12
गुरु	1,10	5	मीन	12
शुक्र	3,8	---	मकर	11
शनि	11,12	1,9	वृश्चिक	9
राहु	---	4,8	मीन	1
केतु	---	2,6,10	कन्या	7

ग्रह कारक सारिणी–2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	1,10	5	12	1,10	5	12
चंद्र	3,8	---	11	11,12	1,9	9
मंग	3,8	---	11	3,8	---	11
बुध	---	4,8	1	1,10	5	12
गुरु	11,12	1,9	9	4,7	---	12
शुक्र	6	7,11	12	3,8	---	11
शनि	4,7	---	12	1,10	5	12
राहु	4,7	---	12	4,7	---	12
केतु	5	3	2	4,7	---	12

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लू
	320.27	23.09	14.89	309.59	336.87	278.36	236.92	348.10	168.10	242.73	253.97	196.16
सूर्य	––	तृती	तृती	युति	––	––	––	––	––	––	––	––
320.27	0.00	2.22	0.48	4.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	––	––	युति	––	––	––	––	––	––	––	––	सप्त
23.09	0.00	0.00	6.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.49
मंग	––	युति	––	––	––	––	8वां	––	––	––	––	सप्त
14.89	0.00	6.54	0.00	0.00	0.00	0.00	3.06	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91
बुध	युति	––	तृती	––	––	––	––	––	––	––	––	––
309.59	4.37	0.00	0.55	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	––	––	––	––	––	––	––	युति	सप्त	––	––	––
336.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.84	3.84	0.00	0.00	0.00
शुक्र	––	––	––	––	तृती	––	––	––	––	––	––	––
278.36	0.00	0.00	0.00	0.00	2.77	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	––	––	––	3रा	––	––	––	––	––	युति	––	––
236.92	0.00	0.00	0.00	2.41	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.21	0.00	0.00
राहु	––	––	––	––	युति	––	––	––	सप्त	––	––	––
348.10	0.00	0.00	0.00	0.00	3.84	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	––	––	––	––	सप्त	––	––	सप्त	––	––	चतु	––
168.10	0.00	0.00	0.00	0.00	3.84	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	1.41	0.00
हर्ष	––	––	––	––	चतु	––	युति	––	––	––	युति	––
242.73	0.00	0.00	0.00	0.00	1.41	0.00	8.21	0.00	0.00	0.00	3.84	0.00
नेप	––	––	पंच	तृती	––	––	––	चतु	––	युति	––	––
253.97	0.00	0.00	2.91	1.24	0.00	0.00	0.00	1.41	0.00	3.84	0.00	0.00
प्लू	पंच	सप्त	सप्त	––	––	––	नवां	––	––	––	तृती	––
196.16	1.43	7.49	9.91	0.00	0.00	0.00	0.38	0.00	0.00	0.00	2.52	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं। :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	337.81	7.67	37.53	67.39	97.53	127.67	157.81	187.67	217.53	247.39	277.53	307.67
सूर्य	––	––	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति
320.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.49
चंद्र	––	––	युति	अष्ट	––	––	अष्टां	––	सप्त	––	––	––
23.09	0.00	0.00	0.58	0.46	0.00	0.00	0.91	0.00	0.58	0.00	0.00	0.00
मंग	––	युति	––	––	4था	––	––	सप्त	8वां	––	––	––
14.89	0.00	7.28	0.00	0.00	7.17	0.00	0.00	7.28	7.17	0.00	0.00	0.00
बुध	––	तृती	चतु	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति
309.59	0.00	2.63	2.57	0.00	0.00	9.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.80
गुरु	युति	––	तृती	चतु	––	षष्ठ	सप्त	––	9वां	––	––	––
336.87	9.95	0.00	2.95	2.97	0.00	0.30	9.95	0.00	9.98	0.00	0.00	0.00
शुक्र	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––
278.36	2.97	2.95	2.93	0.04	9.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.96	0.00
शनि	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	नवां	3रा
236.92	0.00	0.00	0.00	4.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.57	0.57	4.30
राहु	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––
348.10	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	––	––
168.10	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	चतु	पंच	––	सप्त	––	––	––	––	––	––	––	तृती
242.73	0.71	0.82	0.00	8.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.82
नेप	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
253.97	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00	0.00
प्लू	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	––
196.16	0.00	6.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.30	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं। :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	337.81	13.02	41.94	67.39	92.97	122.25	157.81	193.02	221.94	247.39	272.97	302.25
सूर्य	––	––	––	––	––	––	––	––	––	––	––	––
320.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	––	––	––	अष्ट	––	––	अष्टां	सप्त	––	––	––	––
23.09	0.00	0.00	0.00	0.46	0.00	0.00	0.91	4.94	0.00	0.00	0.00	0.00
मंग	––	युति	––	––	4था	––	––	सप्त	8वां	––	––	––
14.89	0.00	9.81	0.00	0.00	3.17	0.00	0.00	9.81	9.53	0.00	0.00	0.00
बुध	––	तृती	चतु	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति
309.59	0.00	1.87	2.45	0.00	0.00	7.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.19
गुरु	युति	––	तृती	चतु	––	––	सप्त	––	9वां	––	––	––
336.87	9.95	0.00	0.72	2.97	0.00	0.00	9.95	0.00	8.62	0.00	0.00	0.00
शुक्र	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––
278.36	2.97	1.03	1.78	0.04	8.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.45	0.00
शनि	––	––	सप्त	सप्त	––	––	––	––	युति	युति	––	3रा
236.92	0.00	0.00	0.02	4.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.02	4.57	0.00	8.48
राहु	युति	––	––	––	––	अष्टां	सप्त	––	––	––	––	––
348.10	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.23	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	––	अष्टां
168.10	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.23
हर्ष	चतु	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	––	––	तृती
242.73	0.71	0.00	0.00	8.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98
नेप	––	पंच	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
253.97	0.00	2.91	0.00	7.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00	0.00
प्लू	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	––
196.16	0.00	9.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.46	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं। :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

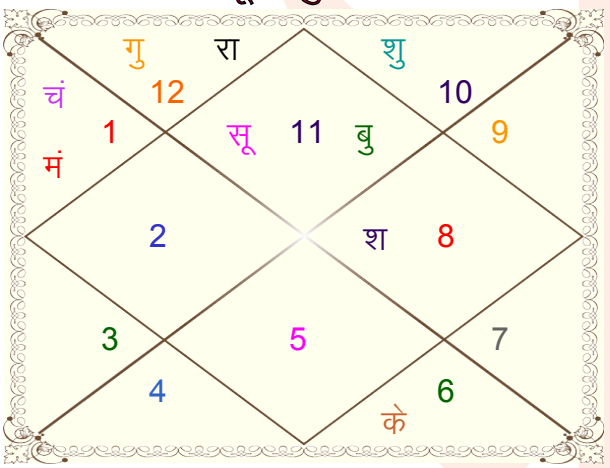

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

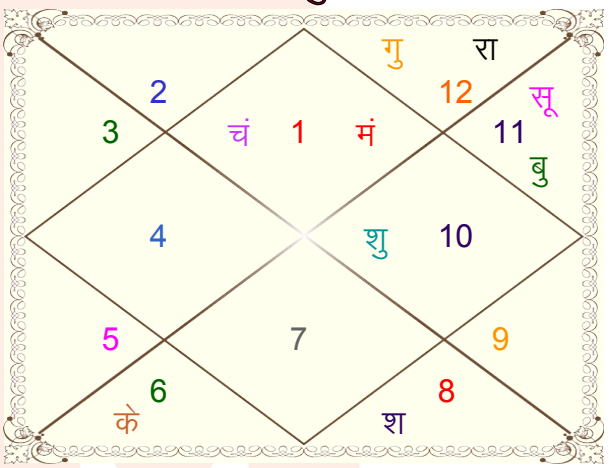

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

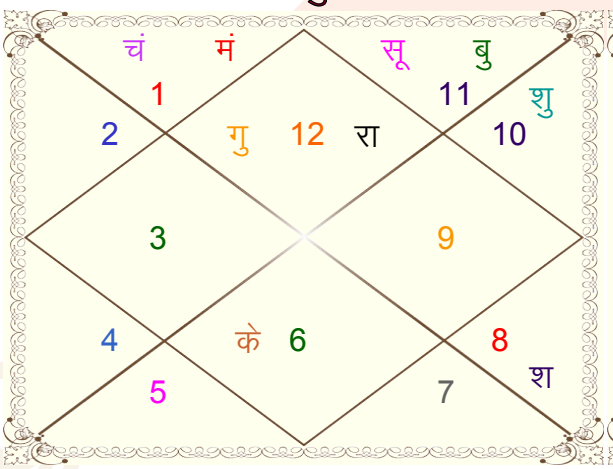

देह विचारः

होरा कुंडली

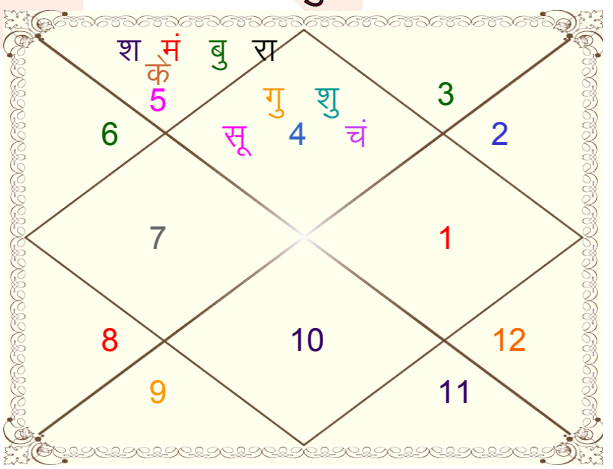

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

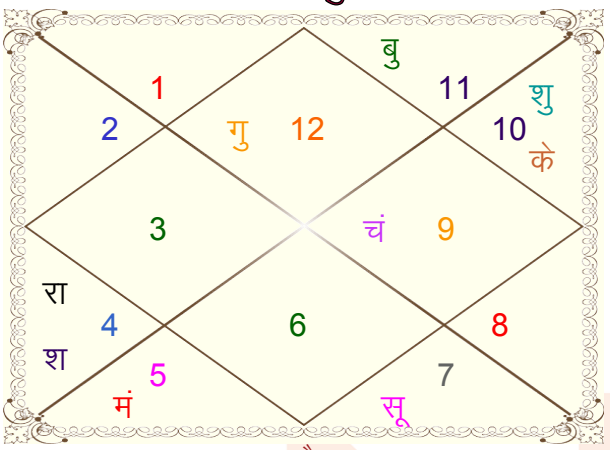

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

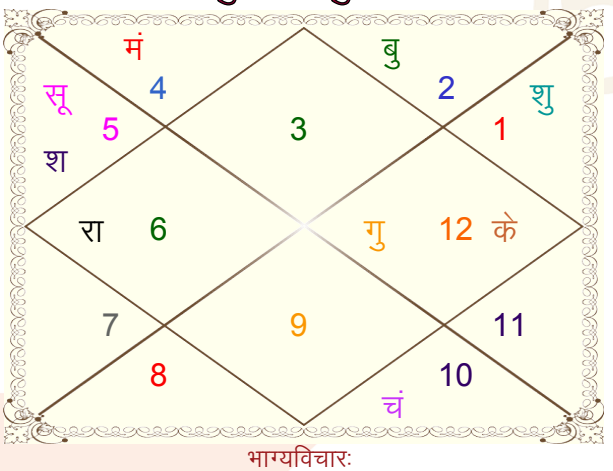

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

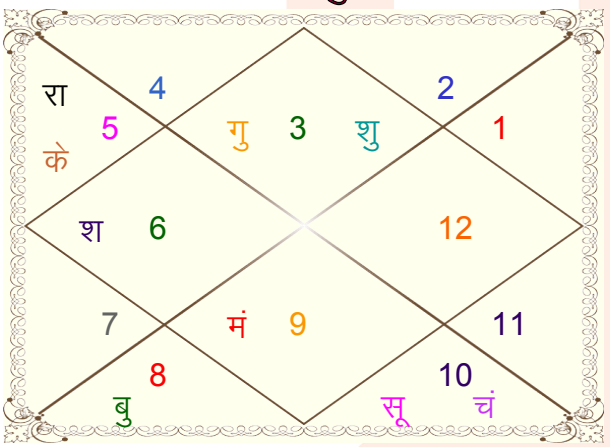

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

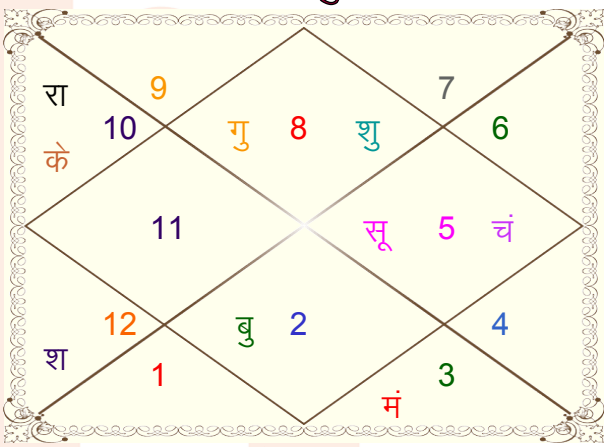

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

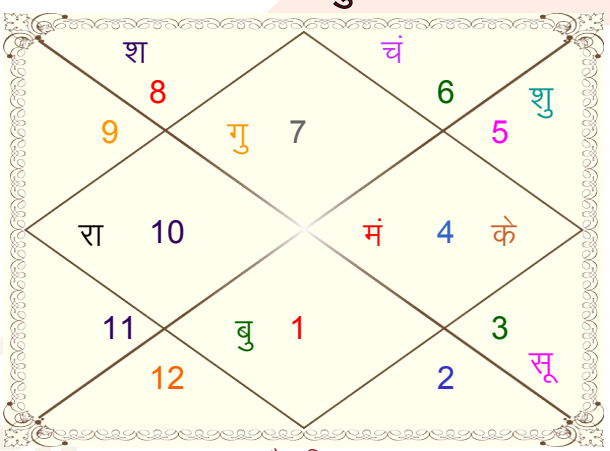

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

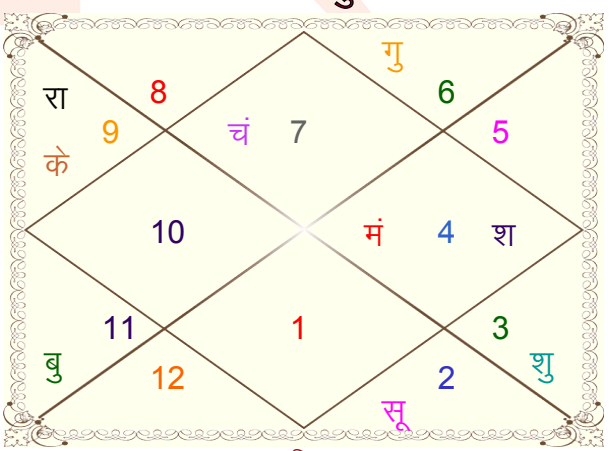

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

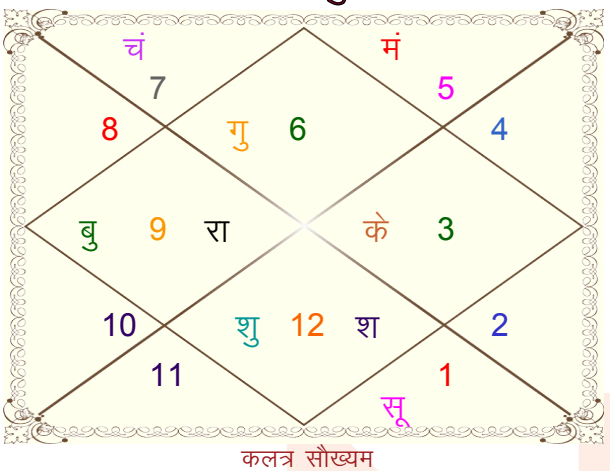

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

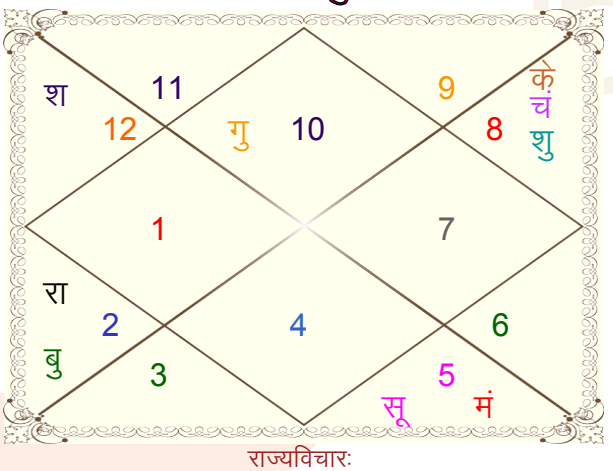

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

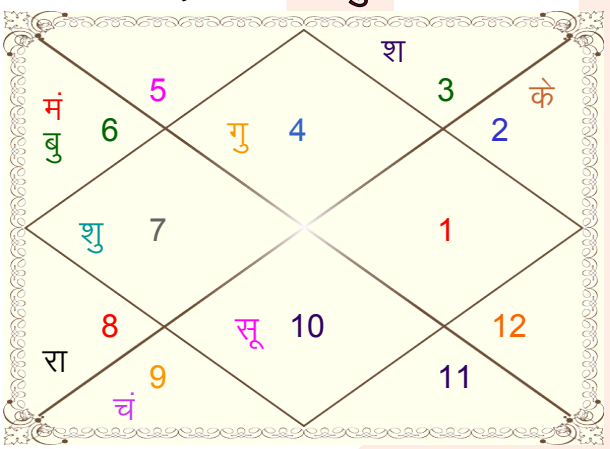

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

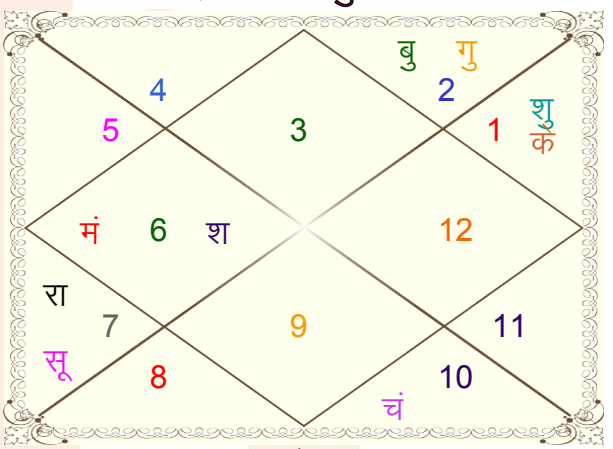

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

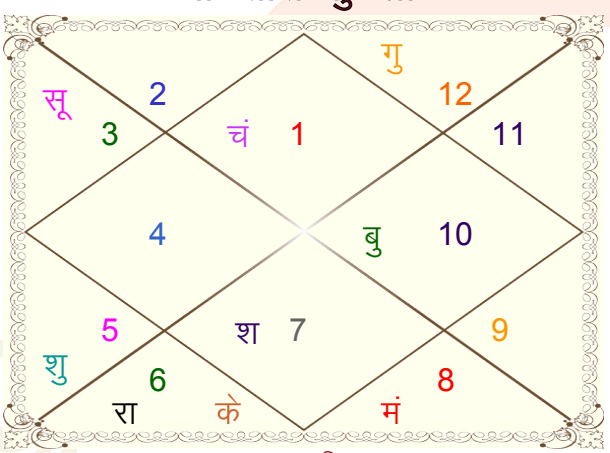

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

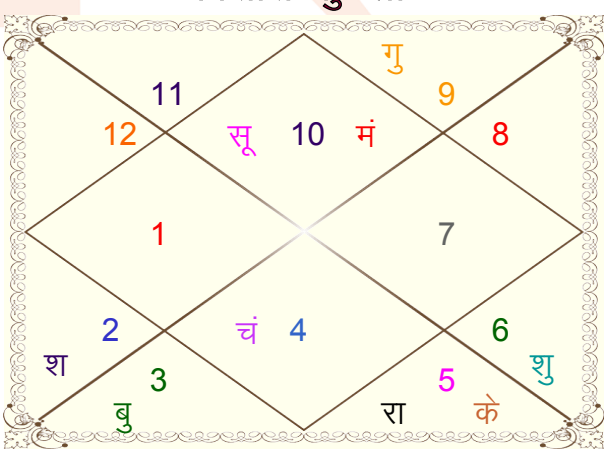

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

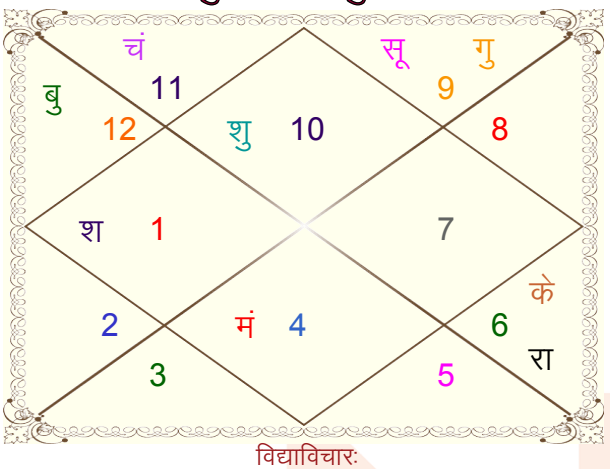

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

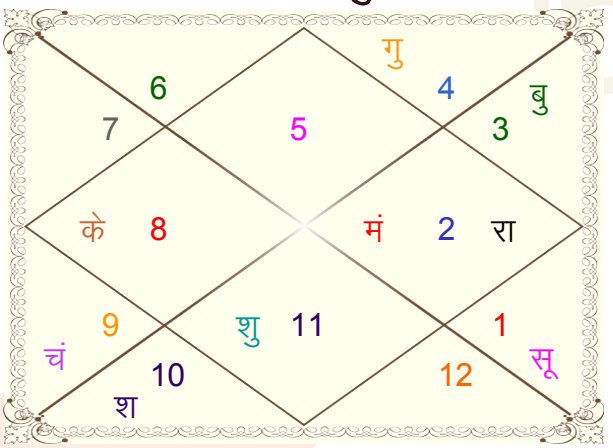

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

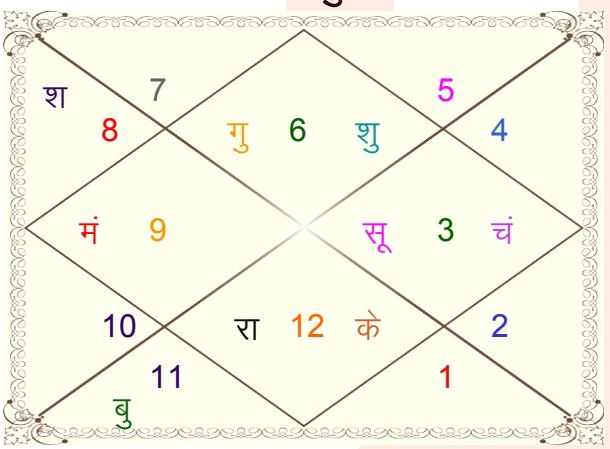

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

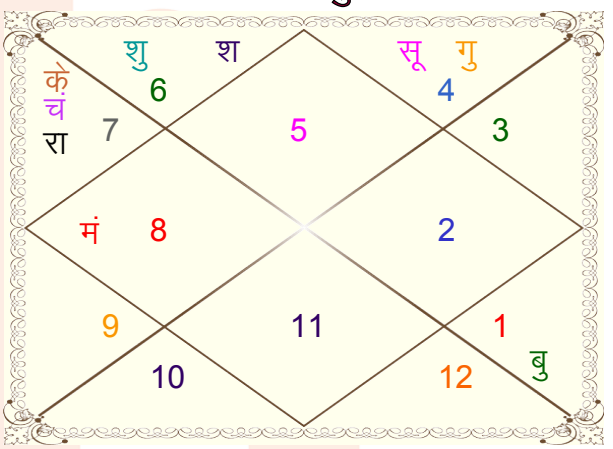

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

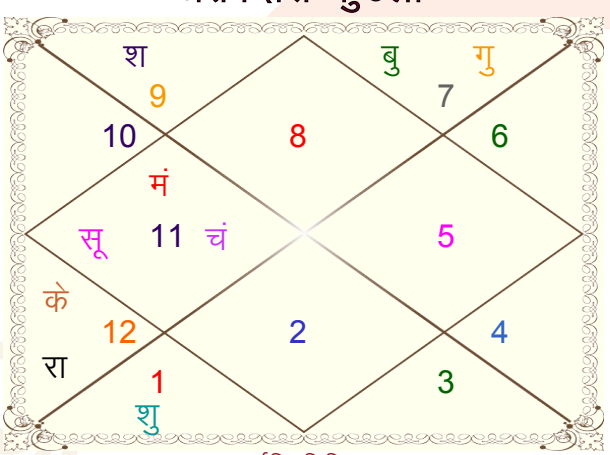

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

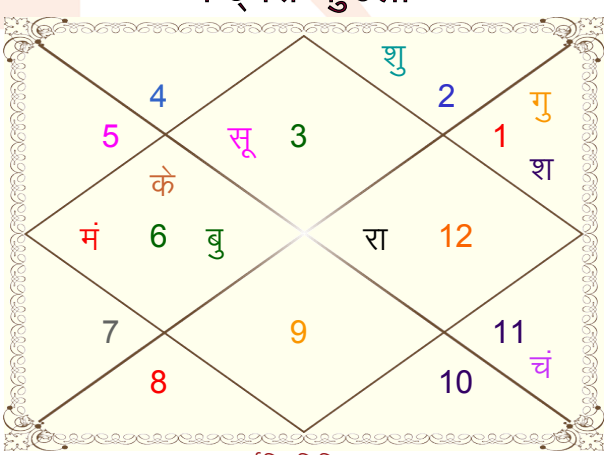

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मीन	कुंभ	मेष	मेष	कुंभ	मीन	मक	वृश्चि	मीन	कन्या
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मीन	तुला	धनु	सिंह	कुंभ	मीन	मक	कर्क	कर्क	मक
चतुर्थांश	मिथु	सिंह	मक	कर्क	वृष	मीन	मेष	सिंह	कन्या	मीन
सप्तमांश	तुला	मिथु	कन्या	कर्क	मेष	तुला	सिंह	वृश्चि	मक	कर्क
नवमांश	कन्या	मेष	तुला	सिंह	धनु	कन्या	मीन	मीन	धनु	मिथु
दशमांश	मक	सिंह	वृश्चि	सिंह	वृष	मक	वृश्चि	मीन	वृष	वृश्चि
द्वादशांश	मिथु	तुला	मक	कन्या	वृष	वृष	मेष	कन्या	तुला	मेष
षोडशांश	मेष	मिथु	मेष	वृश्चि	मक	मीन	सिंह	तुला	कन्या	कन्या
विंशांश	मक	मक	कर्क	मक	मिथु	धनु	कन्या	वृष	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	मक	धनु	कुंभ	कर्क	मीन	धनु	मक	मेष	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	सिंह	मेष	धनु	वृष	मिथु	कर्क	कुंभ	मक	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	कन्या	मिथु	मिथु	धनु	कुंभ	कन्या	कन्या	वृश्चि	मीन	मीन
खवेदांश	सिंह	कर्क	तुला	वृश्चि	मेष	कर्क	कन्या	कन्या	तुला	तुला
अक्षवेदांश	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	कुंभ	तुला	तुला	मेष	धनु	मीन	मीन
षष्ट्यंश	मिथु	मिथु	कुंभ	कन्या	कन्या	मेष	वृष	मेष	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ———	1 ———	2 पारिजात	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ———	1 ———	1 ———	2 भेदक
मंगल	1 ———	1 ———	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	0 ———	0 ———	1 ———	3 कुसुम
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	9 पूर्णचन्द
शुक्र	1 ———	1 ———	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	0 ———	0 ———	1 ———	2 भेदक
राहु	0 ———	0 ———	1 ———	3 कुसुम
केतु	1 ———	1 ———	1 ———	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.65	12.45	17.80	14.80	15.80	16.15	7.30	9.00	7.70
सप्तवर्ग	12.08	13.23	16.70	14.80	14.80	15.23	7.25	9.23	7.30
दशवर्ग	10.53	10.83	15.25	16.33	15.38	16.03	7.63	9.93	7.38
षोडशवर्ग	11.58	10.80	15.58	16.30	16.33	16.25	8.42	9.75	7.25

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंग	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	...	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	...

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	...	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंग	मित्र	शत्रु	...	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	...	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	...	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	...	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	...	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	...	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	...

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	...	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	...	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंग	अतिमित्र	सम	...	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	...	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	...	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	...	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	...	सम	सम
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	...	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	...

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	43	57	34	12	21	34	48
सप्तवर्गज बल	75	113	150	105	113	113	41
ओजयुग्मक बल	30	0	30	30	0	30	0
केन्द्र बल	15	30	30	15	60	30	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	15	0	0
कुल स्थान बल	163	214	244	162	208	206	104
कुल दिग्बल	36	45	18	51	60	10	34
नतोन्नत बल	35	25	25	60	35	35	25
पक्ष बल	39	78	39	39	21	21	39
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	30	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	43	8	49	43	30	5	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	118	111	112	233	252	61	138
कुल चेष्टाबल	0	0	22	55	7	28	29
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-20	-1	0	-20	-6	-12	-16
कुल षट्बल	357	421	414	506	554	337	297
रूप षट्बल	6.0	7.0	6.9	8.4	9.2	5.6	5.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.2	1.2	1.4	1.2	1.4	1.0	1.0
संबंधित पद	4	5	2	3	1	6	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	32.72	34.45	27.45	25.54	11.96	30.88	37.21
कष्ट फल	24.21	11.36	31.24	15.14	45.71	28.86	19.52

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	554	414	337	506	421	357	506	337	414	554	297	297
भावदिग्बल	30	20	10	30	50	20	0	10	40	30	50	50
भावदृष्टि बल	-6	19	53	49	46	33	81	52	45	-7	-12	-21
कुल भाव बल	578	452	400	584	517	410	586	399	499	577	336	327
रूप भाव बल	9.6	7.5	6.7	9.7	8.6	6.8	9.8	6.6	8.3	9.6	5.6	5.4
संबंधित पद	3	7	9	2	5	8	1	10	6	4	11	12

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मीन	07:48:46	––	––	उ0भाद्रपद	2	26
गुलिक	गु	वृष	09:04:31	––	––	कृतिका	4	3
काल	का	मिथु	00:43:33	––	––	मृगशिरा	3	5
मृत्यु	मृ	कर्क	10:34:23	––	––	पुष्य	3	8
यमघंटक	यम	मीन	17:44:18	––	––	रेवती	1	27
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	सिंह	00:36:18	––	––	मघा	1	10
धूम	धू	कर्क	03:36:24	––	––	पुष्य	1	8
व्यतिपात	व्य	धनु	26:23:36	––	––	पूर्वाषाढ़ा	4	20
परिवेश	परि	मिथु	26:23:36	उच्च	––	पुनर्वसु	2	7
इन्द्रचाप	इ	मक	03:36:24	––	––	उत्तराषाढ़ा	3	21
उपकेतु	उप	मक	20:16:24	––	––	श्रवण	4	22

प्राणपद	:	सिंह	06:58:46	कारकाँश लग्न	:	मीन	02:16:39
भाव लग्न	:	मीन	22:08:53	होरा लग्न	:	मेष	06:29:00
घटी लग्न	:	वृष	01:56:59	वर्णद लग्न	:	मेष	15:42:14

उपग्रह कुंडली

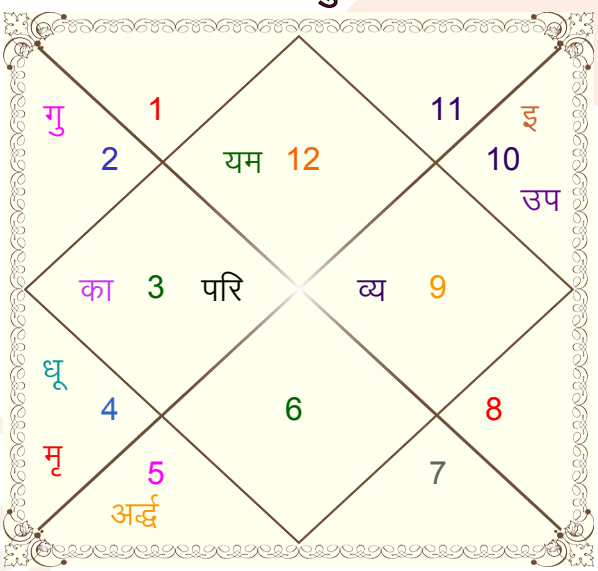

आरूढ़ कुंडली

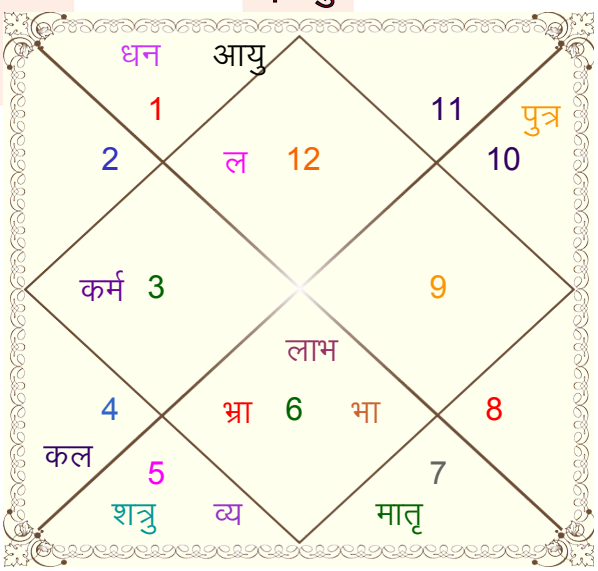

षन्नाडी चक्र

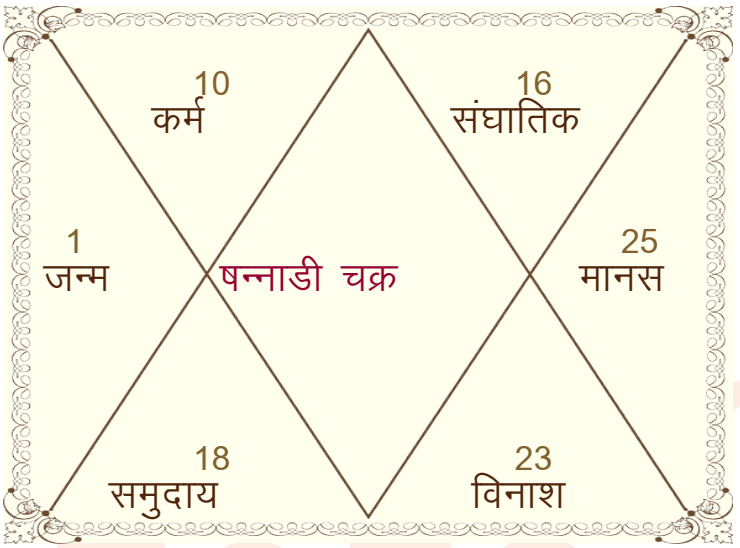

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंग	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंग	केतु	चंद्र	बुध	गुरु
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	मंग	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	शनि
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंग	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंग	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंग	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	सूर्य	मंग	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंग	केतु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
मंग	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	5	1	2	4	5	5	4	3	3	5	6	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंग	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
कुल	6	4	4	2	4	7	3	3	5	5	3	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	4
मंग	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
कुल	3	3	5	4	4	2	1	4	5	3	4	1	39

बुद्ध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
मंग	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	6	2	4	4	4	5	4	3	5	5	5	7	54

गुरू का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंग	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
कुल	5	5	6	4	3	3	4	7	5	5	4	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंग	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	5	4	5	4	3	5	6	3	4	4	4	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंग	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	3	4	5	4	4	1	2	4	2	4	5	1	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंग	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	5	4	3	3	4	6	0	4	4	7	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	2	4	2	4	5	1	3	4	5	4	4	39
गुरु	5	6	4	3	3	4	7	5	5	4	5	5	56
मंग	3	3	5	4	4	2	1	4	5	3	4	1	39
सूर्य	2	4	5	5	4	3	3	5	6	5	5	1	48
शुक्र	4	3	5	6	3	4	4	4	5	5	4	5	52
बुध	4	4	4	5	4	3	5	5	5	7	6	2	54
चंद्र	6	4	4	2	4	7	3	3	5	5	3	3	49
बिन्दु	25	26	31	27	26	28	24	29	35	34	31	21	337
रेखा	31	30	25	29	30	28	32	27	21	22	25	35	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	3	0	3	3	0	1	3	3	3	2	21
गुरु	2	2	0	0	0	0	3	2	2	0	1	2	14
मंग	0	1	4	3	1	0	0	3	2	1	3	0	18
सूर्य	0	1	2	4	2	0	0	4	4	2	2	0	21
शुक्र	1	0	1	2	0	1	0	0	2	2	0	1	10
बुध	0	1	0	3	0	0	1	3	1	4	2	0	15
चंद्र	2	0	1	0	0	3	0	1	1	1	0	1	10
रेखा	5	5	11	12	6	7	4	14	15	13	11	6	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	3	0	0	1	1	3	3	2	13
गुरु	2	2	0	0	0	0	1	2	0	0	1	2	10
मंग	0	1	4	3	1	0	0	3	2	1	3	0	18
सूर्य	0	1	2	4	2	0	0	4	4	2	2	0	21
शुक्र	1	0	0	2	0	0	0	0	1	2	0	1	7
बुध	0	0	0	3	0	0	0	3	1	4	2	0	13
चंद्र	2	0	1	0	0	2	0	1	0	1	0	1	8
रेखा	5	4	7	12	6	2	1	14	9	13	11	6	90

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	162	57	144	87	92	46	119
ग्रह पिंड	54	48	52	63	66	37	76
शोध्य पिंड	216	105	196	150	158	83	195

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

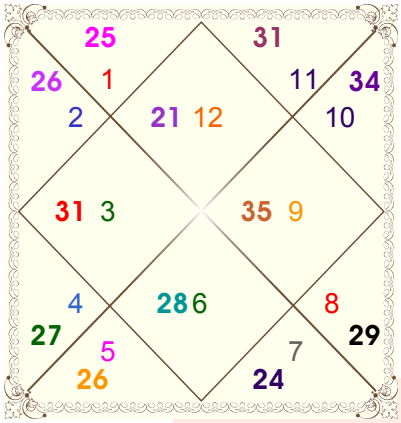

सूर्य का अष्टकवर्ग

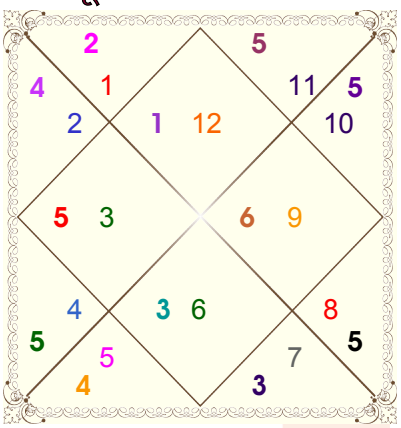

चंद्र का अष्टकवर्ग

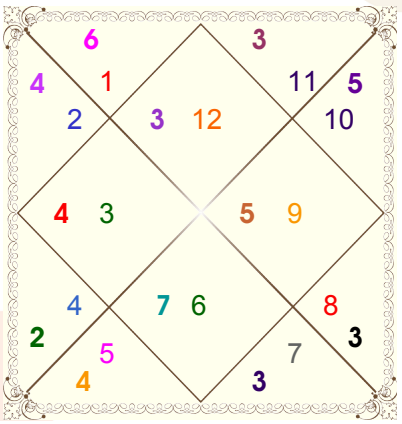

मंगल का अष्टकवर्ग

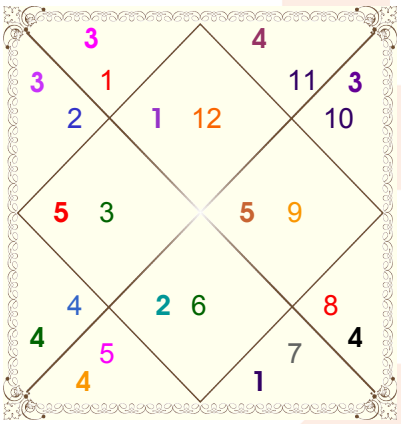

बुद्ध का अष्टकवर्ग

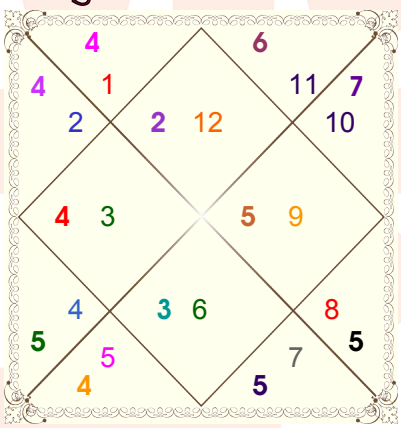

गुरू का अष्टकवर्ग

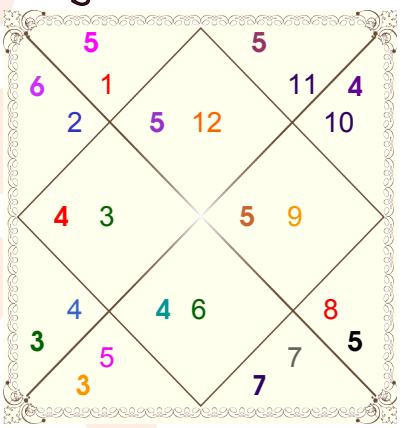

शुक्र का अष्टकवर्ग

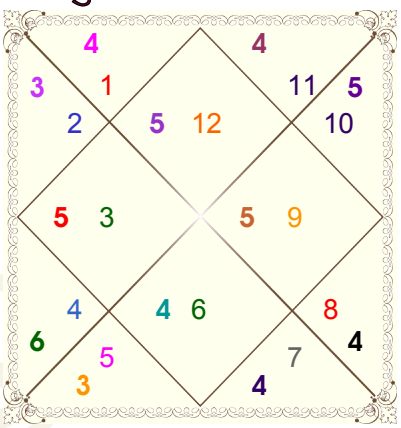

शनि का अष्टकवर्ग

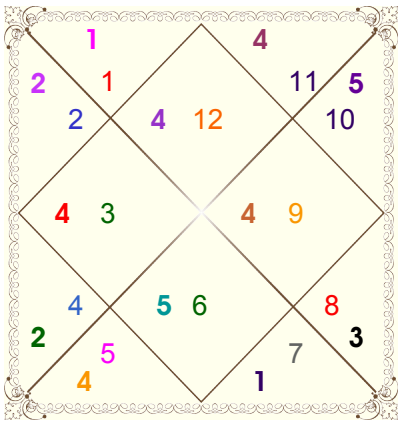

लग्न का अष्टकवर्ग

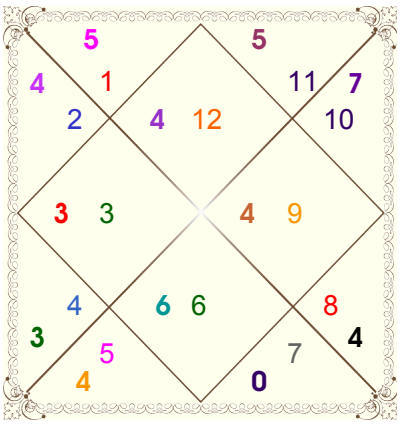

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 4 मास 13 दिन

शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु	
05/03/1987		17/07/1992		18/07/1998		17/07/2008		18/07/2015	
17/07/1992		18/07/1998		17/07/2008		18/07/2015		17/07/2033	
शुक्र	00/00/0000	सूर्य	04/11/1992	चंद्र	18/05/1999	मंग	13/12/2008	राहु	30/03/2018
सूर्य	00/00/0000	चंद्र	05/05/1993	मंग	17/12/1999	राहु	01/01/2010	गुरु	23/08/2020
चंद्र	00/00/0000	मंग	10/09/1993	राहु	17/06/2001	गुरु	08/12/2010	शनि	30/06/2023
मंग	00/00/0000	राहु	05/08/1994	गुरु	17/10/2002	शनि	16/01/2012	बुध	16/01/2026
राहु	00/00/0000	गुरु	24/05/1995	शनि	17/05/2004	बुध	13/01/2013	केतु	03/02/2027
गुरु	05/03/1987	शनि	05/05/1996	बुध	17/10/2005	केतु	11/06/2013	शुक्र	03/02/2030
शनि	17/07/1988	बुध	11/03/1997	केतु	18/05/2006	शुक्र	11/08/2014	सूर्य	29/12/2030
बुध	18/05/1991	केतु	17/07/1997	शुक्र	16/01/2008	सूर्य	17/12/2014	चंद्र	29/06/2032
केतु	17/07/1992	शुक्र	18/07/1998	सूर्य	17/07/2008	चंद्र	18/07/2015	मंग	17/07/2033

गुरु		शनि		बुध		केतु		शुक्र	
17/07/2033		17/07/2049		17/07/2068		17/07/2085		17/07/2092	
17/07/2049		17/07/2068		17/07/2085		17/07/2092		00/00/0000	
गुरु	04/09/2035	शनि	20/07/2052	बुध	14/12/2070	केतु	13/12/2085	शुक्र	17/11/2095
शनि	18/03/2038	बुध	30/03/2055	केतु	11/12/2071	शुक्र	13/02/2087	सूर्य	16/11/2096
बुध	23/06/2040	केतु	08/05/2056	शुक्र	11/10/2074	सूर्य	20/06/2087	चंद्र	18/07/2098
केतु	30/05/2041	शुक्र	09/07/2059	सूर्य	17/08/2075	चंद्र	19/01/2088	मंग	17/09/2099
शुक्र	29/01/2044	सूर्य	20/06/2060	चंद्र	16/01/2077	मंग	17/06/2088	राहु	17/09/2102
सूर्य	16/11/2044	चंद्र	19/01/2062	मंग	13/01/2078	राहु	05/07/2089	गुरु	18/05/2105
चंद्र	18/03/2046	मंग	28/02/2063	राहु	01/08/2080	गुरु	11/06/2090	शनि	06/03/2107
मंग	22/02/2047	राहु	04/01/2066	गुरु	07/11/2082	शनि	21/07/2091	बुध	00/00/0000
राहु	17/07/2049	गुरु	17/07/2068	शनि	17/07/2085	बुध	17/07/2092	केतु	00/00/0000

– उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 5 वर्ष 5 मा 3 दि होता है।

– उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

शुक्र–शनि		शुक्र–बुध		शुक्र–केतु		सूर्य–सूर्य		सूर्य–चंद्र	
05/03/1987		17/07/1988		18/05/1991		17/07/1992		04/11/1992	
17/07/1988		18/05/1991		17/07/1992		04/11/1992		05/05/1993	
शनि	00/00/0000	बुध	11/12/1988	केतु	12/06/1991	सूर्य	22/07/1992	चंद्र	19/11/1992
बुध	00/00/0000	केतु	09/02/1989	शुक्र	22/08/1991	चंद्र	01/08/1992	मंग	29/11/1992
केतु	00/00/0000	शुक्र	31/07/1989	सूर्य	12/09/1991	मंग	07/08/1992	राहु	27/12/1992
शुक्र	05/03/1987	सूर्य	21/09/1989	चंद्र	18/10/1991	राहु	23/08/1992	गुरु	20/01/1993
सूर्य	13/03/1987	चंद्र	16/12/1989	मंग	11/11/1991	गुरु	07/09/1992	शनि	18/02/1993
चंद्र	18/06/1987	मंग	15/02/1990	राहु	14/01/1992	शनि	24/09/1992	बुध	16/03/1993
मंग	24/08/1987	राहु	20/07/1990	गुरु	11/03/1992	बुध	10/10/1992	केतु	27/03/1993
राहु	14/02/1988	गुरु	05/12/1990	शनि	18/05/1992	केतु	16/10/1992	शुक्र	26/04/1993
गुरु	17/07/1988	शनि	18/05/1991	बुध	17/07/1992	शुक्र	04/11/1992	सूर्य	05/05/1993

सूर्य–मंग		सूर्य–राहु		सूर्य–गुरु		सूर्य–शनि		सूर्य–बुध	
05/05/1993		10/09/1993		05/08/1994		24/05/1995		05/05/1996	
10/09/1993		05/08/1994		24/05/1995		05/05/1996		11/03/1997	
मंग	13/05/1993	राहु	29/10/1993	गुरु	13/09/1994	शनि	18/07/1995	बुध	18/06/1996
राहु	01/06/1993	गुरु	12/12/1993	शनि	29/10/1994	बुध	05/09/1995	केतु	06/07/1996
गुरु	18/06/1993	शनि	02/02/1994	बुध	09/12/1994	केतु	25/09/1995	शुक्र	27/08/1996
शनि	08/07/1993	बुध	21/03/1994	केतु	26/12/1994	शुक्र	22/11/1995	सूर्य	11/09/1996
बुध	26/07/1993	केतु	09/04/1994	शुक्र	13/02/1995	सूर्य	10/12/1995	चंद्र	07/10/1996
केतु	03/08/1993	शुक्र	03/06/1994	सूर्य	28/02/1995	चंद्र	07/01/1996	मंग	25/10/1996
शुक्र	24/08/1993	सूर्य	19/06/1994	चंद्र	24/03/1995	मंग	28/01/1996	राहु	11/12/1996
सूर्य	30/08/1993	चंद्र	17/07/1994	मंग	10/04/1995	राहु	20/03/1996	गुरु	21/01/1997
चंद्र	10/09/1993	मंग	05/08/1994	राहु	24/05/1995	गुरु	05/05/1996	शनि	11/03/1997

सूर्य–केतु		सूर्य–शुक्र		चंद्र–चंद्र		चंद्र–मंग		चंद्र–राहु	
11/03/1997		17/07/1997		18/07/1998		18/05/1999		17/12/1999	
17/07/1997		18/07/1998		18/05/1999		17/12/1999		17/06/2001	
केतु	19/03/1997	शुक्र	16/09/1997	चंद्र	12/08/1998	मंग	30/05/1999	राहु	08/03/2000
शुक्र	09/04/1997	सूर्य	04/10/1997	मंग	30/08/1998	राहु	01/07/1999	गुरु	20/05/2000
सूर्य	16/04/1997	चंद्र	04/11/1997	राहु	14/10/1998	गुरु	30/07/1999	शनि	15/08/2000
चंद्र	26/04/1997	मंग	25/11/1997	गुरु	24/11/1998	शनि	01/09/1999	बुध	01/11/2000
मंग	04/05/1997	राहु	19/01/1998	शनि	11/01/1999	बुध	02/10/1999	केतु	03/12/2000
राहु	23/05/1997	गुरु	09/03/1998	बुध	23/02/1999	केतु	14/10/1999	शुक्र	04/03/2001
गुरु	09/06/1997	शनि	05/05/1998	केतु	13/03/1999	शुक्र	19/11/1999	सूर्य	31/03/2001
शनि	29/06/1997	बुध	26/06/1998	शुक्र	03/05/1999	सूर्य	29/11/1999	चंद्र	16/05/2001
बुध	17/07/1997	केतु	18/07/1998	सूर्य	18/05/1999	चंद्र	17/12/1999	मंग	17/06/2001

विंशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

चंद्र–गुरु		चंद्र–शनि		चंद्र–बुध		चंद्र–केतु		चंद्र–शुक्र	
17/06/2001		17/10/2002		17/05/2004		17/10/2005		18/05/2006	
17/10/2002		17/05/2004		17/10/2005		18/05/2006		16/01/2008	
गुरु	21/08/2001	शनि	16/01/2003	बुध	29/07/2004	केतु	29/10/2005	शुक्र	27/08/2006
शनि	06/11/2001	बुध	08/04/2003	केतु	29/08/2004	शुक्र	04/12/2005	सूर्य	27/09/2006
बुध	14/01/2002	केतु	12/05/2003	शुक्र	23/11/2004	सूर्य	14/12/2005	चंद्र	16/11/2006
केतु	11/02/2002	शुक्र	16/08/2003	सूर्य	19/12/2004	चंद्र	01/01/2006	मंग	22/12/2006
शुक्र	03/05/2002	सूर्य	14/09/2003	चंद्र	31/01/2005	मंग	13/01/2006	राहु	23/03/2007
सूर्य	28/05/2002	चंद्र	02/11/2003	मंग	02/03/2005	राहु	14/02/2006	गुरु	12/06/2007
चंद्र	07/07/2002	मंग	05/12/2003	राहु	19/05/2005	गुरु	15/03/2006	शनि	17/09/2007
मंग	05/08/2002	राहु	01/03/2004	गुरु	27/07/2005	शनि	17/04/2006	बुध	12/12/2007
राहु	17/10/2002	गुरु	17/05/2004	शनि	17/10/2005	बुध	18/05/2006	केतु	16/01/2008

चंद्र–सूर्य		मंग–मंग		मंग–राहु		मंग–गुरु		मंग–शनि	
16/01/2008		17/07/2008		13/12/2008		01/01/2010		08/12/2010	
17/07/2008		13/12/2008		01/01/2010		08/12/2010		16/01/2012	
सूर्य	26/01/2008	मंग	26/07/2008	राहु	09/02/2009	गुरु	15/02/2010	शनि	10/02/2011
चंद्र	10/02/2008	राहु	17/08/2008	गुरु	01/04/2009	शनि	10/04/2010	बुध	08/04/2011
मंग	20/02/2008	गुरु	06/09/2008	शनि	01/06/2009	बुध	28/05/2010	केतु	02/05/2011
राहु	19/03/2008	शनि	30/09/2008	बुध	25/07/2009	केतु	17/06/2010	शुक्र	08/07/2011
गुरु	12/04/2008	बुध	21/10/2008	केतु	16/08/2009	शुक्र	13/08/2010	सूर्य	28/07/2011
शनि	11/05/2008	केतु	29/10/2008	शुक्र	19/10/2009	सूर्य	30/08/2010	चंद्र	31/08/2011
बुध	06/06/2008	शुक्र	23/11/2008	सूर्य	07/11/2009	चंद्र	28/09/2010	मंग	24/09/2011
केतु	17/06/2008	सूर्य	01/12/2008	चंद्र	09/12/2009	मंग	17/10/2010	राहु	23/11/2011
शुक्र	17/07/2008	चंद्र	13/12/2008	मंग	01/01/2010	राहु	08/12/2010	गुरु	16/01/2012

मंग–बुध		मंग–केतु		मंग–शुक्र		मंग–सूर्य		मंग–चंद्र	
16/01/2012		13/01/2013		11/06/2013		11/08/2014		17/12/2014	
13/01/2013		11/06/2013		11/08/2014		17/12/2014		18/07/2015	
बुध	08/03/2012	केतु	21/01/2013	शुक्र	21/08/2013	सूर्य	17/08/2014	चंद्र	03/01/2015
केतु	29/03/2012	शुक्र	15/02/2013	सूर्य	11/09/2013	चंद्र	28/08/2014	मंग	16/01/2015
शुक्र	28/05/2012	सूर्य	23/02/2013	चंद्र	17/10/2013	मंग	04/09/2014	राहु	17/02/2015
सूर्य	15/06/2012	चंद्र	07/03/2013	मंग	10/11/2013	राहु	24/09/2014	गुरु	17/03/2015
चंद्र	15/07/2012	मंग	16/03/2013	राहु	13/01/2014	गुरु	11/10/2014	शनि	20/04/2015
मंग	06/08/2012	राहु	07/04/2013	गुरु	11/03/2014	शनि	31/10/2014	बुध	20/05/2015
राहु	29/09/2012	गुरु	27/04/2013	शनि	18/05/2014	बुध	18/11/2014	केतु	02/06/2015
गुरु	16/11/2012	शनि	21/05/2013	बुध	17/07/2014	केतु	25/11/2014	शुक्र	07/07/2015
शनि	13/01/2013	बुध	11/06/2013	केतु	11/08/2014	शुक्र	17/12/2014	सूर्य	18/07/2015

विंशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

राहु–राहु	
18/07/2015	
30/03/2018	
राहु	13/12/2015
गुरु	22/04/2016
शनि	25/09/2016
बुध	12/02/2017
केतु	11/04/2017
शुक्र	22/09/2017
सूर्य	10/11/2017
चंद्र	31/01/2018
मंग	30/03/2018

राहु–गुरु	
30/03/2018	
23/08/2020	
गुरु	25/07/2018
शनि	11/12/2018
बुध	14/04/2019
केतु	04/06/2019
शुक्र	28/10/2019
सूर्य	11/12/2019
चंद्र	22/02/2020
मंग	13/04/2020
राहु	23/08/2020

राहु–शनि	
23/08/2020	
30/06/2023	
शनि	03/02/2021
बुध	01/07/2021
केतु	31/08/2021
शुक्र	20/02/2022
सूर्य	13/04/2022
चंद्र	09/07/2022
मंग	08/09/2022
राहु	11/02/2023
गुरु	30/06/2023

राहु–बुध	
30/06/2023	
16/01/2026	
बुध	08/11/2023
केतु	02/01/2024
शुक्र	05/06/2024
सूर्य	22/07/2024
चंद्र	07/10/2024
मंग	01/12/2024
राहु	19/04/2025
गुरु	21/08/2025
शनि	16/01/2026

राहु–केतु	
16/01/2026	
03/02/2027	
केतु	07/02/2026
शुक्र	12/04/2026
सूर्य	01/05/2026
चंद्र	02/06/2026
मंग	25/06/2026
राहु	21/08/2026
गुरु	11/10/2026
शनि	11/12/2026
बुध	03/02/2027

राहु–शुक्र	
03/02/2027	
03/02/2030	
शुक्र	05/08/2027
सूर्य	29/09/2027
चंद्र	29/12/2027
मंग	02/03/2028
राहु	13/08/2028
गुरु	07/01/2029
शनि	29/06/2029
बुध	01/12/2029
केतु	03/02/2030

राहु–सूर्य	
03/02/2030	
29/12/2030	
सूर्य	20/02/2030
चंद्र	19/03/2030
मंग	07/04/2030
राहु	26/05/2030
गुरु	09/07/2030
शनि	30/08/2030
बुध	16/10/2030
केतु	04/11/2030
शुक्र	29/12/2030

राहु–चंद्र	
29/12/2030	
29/06/2032	
चंद्र	13/02/2031
मंग	16/03/2031
राहु	07/06/2031
गुरु	19/08/2031
शनि	13/11/2031
बुध	30/01/2032
केतु	02/03/2032
शुक्र	01/06/2032
सूर्य	29/06/2032

राहु–मंग	
29/06/2032	
17/07/2033	
मंग	21/07/2032
राहु	17/09/2032
गुरु	07/11/2032
शनि	07/01/2033
बुध	02/03/2033
केतु	24/03/2033
शुक्र	27/05/2033
सूर्य	15/06/2033
चंद्र	17/07/2033

गुरु–गुरु	
17/07/2033	
04/09/2035	
गुरु	29/10/2033
शनि	02/03/2034
बुध	20/06/2034
केतु	04/08/2034
शुक्र	12/12/2034
सूर्य	20/01/2035
चंद्र	26/03/2035
मंग	11/05/2035
राहु	04/09/2035

गुरु–शनि	
04/09/2035	
18/03/2038	
शनि	29/01/2036
बुध	08/06/2036
केतु	01/08/2036
शुक्र	02/01/2037
सूर्य	18/02/2037
चंद्र	06/05/2037
मंग	29/06/2037
राहु	14/11/2037
गुरु	18/03/2038

गुरु–बुध	
18/03/2038	
23/06/2040	
बुध	13/07/2038
केतु	30/08/2038
शुक्र	15/01/2039
सूर्य	26/02/2039
चंद्र	06/05/2039
मंग	23/06/2039
राहु	25/10/2039
गुरु	13/02/2040
शनि	23/06/2040

गुरु–केतु	
23/06/2040	
30/05/2041	
केतु	13/07/2040
शुक्र	07/09/2040
सूर्य	24/09/2040
चंद्र	23/10/2040
मंग	12/11/2040
राहु	02/01/2041
गुरु	16/02/2041
शनि	11/04/2041
बुध	30/05/2041

गुरु–शुक्र	
30/05/2041	
29/01/2044	
शुक्र	08/11/2041
सूर्य	27/12/2041
चंद्र	18/03/2042
मंग	14/05/2042
राहु	07/10/2042
गुरु	14/02/2043
शनि	18/07/2043
बुध	03/12/2043
केतु	29/01/2044

गुरु–सूर्य	
29/01/2044	
16/11/2044	
सूर्य	12/02/2044
चंद्र	08/03/2044
मंग	25/03/2044
राहु	07/05/2044
गुरु	15/06/2044
शनि	01/08/2044
बुध	11/09/2044
केतु	28/09/2044
शुक्र	16/11/2044

विंशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

गुरु–चंद्र		गुरु–मंग		गुरु–राहु		शनि–शनि		शनि–बुध	
16/11/2044		18/03/2046		22/02/2047		17/07/2049		20/07/2052	
18/03/2046		22/02/2047		17/07/2049		20/07/2052		30/03/2055	
चंद्र	26/12/2044	मंग	07/04/2046	राहु	03/07/2047	शनि	07/01/2050	बुध	06/12/2052
मंग	24/01/2045	राहु	28/05/2046	गुरु	28/10/2047	बुध	12/06/2050	केतु	02/02/2053
राहु	07/04/2045	गुरु	12/07/2046	शनि	15/03/2048	केतु	15/08/2050	शुक्र	16/07/2053
गुरु	11/06/2045	शनि	04/09/2046	बुध	17/07/2048	शुक्र	14/02/2051	सूर्य	03/09/2053
शनि	27/08/2045	बुध	23/10/2046	केतु	06/09/2048	सूर्य	10/04/2051	चंद्र	24/11/2053
बुध	04/11/2045	केतु	11/11/2046	शुक्र	30/01/2049	चंद्र	11/07/2051	मंग	20/01/2054
केतु	02/12/2045	शुक्र	07/01/2047	सूर्य	15/03/2049	मंग	13/09/2051	राहु	16/06/2054
शुक्र	21/02/2046	सूर्य	24/01/2047	चंद्र	27/05/2049	राहु	25/02/2052	गुरु	26/10/2054
सूर्य	18/03/2046	चंद्र	22/02/2047	मंग	17/07/2049	गुरु	20/07/2052	शनि	30/03/2055

शनि–केतु		शनि–शुक्र		शनि–सूर्य		शनि–चंद्र		शनि–मंग	
30/03/2055		08/05/2056		09/07/2059		20/06/2060		19/01/2062	
08/05/2056		09/07/2059		20/06/2060		19/01/2062		28/02/2063	
केतु	23/04/2055	शुक्र	17/11/2056	सूर्य	26/07/2059	चंद्र	07/08/2060	मंग	12/02/2062
शुक्र	29/06/2055	सूर्य	14/01/2057	चंद्र	24/08/2059	मंग	10/09/2060	राहु	13/04/2062
सूर्य	20/07/2055	चंद्र	20/04/2057	मंग	13/09/2059	राहु	05/12/2060	गुरु	06/06/2062
चंद्र	22/08/2055	मंग	26/06/2057	राहु	04/11/2059	गुरु	20/02/2061	शनि	09/08/2062
मंग	15/09/2055	राहु	17/12/2057	गुरु	20/12/2059	शनि	23/05/2061	बुध	06/10/2062
राहु	15/11/2055	गुरु	20/05/2058	शनि	13/02/2060	बुध	13/08/2061	केतु	29/10/2062
गुरु	08/01/2056	शनि	19/11/2058	बुध	03/04/2060	केतु	16/09/2061	शुक्र	05/01/2063
शनि	12/03/2056	बुध	02/05/2059	केतु	23/04/2060	शुक्र	21/12/2061	सूर्य	25/01/2063
बुध	08/05/2056	केतु	09/07/2059	शुक्र	20/06/2060	सूर्य	19/01/2062	चंद्र	28/02/2063

शनि–राहु		शनि–गुरु		बुध–बुध		बुध–केतु		बुध–शुक्र	
28/02/2063		04/01/2066		17/07/2068		14/12/2070		11/12/2071	
04/01/2066		17/07/2068		14/12/2070		11/12/2071		11/10/2074	
राहु	03/08/2063	गुरु	07/05/2066	बुध	19/11/2068	केतु	04/01/2071	शुक्र	31/05/2072
गुरु	20/12/2063	शनि	01/10/2066	केतु	09/01/2069	शुक्र	05/03/2071	सूर्य	22/07/2072
शनि	02/06/2064	बुध	09/02/2067	शुक्र	05/06/2069	सूर्य	23/03/2071	चंद्र	16/10/2072
बुध	27/10/2064	केतु	04/04/2067	सूर्य	19/07/2069	चंद्र	22/04/2071	मंग	16/12/2072
केतु	27/12/2064	शुक्र	05/09/2067	चंद्र	30/09/2069	मंग	14/05/2071	राहु	20/05/2073
शुक्र	18/06/2065	सूर्य	21/10/2067	मंग	20/11/2069	राहु	07/07/2071	गुरु	05/10/2073
सूर्य	09/08/2065	चंद्र	06/01/2068	राहु	01/04/2070	गुरु	24/08/2071	शनि	18/03/2074
चंद्र	04/11/2065	मंग	29/02/2068	गुरु	27/07/2070	शनि	21/10/2071	बुध	11/08/2074
मंग	04/01/2066	राहु	17/07/2068	शनि	14/12/2070	बुध	11/12/2071	केतु	11/10/2074

विंशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

बुध–सूर्य		बुध–चंद्र		बुध–मंग		बुध–राहु		बुध–गुरु	
11/10/2074		17/08/2075		16/01/2077		13/01/2078		01/08/2080	
17/08/2075		16/01/2077		13/01/2078		01/08/2080		07/11/2082	
सूर्य	26/10/2074	चंद्र	29/09/2075	मंग	06/02/2077	राहु	02/06/2078	गुरु	20/11/2080
चंद्र	21/11/2074	मंग	30/10/2075	राहु	01/04/2077	गुरु	04/10/2078	शनि	31/03/2081
मंग	09/12/2074	राहु	15/01/2076	गुरु	19/05/2077	शनि	28/02/2079	बुध	26/07/2081
राहु	25/01/2075	गुरु	24/03/2076	शनि	16/07/2077	बुध	10/07/2079	केतु	12/09/2081
गुरु	07/03/2075	शनि	14/06/2076	बुध	05/09/2077	केतु	02/09/2079	शुक्र	28/01/2082
शनि	25/04/2075	बुध	26/08/2076	केतु	26/09/2077	शुक्र	05/02/2080	सूर्य	11/03/2082
बुध	08/06/2075	केतु	26/09/2076	शुक्र	26/11/2077	सूर्य	22/03/2080	चंद्र	19/05/2082
केतु	26/06/2075	शुक्र	21/12/2076	सूर्य	14/12/2077	चंद्र	08/06/2080	मंग	06/07/2082
शुक्र	17/08/2075	सूर्य	16/01/2077	चंद्र	13/01/2078	मंग	01/08/2080	राहु	07/11/2082

बुध–शनि		केतु–केतु		केतु–शुक्र		केतु–सूर्य		केतु–चंद्र	
07/11/2082		17/07/2085		13/12/2085		13/02/2087		20/06/2087	
17/07/2085		13/12/2085		13/02/2087		20/06/2087		19/01/2088	
शनि	12/04/2083	केतु	26/07/2085	शुक्र	22/02/2086	सूर्य	19/02/2087	चंद्र	08/07/2087
बुध	29/08/2083	शुक्र	20/08/2085	सूर्य	16/03/2086	चंद्र	02/03/2087	मंग	21/07/2087
केतु	25/10/2083	सूर्य	27/08/2085	चंद्र	20/04/2086	मंग	09/03/2087	राहु	22/08/2087
शुक्र	06/04/2084	चंद्र	09/09/2085	मंग	15/05/2086	राहु	28/03/2087	गुरु	19/09/2087
सूर्य	25/05/2084	मंग	17/09/2085	राहु	18/07/2086	गुरु	14/04/2087	शनि	23/10/2087
चंद्र	15/08/2084	राहु	10/10/2085	गुरु	13/09/2086	शनि	05/05/2087	बुध	22/11/2087
मंग	12/10/2084	गुरु	30/10/2085	शनि	19/11/2086	बुध	23/05/2087	केतु	04/12/2087
राहु	08/03/2085	शनि	22/11/2085	बुध	19/01/2087	केतु	30/05/2087	शुक्र	09/01/2088
गुरु	17/07/2085	बुध	13/12/2085	केतु	13/02/2087	शुक्र	20/06/2087	सूर्य	19/01/2088

केतु–मंग		केतु–राहु		केतु–गुरु		केतु–शनि		केतु–बुध	
19/01/2088		17/06/2088		05/07/2089		11/06/2090		21/07/2091	
17/06/2088		05/07/2089		11/06/2090		21/07/2091		17/07/2092	
मंग	28/01/2088	राहु	13/08/2088	गुरु	20/08/2089	शनि	14/08/2090	बुध	10/09/2091
राहु	20/02/2088	गुरु	03/10/2088	शनि	13/10/2089	बुध	10/10/2090	केतु	01/10/2091
गुरु	10/03/2088	शनि	03/12/2088	बुध	30/11/2089	केतु	03/11/2090	शुक्र	01/12/2091
शनि	03/04/2088	बुध	26/01/2089	केतु	20/12/2089	शुक्र	10/01/2091	सूर्य	19/12/2091
बुध	24/04/2088	केतु	18/02/2089	शुक्र	15/02/2090	सूर्य	30/01/2091	चंद्र	18/01/2092
केतु	03/05/2088	शुक्र	23/04/2089	सूर्य	04/03/2090	चंद्र	05/03/2091	मंग	08/02/2092
शुक्र	28/05/2088	सूर्य	12/05/2089	चंद्र	01/04/2090	मंग	28/03/2091	राहु	02/04/2092
सूर्य	04/06/2088	चंद्र	13/06/2089	मंग	21/04/2090	राहु	28/05/2091	गुरु	21/05/2092
चंद्र	17/06/2088	मंग	05/07/2089	राहु	11/06/2090	गुरु	21/07/2091	शनि	17/07/2092

विंशोत्तरी दशा–सूक्ष्म

मंग–शुक्र–केतु		मंग–सूर्य–सूर्य		मंग–सूर्य–चंद्र		मंग–सूर्य–मंग	
17/07/2014 12:18		11/08/2014 08:52		17/08/2014 18:17		28/08/2014 09:57	
11/08/2014 08:52		17/08/2014 18:17		28/08/2014 09:57		04/09/2014 20:55	
केतु	18/07/2014 23:06	सूर्य	11/08/2014 16:32	चंद्र	18/08/2014 15:35	मंग	28/08/2014 20:23
शुक्र	23/07/2014 02:32	चंद्र	12/08/2014 05:20	मंग	19/08/2014 06:30	राहु	29/08/2014 23:14
सूर्य	24/07/2014 08:21	मंग	12/08/2014 14:16	राहु	20/08/2014 20:51	गुरु	30/08/2014 23:06
चंद्र	26/07/2014 10:04	राहु	13/08/2014 13:17	गुरु	22/08/2014 06:56	शनि	01/09/2014 03:26
मंग	27/07/2014 20:52	गुरु	14/08/2014 09:44	शनि	23/08/2014 23:25	बुध	02/09/2014 04:48
राहु	31/07/2014 14:21	शनि	15/08/2014 10:02	बुध	25/08/2014 11:38	केतु	02/09/2014 15:14
गुरु	03/08/2014 21:54	बुध	16/08/2014 07:46	केतु	26/08/2014 02:33	शुक्र	03/09/2014 21:04
शनि	07/08/2014 20:21	केतु	16/08/2014 16:43	शुक्र	27/08/2014 21:10	सूर्य	04/09/2014 06:01
बुध	11/08/2014 08:52	शुक्र	17/08/2014 18:17	सूर्य	28/08/2014 09:57	चंद्र	04/09/2014 20:55

मंग–सूर्य–राहु		मंग–सूर्य–गुरु		मंग–सूर्य–शनि		मंग–सूर्य–बुध	
04/09/2014 20:55		24/09/2014 01:08		11/10/2014 02:13		31/10/2014 08:00	
24/09/2014 01:08		11/10/2014 02:13		31/10/2014 08:00		18/11/2014 10:39	
राहु	07/09/2014 17:57	गुरु	26/09/2014 07:41	शनि	14/10/2014 07:08	बुध	02/11/2014 21:35
गुरु	10/09/2014 07:19	शनि	29/09/2014 00:27	बुध	17/10/2014 03:57	केतु	03/11/2014 22:56
शनि	13/09/2014 08:11	बुध	01/10/2014 10:24	केतु	18/10/2014 08:17	शुक्र	06/11/2014 23:22
बुध	16/09/2014 01:23	केतु	02/10/2014 10:16	शुक्र	21/10/2014 17:15	सूर्य	07/11/2014 21:06
केतु	17/09/2014 04:14	शुक्र	05/10/2014 06:27	सूर्य	22/10/2014 17:33	चंद्र	09/11/2014 09:19
शुक्र	20/09/2014 08:56	सूर्य	06/10/2014 02:54	चंद्र	24/10/2014 10:02	मंग	10/11/2014 10:41
सूर्य	21/09/2014 07:56	चंद्र	07/10/2014 13:00	मंग	25/10/2014 14:22	राहु	13/11/2014 03:53
चंद्र	22/09/2014 22:18	मंग	08/10/2014 12:51	राहु	28/10/2014 15:14	गुरु	15/11/2014 13:50
मंग	24/09/2014 01:08	राहु	11/10/2014 02:13	गुरु	31/10/2014 08:00	शनि	18/11/2014 10:39

मंग–सूर्य–केतु		मंग–सूर्य–शुक्र		मंग–चंद्र–चंद्र		मंग–चंद्र–मंग	
18/11/2014 10:39		25/11/2014 21:37		17/12/2014 04:58		03/01/2015 23:06	
25/11/2014 21:37		17/12/2014 04:58		03/01/2015 23:06		16/01/2015 09:23	
केतु	18/11/2014 21:05	शुक्र	29/11/2014 10:51	चंद्र	18/12/2014 16:29	मंग	04/01/2015 16:30
शुक्र	20/11/2014 02:55	सूर्य	30/11/2014 12:25	मंग	19/12/2014 17:20	राहु	06/01/2015 13:14
सूर्य	20/11/2014 11:52	चंद्र	02/12/2014 07:02	राहु	22/12/2014 09:15	गुरु	08/01/2015 05:01
चंद्र	21/11/2014 02:47	मंग	03/12/2014 12:51	गुरु	24/12/2014 18:04	शनि	10/01/2015 04:14
मंग	21/11/2014 13:13	राहु	06/12/2014 17:33	शनि	27/12/2014 13:33	बुध	11/01/2015 22:30
राहु	22/11/2014 16:04	गुरु	09/12/2014 13:44	बुध	30/12/2014 01:55	केतु	12/01/2015 15:54
गुरु	23/11/2014 15:56	शनि	12/12/2014 22:42	केतु	31/12/2014 02:46	शुक्र	14/01/2015 17:37
शनि	24/11/2014 20:16	बुध	15/12/2014 23:09	शुक्र	03/01/2015 01:47	सूर्य	15/01/2015 08:32
बुध	25/11/2014 21:37	केतु	17/12/2014 04:58	सूर्य	03/01/2015 23:06	चंद्र	16/01/2015 09:23

विंशोत्तरी दशा–सूक्ष्म

मंग–चंद्र–राहु		मंग–चंद्र–गुरु		मंग–चंद्र–शनि		मंग–चंद्र–बुध	
16/01/2015 09:23		17/02/2015 08:25		17/03/2015 18:13		20/04/2015 11:51	
17/02/2015 08:25		17/03/2015 18:13		20/04/2015 11:51		20/05/2015 16:16	
राहु	21/01/2015 04:26	गुरु	21/02/2015 03:19	शनि	23/03/2015 02:24	बुध	24/04/2015 18:28
गुरु	25/01/2015 10:42	शनि	25/02/2015 15:16	बुध	27/03/2015 21:06	केतु	26/04/2015 12:44
शनि	30/01/2015 12:09	बुध	01/03/2015 15:51	केतु	29/03/2015 20:20	शुक्र	01/05/2015 13:28
बुध	04/02/2015 00:49	केतु	03/03/2015 07:38	शुक्र	04/04/2015 11:16	सूर्य	03/05/2015 01:41
केतु	05/02/2015 21:33	शुक्र	08/03/2015 01:16	सूर्य	06/04/2015 03:45	चंद्र	05/05/2015 14:03
शुक्र	11/02/2015 05:24	सूर्य	09/03/2015 11:21	चंद्र	08/04/2015 23:13	मंग	07/05/2015 08:19
सूर्य	12/02/2015 19:45	चंद्र	11/03/2015 20:10	मंग	10/04/2015 22:27	राहु	11/05/2015 20:58
चंद्र	15/02/2015 11:40	मंग	13/03/2015 11:56	राहु	15/04/2015 23:54	गुरु	15/05/2015 21:34
मंग	17/02/2015 08:25	राहु	17/03/2015 18:13	गुरु	20/04/2015 11:51	शनि	20/05/2015 16:16

मंग–चंद्र–केतु		मंग–चंद्र–शुक्र		मंग–चंद्र–सूर्य		राहु–राहु–राहु	
20/05/2015 16:16		02/06/2015 02:33		07/07/2015 14:48		18/07/2015 06:28	
02/06/2015 02:33		07/07/2015 14:48		18/07/2015 06:28		13/12/2015 04:42	
केतु	21/05/2015 09:40	शुक्र	08/06/2015 00:35	सूर्य	08/07/2015 03:35	राहु	09/08/2015 11:00
शुक्र	23/05/2015 11:22	सूर्य	09/06/2015 19:12	चंद्र	09/07/2015 00:53	गुरु	29/08/2015 04:22
सूर्य	24/05/2015 02:17	चंद्र	12/06/2015 18:13	मंग	09/07/2015 15:48	शनि	21/09/2015 14:29
चंद्र	25/05/2015 03:09	मंग	14/06/2015 19:56	राहु	11/07/2015 06:09	बुध	12/10/2015 13:26
मंग	25/05/2015 20:33	राहु	20/06/2015 03:46	गुरु	12/07/2015 16:15	केतु	21/10/2015 04:32
राहु	27/05/2015 17:17	गुरु	24/06/2015 21:24	शनि	14/07/2015 08:43	शुक्र	14/11/2015 20:14
गुरु	29/05/2015 09:04	शनि	30/06/2015 12:21	बुध	15/07/2015 20:57	सूर्य	22/11/2015 05:45
शनि	31/05/2015 08:17	बुध	05/07/2015 13:05	केतु	16/07/2015 11:52	चंद्र	04/12/2015 13:36
बुध	02/06/2015 02:33	केतु	07/07/2015 14:48	शुक्र	18/07/2015 06:28	मंग	13/12/2015 04:42

राहु–राहु–गुरु		राहु–राहु–शनि		राहु–राहु–बुध		राहु–राहु–केतु	
13/12/2015 04:42		22/04/2016 16:28		25/09/2016 19:56		12/02/2017 12:55	
22/04/2016 16:28		25/09/2016 19:56		12/02/2017 12:55		11/04/2017 01:34	
गुरु	30/12/2015 17:28	शनि	17/05/2016 09:49	बुध	15/10/2016 14:56	केतु	15/02/2017 21:28
शनि	20/01/2016 13:08	बुध	08/06/2016 12:42	केतु	23/10/2016 18:32	शुक्र	25/02/2017 11:34
बुध	08/02/2016 04:12	केतु	17/06/2016 15:18	शुक्र	16/11/2016 01:21	सूर्य	28/02/2017 08:36
केतु	15/02/2016 20:17	शुक्र	13/07/2016 15:53	सूर्य	23/11/2016 01:00	चंद्र	05/03/2017 03:39
शुक्र	08/03/2016 18:15	सूर्य	21/07/2016 11:15	चंद्र	04/12/2016 16:25	मंग	08/03/2017 12:11
सूर्य	15/03/2016 08:02	चंद्र	03/08/2016 11:33	मंग	12/12/2016 20:01	राहु	17/03/2017 03:17
चंद्र	26/03/2016 07:01	मंग	12/08/2016 14:09	राहु	02/01/2017 18:58	गुरु	24/03/2017 19:22
मंग	02/04/2016 23:06	राहु	05/09/2016 00:16	गुरु	21/01/2017 10:02	शनि	02/04/2017 21:58
राहु	22/04/2016 16:28	गुरु	25/09/2016 19:56	शनि	12/02/2017 12:55	बुध	11/04/2017 01:34

विंशोत्तरी दशा–सूक्ष्म

राहु–राहु–शुक्र		राहु–राहु–सूर्य		राहु–राहु–चंद्र		राहु–राहु–मंग	
11/04/2017 01:34		22/09/2017 10:16		10/11/2017 17:41		31/01/2018 22:02	
22/09/2017 10:16		10/11/2017 17:41		31/01/2018 22:02		30/03/2018 10:40	
शुक्र	08/05/2017 11:01	सूर्य	24/09/2017 21:26	चंद्र	17/11/2017 14:02	मंग	04/02/2018 06:34
सूर्य	16/05/2017 16:15	चंद्र	29/09/2017 00:03	मंग	22/11/2017 09:06	राहु	12/02/2018 21:40
चंद्र	30/05/2017 08:59	मंग	01/10/2017 21:05	राहु	04/12/2017 16:57	गुरु	20/02/2018 13:45
मंग	08/06/2017 23:05	राहु	09/10/2017 06:36	गुरु	15/12/2017 15:55	शनि	01/03/2018 16:21
राहु	03/07/2017 14:47	गुरु	15/10/2017 20:23	शनि	28/12/2017 16:13	बुध	09/03/2018 19:56
गुरु	25/07/2017 12:45	शनि	23/10/2017 15:46	बुध	09/01/2018 07:38	केतु	13/03/2018 04:29
शनि	20/08/2017 13:20	बुध	30/10/2017 15:25	केतु	14/01/2018 02:41	शुक्र	22/03/2018 18:35
बुध	12/09/2017 20:10	केतु	02/11/2017 12:26	शुक्र	27/01/2018 19:25	सूर्य	25/03/2018 15:37
केतु	22/09/2017 10:16	शुक्र	10/11/2017 17:41	सूर्य	31/01/2018 22:02	चंद्र	30/03/2018 10:40

राहु–गुरु–गुरु		राहु–गुरु–शनि		राहु–गुरु–बुध		राहु–गुरु–केतु	
30/03/2018 10:40		25/07/2018 07:47		11/12/2018 02:52		14/04/2019 07:19	
25/07/2018 07:47		11/12/2018 02:52		14/04/2019 07:19		04/06/2019 10:33	
गुरु	15/04/2018 00:41	शनि	16/08/2018 07:13	बुध	28/12/2018 17:06	केतु	17/04/2019 06:54
शनि	03/05/2018 12:50	बुध	04/09/2018 23:07	केतु	04/01/2019 22:58	शुक्र	25/04/2019 19:26
बुध	20/05/2018 02:13	केतु	13/09/2018 01:26	शुक्र	25/01/2019 15:42	सूर्य	28/04/2019 08:48
केतु	26/05/2018 21:51	शुक्र	06/10/2018 04:36	सूर्य	31/01/2019 20:43	चंद्र	02/05/2019 15:04
शुक्र	15/06/2018 09:23	सूर्य	13/10/2018 03:10	चंद्र	11/02/2019 05:05	मंग	05/05/2019 14:40
सूर्य	21/06/2018 05:38	चंद्र	24/10/2018 16:45	मंग	18/02/2019 10:57	राहु	13/05/2019 06:45
चंद्र	30/06/2018 23:23	मंग	01/11/2018 19:04	राहु	09/03/2019 02:01	गुरु	20/05/2019 02:23
मंग	07/07/2018 19:01	राहु	22/11/2018 14:44	गुरु	25/03/2019 15:24	शनि	28/05/2019 04:42
राहु	25/07/2018 07:47	गुरु	11/12/2018 02:52	शनि	14/04/2019 07:19	बुध	04/06/2019 10:33

राहु–गुरु–शुक्र		राहु–गुरु–सूर्य		राहु–गुरु–चंद्र		राहु–गुरु–मंग	
04/06/2019 10:33		28/10/2019 12:57		11/12/2019 08:52		22/02/2020 10:04	
28/10/2019 12:57		11/12/2019 08:52		22/02/2020 10:04		13/04/2020 13:19	
शुक्र	28/06/2019 18:57	सूर्य	30/10/2019 17:33	चंद्र	17/12/2019 10:58	मंग	25/02/2020 09:40
सूर्य	06/07/2019 02:16	चंद्र	03/11/2019 09:12	मंग	21/12/2019 17:14	राहु	04/03/2020 01:45
चंद्र	18/07/2019 06:28	मंग	05/11/2019 22:34	राहु	01/01/2020 16:13	गुरु	10/03/2020 21:23
मंग	26/07/2019 19:01	राहु	12/11/2019 12:21	गुरु	11/01/2020 09:59	शनि	18/03/2020 23:41
राहु	17/08/2019 16:58	गुरु	18/11/2019 08:37	शनि	22/01/2020 23:34	बुध	26/03/2020 05:33
गुरु	06/09/2019 04:29	शनि	25/11/2019 07:10	बुध	02/02/2020 07:56	केतु	29/03/2020 05:08
शनि	29/09/2019 07:40	बुध	01/12/2019 12:11	केतु	06/02/2020 14:13	शुक्र	06/04/2020 17:41
बुध	20/10/2019 00:25	केतु	04/12/2019 01:33	शुक्र	18/02/2020 18:25	सूर्य	09/04/2020 07:02
केतु	28/10/2019 12:57	शुक्र	11/12/2019 08:52	सूर्य	22/02/2020 10:04	चंद्र	13/04/2020 13:19

विंशोत्तरी दशा–सूक्ष्म

राहु–गुरु–राहु	
13/04/2020 13:19	
23/08/2020 01:04	
राहु	03/05/2020 06:41
गुरु	20/05/2020 19:27
शनि	10/06/2020 15:06
बुध	29/06/2020 06:10
केतु	06/07/2020 22:15
शुक्र	28/07/2020 20:13
सूर्य	04/08/2020 10:00
चंद्र	15/08/2020 08:59
मंग	23/08/2020 01:04

राहु–शनि–शनि	
23/08/2020 01:04	
03/02/2021 20:44	
शनि	18/09/2020 03:23
बुध	11/10/2020 11:46
केतु	21/10/2020 02:31
शुक्र	17/11/2020 13:47
सूर्य	25/11/2020 19:34
चंद्र	09/12/2020 13:13
मंग	19/12/2020 03:58
राहु	12/01/2021 21:18
गुरु	03/02/2021 20:44

राहु–शनि–बुध	
03/02/2021 20:44	
01/07/2021 08:00	
बुध	24/02/2021 18:08
केतु	05/03/2021 08:35
शुक्र	29/03/2021 22:28
सूर्य	06/04/2021 07:26
चंद्र	18/04/2021 14:22
मंग	27/04/2021 04:49
राहु	19/05/2021 07:43
गुरु	07/06/2021 23:37
शनि	01/07/2021 08:00

राहु–शनि–केतु	
01/07/2021 08:00	
31/08/2021 01:21	
केतु	04/07/2021 21:01
शुक्र	14/07/2021 23:54
सूर्य	18/07/2021 00:46
चंद्र	23/07/2021 02:13
मंग	26/07/2021 15:14
राहु	04/08/2021 17:50
गुरु	12/08/2021 20:09
शनि	22/08/2021 10:53
बुध	31/08/2021 01:21

राहु–शनि–शुक्र	
31/08/2021 01:21	
20/02/2022 13:12	
शुक्र	28/09/2021 23:19
सूर्य	07/10/2021 15:31
चंद्र	22/10/2021 02:30
मंग	01/11/2021 05:24
राहु	27/11/2021 05:58
गुरु	20/12/2021 09:09
शनि	16/01/2022 20:26
बुध	10/02/2022 10:18
केतु	20/02/2022 13:12

राहु–शनि–सूर्य	
20/02/2022 13:12	
13/04/2022 14:21	
सूर्य	23/02/2022 03:39
चंद्र	27/02/2022 11:45
मंग	02/03/2022 12:37
राहु	10/03/2022 08:00
गुरु	17/03/2022 06:33
शनि	25/03/2022 12:20
बुध	01/04/2022 21:18
केतु	04/04/2022 22:10
शुक्र	13/04/2022 14:21

राहु–शनि–चंद्र	
13/04/2022 14:21	
09/07/2022 08:17	
चंद्र	20/04/2022 19:51
मंग	25/04/2022 21:18
राहु	08/05/2022 21:35
गुरु	20/05/2022 11:10
शनि	03/06/2022 04:49
बुध	15/06/2022 11:45
केतु	20/06/2022 13:12
शुक्र	05/07/2022 00:11
सूर्य	09/07/2022 08:17

राहु–शनि–मंग	
09/07/2022 08:17	
08/09/2022 01:38	
मंग	12/07/2022 21:17
राहु	21/07/2022 23:54
गुरु	30/07/2022 02:12
शनि	08/08/2022 16:57
बुध	17/08/2022 07:25
केतु	20/08/2022 20:25
शुक्र	30/08/2022 23:19
सूर्य	03/09/2022 00:11
चंद्र	08/09/2022 01:38

राहु–शनि–राहु	
08/09/2022 01:38	
11/02/2023 05:05	
राहु	01/10/2022 11:45
गुरु	22/10/2022 07:24
शनि	16/11/2022 00:45
बुध	08/12/2022 03:39
केतु	17/12/2022 06:15
शुक्र	12/01/2023 06:50
सूर्य	20/01/2023 02:12
चंद्र	02/02/2023 02:29
मंग	11/02/2023 05:05

राहु–शनि–गुरु	
11/02/2023 05:05	
30/06/2023 00:10	
गुरु	01/03/2023 17:14
शनि	23/03/2023 16:39
बुध	12/04/2023 08:34
केतु	20/04/2023 10:52
शुक्र	13/05/2023 14:03
सूर्य	20/05/2023 12:36
चंद्र	01/06/2023 02:12
मंग	09/06/2023 04:31
राहु	30/06/2023 00:10

राहु–बुध–बुध	
30/06/2023 00:10	
08/11/2023 22:53	
बुध	18/07/2023 16:47
केतु	26/07/2023 09:31
शुक्र	17/08/2023 09:18
सूर्य	23/08/2023 23:38
चंद्र	03/09/2023 23:32
मंग	11/09/2023 16:15
राहु	01/10/2023 11:16
गुरु	19/10/2023 01:30
शनि	08/11/2023 22:53

राहु–बुध–केतु	
08/11/2023 22:53	
02/01/2024 06:50	
केतु	12/11/2023 02:57
शुक्र	21/11/2023 04:17
सूर्य	23/11/2023 21:28
चंद्र	28/11/2023 10:08
मंग	01/12/2023 14:12
राहु	09/12/2023 17:47
गुरु	16/12/2023 23:39
शनि	25/12/2023 14:06
बुध	02/01/2024 06:50

विंशोत्तरी दशा–प्राण

मंग–शुक्र–केतु–राहु		मंग–शुक्र–केतु–गुरु		मंग–शुक्र–केतु–शनि		मंग–शुक्र–केतु–बुध	
27/07/2014 20:52		31/07/2014 14:21		03/08/2014 21:54		07/08/2014 20:21	
31/07/2014 14:21		03/08/2014 21:54		07/08/2014 20:21		11/08/2014 08:52	
राहु	28/07/2014 10:18	गुरु	01/08/2014 00:58	शनि	04/08/2014 12:51	बुध	08/08/2014 08:20
गुरु	28/07/2014 22:13	शनि	01/08/2014 13:33	बुध	05/08/2014 02:14	केतु	08/08/2014 13:16
शनि	29/07/2014 12:24	बुध	02/08/2014 00:49	केतु	05/08/2014 07:45	शुक्र	09/08/2014 03:21
बुध	30/07/2014 01:04	केतु	02/08/2014 05:28	शुक्र	05/08/2014 23:29	सूर्य	09/08/2014 07:34
केतु	30/07/2014 06:17	शुक्र	02/08/2014 18:43	सूर्य	06/08/2014 04:13	चंद्र	09/08/2014 14:37
शुक्र	30/07/2014 21:12	सूर्य	02/08/2014 22:42	चंद्र	06/08/2014 12:05	मंग	09/08/2014 19:33
सूर्य	31/07/2014 01:41	चंद्र	03/08/2014 05:20	मंग	06/08/2014 17:36	राहु	10/08/2014 08:13
चंद्र	31/07/2014 09:08	मंग	03/08/2014 09:58	राहु	07/08/2014 07:46	गुरु	10/08/2014 19:29
मंग	31/07/2014 14:21	राहु	03/08/2014 21:54	गुरु	07/08/2014 20:21	शनि	11/08/2014 08:52

मंग–सूर्य–सूर्य–सूर्य		मंग–सूर्य–सूर्य–चंद्र		मंग–सूर्य–सूर्य–मंग		मंग–सूर्य–सूर्य–राहु	
11/08/2014 08:52		11/08/2014 16:32		12/08/2014 05:20		12/08/2014 14:16	
11/08/2014 16:32		12/08/2014 05:20		12/08/2014 14:16		13/08/2014 13:17	
सूर्य	11/08/2014 09:15	चंद्र	11/08/2014 17:36	मंग	12/08/2014 05:51	राहु	12/08/2014 17:44
चंद्र	11/08/2014 09:54	मंग	11/08/2014 18:21	राहु	12/08/2014 07:11	गुरु	12/08/2014 20:48
मंग	11/08/2014 10:20	राहु	11/08/2014 20:16	गुरु	12/08/2014 08:23	शनि	13/08/2014 00:26
राहु	11/08/2014 11:30	गुरु	11/08/2014 21:58	शनि	12/08/2014 09:48	बुध	13/08/2014 03:42
गुरु	11/08/2014 12:31	शनि	12/08/2014 00:00	बुध	12/08/2014 11:04	केतु	13/08/2014 05:02
शनि	11/08/2014 13:44	बुध	12/08/2014 01:49	केतु	12/08/2014 11:35	शुक्र	13/08/2014 08:52
बुध	11/08/2014 14:49	केतु	12/08/2014 02:33	शुक्र	12/08/2014 13:05	सूर्य	13/08/2014 10:01
केतु	11/08/2014 15:16	शुक्र	12/08/2014 04:41	सूर्य	12/08/2014 13:32	चंद्र	13/08/2014 11:57
शुक्र	11/08/2014 16:32	सूर्य	12/08/2014 05:20	चंद्र	12/08/2014 14:16	मंग	13/08/2014 13:17

मंग–सूर्य–सूर्य–गुरु		मंग–सूर्य–सूर्य–शनि		मंग–सूर्य–सूर्य–बुध		मंग–सूर्य–सूर्य–केतु	
13/08/2014 13:17		14/08/2014 09:44		15/08/2014 10:02		16/08/2014 07:46	
14/08/2014 09:44		15/08/2014 10:02		16/08/2014 07:46		16/08/2014 16:43	
गुरु	13/08/2014 16:01	शनि	14/08/2014 13:35	बुध	15/08/2014 13:06	केतु	16/08/2014 08:17
शनि	13/08/2014 19:15	बुध	14/08/2014 17:02	केतु	15/08/2014 14:22	शुक्र	16/08/2014 09:46
बुध	13/08/2014 22:09	केतु	14/08/2014 18:27	शुक्र	15/08/2014 18:00	सूर्य	16/08/2014 10:13
केतु	13/08/2014 23:20	शुक्र	14/08/2014 22:29	सूर्य	15/08/2014 19:05	चंद्र	16/08/2014 10:58
शुक्र	14/08/2014 02:45	सूर्य	14/08/2014 23:42	चंद्र	15/08/2014 20:54	मंग	16/08/2014 11:29
सूर्य	14/08/2014 03:46	चंद्र	15/08/2014 01:44	मंग	15/08/2014 22:10	राहु	16/08/2014 12:50
चंद्र	14/08/2014 05:29	मंग	15/08/2014 03:09	राहु	16/08/2014 01:25	गुरु	16/08/2014 14:01
मंग	14/08/2014 06:40	राहु	15/08/2014 06:47	गुरु	16/08/2014 04:19	शनि	16/08/2014 15:26
राहु	14/08/2014 09:44	गुरु	15/08/2014 10:02	शनि	16/08/2014 07:46	बुध	16/08/2014 16:43

विंशोत्तरी दशा–प्राण

मंग–सूर्य–सूर्य–शुक्र	
16/08/2014 16:43	
17/08/2014 18:17	
शुक्र	16/08/2014 20:58
सूर्य	16/08/2014 22:15
चंद्र	17/08/2014 00:23
मंग	17/08/2014 01:52
राहु	17/08/2014 05:42
गुरु	17/08/2014 09:07
शनि	17/08/2014 13:10
बुध	17/08/2014 16:47
केतु	17/08/2014 18:17

मंग–सूर्य–चंद्र–चंद्र	
17/08/2014 18:17	
18/08/2014 15:35	
चंद्र	17/08/2014 20:03
मंग	17/08/2014 21:18
राहु	18/08/2014 00:29
गुरु	18/08/2014 03:20
शनि	18/08/2014 06:42
बुध	18/08/2014 09:43
केतु	18/08/2014 10:58
शुक्र	18/08/2014 14:31
सूर्य	18/08/2014 15:35

मंग–सूर्य–चंद्र–मंग	
18/08/2014 15:35	
19/08/2014 06:30	
मंग	18/08/2014 16:27
राहु	18/08/2014 18:41
गुरु	18/08/2014 20:41
शनि	18/08/2014 23:02
बुध	19/08/2014 01:09
केतु	19/08/2014 02:01
शुक्र	19/08/2014 04:30
सूर्य	19/08/2014 05:15
चंद्र	19/08/2014 06:30

मंग–सूर्य–चंद्र–राहु	
19/08/2014 06:30	
20/08/2014 20:51	
राहु	19/08/2014 12:15
गुरु	19/08/2014 17:22
शनि	19/08/2014 23:26
बुध	20/08/2014 04:52
केतु	20/08/2014 07:06
शुक्र	20/08/2014 13:30
सूर्य	20/08/2014 15:25
चंद्र	20/08/2014 18:37
मंग	20/08/2014 20:51

मंग–सूर्य–चंद्र–गुरु	
20/08/2014 20:51	
22/08/2014 06:56	
गुरु	21/08/2014 01:24
शनि	21/08/2014 06:47
बुध	21/08/2014 11:37
केतु	21/08/2014 13:37
शुक्र	21/08/2014 19:17
सूर्य	21/08/2014 21:00
चंद्र	21/08/2014 23:50
मंग	22/08/2014 01:49
राहु	22/08/2014 06:56

मंग–सूर्य–चंद्र–शनि	
22/08/2014 06:56	
23/08/2014 23:25	
शनि	22/08/2014 13:21
बुध	22/08/2014 19:05
केतु	22/08/2014 21:27
शुक्र	23/08/2014 04:11
सूर्य	23/08/2014 06:13
चंद्र	23/08/2014 09:35
मंग	23/08/2014 11:57
राहु	23/08/2014 18:01
गुरु	23/08/2014 23:25

मंग–सूर्य–चंद्र–बुध	
23/08/2014 23:25	
25/08/2014 11:38	
बुध	24/08/2014 04:33
केतु	24/08/2014 06:40
शुक्र	24/08/2014 12:42
सूर्य	24/08/2014 14:31
चंद्र	24/08/2014 17:32
मंग	24/08/2014 19:39
राहु	25/08/2014 01:05
गुरु	25/08/2014 05:54
शनि	25/08/2014 11:38

मंग–सूर्य–चंद्र–केतु	
25/08/2014 11:38	
26/08/2014 02:33	
केतु	25/08/2014 12:31
शुक्र	25/08/2014 15:00
सूर्य	25/08/2014 15:45
चंद्र	25/08/2014 16:59
मंग	25/08/2014 17:51
राहु	25/08/2014 20:06
गुरु	25/08/2014 22:05
शनि	26/08/2014 00:27
बुध	26/08/2014 02:33

मंग–सूर्य–चंद्र–शुक्र	
26/08/2014 02:33	
27/08/2014 21:10	
शुक्र	26/08/2014 09:39
सूर्य	26/08/2014 11:47
चंद्र	26/08/2014 15:20
मंग	26/08/2014 17:49
राहु	27/08/2014 00:13
गुरु	27/08/2014 05:54
शनि	27/08/2014 12:39
बुध	27/08/2014 18:41
केतु	27/08/2014 21:10

मंग–सूर्य–चंद्र–सूर्य	
27/08/2014 21:10	
28/08/2014 09:57	
सूर्य	27/08/2014 21:48
चंद्र	27/08/2014 22:52
मंग	27/08/2014 23:37
राहु	28/08/2014 01:32
गुरु	28/08/2014 03:14
शनि	28/08/2014 05:16
बुध	28/08/2014 07:04
केतु	28/08/2014 07:49
शुक्र	28/08/2014 09:57

मंग–सूर्य–मंग–मंग	
28/08/2014 09:57	
28/08/2014 20:23	
मंग	28/08/2014 10:34
राहु	28/08/2014 12:08
गुरु	28/08/2014 13:31
शनि	28/08/2014 15:10
बुध	28/08/2014 16:39
केतु	28/08/2014 17:16
शुक्र	28/08/2014 19:00
सूर्य	28/08/2014 19:31
चंद्र	28/08/2014 20:23

मंग–सूर्य–मंग–राहु	
28/08/2014 20:23	
29/08/2014 23:14	
राहु	29/08/2014 00:25
गुरु	29/08/2014 04:00
शनि	29/08/2014 08:15
बुध	29/08/2014 12:03
केतु	29/08/2014 13:37
शुक्र	29/08/2014 18:05
सूर्य	29/08/2014 19:26
चंद्र	29/08/2014 21:40
मंग	29/08/2014 23:14

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 3 वर्ष 5 मास 26 दिन

गुरु		शनि		केतु		चन्द्र		बुध	
05/03/1987		31/08/1990		30/08/2004		31/08/2019		31/08/2035	
31/08/1990		30/08/2004		31/08/2019		31/08/2035		30/08/2052	
गुरु	00/00/0000	शनि	09/05/1992	केतु	09/08/2006	चंद्र	14/11/2021	बुध	26/02/2038
शनि	00/00/0000	केतु	01/03/1994	चंद्र	02/09/2008	बुध	19/03/2024	शुक्र	16/10/2040
केतु	00/00/0000	चंद्र	04/02/1996	बुध	14/11/2010	शुक्र	12/09/2026	सूर्य	28/05/2042
चंद्र	00/00/0000	बुध	23/02/1998	शुक्र	13/03/2013	सूर्य	19/03/2028	मंग	29/02/2044
बुध	05/03/1987	शुक्र	26/04/2000	सूर्य	15/08/2014	मंग	14/11/2029	गुरु	25/01/2046
शुक्र	01/02/1988	सूर्य	24/08/2001	मंग	04/03/2016	गुरु	31/08/2031	शनि	14/02/2048
सूर्य	26/04/1989	मंग	04/02/2003	गुरु	08/11/2017	शनि	05/08/2033	केतु	27/04/2050
मंग	31/08/1990	गुरु	30/08/2004	शनि	31/08/2019	केतु	31/08/2035	चंद्र	30/08/2052

शुक्र		सूर्य		मंगल		गुरु	
30/08/2052		31/08/2070		30/08/2081		30/08/2093	
31/08/2070		30/08/2081		30/08/2093		00/00/0000	
शुक्र	16/06/2055	सूर्य	16/09/2071	मंग	27/11/2082	गुरु	13/02/2095
सूर्य	01/03/2057	मंग	04/11/2072	गुरु	01/04/2084	शनि	09/09/2096
मंग	10/01/2059	गुरु	28/01/2074	शनि	12/09/2085	केतु	16/05/2098
गुरु	16/01/2061	शनि	28/05/2075	केतु	02/04/2087	चंद्र	01/03/2100
शनि	20/03/2063	केतु	29/10/2076	चंद्र	26/11/2088	बुध	26/01/2102
केतु	17/07/2065	चंद्र	06/05/2078	बुध	31/08/2090	शुक्र	06/03/2103
चंद्र	10/01/2068	बुध	16/12/2079	शुक्र	11/07/2092	सूर्य	00/00/0000
बुध	31/08/2070	शुक्र	30/08/2081	सूर्य	30/08/2093	मंग	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

गुरु–शुक्र		गुरु–सूर्य		गुरु–मंग		शनि–शनि		शनि–केतु	
05/03/1987		01/02/1988		26/04/1989		31/08/1990		09/05/1992	
01/02/1988		26/04/1989		31/08/1990		09/05/1992		01/03/1994	
शुक्र	00/00/0000	सूर्य	15/03/1988	मंग	16/06/1989	शनि	13/11/1990	केतु	02/08/1992
सूर्य	00/00/0000	मंग	30/04/1988	गुरु	10/08/1989	केतु	01/02/1991	चंद्र	01/11/1992
मंग	00/00/0000	गुरु	20/06/1988	शनि	09/10/1989	चंद्र	27/04/1991	बुध	06/02/1993
गुरु	05/03/1987	शनि	13/08/1988	केतु	11/12/1989	बुध	26/07/1991	शुक्र	20/05/1993
शनि	02/04/1987	केतु	10/10/1988	चंद्र	17/02/1990	शुक्र	30/10/1991	सूर्य	22/07/1993
केतु	07/07/1987	चंद्र	12/12/1988	बुध	30/04/1990	सूर्य	28/12/1991	मंग	28/09/1993
चंद्र	16/10/1987	बुध	16/02/1989	शुक्र	15/07/1990	मंग	01/03/1992	गुरु	11/12/1993
बुध	01/02/1988	शुक्र	26/04/1989	सूर्य	31/08/1990	गुरु	09/05/1992	शनि	01/03/1994

शनि–चंद्र		शनि–बुध		शनि–शुक्र		शनि–सूर्य		शनि–मंग	
01/03/1994		04/02/1996		23/02/1998		26/04/2000		24/08/2001	
04/02/1996		23/02/1998		26/04/2000		24/08/2001		04/02/2003	
चंद्र	06/06/1994	बुध	24/05/1996	शुक्र	26/06/1998	सूर्य	11/06/2000	मंग	18/10/2001
बुध	18/09/1994	शुक्र	17/09/1996	सूर्य	09/09/1998	मंग	31/07/2000	गुरु	16/12/2001
शुक्र	05/01/1995	सूर्य	27/11/1996	मंग	30/11/1998	गुरु	24/09/2000	शनि	18/02/2002
सूर्य	13/03/1995	मंग	13/02/1997	गुरु	27/02/1999	शनि	21/11/2000	केतु	27/04/2002
मंग	25/05/1995	गुरु	08/05/1997	शनि	03/06/1999	केतु	23/01/2001	चंद्र	09/07/2002
गुरु	12/08/1995	शनि	06/08/1997	केतु	13/09/1999	चंद्र	31/03/2001	बुध	25/09/2002
शनि	05/11/1995	केतु	11/11/1997	चंद्र	01/01/2000	बुध	10/06/2001	शुक्र	16/12/2002
केतु	04/02/1996	चंद्र	23/02/1998	बुध	26/04/2000	शुक्र	24/08/2001	सूर्य	04/02/2003

शनि–गुरु		केतु–केतु		केतु–चंद्र		केतु–बुध		केतु–शुक्र	
04/02/2003		30/08/2004		09/08/2006		02/09/2008		14/11/2010	
30/08/2004		09/08/2006		02/09/2008		14/11/2010		13/03/2013	
गुरु	09/04/2003	केतु	30/11/2004	चंद्र	21/11/2006	बुध	29/12/2008	शुक्र	26/03/2011
शनि	17/06/2003	चंद्र	07/03/2005	बुध	12/03/2007	शुक्र	03/05/2009	सूर्य	15/06/2011
केतु	31/08/2003	बुध	19/06/2005	शुक्र	07/07/2007	सूर्य	18/07/2009	मंग	11/09/2011
चंद्र	18/11/2003	शुक्र	07/10/2005	सूर्य	16/09/2007	मंग	09/10/2009	गुरु	15/12/2011
बुध	10/02/2004	सूर्य	13/12/2005	मंग	04/12/2007	गुरु	07/01/2010	शनि	27/03/2012
शुक्र	08/05/2004	मंग	25/02/2006	गुरु	26/02/2008	शनि	14/04/2010	केतु	14/07/2012
सूर्य	02/07/2004	गुरु	15/05/2006	शनि	28/05/2008	केतु	26/07/2010	चंद्र	09/11/2012
मंग	30/08/2004	शनि	09/08/2006	केतु	02/09/2008	चंद्र	14/11/2010	बुध	13/03/2013

षोडशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

केतु–सूर्य		केतु–मंग		केतु–गुरु		केतु–शनि		चंद्र–चंद्र	
13/03/2013		15/08/2014		04/03/2016		08/11/2017		31/08/2019	
15/08/2014		04/03/2016		08/11/2017		31/08/2019		14/11/2021	
सूर्य	02/05/2013	मंग	12/10/2014	गुरु	11/05/2016	शनि	26/01/2018	चंद्र	20/12/2019
मंग	24/06/2013	गुरु	15/12/2014	शनि	25/07/2016	केतु	22/04/2018	बुध	16/04/2020
गुरु	22/08/2013	शनि	21/02/2015	केतु	12/10/2016	चंद्र	22/07/2018	शुक्र	19/08/2020
शनि	23/10/2013	केतु	06/05/2015	चंद्र	05/01/2017	बुध	27/10/2018	सूर्य	04/11/2020
केतु	29/12/2013	चंद्र	23/07/2015	बुध	05/04/2017	शुक्र	07/02/2019	मंग	26/01/2021
चंद्र	11/03/2014	बुध	14/10/2015	शुक्र	09/07/2017	सूर्य	10/04/2019	गुरु	26/04/2021
बुध	26/05/2014	शुक्र	10/01/2016	सूर्य	05/09/2017	मंग	18/06/2019	शनि	02/08/2021
शुक्र	15/08/2014	सूर्य	04/03/2016	मंग	08/11/2017	गुरु	31/08/2019	केतु	14/11/2021

चंद्र–बुध		चंद्र–शुक्र		चंद्र–सूर्य		चंद्र–मंग		चंद्र–गुरु	
14/11/2021		19/03/2024		12/09/2026		19/03/2028		14/11/2029	
19/03/2024		12/09/2026		19/03/2028		14/11/2029		31/08/2031	
बुध	19/03/2022	शुक्र	07/08/2024	सूर्य	04/11/2026	मंग	21/05/2028	गुरु	26/01/2030
शुक्र	30/07/2022	सूर्य	01/11/2024	मंग	31/12/2026	गुरु	28/07/2028	शनि	15/04/2030
सूर्य	20/10/2022	मंग	03/02/2025	गुरु	03/03/2027	शनि	09/10/2028	केतु	09/07/2030
मंग	16/01/2023	गुरु	16/05/2025	शनि	09/05/2027	केतु	26/12/2028	चंद्र	07/10/2030
गुरु	22/04/2023	शनि	02/09/2025	केतु	20/07/2027	चंद्र	19/03/2029	बुध	11/01/2031
शनि	03/08/2023	केतु	28/12/2025	चंद्र	04/10/2027	बुध	16/06/2029	शुक्र	23/04/2031
केतु	22/11/2023	चंद्र	02/05/2026	बुध	24/12/2027	शुक्र	18/09/2029	सूर्य	24/06/2031
चंद्र	19/03/2024	बुध	12/09/2026	शुक्र	19/03/2028	सूर्य	14/11/2029	मंग	31/08/2031

चंद्र–शनि		चंद्र–केतु		बुध–बुध		बुध–शुक्र		बुध–सूर्य	
31/08/2031		05/08/2033		31/08/2035		26/02/2038		16/10/2040	
05/08/2033		31/08/2035		26/02/2038		16/10/2040		28/05/2042	
शनि	24/11/2031	केतु	11/11/2033	बुध	11/01/2036	शुक्र	25/07/2038	सूर्य	11/12/2040
केतु	23/02/2032	चंद्र	23/02/2034	शुक्र	31/05/2036	सूर्य	25/10/2038	मंग	10/02/2041
चंद्र	30/05/2032	बुध	14/06/2034	सूर्य	26/08/2036	मंग	01/02/2039	गुरु	17/04/2041
बुध	11/09/2032	शुक्र	09/10/2034	मंग	28/11/2036	गुरु	20/05/2039	शनि	27/06/2041
शुक्र	29/12/2032	सूर्य	20/12/2034	गुरु	10/03/2037	शनि	14/09/2039	केतु	11/09/2041
सूर्य	06/03/2033	मंग	08/03/2035	शनि	28/06/2037	केतु	16/01/2040	चंद्र	01/12/2041
मंग	18/05/2033	गुरु	01/06/2035	केतु	23/10/2037	चंद्र	28/05/2040	बुध	26/02/2042
गुरु	05/08/2033	शनि	31/08/2035	चंद्र	26/02/2038	बुध	16/10/2040	शुक्र	28/05/2042

षोडशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

बुध–मंग		बुध–गुरु		बुध–शनि		बुध–केतु		बुध–चंद्र	
28/05/2042		29/02/2044		25/01/2046		14/02/2048		27/04/2050	
29/02/2044		25/01/2046		14/02/2048		27/04/2050		30/08/2052	
मंग	03/08/2042	गुरु	17/05/2044	शनि	26/04/2046	केतु	28/05/2048	चंद्र	23/08/2050
गुरु	14/10/2042	शनि	09/08/2044	केतु	01/08/2046	चंद्र	15/09/2048	बुध	26/12/2050
शनि	30/12/2042	केतु	07/11/2044	चंद्र	12/11/2046	बुध	11/01/2049	शुक्र	08/05/2051
केतु	23/03/2043	चंद्र	11/02/2045	बुध	02/03/2047	शुक्र	16/05/2049	सूर्य	28/07/2051
चंद्र	20/06/2043	बुध	24/05/2045	शुक्र	26/06/2047	सूर्य	31/07/2049	मंग	25/10/2051
बुध	22/09/2043	शुक्र	09/09/2045	सूर्य	05/09/2047	मंग	22/10/2049	गुरु	29/01/2052
शुक्र	31/12/2043	सूर्य	14/11/2045	मंग	22/11/2047	गुरु	20/01/2050	शनि	11/05/2052
सूर्य	29/02/2044	मंग	25/01/2046	गुरु	14/02/2048	शनि	27/04/2050	केतु	30/08/2052

शुक्र–शुक्र		शुक्र–सूर्य		शुक्र–मंग		शुक्र–गुरु		शुक्र–शनि	
30/08/2052		16/06/2055		01/03/2057		10/01/2059		16/01/2061	
16/06/2055		01/03/2057		10/01/2059		16/01/2061		20/03/2063	
शुक्र	04/02/2053	सूर्य	14/08/2055	मंग	10/05/2057	गुरु	02/04/2059	शनि	21/04/2061
सूर्य	12/05/2053	मंग	18/10/2055	गुरु	25/07/2057	शनि	30/06/2059	केतु	02/08/2061
मंग	26/08/2053	गुरु	27/12/2055	शनि	15/10/2057	केतु	04/10/2059	चंद्र	19/11/2061
गुरु	18/12/2053	शनि	11/03/2056	केतु	11/01/2058	चंद्र	13/01/2060	बुध	16/03/2062
शनि	20/04/2054	केतु	31/05/2056	चंद्र	15/04/2058	बुध	30/04/2060	शुक्र	17/07/2062
केतु	30/08/2054	चंद्र	25/08/2056	बुध	24/07/2058	शुक्र	23/08/2060	सूर्य	30/09/2062
चंद्र	18/01/2055	बुध	24/11/2056	शुक्र	06/11/2058	सूर्य	31/10/2060	मंग	21/12/2062
बुध	16/06/2055	शुक्र	01/03/2057	सूर्य	10/01/2059	मंग	16/01/2061	गुरु	20/03/2063

शुक्र–केतु		शुक्र–चंद्र		शुक्र–बुध		सूर्य–सूर्य		सूर्य–मंग	
20/03/2063		17/07/2065		10/01/2068		31/08/2070		16/09/2071	
17/07/2065		10/01/2068		31/08/2070		16/09/2071		04/11/2072	
केतु	08/07/2063	चंद्र	19/11/2065	बुध	30/05/2068	सूर्य	06/10/2070	मंग	29/10/2071
चंद्र	02/11/2063	बुध	01/04/2066	शुक्र	27/10/2068	मंग	14/11/2070	गुरु	14/12/2071
बुध	06/03/2064	शुक्र	20/08/2066	सूर्य	26/01/2069	गुरु	27/12/2070	शनि	02/02/2072
शुक्र	16/07/2064	सूर्य	14/11/2066	मंग	06/05/2069	शनि	11/02/2071	केतु	27/03/2072
सूर्य	04/10/2064	मंग	16/02/2067	गुरु	22/08/2069	केतु	01/04/2071	चंद्र	23/05/2072
मंग	31/12/2064	गुरु	28/05/2067	शनि	16/12/2069	चंद्र	24/05/2071	बुध	23/07/2072
गुरु	06/04/2065	शनि	15/09/2067	केतु	20/04/2070	बुध	18/07/2071	शुक्र	26/09/2072
शनि	17/07/2065	केतु	10/01/2068	चंद्र	31/08/2070	शुक्र	16/09/2071	सूर्य	04/11/2072

षोडशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

सूर्य–गुरु		सूर्य–शनि		सूर्य–केतु		सूर्य–चंद्र		सूर्य–बुध	
04/11/2072		28/01/2074		28/05/2075		29/10/2076		06/05/2078	
28/01/2074		28/05/2075		29/10/2076		06/05/2078		16/12/2079	
गुरु	25/12/2072	शनि	28/03/2074	केतु	04/08/2075	चंद्र	13/01/2077	बुध	31/07/2078
शनि	17/02/2073	केतु	30/05/2074	चंद्र	14/10/2075	बुध	05/04/2077	शुक्र	31/10/2078
केतु	16/04/2073	चंद्र	05/08/2074	बुध	29/12/2075	शुक्र	30/06/2077	सूर्य	26/12/2078
चंद्र	17/06/2073	बुध	15/10/2074	शुक्र	19/03/2076	सूर्य	21/08/2077	मंग	24/02/2079
बुध	22/08/2073	शुक्र	29/12/2074	सूर्य	07/05/2076	मंग	17/10/2077	गुरु	01/05/2079
शुक्र	31/10/2073	सूर्य	13/02/2075	मंग	30/06/2076	गुरु	19/12/2077	शनि	12/07/2079
सूर्य	13/12/2073	मंग	04/04/2075	गुरु	27/08/2076	शनि	23/02/2078	केतु	26/09/2079
मंग	28/01/2074	गुरु	28/05/2075	शनि	29/10/2076	केतु	06/05/2078	चंद्र	16/12/2079

सूर्य–शुक्र		मंग–मंग		मंग–गुरु		मंग–शनि		मंग–केतु	
16/12/2079		30/08/2081		27/11/2082		01/04/2084		12/09/2085	
30/08/2081		27/11/2082		01/04/2084		12/09/2085		02/04/2087	
शुक्र	22/03/2080	मंग	16/10/2081	गुरु	21/01/2083	शनि	04/06/2084	केतु	24/11/2085
सूर्य	20/05/2080	गुरु	06/12/2081	शनि	21/03/2083	केतु	11/08/2084	चंद्र	10/02/2086
मंग	23/07/2080	शनि	30/01/2082	केतु	24/05/2083	चंद्र	23/10/2084	बुध	04/05/2086
गुरु	01/10/2080	केतु	29/03/2082	चंद्र	30/07/2083	बुध	09/01/2085	शुक्र	31/07/2086
शनि	15/12/2080	चंद्र	31/05/2082	बुध	10/10/2083	शुक्र	01/04/2085	सूर्य	23/09/2086
केतु	06/03/2081	बुध	05/08/2082	शुक्र	26/12/2083	सूर्य	21/05/2085	मंग	21/11/2086
चंद्र	31/05/2081	शुक्र	15/10/2082	सूर्य	10/02/2084	मंग	15/07/2085	गुरु	23/01/2087
बुध	30/08/2081	सूर्य	27/11/2082	मंग	01/04/2084	गुरु	12/09/2085	शनि	02/04/2087

मंग–चंद्र		मंग–बुध		मंग–शुक्र		मंग–सूर्य		गुरु–गुरु	
02/04/2087		26/11/2088		31/08/2090		11/07/2092		30/08/2093	
26/11/2088		31/08/2090		11/07/2092		30/08/2093		13/02/2095	
चंद्र	24/06/2087	बुध	28/02/2089	शुक्र	14/12/2090	सूर्य	19/08/2092	गुरु	29/10/2093
बुध	21/09/2087	शुक्र	08/06/2089	सूर्य	17/02/2091	मंग	01/10/2092	शनि	01/01/2094
शुक्र	23/12/2087	सूर्य	08/08/2089	मंग	28/04/2091	गुरु	17/11/2092	केतु	11/03/2094
सूर्य	19/02/2088	मंग	13/10/2089	गुरु	13/07/2091	शनि	06/01/2093	चंद्र	23/05/2094
मंग	21/04/2088	गुरु	24/12/2089	शनि	03/10/2091	केतु	01/03/2093	बुध	09/08/2094
गुरु	28/06/2088	शनि	12/03/2090	केतु	30/12/2091	चंद्र	27/04/2093	शुक्र	31/10/2094
शनि	09/09/2088	केतु	03/06/2090	चंद्र	02/04/2092	बुध	27/06/2093	सूर्य	20/12/2094
केतु	26/11/2088	चंद्र	31/08/2090	बुध	11/07/2092	शुक्र	30/08/2093	मंग	13/02/2095

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 3 वर्ष 6 मास 29 दिन

शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु	
05/03/1987		02/10/1990		02/10/1994		02/06/2001		01/02/2006	
02/10/1990		02/10/1994		02/06/2001		01/02/2006		01/02/2018	
शुक्र	00/00/0000	सूर्य	14/12/1990	चंद्र	23/04/1995	मंग	10/09/2001	राहु	20/11/2007
सूर्य	00/00/0000	चंद्र	15/04/1991	मंग	12/09/1995	राहु	23/05/2002	गुरु	27/06/2009
चंद्र	00/00/0000	मंग	09/07/1991	राहु	11/09/1996	गुरु	06/01/2003	शनि	22/05/2011
मंग	00/00/0000	राहु	13/02/1992	गुरु	02/08/1997	शनि	03/10/2003	बुध	01/02/2013
राहु	00/00/0000	गुरु	26/08/1992	शनि	23/08/1998	बुध	31/05/2004	केतु	14/10/2013
गुरु	05/03/1987	शनि	15/04/1993	बुध	03/08/1999	केतु	07/09/2004	शुक्र	15/10/2015
शनि	01/02/1988	बुध	08/11/1993	केतु	23/12/1999	शुक्र	19/06/2005	सूर्य	21/05/2016
बुध	22/12/1989	केतु	01/02/1994	शुक्र	01/02/2001	सूर्य	12/09/2005	चंद्र	21/05/2017
केतु	02/10/1990	शुक्र	02/10/1994	सूर्य	02/06/2001	चंद्र	01/02/2006	मंग	01/02/2018

गुरु		शनि		बुध		केतु		शुक्र	
01/02/2018		02/10/2028		02/06/2041		02/10/2052		02/06/2057	
02/10/2028		02/06/2041		02/10/2052		02/06/2057		00/00/0000	
गुरु	05/07/2019	शनि	04/10/2030	बुध	10/01/2043	केतु	09/01/2053	शुक्र	23/08/2059
शनि	13/03/2021	बुध	21/07/2032	केतु	08/09/2043	शुक्र	20/10/2053	सूर्य	22/04/2060
बुध	16/09/2022	केतु	17/04/2033	शुक्र	29/07/2045	सूर्य	14/01/2054	चंद्र	02/06/2061
केतु	01/05/2023	शुक्र	28/05/2035	सूर्य	21/02/2046	चंद्र	05/06/2054	मंग	13/03/2062
शुक्र	09/02/2025	सूर्य	14/01/2036	चंद्र	01/02/2047	मंग	12/09/2054	राहु	13/03/2064
सूर्य	22/08/2025	चंद्र	03/02/2037	मंग	01/10/2047	राहु	26/05/2055	गुरु	22/12/2065
चंद्र	13/07/2026	मंग	30/10/2037	राहु	12/06/2049	गुरु	08/01/2056	शनि	05/03/2067
मंग	25/02/2027	राहु	24/09/2039	गुरु	16/12/2050	शनि	04/10/2056	बुध	00/00/0000
राहु	02/10/2028	गुरु	02/06/2041	शनि	02/10/2052	बुध	02/06/2057	केतु	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा–प्रत्यन्तर

शुक्र–शनि		शुक्र–बुध		शुक्र–केतु		सूर्य–सूर्य		सूर्य–चंद्र	
05/03/1987		01/02/1988		22/12/1989		02/10/1990		14/12/1990	
01/02/1988		22/12/1989		02/10/1990		14/12/1990		15/04/1991	
शनि	00/00/0000	बुध	09/05/1988	केतु	08/01/1990	सूर्य	06/10/1990	चंद्र	24/12/1990
बुध	00/00/0000	केतु	18/06/1988	शुक्र	24/02/1990	चंद्र	12/10/1990	मंग	01/01/1991
केतु	00/00/0000	शुक्र	11/10/1988	सूर्य	10/03/1990	मंग	16/10/1990	राहु	19/01/1991
शुक्र	05/03/1987	सूर्य	15/11/1988	चंद्र	03/04/1990	राहु	27/10/1990	गुरु	04/02/1991
सूर्य	11/03/1987	चंद्र	11/01/1989	मंग	20/04/1990	गुरु	06/11/1990	शनि	23/02/1991
चंद्र	14/05/1987	मंग	20/02/1989	राहु	01/06/1990	शनि	18/11/1990	बुध	13/03/1991
मंग	28/06/1987	राहु	04/06/1989	गुरु	09/07/1990	बुध	28/11/1990	केतु	20/03/1991
राहु	21/10/1987	गुरु	04/09/1989	शनि	23/08/1990	केतु	02/12/1990	शुक्र	09/04/1991
गुरु	01/02/1988	शनि	22/12/1989	बुध	02/10/1990	शुक्र	14/12/1990	सूर्य	15/04/1991

सूर्य–मंग		सूर्य–राहु		सूर्य–गुरु		सूर्य–शनि		सूर्य–बुध	
15/04/1991		09/07/1991		13/02/1992		26/08/1992		15/04/1993	
09/07/1991		13/02/1992		26/08/1992		15/04/1993		08/11/1993	
मंग	20/04/1991	राहु	11/08/1991	गुरु	10/03/1992	शनि	02/10/1992	बुध	14/05/1993
राहु	03/05/1991	गुरु	09/09/1991	शनि	10/04/1992	बुध	04/11/1992	केतु	26/05/1993
गुरु	14/05/1991	शनि	14/10/1991	बुध	08/05/1992	केतु	17/11/1992	शुक्र	29/06/1993
शनि	28/05/1991	बुध	14/11/1991	केतु	19/05/1992	शुक्र	26/12/1992	सूर्य	10/07/1993
बुध	09/06/1991	केतु	27/11/1991	शुक्र	21/06/1992	सूर्य	06/01/1993	चंद्र	27/07/1993
केतु	14/06/1991	शुक्र	02/01/1992	सूर्य	30/06/1992	चंद्र	26/01/1993	मंग	08/08/1993
शुक्र	28/06/1991	सूर्य	13/01/1992	चंद्र	17/07/1992	मंग	08/02/1993	राहु	08/09/1993
सूर्य	02/07/1991	चंद्र	01/02/1992	मंग	28/07/1992	राहु	15/03/1993	गुरु	06/10/1993
चंद्र	09/07/1991	मंग	13/02/1992	राहु	26/08/1992	गुरु	15/04/1993	शनि	08/11/1993

सूर्य–केतु		सूर्य–शुक्र		चंद्र–चंद्र		चंद्र–मंग		चंद्र–राहु	
08/11/1993		01/02/1994		02/10/1994		23/04/1995		12/09/1995	
01/02/1994		02/10/1994		23/04/1995		12/09/1995		11/09/1996	
केतु	13/11/1993	शुक्र	13/03/1994	चंद्र	19/10/1994	मंग	01/05/1995	राहु	06/11/1995
शुक्र	27/11/1993	सूर्य	26/03/1994	मंग	31/10/1994	राहु	23/05/1995	गुरु	25/12/1995
सूर्य	01/12/1993	चंद्र	15/04/1994	राहु	30/11/1994	गुरु	11/06/1995	शनि	21/02/1996
चंद्र	08/12/1993	मंग	29/04/1994	गुरु	28/12/1994	शनि	03/07/1995	बुध	12/04/1996
मंग	13/12/1993	राहु	05/06/1994	शनि	29/01/1995	बुध	23/07/1995	केतु	04/05/1996
राहु	26/12/1993	गुरु	07/07/1994	बुध	26/02/1995	केतु	01/08/1995	शुक्र	03/07/1996
गुरु	06/01/1994	शनि	15/08/1994	केतु	10/03/1995	शुक्र	24/08/1995	सूर्य	22/07/1996
शनि	20/01/1994	बुध	18/09/1994	शुक्र	13/04/1995	सूर्य	31/08/1995	चंद्र	21/08/1996
बुध	01/02/1994	केतु	02/10/1994	सूर्य	23/04/1995	चंद्र	12/09/1995	मंग	11/09/1996

त्रिभगी दशा–प्रत्यन्तर

चंद्र–गुरु		चंद्र–शनि		चंद्र–बुध		चंद्र–केतु		चंद्र–शुक्र	
11/09/1996		02/08/1997		23/08/1998		03/08/1999		23/12/1999	
02/08/1997		23/08/1998		03/08/1999		23/12/1999		01/02/2001	
गुरु	25/10/1996	शनि	02/10/1997	बुध	11/10/1998	केतु	11/08/1999	शुक्र	28/02/2000
शनि	15/12/1996	बुध	26/11/1997	केतु	31/10/1998	शुक्र	04/09/1999	सूर्य	20/03/2000
बुध	30/01/1997	केतु	18/12/1997	शुक्र	27/12/1998	सूर्य	11/09/1999	चंद्र	22/04/2000
केतु	18/02/1997	शुक्र	21/02/1998	सूर्य	13/01/1999	चंद्र	23/09/1999	मंग	16/05/2000
शुक्र	13/04/1997	सूर्य	12/03/1998	चंद्र	11/02/1999	मंग	01/10/1999	राहु	16/07/2000
सूर्य	29/04/1997	चंद्र	13/04/1998	मंग	03/03/1999	राहु	22/10/1999	गुरु	08/09/2000
चंद्र	27/05/1997	मंग	05/05/1998	राहु	24/04/1999	गुरु	10/11/1999	शनि	11/11/2000
मंग	14/06/1997	राहु	02/07/1998	गुरु	09/06/1999	शनि	03/12/1999	बुध	08/01/2001
राहु	02/08/1997	गुरु	23/08/1998	शनि	03/08/1999	बुध	23/12/1999	केतु	01/02/2001

चंद्र–सूर्य		मंग–मंग		मंग–राहु		मंग–गुरु		मंग–शनि	
01/02/2001		02/06/2001		10/09/2001		23/05/2002		06/01/2003	
02/06/2001		10/09/2001		23/05/2002		06/01/2003		03/10/2003	
सूर्य	07/02/2001	मंग	08/06/2001	राहु	18/10/2001	गुरु	23/06/2002	शनि	17/02/2003
चंद्र	17/02/2001	राहु	23/06/2001	गुरु	21/11/2001	शनि	29/07/2002	बुध	28/03/2003
मंग	24/02/2001	गुरु	06/07/2001	शनि	01/01/2002	बुध	30/08/2002	केतु	12/04/2003
राहु	14/03/2001	शनि	22/07/2001	बुध	06/02/2002	केतु	12/09/2002	शुक्र	27/05/2003
गुरु	30/03/2001	बुध	05/08/2001	केतु	21/02/2002	शुक्र	20/10/2002	सूर्य	10/06/2003
शनि	19/04/2001	केतु	11/08/2001	शुक्र	04/04/2002	सूर्य	31/10/2002	चंद्र	02/07/2003
बुध	06/05/2001	शुक्र	27/08/2001	सूर्य	17/04/2002	चंद्र	19/11/2002	मंग	18/07/2003
केतु	13/05/2001	सूर्य	01/09/2001	चंद्र	08/05/2002	मंग	03/12/2002	राहु	28/08/2003
शुक्र	02/06/2001	चंद्र	10/09/2001	मंग	23/05/2002	राहु	06/01/2003	गुरु	03/10/2003

मंग–बुध		मंग–केतु		मंग–शुक्र		मंग–सूर्य		मंग–चंद्र	
03/10/2003		31/05/2004		07/09/2004		19/06/2005		12/09/2005	
31/05/2004		07/09/2004		19/06/2005		12/09/2005		01/02/2006	
बुध	06/11/2003	केतु	06/06/2004	शुक्र	25/10/2004	सूर्य	23/06/2005	चंद्र	24/09/2005
केतु	20/11/2003	शुक्र	22/06/2004	सूर्य	08/11/2004	चंद्र	30/06/2005	मंग	02/10/2005
शुक्र	30/12/2003	सूर्य	27/06/2004	चंद्र	02/12/2004	मंग	05/07/2005	राहु	23/10/2005
सूर्य	11/01/2004	चंद्र	06/07/2004	मंग	18/12/2004	राहु	18/07/2005	गुरु	11/11/2005
चंद्र	31/01/2004	मंग	11/07/2004	राहु	30/01/2005	गुरु	29/07/2005	शनि	04/12/2005
मंग	14/02/2004	राहु	26/07/2004	गुरु	09/03/2005	शनि	11/08/2005	बुध	24/12/2005
राहु	22/03/2004	गुरु	09/08/2004	शनि	23/04/2005	बुध	24/08/2005	केतु	01/01/2006
गुरु	23/04/2004	शनि	24/08/2004	बुध	02/06/2005	केतु	29/08/2005	शुक्र	25/01/2006
शनि	31/05/2004	बुध	07/09/2004	केतु	19/06/2005	शुक्र	12/09/2005	सूर्य	01/02/2006

त्रिभगी दशा–प्रत्यन्तर

राहु–राहु		राहु–गुरु		राहु–शनि		राहु–बुध		राहु–केतु	
01/02/2006		20/11/2007		27/06/2009		22/05/2011		01/02/2013	
20/11/2007		27/06/2009		22/05/2011		01/02/2013		14/10/2013	
राहु	10/05/2006	गुरु	06/02/2008	शनि	15/10/2009	बुध	18/08/2011	केतु	15/02/2013
गुरु	06/08/2006	शनि	09/05/2008	बुध	21/01/2010	केतु	23/09/2011	शुक्र	30/03/2013
शनि	18/11/2006	बुध	30/07/2008	केतु	02/03/2010	शुक्र	04/01/2012	सूर्य	12/04/2013
बुध	19/02/2007	केतु	03/09/2008	शुक्र	26/06/2010	सूर्य	04/02/2012	चंद्र	03/05/2013
केतु	30/03/2007	शुक्र	09/12/2008	सूर्य	31/07/2010	चंद्र	27/03/2012	मंग	18/05/2013
शुक्र	17/07/2007	सूर्य	07/01/2009	चंद्र	26/09/2010	मंग	02/05/2012	राहु	25/06/2013
सूर्य	19/08/2007	चंद्र	25/02/2009	मंग	06/11/2010	राहु	03/08/2012	गुरु	30/07/2013
चंद्र	13/10/2007	मंग	31/03/2009	राहु	18/02/2011	गुरु	25/10/2012	शनि	08/09/2013
मंग	20/11/2007	राहु	27/06/2009	गुरु	22/05/2011	शनि	01/02/2013	बुध	14/10/2013

राहु–शुक्र		राहु–सूर्य		राहु–चंद्र		राहु–मंग		गुरु–गुरु	
14/10/2013		15/10/2015		21/05/2016		21/05/2017		01/02/2018	
15/10/2015		21/05/2016		21/05/2017		01/02/2018		05/07/2019	
शुक्र	13/02/2014	सूर्य	26/10/2015	चंद्र	20/06/2016	मंग	05/06/2017	गुरु	11/04/2018
सूर्य	21/03/2014	चंद्र	13/11/2015	मंग	12/07/2016	राहु	13/07/2017	शनि	02/07/2018
चंद्र	21/05/2014	मंग	26/11/2015	राहु	04/09/2016	गुरु	16/08/2017	बुध	14/09/2018
मंग	03/07/2014	राहु	29/12/2015	गुरु	23/10/2016	शनि	26/09/2017	केतु	14/10/2018
राहु	21/10/2014	गुरु	27/01/2016	शनि	20/12/2016	बुध	01/11/2017	शुक्र	09/01/2019
गुरु	26/01/2015	शनि	02/03/2016	बुध	10/02/2017	केतु	16/11/2017	सूर्य	04/02/2019
शनि	22/05/2015	बुध	02/04/2016	केतु	03/03/2017	शुक्र	29/12/2017	चंद्र	19/03/2019
बुध	02/09/2015	केतु	14/04/2016	शुक्र	03/05/2017	सूर्य	10/01/2018	मंग	18/04/2019
केतु	15/10/2015	शुक्र	21/05/2016	सूर्य	21/05/2017	चंद्र	01/02/2018	राहु	05/07/2019

गुरु–शनि		गुरु–बुध		गुरु–केतु		गुरु–शुक्र		गुरु–सूर्य	
05/07/2019		13/03/2021		16/09/2022		01/05/2023		09/02/2025	
13/03/2021		16/09/2022		01/05/2023		09/02/2025		22/08/2025	
शनि	11/10/2019	बुध	30/05/2021	केतु	29/09/2022	शुक्र	18/08/2023	सूर्य	18/02/2025
बुध	06/01/2020	केतु	02/07/2021	शुक्र	06/11/2022	सूर्य	19/09/2023	चंद्र	07/03/2025
केतु	11/02/2020	शुक्र	01/10/2021	सूर्य	18/11/2022	चंद्र	12/11/2023	मंग	18/03/2025
शुक्र	24/05/2020	सूर्य	29/10/2021	चंद्र	06/12/2022	मंग	20/12/2023	राहु	16/04/2025
सूर्य	24/06/2020	चंद्र	14/12/2021	मंग	20/12/2022	राहु	26/03/2024	गुरु	12/05/2025
चंद्र	14/08/2020	मंग	15/01/2022	राहु	23/01/2023	गुरु	21/06/2024	शनि	12/06/2025
मंग	19/09/2020	राहु	08/04/2022	गुरु	22/02/2023	शनि	02/10/2024	बुध	10/07/2025
राहु	21/12/2020	गुरु	21/06/2022	शनि	30/03/2023	बुध	02/01/2025	केतु	21/07/2025
गुरु	13/03/2021	शनि	16/09/2022	बुध	01/05/2023	केतु	09/02/2025	शुक्र	22/08/2025

त्रिभगी दशा–प्रत्यन्तर

गुरु–चंद्र		गुरु–मंग		गुरु–राहु		शनि–शनि		शनि–बुध	
22/08/2025		13/07/2026		25/02/2027		02/10/2028		04/10/2030	
13/07/2026		25/02/2027		02/10/2028		04/10/2030		21/07/2032	
चंद्र	19/09/2025	मंग	26/07/2026	राहु	24/05/2027	शनि	26/01/2029	बुध	05/01/2031
मंग	07/10/2025	राहु	29/08/2026	गुरु	10/08/2027	बुध	10/05/2029	केतु	12/02/2031
राहु	25/11/2025	गुरु	29/09/2026	शनि	10/11/2027	केतु	21/06/2029	शुक्र	02/06/2031
गुरु	07/01/2026	शनि	04/11/2026	बुध	01/02/2028	शुक्र	21/10/2029	सूर्य	04/07/2031
शनि	28/02/2026	बुध	06/12/2026	केतु	06/03/2028	सूर्य	27/11/2029	चंद्र	28/08/2031
बुध	15/04/2026	केतु	19/12/2026	शुक्र	12/06/2028	चंद्र	27/01/2030	मंग	05/10/2031
केतु	04/05/2026	शुक्र	26/01/2027	सूर्य	11/07/2028	मंग	11/03/2030	राहु	12/01/2032
शुक्र	27/06/2026	सूर्य	06/02/2027	चंद्र	29/08/2028	राहु	29/06/2030	गुरु	08/04/2032
सूर्य	13/07/2026	चंद्र	25/02/2027	मंग	02/10/2028	गुरु	04/10/2030	शनि	21/07/2032

शनि–केतु		शनि–शुक्र		शनि–सूर्य		शनि–चंद्र		शनि–मंग	
21/07/2032		17/04/2033		28/05/2035		14/01/2036		03/02/2037	
17/04/2033		28/05/2035		14/01/2036		03/02/2037		30/10/2037	
केतु	05/08/2032	शुक्र	23/08/2033	सूर्य	08/06/2035	चंद्र	15/02/2036	मंग	18/02/2037
शुक्र	19/09/2032	सूर्य	01/10/2033	चंद्र	28/06/2035	मंग	09/03/2036	राहु	31/03/2037
सूर्य	03/10/2032	चंद्र	04/12/2033	मंग	11/07/2035	राहु	05/05/2036	गुरु	06/05/2037
चंद्र	25/10/2032	मंग	18/01/2034	राहु	15/08/2035	गुरु	26/06/2036	शनि	17/06/2037
मंग	10/11/2032	राहु	14/05/2034	गुरु	15/09/2035	शनि	26/08/2036	बुध	26/07/2037
राहु	21/12/2032	गुरु	24/08/2034	शनि	21/10/2035	बुध	20/10/2036	केतु	10/08/2037
गुरु	26/01/2033	शनि	24/12/2034	बुध	23/11/2035	केतु	11/11/2036	शुक्र	24/09/2037
शनि	09/03/2033	बुध	13/04/2035	केतु	06/12/2035	शुक्र	14/01/2037	सूर्य	08/10/2037
बुध	17/04/2033	केतु	28/05/2035	शुक्र	14/01/2036	सूर्य	03/02/2037	चंद्र	30/10/2037

शनि–राहु		शनि–गुरु		बुध–बुध		बुध–केतु		बुध–शुक्र	
30/10/2037		24/09/2039		02/06/2041		10/01/2043		08/09/2043	
24/09/2039		02/06/2041		10/01/2043		08/09/2043		29/07/2045	
राहु	12/02/2038	गुरु	16/12/2039	बुध	24/08/2041	केतु	24/01/2043	शुक्र	01/01/2044
गुरु	15/05/2038	शनि	22/03/2040	केतु	28/09/2041	शुक्र	05/03/2043	सूर्य	05/02/2044
शनि	02/09/2038	बुध	18/06/2040	शुक्र	03/01/2042	सूर्य	17/03/2043	चंद्र	02/04/2044
बुध	09/12/2038	केतु	24/07/2040	सूर्य	02/02/2042	चंद्र	06/04/2043	मंग	12/05/2044
केतु	19/01/2039	शुक्र	04/11/2040	चंद्र	22/03/2042	मंग	20/04/2043	राहु	24/08/2044
शुक्र	14/05/2039	सूर्य	04/12/2040	मंग	26/04/2042	राहु	27/05/2043	गुरु	24/11/2044
सूर्य	18/06/2039	चंद्र	25/01/2041	राहु	23/07/2042	गुरु	28/06/2043	शनि	13/03/2045
चंद्र	15/08/2039	मंग	02/03/2041	गुरु	09/10/2042	शनि	05/08/2043	बुध	19/06/2045
मंग	24/09/2039	राहु	02/06/2041	शनि	10/01/2043	बुध	08/09/2043	केतु	29/07/2045

त्रिभगी दशा–प्रत्यन्तर

बुध–सूर्य		बुध–चंद्र		बुध–मंग		बुध–राहु		बुध–गुरु	
29/07/2045		21/02/2046		01/02/2047		01/10/2047		12/06/2049	
21/02/2046		01/02/2047		01/10/2047		12/06/2049		16/12/2050	
सूर्य	08/08/2045	चंद्र	22/03/2046	मंग	15/02/2047	राहु	02/01/2048	गुरु	25/08/2049
चंद्र	26/08/2045	मंग	11/04/2046	राहु	23/03/2047	गुरु	24/03/2048	शनि	20/11/2049
मंग	07/09/2045	राहु	02/06/2046	गुरु	25/04/2047	शनि	01/07/2048	बुध	07/02/2050
राहु	08/10/2045	गुरु	18/07/2046	शनि	02/06/2047	बुध	27/09/2048	केतु	11/03/2050
गुरु	04/11/2045	शनि	10/09/2046	बुध	06/07/2047	केतु	02/11/2048	शुक्र	11/06/2050
शनि	07/12/2045	बुध	29/10/2046	केतु	20/07/2047	शुक्र	13/02/2049	सूर्य	08/07/2050
बुध	06/01/2046	केतु	18/11/2046	शुक्र	29/08/2047	सूर्य	16/03/2049	चंद्र	23/08/2050
केतु	18/01/2046	शुक्र	15/01/2047	सूर्य	10/09/2047	चंद्र	07/05/2049	मंग	25/09/2050
शुक्र	21/02/2046	सूर्य	01/02/2047	चंद्र	01/10/2047	मंग	12/06/2049	राहु	16/12/2050

बुध–शनि		केतु–केतु		केतु–शुक्र		केतु–सूर्य		केतु–चंद्र	
16/12/2050		02/10/2052		09/01/2053		20/10/2053		14/01/2054	
02/10/2052		09/01/2053		20/10/2053		14/01/2054		05/06/2054	
शनि	30/03/2051	केतु	08/10/2052	शुक्र	26/02/2053	सूर्य	25/10/2053	चंद्र	25/01/2054
बुध	01/07/2051	शुक्र	24/10/2052	सूर्य	12/03/2053	चंद्र	01/11/2053	मंग	03/02/2054
केतु	08/08/2051	सूर्य	29/10/2052	चंद्र	04/04/2053	मंग	06/11/2053	राहु	24/02/2054
शुक्र	25/11/2051	चंद्र	06/11/2052	मंग	21/04/2053	राहु	18/11/2053	गुरु	15/03/2054
सूर्य	28/12/2051	मंग	12/11/2052	राहु	03/06/2053	गुरु	30/11/2053	शनि	06/04/2054
चंद्र	21/02/2052	राहु	27/11/2052	गुरु	10/07/2053	शनि	13/12/2053	बुध	26/04/2054
मंग	30/03/2052	गुरु	10/12/2052	शनि	24/08/2053	बुध	25/12/2053	केतु	05/05/2054
राहु	06/07/2052	शनि	26/12/2052	बुध	04/10/2053	केतु	30/12/2053	शुक्र	28/05/2054
गुरु	02/10/2052	बुध	09/01/2053	केतु	20/10/2053	शुक्र	14/01/2054	सूर्य	05/06/2054

केतु–मंग		केतु–राहु		केतु–गुरु		केतु–शनि		केतु–बुध	
05/06/2054		12/09/2054		26/05/2055		08/01/2056		04/10/2056	
12/09/2054		26/05/2055		08/01/2056		04/10/2056		02/06/2057	
मंग	10/06/2054	राहु	20/10/2054	गुरु	25/06/2055	शनि	20/02/2056	बुध	07/11/2056
राहु	25/06/2054	गुरु	23/11/2054	शनि	31/07/2055	बुध	29/03/2056	केतु	21/11/2056
गुरु	09/07/2054	शनि	03/01/2055	बुध	01/09/2055	केतु	14/04/2056	शुक्र	31/12/2056
शनि	24/07/2054	बुध	08/02/2055	केतु	14/09/2055	शुक्र	29/05/2056	सूर्य	12/01/2057
बुध	07/08/2054	केतु	23/02/2055	शुक्र	22/10/2055	सूर्य	11/06/2056	चंद्र	02/02/2057
केतु	13/08/2054	शुक्र	07/04/2055	सूर्य	03/11/2055	चंद्र	04/07/2056	मंग	16/02/2057
शुक्र	30/08/2054	सूर्य	19/04/2055	चंद्र	22/11/2055	मंग	19/07/2056	राहु	24/03/2057
सूर्य	04/09/2054	चंद्र	11/05/2055	मंग	05/12/2055	राहु	29/08/2056	गुरु	25/04/2057
चंद्र	12/09/2054	मंग	26/05/2055	राहु	08/01/2056	गुरु	04/10/2056	शनि	02/06/2057

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 0 वर्ष 9 मास 20 दिन

राहु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल	
05/03/1987		24/12/1987		23/12/2008		24/12/2014		23/12/2029	
24/12/1987		23/12/2008		24/12/2014		23/12/2029		23/12/2037	
राहु	00/00/0000	शुक्र	23/01/1992	सूर्य	24/04/2009	चंद्र	23/01/2017	मंग	28/07/2030
शुक्र	00/00/0000	सूर्य	25/03/1993	चंद्र	22/02/2010	मंग	05/03/2018	बुध	31/10/2031
सूर्य	00/00/0000	चंद्र	23/02/1996	मंग	04/08/2010	बुध	14/07/2020	शनि	27/07/2032
चंद्र	00/00/0000	मंग	13/09/1997	बुध	15/07/2011	शनि	03/12/2021	गुरु	23/12/2033
मंग	00/00/0000	बुध	02/01/2001	शनि	03/02/2012	गुरु	24/07/2024	राहु	13/11/2034
बुध	00/00/0000	शनि	14/12/2002	गुरु	22/02/2013	राहु	25/03/2026	शुक्र	03/06/2036
शनि	05/03/1987	गुरु	24/08/2006	राहु	24/10/2013	शुक्र	22/02/2029	सूर्य	13/11/2036
गुरु	24/12/1987	राहु	23/12/2008	शुक्र	24/12/2014	सूर्य	23/12/2029	चंद्र	23/12/2037

बुध		शनि		गुरु		राहु	
23/12/2037		24/12/2054		23/12/2064		24/12/2083	
24/12/2054		23/12/2064		24/12/2083		05/03/2095	
बुध	27/08/2040	शनि	27/11/2055	गुरु	27/04/2068	राहु	24/04/2085
शनि	25/03/2042	गुरु	30/08/2057	राहु	07/06/2070	शुक्र	24/08/2087
गुरु	21/03/2045	राहु	10/10/2058	शुक्र	16/02/2074	सूर्य	24/04/2088
राहु	09/02/2047	शुक्र	20/09/2060	सूर्य	08/03/2075	चंद्र	23/12/2089
शुक्र	31/05/2050	सूर्य	10/04/2061	चंद्र	27/10/2077	मंग	13/11/2090
सूर्य	11/05/2051	चंद्र	31/08/2062	मंग	25/03/2079	बुध	03/10/2092
चंद्र	20/09/2053	मंग	28/05/2063	बुध	21/03/2082	शनि	13/11/2093
मंग	24/12/2054	बुध	23/12/2064	शनि	24/12/2083	गुरु	05/03/2095

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

राहु–गुरु		शुक्र–शुक्र		शुक्र–सूर्य		शुक्र–चंद्र		शुक्र–मंग	
05/03/1987		24/12/1987		23/01/1992		25/03/1993		23/02/1996	
24/12/1987		23/01/1992		25/03/1993		23/02/1996		13/09/1997	
गुरु	00/00/0000	शुक्र	09/10/1988	सूर्य	16/02/1992	चंद्र	20/08/1993	मंग	05/04/1996
राहु	00/00/0000	सूर्य	31/12/1988	चंद्र	15/04/1992	मंग	06/11/1993	बुध	03/07/1996
शुक्र	00/00/0000	चंद्र	26/07/1989	मंग	17/05/1992	बुध	23/04/1994	शनि	25/08/1996
सूर्य	05/03/1987	मंग	13/11/1989	बुध	23/07/1992	शनि	31/07/1994	गुरु	03/12/1996
चंद्र	18/04/1987	बुध	06/07/1990	शनि	31/08/1992	गुरु	03/02/1995	राहु	04/02/1997
मंग	14/06/1987	शनि	21/11/1990	गुरु	14/11/1992	राहु	02/06/1995	शुक्र	26/05/1997
बुध	14/10/1987	गुरु	11/08/1991	राहु	01/01/1993	शुक्र	26/12/1995	सूर्य	26/06/1997
शनि	24/12/1987	राहु	23/01/1992	शुक्र	25/03/1993	सूर्य	23/02/1996	चंद्र	13/09/1997

शुक्र–बुध		शुक्र–शनि		शुक्र–गुरु		शुक्र–राहु		सूर्य–सूर्य	
13/09/1997		02/01/2001		14/12/2002		24/08/2006		23/12/2008	
02/01/2001		14/12/2002		24/08/2006		23/12/2008		24/04/2009	
बुध	22/03/1998	शनि	09/03/2001	गुरु	08/08/2003	राहु	27/11/2006	सूर्य	30/12/2008
शनि	12/07/1998	गुरु	12/07/2001	राहु	05/01/2004	शुक्र	11/05/2007	चंद्र	16/01/2009
गुरु	09/02/1999	राहु	29/09/2001	शुक्र	23/09/2004	सूर्य	28/06/2007	मंग	25/01/2009
राहु	23/06/1999	शुक्र	14/02/2002	सूर्य	07/12/2004	चंद्र	24/10/2007	बुध	13/02/2009
शुक्र	13/02/2000	सूर्य	26/03/2002	चंद्र	13/06/2005	मंग	26/12/2007	शनि	24/02/2009
सूर्य	20/04/2000	चंद्र	02/07/2002	मंग	21/09/2005	बुध	08/05/2008	गुरु	18/03/2009
चंद्र	05/10/2000	मंग	24/08/2002	बुध	21/04/2006	शनि	26/07/2008	राहु	31/03/2009
मंग	02/01/2001	बुध	14/12/2002	शनि	24/08/2006	गुरु	23/12/2008	शुक्र	24/04/2009

सूर्य–चंद्र		सूर्य–मंग		सूर्य–बुध		सूर्य–शनि		सूर्य–गुरु	
24/04/2009		22/02/2010		04/08/2010		15/07/2011		03/02/2012	
22/02/2010		04/08/2010		15/07/2011		03/02/2012		22/02/2013	
चंद्र	05/06/2009	मंग	06/03/2010	बुध	27/09/2010	शनि	02/08/2011	गुरु	10/04/2012
मंग	28/06/2009	बुध	01/04/2010	शनि	29/10/2010	गुरु	07/09/2011	राहु	23/05/2012
बुध	15/08/2009	शनि	16/04/2010	गुरु	29/12/2010	राहु	30/09/2011	शुक्र	06/08/2012
शनि	12/09/2009	गुरु	15/05/2010	राहु	05/02/2011	शुक्र	08/11/2011	सूर्य	28/08/2012
गुरु	04/11/2009	राहु	02/06/2010	शुक्र	13/04/2011	सूर्य	19/11/2011	चंद्र	20/10/2012
राहु	08/12/2009	शुक्र	03/07/2010	सूर्य	02/05/2011	चंद्र	18/12/2011	मंग	18/11/2012
शुक्र	05/02/2010	सूर्य	12/07/2010	चंद्र	19/06/2011	मंग	02/01/2012	बुध	17/01/2013
सूर्य	22/02/2010	चंद्र	04/08/2010	मंग	15/07/2011	बुध	03/02/2012	शनि	22/02/2013

अष्टोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

सूर्य–राहु		सूर्य–शुक्र		चंद्र–चंद्र		चंद्र–मंग		चंद्र–बुध	
22/02/2013		24/10/2013		24/12/2014		23/01/2017		05/03/2018	
24/10/2013		24/12/2014		23/01/2017		05/03/2018		14/07/2020	
राहु	21/03/2013	शुक्र	14/01/2014	चंद्र	08/04/2015	मंग	22/02/2017	बुध	18/07/2018
शुक्र	08/05/2013	सूर्य	07/02/2014	मंग	04/06/2015	बुध	27/04/2017	शनि	06/10/2018
सूर्य	21/05/2013	चंद्र	07/04/2014	बुध	02/10/2015	शनि	03/06/2017	गुरु	07/03/2019
चंद्र	24/06/2013	मंग	09/05/2014	शनि	11/12/2015	गुरु	14/08/2017	राहु	11/06/2019
मंग	12/07/2013	बुध	15/07/2014	गुरु	23/04/2016	राहु	28/09/2017	शुक्र	25/11/2019
बुध	19/08/2013	शनि	23/08/2014	राहु	16/07/2016	शुक्र	16/12/2017	सूर्य	12/01/2020
शनि	11/09/2013	गुरु	06/11/2014	शुक्र	11/12/2016	सूर्य	07/01/2018	चंद्र	11/05/2020
गुरु	24/10/2013	राहु	24/12/2014	सूर्य	23/01/2017	चंद्र	05/03/2018	मंग	14/07/2020

चंद्र–शनि		चंद्र–गुरु		चंद्र–राहु		चंद्र–शुक्र		चंद्र–सूर्य	
14/07/2020		03/12/2021		24/07/2024		25/03/2026		22/02/2029	
03/12/2021		24/07/2024		25/03/2026		22/02/2029		23/12/2029	
शनि	30/08/2020	गुरु	22/05/2022	राहु	30/09/2024	शुक्र	18/10/2026	सूर्य	11/03/2029
गुरु	27/11/2020	राहु	06/09/2022	शुक्र	26/01/2025	सूर्य	16/12/2026	चंद्र	22/04/2029
राहु	22/01/2021	शुक्र	12/03/2023	सूर्य	01/03/2025	चंद्र	13/05/2027	मंग	15/05/2029
शुक्र	01/05/2021	सूर्य	05/05/2023	चंद्र	24/05/2025	मंग	31/07/2027	बुध	02/07/2029
सूर्य	29/05/2021	चंद्र	16/09/2023	मंग	09/07/2025	बुध	15/01/2028	शनि	30/07/2029
चंद्र	08/08/2021	मंग	26/11/2023	बुध	12/10/2025	शनि	22/04/2028	गुरु	21/09/2029
मंग	14/09/2021	बुध	26/04/2024	शनि	08/12/2025	गुरु	27/10/2028	राहु	25/10/2029
बुध	03/12/2021	शनि	24/07/2024	गुरु	25/03/2026	राहु	22/02/2029	शुक्र	23/12/2029

मंग–मंग		मंग–बुध		मंग–शनि		मंग–गुरु		मंग–राहु	
23/12/2029		28/07/2030		31/10/2031		27/07/2032		23/12/2033	
28/07/2030		31/10/2031		27/07/2032		23/12/2033		13/11/2034	
मंग	09/01/2030	बुध	08/10/2030	शनि	25/11/2031	गुरु	26/10/2032	राहु	29/01/2034
बुध	12/02/2030	शनि	20/11/2030	गुरु	12/01/2032	राहु	22/12/2032	शुक्र	02/04/2034
शनि	04/03/2030	गुरु	09/02/2031	राहु	11/02/2032	शुक्र	01/04/2033	सूर्य	20/04/2034
गुरु	11/04/2030	राहु	01/04/2031	शुक्र	03/04/2032	सूर्य	29/04/2033	चंद्र	04/06/2034
राहु	05/05/2030	शुक्र	29/06/2031	सूर्य	18/04/2032	चंद्र	10/07/2033	मंग	28/06/2034
शुक्र	16/06/2030	सूर्य	25/07/2031	चंद्र	26/05/2032	मंग	17/08/2033	बुध	18/08/2034
सूर्य	28/06/2030	चंद्र	27/09/2031	मंग	15/06/2032	बुध	06/11/2033	शनि	17/09/2034
चंद्र	28/07/2030	मंग	31/10/2031	बुध	27/07/2032	शनि	23/12/2033	गुरु	13/11/2034

अष्टोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

मंग–शुक्र		मंग–सूर्य		मंग–चंद्र		बुध–बुध		बुध–शनि	
13/11/2034		03/06/2036		13/11/2036		23/12/2037		27/08/2040	
03/06/2036		13/11/2036		23/12/2037		27/08/2040		25/03/2042	
शुक्र	04/03/2035	सूर्य	12/06/2036	चंद्र	08/01/2037	बुध	26/05/2038	शनि	19/10/2040
सूर्य	04/04/2035	चंद्र	05/07/2036	मंग	07/02/2037	शनि	25/08/2038	गुरु	28/01/2041
चंद्र	22/06/2035	मंग	17/07/2036	बुध	12/04/2037	गुरु	13/02/2039	राहु	02/04/2041
मंग	03/08/2035	बुध	11/08/2036	शनि	20/05/2037	राहु	01/06/2039	शुक्र	23/07/2041
बुध	01/11/2035	शनि	26/08/2036	गुरु	30/07/2037	शुक्र	08/12/2039	सूर्य	24/08/2041
शनि	23/12/2035	गुरु	24/09/2036	राहु	13/09/2037	सूर्य	01/02/2040	चंद्र	12/11/2041
गुरु	01/04/2036	राहु	12/10/2036	शुक्र	01/12/2037	चंद्र	15/06/2040	मंग	24/12/2041
राहु	03/06/2036	शुक्र	13/11/2036	सूर्य	23/12/2037	मंग	27/08/2040	बुध	25/03/2042

बुध–गुरु		बुध–राहु		बुध–शुक्र		बुध–सूर्य		बुध–चंद्र	
25/03/2042		21/03/2045		09/02/2047		31/05/2050		11/05/2051	
21/03/2045		09/02/2047		31/05/2050		11/05/2051		20/09/2053	
गुरु	03/10/2042	राहु	06/06/2045	शुक्र	02/10/2047	सूर्य	20/06/2050	चंद्र	08/09/2051
राहु	01/02/2043	शुक्र	18/10/2045	सूर्य	08/12/2047	चंद्र	07/08/2050	मंग	11/11/2051
शुक्र	02/09/2043	सूर्य	25/11/2045	चंद्र	24/05/2048	मंग	01/09/2050	बुध	26/03/2052
सूर्य	01/11/2043	चंद्र	01/03/2046	मंग	21/08/2048	बुध	25/10/2050	शनि	14/06/2052
चंद्र	01/04/2044	मंग	21/04/2046	बुध	27/02/2049	शनि	26/11/2050	गुरु	12/11/2052
मंग	21/06/2044	बुध	08/08/2046	शनि	19/06/2049	गुरु	26/01/2051	राहु	16/02/2053
बुध	10/12/2044	शनि	11/10/2046	गुरु	17/01/2050	राहु	05/03/2051	शुक्र	03/08/2053
शनि	21/03/2045	गुरु	09/02/2047	राहु	31/05/2050	शुक्र	11/05/2051	सूर्य	20/09/2053

बुध–मंग		शनि–शनि		शनि–गुरु		शनि–राहु		शनि–शुक्र	
20/09/2053		24/12/2054		27/11/2055		30/08/2057		10/10/2058	
24/12/2054		27/11/2055		30/08/2057		10/10/2058		20/09/2060	
मंग	24/10/2053	शनि	24/01/2055	गुरु	19/03/2056	राहु	15/10/2057	शुक्र	25/02/2059
बुध	04/01/2054	गुरु	25/03/2055	राहु	29/05/2056	शुक्र	02/01/2058	सूर्य	06/04/2059
शनि	16/02/2054	राहु	01/05/2055	शुक्र	01/10/2056	सूर्य	24/01/2058	चंद्र	14/07/2059
गुरु	08/05/2054	शुक्र	06/07/2055	सूर्य	06/11/2056	चंद्र	21/03/2058	मंग	04/09/2059
राहु	28/06/2054	सूर्य	25/07/2055	चंद्र	03/02/2057	मंग	20/04/2058	बुध	25/12/2059
शुक्र	25/09/2054	चंद्र	10/09/2055	मंग	23/03/2057	बुध	23/06/2058	शनि	29/02/2060
सूर्य	21/10/2054	मंग	05/10/2055	बुध	02/07/2057	शनि	31/07/2058	गुरु	03/07/2060
चंद्र	24/12/2054	बुध	27/11/2055	शनि	30/08/2057	गुरु	10/10/2058	राहु	20/09/2060

अष्टोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

शनि–सूर्य		शनि–चंद्र		शनि–मंग		शनि–बुध		गुरु–गुरु	
20/09/2060		10/04/2061		31/08/2062		28/05/2063		23/12/2064	
10/04/2061		31/08/2062		28/05/2063		23/12/2064		27/04/2068	
सूर्य	01/10/2060	चंद्र	20/06/2061	मंग	20/09/2062	बुध	27/08/2063	गुरु	26/07/2065
चंद्र	29/10/2060	मंग	27/07/2061	बुध	01/11/2062	शनि	19/10/2063	राहु	09/12/2065
मंग	13/11/2060	बुध	15/10/2061	शनि	26/11/2062	गुरु	28/01/2064	शुक्र	03/08/2066
बुध	15/12/2060	शनि	01/12/2061	गुरु	13/01/2063	राहु	01/04/2064	सूर्य	10/10/2066
शनि	03/01/2061	गुरु	01/03/2062	राहु	12/02/2063	शुक्र	22/07/2064	चंद्र	28/03/2067
गुरु	07/02/2061	राहु	26/04/2062	शुक्र	06/04/2063	सूर्य	23/08/2064	मंग	27/06/2067
राहु	02/03/2061	शुक्र	03/08/2062	सूर्य	21/04/2063	चंद्र	11/11/2064	बुध	05/01/2068
शुक्र	10/04/2061	सूर्य	31/08/2062	चंद्र	28/05/2063	मंग	23/12/2064	शनि	27/04/2068

गुरु–राहु		गुरु–शुक्र		गुरु–सूर्य		गुरु–चंद्र		गुरु–मंग	
27/04/2068		07/06/2070		16/02/2074		08/03/2075		27/10/2077	
07/06/2070		16/02/2074		08/03/2075		27/10/2077		25/03/2079	
राहु	22/07/2068	शुक्र	25/02/2071	सूर्य	09/03/2074	चंद्र	20/07/2075	मंग	04/12/2077
शुक्र	19/12/2068	सूर्य	11/05/2071	चंद्र	02/05/2074	मंग	29/09/2075	बुध	23/02/2078
सूर्य	31/01/2069	चंद्र	14/11/2071	मंग	30/05/2074	बुध	28/02/2076	शनि	12/04/2078
चंद्र	18/05/2069	मंग	22/02/2072	बुध	30/07/2074	शनि	27/05/2076	गुरु	11/07/2078
मंग	14/07/2069	बुध	21/09/2072	शनि	04/09/2074	गुरु	13/11/2076	राहु	06/09/2078
बुध	12/11/2069	शनि	24/01/2073	गुरु	10/11/2074	राहु	28/02/2077	शुक्र	15/12/2078
शनि	23/01/2070	गुरु	19/09/2073	राहु	23/12/2074	शुक्र	03/09/2077	सूर्य	13/01/2079
गुरु	07/06/2070	राहु	16/02/2074	शुक्र	08/03/2075	सूर्य	27/10/2077	चंद्र	25/03/2079

गुरु–बुध		गुरु–शनि		राहु–राहु		राहु–शुक्र		राहु–सूर्य	
25/03/2079		21/03/2082		24/12/2083		24/04/2085		24/08/2087	
21/03/2082		24/12/2083		24/04/2085		24/08/2087		24/04/2088	
बुध	13/09/2079	शनि	20/05/2082	राहु	16/02/2084	शुक्र	07/10/2085	सूर्य	07/09/2087
शनि	23/12/2079	गुरु	10/09/2082	शुक्र	21/05/2084	सूर्य	23/11/2085	चंद्र	11/10/2087
गुरु	02/07/2080	राहु	20/11/2082	सूर्य	17/06/2084	चंद्र	21/03/2086	मंग	29/10/2087
राहु	01/11/2080	शुक्र	25/03/2083	चंद्र	23/08/2084	मंग	24/05/2086	बुध	06/12/2087
शुक्र	01/06/2081	सूर्य	30/04/2083	मंग	29/09/2084	बुध	05/10/2086	शनि	28/12/2087
सूर्य	01/08/2081	चंद्र	28/07/2083	बुध	14/12/2084	शनि	23/12/2086	गुरु	09/02/2088
चंद्र	30/12/2081	मंग	14/09/2083	शनि	28/01/2085	गुरु	22/05/2087	राहु	07/03/2088
मंग	21/03/2082	बुध	24/12/2083	गुरु	24/04/2085	राहु	24/08/2087	शुक्र	24/04/2088

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 1 वर्ष 4 मास 3 दिन

भद्रिका		उल्का		सिद्धा		संकटा		मंगला	
05/03/1987		07/07/1988		08/07/1994		07/07/2001		07/07/2009	
07/07/1988		08/07/1994		07/07/2001		07/07/2009		08/07/2010	
भद्रि	00/00/0000	उल्क	07/07/1989	सिद्ध	17/11/1995	संक	18/04/2003	मंग	18/07/2009
उल्क	00/00/0000	सिद्ध	06/09/1990	संक	07/06/1997	मंग	08/07/2003	पिंग	07/08/2009
सिद्ध	00/00/0000	संक	06/01/1992	मंग	17/08/1997	पिंग	17/12/2003	धांय	06/09/2009
संक	05/03/1987	मंग	07/03/1992	पिंग	06/01/1998	धांय	17/08/2004	भ्राम	17/10/2009
मंग	08/04/1987	पिंग	07/07/1992	धांय	07/08/1998	भ्राम	07/07/2005	भद्रि	07/12/2009
पिंग	18/07/1987	धांय	06/01/1993	भ्राम	18/05/1999	भद्रि	17/08/2006	उल्क	05/02/2010
धांय	17/12/1987	भ्राम	06/09/1993	भद्रि	07/05/2000	उल्क	17/12/2007	सिद्ध	17/04/2010
भ्राम	07/07/1988	भद्रि	08/07/1994	उल्क	07/07/2001	सिद्ध	07/07/2009	संक	08/07/2010

पिंगला		धान्या		भ्रामरी		भद्रिका		उल्का	
08/07/2010		07/07/2012		08/07/2015		08/07/2019		07/07/2024	
07/07/2012		08/07/2015		08/07/2019		07/07/2024		08/07/2030	
पिंग	17/08/2010	धांय	06/10/2012	भ्राम	17/12/2015	भद्रि	18/03/2020	उल्क	07/07/2025
धांय	17/10/2010	भ्राम	05/02/2013	भद्रि	07/07/2016	उल्क	16/01/2021	सिद्ध	06/09/2026
भ्राम	06/01/2011	भद्रि	07/07/2013	उल्क	08/03/2017	सिद्ध	06/01/2022	संक	06/01/2028
भद्रि	18/04/2011	उल्क	06/01/2014	सिद्ध	17/12/2017	संक	16/02/2023	मंग	07/03/2028
उल्क	17/08/2011	सिद्ध	07/08/2014	संक	06/11/2018	मंग	08/04/2023	पिंग	07/07/2028
सिद्ध	06/01/2012	संक	08/04/2015	मंग	17/12/2018	पिंग	18/07/2023	धांय	06/01/2029
संक	17/06/2012	मंग	08/05/2015	पिंग	08/03/2019	धांय	17/12/2023	भ्राम	06/09/2029
मंग	07/07/2012	पिंग	08/07/2015	धांय	08/07/2019	भ्राम	07/07/2024	भद्रि	08/07/2030

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा		संकटा		मंगला		पिंगला		धान्या	
08/07/2030		07/07/2037		07/07/2045		08/07/2046		07/07/2048	
07/07/2037		07/07/2045		08/07/2046		07/07/2048		08/07/2051	
सिद्ध	17/11/2031	संक	18/04/2039	मंग	18/07/2045	पिंग	17/08/2046	धांय	06/10/2048
संक	07/06/2033	मंग	08/07/2039	पिंग	07/08/2045	धांय	17/10/2046	भ्राम	05/02/2049
मंग	17/08/2033	पिंग	17/12/2039	धांय	06/09/2045	भ्राम	06/01/2047	भद्रि	07/07/2049
पिंग	06/01/2034	धांय	17/08/2040	भ्राम	17/10/2045	भद्रि	18/04/2047	उल्क	06/01/2050
धांय	07/08/2034	भ्राम	07/07/2041	भद्रि	07/12/2045	उल्क	17/08/2047	सिद्ध	07/08/2050
भ्राम	18/05/2035	भद्रि	17/08/2042	उल्क	05/02/2046	सिद्ध	06/01/2048	संक	08/04/2051
भद्रि	07/05/2036	उल्क	17/12/2043	सिद्ध	17/04/2046	संक	17/06/2048	मंग	08/05/2051
उल्क	07/07/2037	सिद्ध	07/07/2045	संक	08/07/2046	मंग	07/07/2048	पिंग	08/07/2051

भ्रामरी		भद्रिका		उल्का		सिद्धा		संकटा	
08/07/2051		08/07/2055		07/07/2060		08/07/2066		07/07/2073	
08/07/2055		07/07/2060		08/07/2066		07/07/2073		07/07/2081	
भ्राम	17/12/2051	भद्रि	18/03/2056	उल्क	07/07/2061	सिद्ध	17/11/2067	संक	18/04/2075
भद्रि	07/07/2052	उल्क	16/01/2057	सिद्ध	06/09/2062	संक	07/06/2069	मंग	08/07/2075
उल्क	08/03/2053	सिद्ध	06/01/2058	संक	06/01/2064	मंग	17/08/2069	पिंग	17/12/2075
सिद्ध	17/12/2053	संक	16/02/2059	मंग	07/03/2064	पिंग	06/01/2070	धांय	17/08/2076
संक	06/11/2054	मंग	08/04/2059	पिंग	07/07/2064	धांय	07/08/2070	भ्राम	07/07/2077
मंग	17/12/2054	पिंग	18/07/2059	धांय	06/01/2065	भ्राम	18/05/2071	भद्रि	17/08/2078
पिंग	08/03/2055	धांय	17/12/2059	भ्राम	06/09/2065	भद्रि	07/05/2072	उल्क	17/12/2079
धांय	08/07/2055	भ्राम	07/07/2060	भद्रि	08/07/2066	उल्क	07/07/2073	सिद्ध	07/07/2081

मंगला		पिंगला		धान्या		भ्रामरी		भद्रिका	
07/07/2081		08/07/2082		07/07/2084		08/07/2087		08/07/2091	
08/07/2082		07/07/2084		08/07/2087		08/07/2091		00/00/0000	
मंग	18/07/2081	पिंग	17/08/2082	धांय	06/10/2084	भ्राम	17/12/2087	भद्रि	18/03/2092
पिंग	07/08/2081	धांय	17/10/2082	भ्राम	05/02/2085	भद्रि	07/07/2088	उल्क	16/01/2093
धांय	06/09/2081	भ्राम	06/01/2083	भद्रि	07/07/2085	उल्क	08/03/2089	सिद्ध	06/01/2094
भ्राम	17/10/2081	भद्रि	18/04/2083	उल्क	06/01/2086	सिद्ध	17/12/2089	संक	16/02/2095
भद्रि	07/12/2081	उल्क	17/08/2083	सिद्ध	07/08/2086	संक	06/11/2090	मंग	05/03/2095
उल्क	05/02/2082	सिद्ध	06/01/2084	संक	08/04/2087	मंग	17/12/2090	पिंग	00/00/0000
सिद्ध	17/04/2082	संक	17/06/2084	मंग	08/05/2087	पिंग	08/03/2091	धांय	00/00/0000
संक	08/07/2082	मंग	07/07/2084	पिंग	08/07/2087	धांय	08/07/2091	भ्राम	00/00/0000

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 6 वर्ष 1 मास 18 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : भरणी - 3 सव्य
देह : वष जीव : मिथन

कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु		मकर	
05/03/1987		22/04/1993		22/04/2009		22/04/2016		23/04/2026	
22/04/1993		22/04/2009		22/04/2016		23/04/2026		23/04/2030	
कन्या	00/00/0000	तुला	23/05/1996	वृश्चि	24/11/2009	धनु	06/07/2017	मक	02/07/2026
तुला	05/03/1987	वृश्चि	28/09/1997	धनु	28/09/2010	मक	29/12/2017	कुंभ	10/09/2026
वृश्चि	11/10/1987	धनु	02/09/1999	मक	29/01/2011	कुंभ	23/06/2018	मीन	05/03/2027
धनु	10/11/1988	मक	09/06/2000	कुंभ	01/06/2011	मीन	06/09/2019	वृश्चि	07/07/2027
मक	18/04/1989	कुंभ	18/03/2001	मीन	04/04/2012	वृश्चि	10/07/2020	तुला	13/04/2028
कुंभ	23/09/1989	मीन	20/02/2003	वृश्चि	06/11/2012	तुला	14/06/2022	कन्या	19/09/2028
मीन	24/10/1990	वृश्चि	27/06/2004	तुला	14/03/2014	कन्या	15/07/2023	तुला	27/06/2029
वृश्चि	29/07/1991	तुला	29/07/2007	कन्या	16/12/2014	तुला	18/06/2025	वृश्चि	28/10/2029
तुला	22/04/1993	कन्या	22/04/2009	तुला	22/04/2016	वृश्चि	23/04/2026	धनु	23/04/2030

कुम्भ		मीन		वृश्चिक		तुला		कन्या	
23/04/2030		23/04/2034		22/04/2044		23/04/2051		23/04/2067	
23/04/2034		22/04/2044		23/04/2051		23/04/2067		00/00/0000	
कुंभ	02/07/2030	मीन	07/07/2035	वृश्चि	24/11/2044	तुला	23/05/2054	कन्या	13/04/2068
मीन	25/12/2030	वृश्चि	10/05/2036	तुला	01/04/2046	कन्या	16/02/2056	तुला	07/01/2070
वृश्चि	27/04/2031	तुला	14/04/2038	कन्या	03/01/2047	तुला	19/03/2059	वृश्चि	05/03/2070
तुला	03/02/2032	कन्या	15/05/2039	तुला	10/05/2048	वृश्चि	23/07/2060	धनु	00/00/0000
कन्या	10/07/2032	तुला	18/04/2041	वृश्चि	11/12/2048	धनु	28/06/2062	मक	00/00/0000
तुला	18/04/2033	वृश्चि	20/02/2042	धनु	15/10/2049	मक	05/04/2063	कुंभ	00/00/0000
वृश्चि	19/08/2033	धनु	06/05/2043	मक	16/02/2050	कुंभ	12/01/2064	मीन	00/00/0000
धनु	11/02/2034	मक	29/10/2043	कुंभ	19/06/2050	मीन	16/12/2065	वृश्चि	00/00/0000
मक	23/04/2034	कुंभ	22/04/2044	मीन	23/04/2051	वृश्चि	23/04/2067	तुला	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा–प्रत्यन्तर

वृश्चि–कन्या		वृश्चि–तुला		धनु–धनु		धनु–मक		धनु–कुंभ	
14/03/2014		16/12/2014		22/04/2016		06/07/2017		29/12/2017	
16/12/2014		22/04/2016		06/07/2017		29/12/2017		23/06/2018	
कन्या	13/04/2014	तुला	21/03/2015	धनु	14/06/2016	मक	15/07/2017	कुंभ	07/01/2018
तुला	05/06/2014	वृश्चि	02/05/2015	मक	05/07/2016	कुंभ	23/07/2017	मीन	28/01/2018
वृश्चि	29/06/2014	धनु	30/06/2015	कुंभ	26/07/2016	मीन	13/08/2017	वृश्चि	12/02/2018
धनु	01/08/2014	मक	24/07/2015	मीन	17/09/2016	वृश्चि	28/08/2017	तुला	18/03/2018
मक	15/08/2014	कुंभ	17/08/2015	वृश्चि	25/10/2016	तुला	01/10/2017	कन्या	06/04/2018
कुंभ	28/08/2014	मीन	15/10/2015	तुला	17/01/2017	कन्या	20/10/2017	तुला	10/05/2018
मीन	30/09/2014	वृश्चि	26/11/2015	कन्या	06/03/2017	तुला	23/11/2017	वृश्चि	24/05/2018
वृश्चि	24/10/2014	तुला	29/02/2016	तुला	30/05/2017	वृश्चि	08/12/2017	धनु	15/06/2018
तुला	16/12/2014	कन्या	22/04/2016	वृश्चि	06/07/2017	धनु	29/12/2017	मक	23/06/2018

धनु–मीन		धनु–वृश्चि		धनु–तुला		धनु–कन्या		धनु–तुला	
23/06/2018		06/09/2019		10/07/2020		14/06/2022		15/07/2023	
06/09/2019		10/07/2020		14/06/2022		15/07/2023		18/06/2025	
मीन	15/08/2018	वृश्चि	02/10/2019	तुला	23/11/2020	कन्या	27/07/2022	तुला	28/11/2023
वृश्चि	21/09/2018	तुला	01/12/2019	कन्या	07/02/2021	तुला	12/10/2022	वृश्चि	26/01/2024
तुला	15/12/2018	कन्या	03/01/2020	तुला	23/06/2021	वृश्चि	14/11/2022	धनु	20/04/2024
कन्या	01/02/2019	तुला	02/03/2020	वृश्चि	21/08/2021	धनु	01/01/2023	मक	24/05/2024
तुला	27/04/2019	वृश्चि	28/03/2020	धनु	14/11/2021	मक	20/01/2023	कुंभ	27/06/2024
वृश्चि	03/06/2019	धनु	04/05/2020	मक	18/12/2021	कुंभ	08/02/2023	मीन	20/09/2024
धनु	26/07/2019	मक	19/05/2020	कुंभ	21/01/2022	मीन	28/03/2023	वृश्चि	18/11/2024
मक	16/08/2019	कुंभ	03/06/2020	मीन	16/04/2022	वृश्चि	30/04/2023	तुला	03/04/2025
कुंभ	06/09/2019	मीन	10/07/2020	वृश्चि	14/06/2022	तुला	15/07/2023	कन्या	18/06/2025

धनु–वृश्चि		मक–मक		मक–कुंभ		मक–मीन		मक–वृश्चि	
18/06/2025		23/04/2026		02/07/2026		10/09/2026		05/03/2027	
23/04/2026		02/07/2026		10/09/2026		05/03/2027		07/07/2027	
वृश्चि	14/07/2025	मक	26/04/2026	कुंभ	05/07/2026	मीन	02/10/2026	वृश्चि	16/03/2027
धनु	21/08/2025	कुंभ	29/04/2026	मीन	14/07/2026	वृश्चि	16/10/2026	तुला	09/04/2027
मक	04/09/2025	मीन	08/05/2026	वृश्चि	20/07/2026	तुला	19/11/2026	कन्या	22/04/2027
कुंभ	19/09/2025	वृश्चि	14/05/2026	तुला	02/08/2026	कन्या	08/12/2026	तुला	16/05/2027
मीन	26/10/2025	तुला	27/05/2026	कन्या	10/08/2026	तुला	11/01/2027	वृश्चि	26/05/2027
वृश्चि	21/11/2025	कन्या	04/06/2026	तुला	24/08/2026	वृश्चि	26/01/2027	धनु	10/06/2027
तुला	20/01/2026	तुला	18/06/2026	वृश्चि	29/08/2026	धनु	16/02/2027	मक	16/06/2027
कन्या	22/02/2026	वृश्चि	23/06/2026	धनु	07/09/2026	मक	25/02/2027	कुंभ	22/06/2027
तुला	23/04/2026	धनु	02/07/2026	मक	10/09/2026	कुंभ	05/03/2027	मीन	07/07/2027

कालचक्र दशा–प्रत्यन्तर

मक–तुला		मक–कन्या		मक–तुला		मक–वृश्चि		मक–धनु	
07/07/2027		13/04/2028		19/09/2028		27/06/2029		28/10/2029	
13/04/2028		19/09/2028		27/06/2029		28/10/2029		23/04/2030	
तुला	30/08/2027	कन्या	30/04/2028	तुला	12/11/2028	वृश्चि	08/07/2029	धनु	19/11/2029
कन्या	29/09/2027	तुला	31/05/2028	वृश्चि	06/12/2028	धनु	23/07/2029	मक	27/11/2029
तुला	23/11/2027	वृश्चि	13/06/2028	धनु	09/01/2029	मक	28/07/2029	कुंभ	06/12/2029
वृश्चि	16/12/2027	धनु	02/07/2028	मक	22/01/2029	कुंभ	03/08/2029	मीन	27/12/2029
धनु	19/01/2028	मक	10/07/2028	कुंभ	05/02/2029	मीन	18/08/2029	वृश्चि	11/01/2030
मक	02/02/2028	कुंभ	18/07/2028	मीन	11/03/2029	वृश्चि	29/08/2029	तुला	14/02/2030
कुंभ	16/02/2028	मीन	06/08/2028	वृश्चि	03/04/2029	तुला	21/09/2029	कन्या	05/03/2030
मीन	20/03/2028	वृश्चि	19/08/2028	तुला	28/05/2029	कन्या	05/10/2029	तुला	08/04/2030
वृश्चि	13/04/2028	तुला	19/09/2028	कन्या	27/06/2029	तुला	28/10/2029	वृश्चि	23/04/2030

कुंभ–कुंभ		कुंभ–मीन		कुंभ–वृश्चि		कुंभ–तुला		कुंभ–कन्या	
23/04/2030		02/07/2030		25/12/2030		27/04/2031		03/02/2032	
02/07/2030		25/12/2030		27/04/2031		03/02/2032		10/07/2032	
कुंभ	26/04/2030	मीन	23/07/2030	वृश्चि	04/01/2031	तुला	20/06/2031	कन्या	20/02/2032
मीन	04/05/2030	वृश्चि	07/08/2030	तुला	28/01/2031	कन्या	21/07/2031	तुला	22/03/2032
वृश्चि	10/05/2030	तुला	10/09/2030	कन्या	10/02/2031	तुला	13/09/2031	वृश्चि	04/04/2032
तुला	24/05/2030	कन्या	29/09/2030	तुला	06/03/2031	वृश्चि	07/10/2031	धनु	23/04/2032
कन्या	01/06/2030	तुला	02/11/2030	वृश्चि	17/03/2031	धनु	10/11/2031	मक	01/05/2032
तुला	14/06/2030	वृश्चि	17/11/2030	धनु	31/03/2031	मक	24/11/2031	कुंभ	08/05/2032
वृश्चि	20/06/2030	धनु	08/12/2030	मक	06/04/2031	कुंभ	07/12/2031	मीन	27/05/2032
धनु	29/06/2030	मक	16/12/2030	कुंभ	12/04/2031	मीन	10/01/2032	वृश्चि	10/06/2032
मक	02/07/2030	कुंभ	25/12/2030	मीन	27/04/2031	वृश्चि	03/02/2032	तुला	10/07/2032

कुंभ–तुला		कुंभ–वृश्चि		कुंभ–धनु		कुंभ–मक		मीन–मीन	
10/07/2032		18/04/2033		19/08/2033		11/02/2034		23/04/2034	
18/04/2033		19/08/2033		11/02/2034		23/04/2034		07/07/2035	
तुला	03/09/2032	वृश्चि	28/04/2033	धनु	09/09/2033	मक	15/02/2034	मीन	15/06/2034
वृश्चि	26/09/2032	धनु	13/05/2033	मक	18/09/2033	कुंभ	18/02/2034	वृश्चि	22/07/2034
धनु	30/10/2032	मक	19/05/2033	कुंभ	26/09/2033	मीन	26/02/2034	तुला	14/10/2034
मक	13/11/2032	कुंभ	25/05/2033	मीन	17/10/2033	वृश्चि	04/03/2034	कन्या	01/12/2034
कुंभ	26/11/2032	मीन	09/06/2033	वृश्चि	01/11/2033	तुला	18/03/2034	तुला	24/02/2035
मीन	30/12/2032	वृश्चि	19/06/2033	तुला	05/12/2033	कन्या	26/03/2034	वृश्चि	02/04/2035
वृश्चि	23/01/2033	तुला	13/07/2033	कन्या	24/12/2033	तुला	08/04/2034	धनु	25/05/2035
तुला	18/03/2033	कन्या	26/07/2033	तुला	27/01/2034	वृश्चि	14/04/2034	मक	15/06/2035
कन्या	18/04/2033	तुला	19/08/2033	वृश्चि	11/02/2034	धनु	23/04/2034	कुंभ	07/07/2035

चर दशा

भोग्य दशा काल : मीन 12 वर्ष 0 मास 0 दिन

मीन	
05/03/1987	
05/03/1999	
मेष	04/03/1988
वृष	04/03/1989
मिथु	05/03/1990
कर्क	05/03/1991
सिंह	04/03/1992
कन्या	04/03/1993
तुला	05/03/1994
वृश्चि	05/03/1995
धनु	04/03/1996
मक	04/03/1997
कुंभ	05/03/1998
मीन	05/03/1999

मेष	
05/03/1999	
05/03/2011	
वृष	04/03/2000
मिथु	04/03/2001
कर्क	05/03/2002
सिंह	05/03/2003
कन्या	04/03/2004
तुला	04/03/2005
वृश्चि	05/03/2006
धनु	05/03/2007
मक	04/03/2008
कुंभ	04/03/2009
मीन	05/03/2010
मेष	05/03/2011

वृष	
05/03/2011	
05/03/2019	
मेष	03/11/2011
मीन	04/07/2012
कुंभ	04/03/2013
मक	03/11/2013
धनु	04/07/2014
वृश्चि	05/03/2015
तुला	03/11/2015
कन्या	04/07/2016
सिंह	04/03/2017
कर्क	03/11/2017
मिथु	04/07/2018
वृष	05/03/2019

मिथुन	
05/03/2019	
05/03/2027	
वृष	03/11/2019
मेष	04/07/2020
मीन	04/03/2021
कुंभ	03/11/2021
मक	04/07/2022
धनु	05/03/2023
वृश्चि	03/11/2023
तुला	04/07/2024
कन्या	04/03/2025
सिंह	03/11/2025
कर्क	04/07/2026
मिथु	05/03/2027

कर्क	
05/03/2027	
05/03/2030	
मिथु	04/06/2027
वृष	03/09/2027
मेष	04/12/2027
मीन	04/03/2028
कुंभ	03/06/2028
मक	03/09/2028
धनु	03/12/2028
वृश्चि	04/03/2029
तुला	04/06/2029
कन्या	03/09/2029
सिंह	03/12/2029
कर्क	05/03/2030

सिंह	
05/03/2030	
04/03/2036	
कन्या	03/09/2030
तुला	05/03/2031
वृश्चि	03/09/2031
धनु	04/03/2032
मक	03/09/2032
कुंभ	04/03/2033
मीन	03/09/2033
मेष	05/03/2034
वृष	03/09/2034
मिथु	05/03/2035
कर्क	03/09/2035
सिंह	04/03/2036

कन्या	
04/03/2036	
05/03/2043	
तुला	03/10/2036
वृश्चि	04/05/2037
धनु	03/12/2037
मक	04/07/2038
कुंभ	02/02/2039
मीन	03/09/2039
मेष	03/04/2040
वृष	03/11/2040
मिथु	04/06/2041
कर्क	03/01/2042
सिंह	04/08/2042
कन्या	05/03/2043

तुला	
05/03/2043	
05/03/2046	
वृश्चि	04/06/2043
धनु	03/09/2043
मक	04/12/2043
कुंभ	04/03/2044
मीन	03/06/2044
मेष	03/09/2044
वृष	03/12/2044
मिथु	04/03/2045
कर्क	04/06/2045
सिंह	03/09/2045
कन्या	03/12/2045
तुला	05/03/2046

वृश्चिक	
05/03/2046	
05/03/2051	
तुला	04/08/2046
कन्या	03/01/2047
सिंह	04/06/2047
कर्क	03/11/2047
मिथु	03/04/2048
वृष	03/09/2048
मेष	02/02/2049
मीन	04/07/2049
कुंभ	03/12/2049
मक	04/05/2050
धनु	04/10/2050
वृश्चि	05/03/2051

धनु	
05/03/2051	
05/03/2054	
वृश्चि	04/06/2051
तुला	03/09/2051
कन्या	04/12/2051
सिंह	04/03/2052
कर्क	03/06/2052
मिथु	03/09/2052
वृष	03/12/2052
मेष	04/03/2053
मीन	04/06/2053
कुंभ	03/09/2053
मक	03/12/2053
धनु	05/03/2054

मकर	
05/03/2054	
04/03/2056	
धनु	04/05/2054
वृश्चि	04/07/2054
तुला	03/09/2054
कन्या	03/11/2054
सिंह	03/01/2055
कर्क	05/03/2055
मिथु	05/05/2055
वृष	05/07/2055
मेष	03/09/2055
मीन	03/11/2055
कुंभ	03/01/2056
मक	04/03/2056

कुम्भ	
04/03/2056	
05/03/2067	
मीन	02/02/2057
मेष	03/01/2058
वृष	03/12/2058
मिथु	03/11/2059
कर्क	03/10/2060
सिंह	03/09/2061
कन्या	04/08/2062
तुला	05/07/2063
वृश्चि	03/06/2064
धनु	04/05/2065
मक	04/04/2066
कुंभ	05/03/2067

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा–प्रत्यन्तर

वृष–वृश्चि		वृष–तुला		वृष–कन्या		वृष–सिंह		वृष–कर्क	
04/07/2014		05/03/2015		03/11/2015		04/07/2016		04/03/2017	
05/03/2015		03/11/2015		04/07/2016		04/03/2017		03/11/2017	
तुला	25/07/2014	वृश्चि	25/03/2015	तुला	24/11/2015	कन्या	24/07/2016	मिथु	25/03/2017
कन्या	14/08/2014	धनु	14/04/2015	वृश्चि	14/12/2015	तुला	13/08/2016	वृष	14/04/2017
सिंह	03/09/2014	मक	05/05/2015	धनु	03/01/2016	वृश्चि	03/09/2016	मेष	04/05/2017
कर्क	23/09/2014	कुंभ	25/05/2015	मक	23/01/2016	धनु	23/09/2016	मीन	24/05/2017
मिथु	14/10/2014	मीन	14/06/2015	कुंभ	13/02/2016	मक	13/10/2016	कुंभ	14/06/2017
वृष	03/11/2014	मेष	05/07/2015	मीन	04/03/2016	कुंभ	03/11/2016	मक	04/07/2017
मेष	23/11/2014	वृष	25/07/2015	मेष	24/03/2016	मीन	23/11/2016	धनु	24/07/2017
मीन	14/12/2014	मिथु	14/08/2015	वृष	14/04/2016	मेष	13/12/2016	वृश्चि	14/08/2017
कुंभ	03/01/2015	कर्क	03/09/2015	मिथु	04/05/2016	वृष	02/01/2017	तुला	03/09/2017
मक	23/01/2015	सिंह	24/09/2015	कर्क	24/05/2016	मिथु	23/01/2017	कन्या	23/09/2017
धनु	13/02/2015	कन्या	14/10/2015	सिंह	14/06/2016	कर्क	12/02/2017	सिंह	14/10/2017
वृश्चि	05/03/2015	तुला	03/11/2015	कन्या	04/07/2016	सिंह	04/03/2017	कर्क	03/11/2017

वृष–मिथु		वृष–वृष		मिथु–वृष		मिथु–मेष		मिथु–मीन	
03/11/2017		04/07/2018		05/03/2019		03/11/2019		04/07/2020	
04/07/2018		05/03/2019		03/11/2019		04/07/2020		04/03/2021	
वृष	23/11/2017	मेष	25/07/2018	मेष	25/03/2019	वृष	24/11/2019	मेष	24/07/2020
मेष	13/12/2017	मीन	14/08/2018	मीन	14/04/2019	मिथु	14/12/2019	वृष	13/08/2020
मीन	03/01/2018	कुंभ	03/09/2018	कुंभ	05/05/2019	कर्क	03/01/2020	मिथु	03/09/2020
कुंभ	23/01/2018	मक	23/09/2018	मक	25/05/2019	सिंह	23/01/2020	कर्क	23/09/2020
मक	12/02/2018	धनु	14/10/2018	धनु	14/06/2019	कन्या	13/02/2020	सिंह	13/10/2020
धनु	05/03/2018	वृश्चि	03/11/2018	वृश्चि	05/07/2019	तुला	04/03/2020	कन्या	03/11/2020
वृश्चि	25/03/2018	तुला	23/11/2018	तुला	25/07/2019	वृश्चि	24/03/2020	तुला	23/11/2020
तुला	14/04/2018	कन्या	14/12/2018	कन्या	14/08/2019	धनु	14/04/2020	वृश्चि	13/12/2020
कन्या	04/05/2018	सिंह	03/01/2019	सिंह	03/09/2019	मक	04/05/2020	धनु	02/01/2021
सिंह	25/05/2018	कर्क	23/01/2019	कर्क	24/09/2019	कुंभ	24/05/2020	मक	23/01/2021
कर्क	14/06/2018	मिथु	13/02/2019	मिथु	14/10/2019	मीन	14/06/2020	कुंभ	12/02/2021
मिथु	04/07/2018	वृष	05/03/2019	वृष	03/11/2019	मेष	04/07/2020	मीन	04/03/2021

मिथु–कुंभ		मिथु–मक		मिथु–धनु		मिथु–वृश्चि		मिथु–तुला	
04/03/2021		03/11/2021		04/07/2022		05/03/2023		03/11/2023	
03/11/2021		04/07/2022		05/03/2023		03/11/2023		04/07/2024	
मीन	25/03/2021	धनु	23/11/2021	वृश्चि	25/07/2022	तुला	25/03/2023	वृश्चि	24/11/2023
मेष	14/04/2021	वृश्चि	13/12/2021	तुला	14/08/2022	कन्या	14/04/2023	धनु	14/12/2023
वृष	04/05/2021	तुला	03/01/2022	कन्या	03/09/2022	सिंह	05/05/2023	मक	03/01/2024
मिथु	24/05/2021	कन्या	23/01/2022	सिंह	23/09/2022	कर्क	25/05/2023	कुंभ	23/01/2024
कर्क	14/06/2021	सिंह	12/02/2022	कर्क	14/10/2022	मिथु	14/06/2023	मीन	13/02/2024
सिंह	04/07/2021	कर्क	05/03/2022	मिथु	03/11/2022	वृष	05/07/2023	मेष	04/03/2024
कन्या	24/07/2021	मिथु	25/03/2022	वृष	23/11/2022	मेष	25/07/2023	वृष	24/03/2024
तुला	14/08/2021	वृष	14/04/2022	मेष	14/12/2022	मीन	14/08/2023	मिथु	14/04/2024
वृश्चि	03/09/2021	मेष	04/05/2022	मीन	03/01/2023	कुंभ	03/09/2023	कर्क	04/05/2024
धनु	23/09/2021	मीन	25/05/2022	कुंभ	23/01/2023	मक	24/09/2023	सिंह	24/05/2024
मक	14/10/2021	कुंभ	14/06/2022	मक	13/02/2023	धनु	14/10/2023	कन्या	14/06/2024
कुंभ	03/11/2021	मक	04/07/2022	धनु	05/03/2023	वृश्चि	03/11/2023	तुला	04/07/2024

चर दशा–प्रत्यन्तर

मिथु–कन्या	
04/07/2024	
04/03/2025	
तुला	24/07/2024
वृश्चि	13/08/2024
धनु	03/09/2024
मक	23/09/2024
कुंभ	13/10/2024
मीन	03/11/2024
मेष	23/11/2024
वृष	13/12/2024
मिथु	02/01/2025
कर्क	23/01/2025
सिंह	12/02/2025
कन्या	04/03/2025

मिथु–सिंह	
04/03/2025	
03/11/2025	
कन्या	25/03/2025
तुला	14/04/2025
वृश्चि	04/05/2025
धनु	24/05/2025
मक	14/06/2025
कुंभ	04/07/2025
मीन	24/07/2025
मेष	14/08/2025
वृष	03/09/2025
मिथु	23/09/2025
कर्क	14/10/2025
सिंह	03/11/2025

मिथु–कर्क	
03/11/2025	
04/07/2026	
मिथु	23/11/2025
वृष	13/12/2025
मेष	03/01/2026
मीन	23/01/2026
कुंभ	12/02/2026
मक	05/03/2026
धनु	25/03/2026
वृश्चि	14/04/2026
तुला	04/05/2026
कन्या	25/05/2026
सिंह	14/06/2026
कर्क	04/07/2026

मिथु–मिथु	
04/07/2026	
05/03/2027	
वृष	25/07/2026
मेष	14/08/2026
मीन	03/09/2026
कुंभ	23/09/2026
मक	14/10/2026
धनु	03/11/2026
वृश्चि	23/11/2026
तुला	14/12/2026
कन्या	03/01/2027
सिंह	23/01/2027
कर्क	13/02/2027
मिथु	05/03/2027

कर्क–मिथु	
05/03/2027	
04/06/2027	
वृष	12/03/2027
मेष	20/03/2027
मीन	28/03/2027
कुंभ	04/04/2027
मक	12/04/2027
धनु	19/04/2027
वृश्चि	27/04/2027
तुला	05/05/2027
कन्या	12/05/2027
सिंह	20/05/2027
कर्क	28/05/2027
मिथु	04/06/2027

कर्क–वृष	
04/06/2027	
03/09/2027	
मेष	12/06/2027
मीन	19/06/2027
कुंभ	27/06/2027
मक	05/07/2027
धनु	12/07/2027
वृश्चि	20/07/2027
तुला	27/07/2027
कन्या	04/08/2027
सिंह	12/08/2027
कर्क	19/08/2027
मिथु	27/08/2027
वृष	03/09/2027

कर्क–मेष	
03/09/2027	
04/12/2027	
वृष	11/09/2027
मिथु	19/09/2027
कर्क	26/09/2027
सिंह	04/10/2027
कन्या	11/10/2027
तुला	19/10/2027
वृश्चि	27/10/2027
धनु	03/11/2027
मक	11/11/2027
कुंभ	19/11/2027
मीन	26/11/2027
मेष	04/12/2027

कर्क–मीन	
04/12/2027	
04/03/2028	
मेष	11/12/2027
वृष	19/12/2027
मिथु	27/12/2027
कर्क	03/01/2028
सिंह	11/01/2028
कन्या	18/01/2028
तुला	26/01/2028
वृश्चि	03/02/2028
धनु	10/02/2028
मक	18/02/2028
कुंभ	25/02/2028
मीन	04/03/2028

कर्क–कुंभ	
04/03/2028	
03/06/2028	
मीन	12/03/2028
मेष	19/03/2028
वृष	27/03/2028
मिथु	03/04/2028
कर्क	11/04/2028
सिंह	19/04/2028
कन्या	26/04/2028
तुला	04/05/2028
वृश्चि	12/05/2028
धनु	19/05/2028
मक	27/05/2028
कुंभ	03/06/2028

कर्क–मक	
03/06/2028	
03/09/2028	
धनु	11/06/2028
वृश्चि	19/06/2028
तुला	26/06/2028
कन्या	04/07/2028
सिंह	11/07/2028
कर्क	19/07/2028
मिथु	27/07/2028
वृष	03/08/2028
मेष	11/08/2028
मीन	18/08/2028
कुंभ	26/08/2028
मक	03/09/2028

कर्क–धनु	
03/09/2028	
03/12/2028	
वृश्चि	10/09/2028
तुला	18/09/2028
कन्या	26/09/2028
सिंह	03/10/2028
कर्क	11/10/2028
मिथु	18/10/2028
वृष	26/10/2028
मेष	03/11/2028
मीन	10/11/2028
कुंभ	18/11/2028
मक	25/11/2028
धनु	03/12/2028

कर्क–वृश्चि	
03/12/2028	
04/03/2029	
तुला	11/12/2028
कन्या	18/12/2028
सिंह	26/12/2028
कर्क	02/01/2029
मिथु	10/01/2029
वृष	18/01/2029
मेष	25/01/2029
मीन	02/02/2029
कुंभ	09/02/2029
मक	17/02/2029
धनु	25/02/2029
वृश्चि	04/03/2029

कर्क–तुला	
04/03/2029	
04/06/2029	
वृश्चि	12/03/2029
धनु	20/03/2029
मक	27/03/2029
कुंभ	04/04/2029
मीन	11/04/2029
मेष	19/04/2029
वृष	27/04/2029
मिथु	04/05/2029
कर्क	12/05/2029
सिंह	19/05/2029
कन्या	27/05/2029
तुला	04/06/2029

कर्क–कन्या	
04/06/2029	
03/09/2029	
तुला	11/06/2029
वृश्चि	19/06/2029
धनु	26/06/2029
मक	04/07/2029
कुंभ	12/07/2029
मीन	19/07/2029
मेष	27/07/2029
वृष	03/08/2029
मिथु	11/08/2029
कर्क	19/08/2029
सिंह	26/08/2029
कन्या	03/09/2029

कर्क–सिंह	
03/09/2029	
03/12/2029	
कन्या	11/09/2029
तुला	18/09/2029
वृश्चि	26/09/2029
धनु	03/10/2029
मक	11/10/2029
कुंभ	19/10/2029
मीन	26/10/2029
मेष	03/11/2029
वृष	10/11/2029
मिथु	18/11/2029
कर्क	26/11/2029
सिंह	03/12/2029

दशा विश्लेषण

महादशा :– शुक्र

(05/03/1987 - 17/07/1992)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 05/03/1987 को आरम्भ और 17/07/1992 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र सामान्य रुप से एक शुभ ग्रह कहा जाता है जो संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का होता है। आपकी कुण्डली में यह एकादश भाव में स्थित है। यह आपकी जन्म कुण्डली के पंचम भाव को देख रहा है तथा उस पर भाव के कारकत्व का प्रभाव पड़ रहा है। यह विवाह का कारक भी है। भाव जिसमें यह स्थित है मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, समृद्धि, बड़े भाई, भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र एकादश अर्थात् आय भाव में स्थित है जहाँ से यह पंचम भाव को देख रहा है। इसके फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा तथा इस दशा काल में आपको कोई बड ी या छोटी समस्या नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र एकादश भाव अर्थात् आय भाव के अतिरिक्त चतुर्थ अर्थात् अपने ही भाव में स्थित होकर भाव के कारकत्व को प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आपकी आय में वृद्धि होगी। आप वाहन खरीद सकते हैं और चल–अचल संपत्ति अर्जित करेंगे।

व्यवसाय :

आप अपना व्यवसाय स्वयं आरंभ करेंगे। आप मवेशियों की खरीद–विक्री और जमीन–जायदाद का कारोबार करेंगे जो आपके लिए लाभदायक होगा। आपके मित्रों के अतिरिक्त आपके बड़े भाई सहयोगी स्वभाव के होंगे जो आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आप स्त्रियों के प्रति आकर्षित होंगे। आप पुरुषों से अधिक स्त्रियों से मित्रता करेंगे और स्त्रियों का साथ पाने को उत्सुक रहेंगे। आपके बच्चे आपके सहयोगी होंगे जो अपनी मेहनत के बल पर समाज में आपका नाम रौशन करेंगे। यह दशा अति आनन्ददायक होगी।

अंतर्दशा :– शुक्र – शनि

(05/03/1987 - 17/07/1988)

शनि आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है।

नवम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 11, 3, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे मगर एकाकी जीवन पसंद करेंगे। उदर में फोड़ा या अन्य रोग हो सकता है। घरेलू जीवन में धन की बचत पर ध्यान देंगे। यद्यपि धर्म में रुचि कम हो सकती है, समाजसेवी संस्था की स्थापना कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी की अंगूठी में पूजा के उपरांत शनिवार के दिन रात्रि भोजन के बाद मध्यमा अंगुली में नीलम धारण करें।

अंतर्दशा :– शुक्र – बुध

(17/07/1988 - 18/05/1991)

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

द्वादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका मन व्यथित या भ्रमित रह सकता है। दार्शनिक स्वभाव हो सकता है। कार्य में दक्षता हासिल करने के बावजूद भ्रष्ट बुद्धि के कारण अप्रसन्न रह सकते हैं। विषय–वासनाओं में रुचि बढ़ सकती है; जीवनसाथी के अतिरिक्त व्यक्ति से आपके संबंध हो सकते हैं। सावधानी और मन पर नियंत्रण आवश्यक हैं। गलत मार्ग पर चलने से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंतर्दशा :– शुक्र – केतु

(18/05/1991 - 17/07/1992)

आरम्भ और ढडक्ज्वझ‍त्र सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरों का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के लग्न भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको अपमान और उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। विषय–वासनाओं में रुचि बढ़ेगी जिससे पारिवारिक जीवन में विवाद हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों को या मंदिर में कंबल दान दें।
- भूरा कुत्ता पालें।
- कुत्तों को भोजन दें।

महादशा :– सूर्य

(17/07/1992 - 18/07/1998)

सूर्य की महादशा 17/07/1992 को आरंभ और 18/07/1998 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य द्वादश स्थान में अवस्थित है। सूर्य दर्प, आत्मा, सात्विक स्वभाव तथा का चेतनता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि द्वादश भाव मोक्ष, व्यय, यात्रा तथा धार्मिक विचारों का सूचक है। अतः इस दशा–काल में आपकी धर्म के प्रति प्रवृत्ति होगी, आप यात्राओं पर जाएंगे और आपको शक्ति और प्रभुत्व की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। केवल आपकी आँखों को सावधानी की आवश्यकता है। आँ ख की पीड़ा और कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। अन्यथा आपका स्वास्थ्य और जीवन शक्ति उत्तम होंगे।

अर्थ :

आपका व्यय होगा, किन्तु फलदायी उद्देश्यों के लिये होगा। आपको विदेशी स्रोतों से भी धन की प्राप्ति होगी। षष्ठम भाव पर सूर्य की दृष्टि के कारण शत्रुओं, प्रतिस्पर्धियों और नौकरी से लाभ हो सकता है।

व्यवसाय :

आप दूसरों की सेवा कर उनसे मान्यता प्राप्त करेंगे। कुछ उतार–चढ़ाव की सम्भावना है, किन्तु कुल मिलाकर आप अपनी जीवन वृत्ति में अच्छा करेगे। आपको सरकार तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्रतिष्ठा मिलेगी। विदेश प्रवास अथवा विदेश में जीवन–वृत्ति भी हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सहकर्मियों और साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपके सम्बन्ध उनके साथ मित्रवत् होंगे। आप इस दशा में अनुबन्ध–पत्र, करारनामा आदि पर हस्ताक्षर कर सकते हैं जिनका संबंध विदेश से हो सकता है। आप सरकारी, पशासनिक आदि कार्यों में सफल होंगे। तकनीकी तथा विज्ञान–सम्बन्धी सेवाएं लाभदायक होंगी। आप रत्नों, सोने, संगमरमर आदि का व्यापार कर सकते हैं। आप आयात निर्यात का व्यापार भी कर सकते हैं जिसमें कुछ यात्राएं होंगी।

परिवार :

कुछ दिनों के लिये आप अपने बच्चों से दूर जा सकते हैं। आपको उनसे सुख आनन्द की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।, कार्य–क्षेत्र में स्थिति उनके अनुकूल रहेगी, धन की प्राप्ति होगी तथा शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपकी माता के लिये समय भाग्यशाली रहेगा और आपको उनसे धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके पिता की एक अचल सम्पत्ति होगी तथा सुख और धन की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई–बहनों का जीवन सफल रहेगा और बड़े भाई–बहनों को सभी प्रकार के लाभ मिलेंगे।

शिक्षा :

आप अपनी शिक्षा में, खासकर विज्ञान या वैसे किसी अन्य गम्भीर विषय में बहुत अच्छा करेंगे। किन्तु कठिन परिश्रम की आवश्यकता है।

योग में आपकी रूचि होगी और आप धार्मिक प्रवचन देंगे या उनका आयोजन करेंगे।

परामर्श :

गेहूँ, रक्त चन्दन, लाल कपड़ों आदि का दान कर सकते हैं।

अंर्तदशा :– सूर्य – सूर्य

(17/07/1992 - 04/11/1992)

इस अंतर्दशा में नगर में परिवर्तन संभव है। दूरस्थ स्थान या विदेशों की यात्रा भी संभव है जिससे लाभ और यश की प्राप्ति होगी। विदेश में जीविका प्राप्त हो सकती है या निर्यात व्यापार से लाभ होगा। अध्यात्म, प्राच्य विद्या में रुचि बढ़ेगी या शोधकार्य करेंगे। पराविद्या की सिद्धि हो सकती है। दान और मानवता की सेवा में ध्यान लगेगा।

शत्रु परास्त होंगे। मातहतो और सेवकों द्वारा धनप्राप्ति में सहायता मिलेगी। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। माता–पिता से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी की व्याधिओं के विरुद्ध प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। अध्यात्म में आपकी रुचि बढ़ेगी। संतान के लिए अप्रत्याशित परिवर्तन संभव है। आपके छोटे भाई–बहन अपने कार्य में प्रगति करेंगे। बड़े भाई–बहनों को लाभ मिलेगा।

शुभत्व की वृद्धि और व्याधिओं के उन्मूलन के लिए सूर्य मंत्र का जाप करें, लाल गाय को चारा खिलाएं और लाल वस्तुओं का दान करें।

ऊँ घृणि सूर्याय नमः

अंर्तदशा :– सूर्य – चन्द्र

(04/11/1992 - 05/05/1993)

चंद्रमा की अंतर्दशा में आपके भाग्य में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं, अतः लापरवाही ओर अकर्मठता से बचें। परिवार में सुख–शांति रहेगी। संतान प्रगति करेगी और नाम कमाएगी। वे विभिन्न गतिविधियों में भाग लेंगे। माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। धन और सफलता के संदर्भ में माता का यह समय भाग्यशाली रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। सेवारत जातकों के लिए समय लाभकारी है। वरिष्ठ अधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को अचानक धन–सपंदा की प्राप्ति हो सकती है। स्वास्थ्य की दे खभाल ठीक से करें। प्रतिद्वंद्वी आपको बदनाम करने की कोशिश करेंगे, मगर सफल नहीं होंगे। वे परिवार में झगड़ा खड़ा करने का प्रयास करेंगे। मगर उन्हें कामयाबी नहीं मिलेगी। आपको उत्तम भोजन, धन और सुविधाओं की उपलब्धि रहेगी।

गले और पाचनतंत्र से संबंधित मामूली परेशानी हो सकती है। भाग्यवर्धन हेतु चंद्र के मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंर्तदशा :– सूर्य – मंगल

(05/05/1993 - 10/09/1993)

इस अवधि में आर्थिक तौर पर आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी। स्वभाव से दयालु होने के कारण पैसा अधिक खर्च करेंगे। अधिकांशतः आपकी आय स्वयं की कमाई से होगी। जीवनसाथी द्वारा भी लाभ संभव है। जमीन–जायदाद से भी लाभ हो सकता है। पड़ोसी कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं। नयी जान–पहचान वालों से थोड़ा सावधान रहें।

माता के कार्य सुचारु रहेंगे। उन्हें छोटी–मोटी चोटों के विरुद्ध सावधान रहना चाहिए। पिता के स्वास्थ्य से कुछ चिंता हो सकती है मगर उनकी प्रतिरोधक शक्ति प्रबल रहेगी। छोटे भाई–बहनों की निरर्थक यात्राएं हो सकती हैं, उनका स्थानांतरण हो सकता है। बड़े भाई–बहनों की कार्य में व्यस्तता बढ़ेगी। विद्यार्थी प्रगति करेंगे। तकनीकी क्षेत्र विशेषतः फलप्रद रहेगा। कटुवचनों से बचें और गृहशांति को हानि न पहुंचाएं।

नेत्र और गले की व्याधिओं के विरुद्ध सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल दाल का दान करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – राहु

(10/09/1993 - 05/08/1994)

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सुख–संपत्ति उत्तम होंगे। घर में उत्सव या विवाह हो सकता है। जीवनसाथी को धन और उच्चपद प्राप्त होंगे। पिता को निवेश से लाभ होगा। उन्हें आप से सुख मिलेगा। माता की तीर्थयात्रा होगी। भाई–बहनों को अर्थलाभ के अवसर मिलेंगे। उन्हें अचानक धन मिल सकता है। वे परिश्रम द्वारा आकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे।

आपकी संतान को भौतिक सुख–साधन प्राप्त होंगे। उनकी रुचि ज्ञान–विज्ञान में होगी। आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके शत्रु के क्रियाकलापों का भंडाफोड़ होगा। परिवर्तन आपके लिए लाभकारी हो सकता है। इससे सुख–साधन बढ़ेंगे। व्यापारियों को निर्यात और विदेश से लाभ होगा। परामर्शदाता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शत्रुओं पर विजय होगी। शरीर के ऊपरी भाग की भावनात्मक व्याधियों से बचें। अरिष्ट से बचने के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :– सूर्य – गुरु

(05/08/1994 - 24/05/1995)

आपके जीवन में धन, स्वास्थ्य और प्रसन्नता उत्तम रहेंगे। इस अवधि में आप सौभाग्यशाली और सफल रहेंगे। पैसा आसानी से आएगा। सब संकटों से रक्षा होगी। मित्रों और समर्थकों से लाभ होगा। सब बाधाओं को पार कर लेंगे। सट्टेबाजी और निवेश से लाभ होगा। आप पुराणों का अध्ययन कर सकते हैं। संतान से सुख मिलेगा। संतान का जन्म भी संभव है। अगर

अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार के लिए समय भाग्यशाली रहेगा। आपकी आय बढ़ेगी और कई यात्राएं हो सकती हैं।

आपके पिता सब सुख–सुविधाओं से युक्त रहेंगे। माता को नाम, सम्मान प्राप्त होंगे। उनकी आय बढ़ेगी। उन्हें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। भाई–बहनों को धन का लाभ होगा। आपकी संतान लेखन आदि कार्य में सफल हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। ग्रेच्युटी, सेवानिवृत्ति आदि से धनलाभ संभव है। परामर्शदाताओं को कार्यस्थल पर धननिवेश करना लाभकारी रहेगा। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं। अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर सामान्य सावधानियों का पालन लाभकारी होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – शनि

(24/05/1995 - 05/05/1996)

इस अवधि में आपको किसी लंबी यात्रा से लाभ हो सकता है। संतान और छोटे भाई–बहनों से खुशी मिलेगी। लेखन से धन आ सकता है। यात्रा, उपहार, दान में धन व्यय हो सकता है। शत्रुओं पर विजय होगी। मातहतों एवं सहकर्मियों का सहयोग मिलता रहेगा।

जीवनसाथी को परिश्रम करना होगा। पिता का समय भाग्यशाली और समृद्ध रहेगा। उनके आपके साथ संबंध मधुर रहेंगे। माता का समय सामान्यतः उत्तम रहेगा; उन्हें मामूली स्वास्थ्य–समस्या हो सकती है। भाई–बहन भाग्यशाली रहेंगे। आपकी संतान सुखी होगी और आपको सुख देगी।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ होगा, मित्र बनेंगे, उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यर्थ की यात्राएं होंगी। व्यापारियों के लिए कुछ परिवर्तन का योग है।

स्नायुतंत्र, पैरों की व्याधि या गठिया से बचाव करें। अरिष्ट से बचने के लिए भैरव के रूप में शिवजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – बुध

(05/05/1996 - 11/03/1997)

इस अवधि में आप आयात–निर्यात का काम कर सकते हैं। विदेश की यात्रा हो सकती है। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। व्यापार–उद्योग में विस्तार के लिए धन व्यय हो सकता है। मानसिक शांति, धन का लाभ संभावित हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लोकप्रियता और सम्मान अर्जित करेंगे।

मामा पक्ष के लोगों से लाभ और सुख प्राप्त होंगे। व्यापार के साझेदार को कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा और शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति प्राप्त होगी, वे मकान बना सकते हैं या निवास में परिवर्तन कर सकते हैं। माता के लिए समृद्ध समय का संकेत है। उन्हें आप से सुख मिलेगा। भाई–बहनों को धन मिलेगा, व्यस्तता बढ़ेगी, कार्यस्थल में परिवर्तन हो सकता है।

सेवारत जातक किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को विनिमय से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है। स्नायुतंत्र, आंख और पैरों की समस्याओं से सावधान रहें। बुध मंत्र का जाप और हरी वस्तुओं का दान लाभकारी रहेगा।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :– सूर्य – केतु

(11/03/1997 - 17/07/1997)

इस अवधि में व्यापार से धनागम होगा। साझेदारी लाभप्रद रहेगी। कार्य–व्यवसाय हेतु यात्राएं होंगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से लाभ होगा। शत्रु और स्पर्धी आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं।

दांपत्य जीवन में कुछ समस्या आ सकती है या जीवनसाथी किसी कार्य–व्यवसाय के कारण घर से दूर जा सकते हैं। आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और परोपकार की भावना में वृद्धि होगी।

जीवनसाथी को लाभ होगा, संपदा बढ़ेगी, वाहन सुख रहेगा। पिता का समय प्रसन्नता से बीतेगा। उन्हें सफलता, प्रोन्नति, भूमिप्राप्ति, उच्चाधिकारियों से लाभ का संकेत है। माता को अचल संपत्ति, रिश्तेदारों से मदद मिलेगी। भाई–बहनों को निवेश से लाभ होगा।

आपकी संतान को सहयोगियों से लाभ होगा। उन्हें नये मित्रों से पहचान बढ़ाने से पहले सतर्क रहना चाहिए।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ प्राप्त करेंगे, दूसरों से व्यवहार करते वक्त सावधान रहें। परामर्शदाताओं की व्यस्तता बढ़ेगी, प्रसिद्धि मिलेगी। व्यापारी शत्रुओं पर विजयी होंगे।

उत्सर्जन तंत्र और आंतों के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनता, तिल और कस्तूरी का दान करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – शुक्र

(17/07/1997 - 18/07/1998)

इस अवधि में आप सफल होंगे। आपकी सभी आकांक्षाओं और इच्छाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। संतान का जन्म भी हो सकता है। स्त्रियों से संबंधित कार्य बहुत लाभकारी रहेगा। बड़े भाई–बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। कला में रुचि होगी। अपनी किस्मत का आभास आपको रहता है।

आपके जीवनसाथी को निवेश, संतान, कला आदि से लाभ होगा। पिता की लघु यात्राएं होंगी, पड़ौसियों से मधुर संबंध रहेंगे। माता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है। भाई–बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा; उनकी यात्राएं होंगी, ज्ञानार्जन होगा। आपकी संतान को सहयोगियों से लाभ मिलेगा ; वे सुर्खियों में रहेंगे, सब सुख नसीब होंगे, उच्चपद मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजय होगी, कार्यालय की स्थिति उत्तम होगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारी भी अधिक धन कमाएंगे।

कान, पैर और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मी जी की आराधना करें।

महादशा :– चन्द्र

(18/07/1998 - 17/07/2008)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 18/07/1998 को आरम्भ और 17/07/2008 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र द्वितीय भाव में अवस्थित है और द्वितीय भाव सम्पत्ति, लाभ, शक्ति और संसाधन, मूल्यवान वस्तुओं की प्राप्ति, बॉण्ड, शेयर, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जीभ, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का सूचक है। वर्षों की यह अवधि आपके लिए सुख और सम्पत्ति की दृष्टि से उत्तम होगी।

स्वास्थ्य :

चन्द्र कर्क में अवस्थित है जो उसका अपना भाव है। इसलिए इस अवधि में आपके स्वास्थ्य से सम्बन्धित कोई अनपेक्षित प्रतिकूल घटना नहीं घटेगी और न ही कोई समस्या अथवा दुर्घटना होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने कार्यों को सुंदर ढंग से पूरा करने में समर्थ होंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र द्वितीय भाव में अवस्थित है जो धन और आर्थिक मामलों का भाव है। चन्द्र की इस स्थिति के कारण आपकी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि होगी। दस वर्षों की इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और और अपने बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। इस दशा में धनोपार्जन और चल–अचल सम्पत्तियों में वृद्धि की संभावनाएं हैं जिससे आगे भी बहुमुखी वृद्धि होगी। स्त्री वर्ग से धन की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील होगी।

व्यवसाय :

चन्द्र दशा की अवधि में आप अपनी स्थिति और कार्य से संतुष्ट होंगे।

अगर आप सेवा में हैं तो आपकी उच्च पद पर पदोन्नति होगी और यदि व्यवसाय में हैं तो व्यवसाय के विस्तार व नये कार्य मिलने के संकेत हैं। नये रचनात्मक विचार आप के मस्तिष्क में उभरेंगे जिसकी आपके सहकर्मी और उच्चाधिकारी सराहना करेंगे और ऐसे कार्य जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होंगे। वास्तव में चन्द्र आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ करेगा।

पारिवारिक जीवन :

चंद्र के मस्तिष्क और माता का कारक होने के कारण आपको सुख, प्रतिष्ठा और उत्तम पारिवारिक जीवन की प्राप्ति होगी। खासकर आपकी माता आपके दैनिक जीवन में अत्यधिक सहायक होंगी। पिता भी आपकी सहायता करेंगे। बच्चे आज्ञाकारी होंगे और परिवार में वातावरण सामान्यतया सौहार्द्रपूर्ण रहेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपको शिक्षा की प्रेरणा मिलेगी और पुराणों अथवा ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में आपकी रुचि बढ़ेगी। उच्चतर शिक्षा की ओर आपकी प्रवृत्ति अधिक होगी और यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल हों तो सफल होंगे।

अंर्तदशा :– चन्द्र – चन्द्र

(18/07/1998 - 18/05/1999)

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ–हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप उत्तम वस्तुओं का चयन करेंगे; वाणी मधुर रहेगी। व्यापार और जीवन में सफलता प्राप्त होगी। मधुर स्वभाव के कारण धन कमाएंगे। सुरुचि और सुस्वभाव के कारण विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध प्रगाढ़ बनेंगे। आप उनके अधिपत्य को स्वीकार कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के मंत्र के 11000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – मंगल

(18/05/1999 - 17/12/1999)

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ–हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। मंगल ऊर्जा का कारक है और द्वितीय भाव में स्थित होकर कुंडली के 5, 8, 9 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आय उत्तम रहेगी, मगर कंजूसी बढ़ सकती है। धन संचित होगा। वाक्शक्ति उत्तम होगी। कंजूसी के कारण घर में कलह हो सकती है। नेत्रों की देखभाल करें, वाणी पर नियंत्रण रखें और कटुता से बचें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – राहु

(17/12/1999 - 17/06/2001)

राहु आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। राहु छायाग्रह है और लगभग शनि के अनुसार कार्य करता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली में सप्तम भाव को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है। सप्तम में केतु स्थित है।

इस अवधि में आप स्वार्थी, शक्की और निम्नकार्यों में रुचि रखने वाले हो सकते हैं। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। कार्यप्रणाली कुछ अजीब हो सकती है। विवाहित जीवन में विवाद संभव है।

नकारात्मक विचारों से बचें। स्वयं पर भरोसा करें ओर आगे बढ़े। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – गुरु

(17/06/2001 - 17/10/2002)

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। बृहस्पति की लग्न में स्थित होकर कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप धनी बनेंगे, ज्ञान और विवेक की वृद्धि होगी। उत्तम वस्त्र आदि की खरीदारी करेंगे और सामान्यतः प्रसन्नचित रहेंगे। सुख–सुविधाएं भरपूर रहेंगी। व्यायाम करने से स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यह समय आपके और परिवारजनों के लिए भाग्यशाली रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – शनि

(17/10/2002 - 17/05/2004)

शनि आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 11, 3 और 6 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। साहस में वृद्धि होगी। उदर रोगों से सावधान रहें। घरेलू जीवन में मितव्ययी होंगे। धर्म में रुचि कम हो सकती है मगर सेवाकार्यों, दान आदि में प्रवृत्ति बढ़ेगी। शनि बहुत शक्तिशाली ग्रह है। यह जातक की कर्मठता की परीक्षा लेता है और धैर्यशक्ति बढ़ाता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए आटे की गोलियां मछलियों को खिलाएं। भोजन में पहला कौर गाय को दें। शिवजी की उपासना करें। पीपल को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – बुध

(17/05/2004 - 17/10/2005)

बुध आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक विचारों के होंगे। कुछ चिंताएं हो सकती हैं। नये कार्यों में द क्षता हासिल करेंगे। मन में वासनात्मक कुविचार आ सकते हैं और चरित्र का ह्रास हो सकता है। संयम धारण करना श्रेयस्कर होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – केतु

(17/10/2005 - 18/05/2006)

केतु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली में लग्न को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में दांपत्य संबंधों में कुछ कष्ट हो सकता है। आपकी वासना में वृद्धि के कारण जीवनसाथी रुष्ट हो सकते हैं। चरित्र में गिरावट न आने दें। अपमान और वीर्यशक्ति में ह्रास के संकेत है। अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – शुक्र

(18/05/2006 - 16/01/2008)

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

इस अवधि में आपकी सैलानी प्रवृत्ति प्रबल रहेगी। इससे बहुत से मित्र बनेंगे और लोकप्रियता बढ़ेगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से भी संबंध प्रगाढ़ होंगे। सुख–सुविधाएं भरपूर रहेंगी। धन का लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – सूर्य

(16/01/2008 - 17/07/2008)

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका के 12वें भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है और आत्मा व पिता का कारक है।

इस अवधि में आप अनैतिक जीवन की ओर उन्मुख हो सकते हैं। कार्यों में असफलता प्राप्त हो सकती है। आपकी संतान भी आपकी चिंताएं बढ़ाएगी। नेत्ररोग से सावधान रहें; शरीर के किसी अंग में चोट लग सकती है। उत्साह में वृद्धि होगी।

कुछ मिलाकर समय कठिन हो सकता है। अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। प्रतिदिन प्रातःकाल (हो सके तो सूर्योदय के समय) सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

महादशा :– मंगल

(17/07/2008 - 18/07/2015)

मंगल की महादशा 17/07/2008 को आरम्भ और 18/07/2015 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल द्वितीय भाव में अवस्थित है। इसके पूर्व आपकी चन्द्रदशा चल रही थी जिसकी अवधि 10 वर्ष की थी। मंगल के पंचम भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको बच्चों से सुख, उत्तम शिक्षा और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की इस दशा में आपको धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा–काल में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में आत्मविश्वास तथा पहल–शक्ति होगी और आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। कुछ मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सरदर्द, ज्वर, संक्रमण, ताप संबंधी बीमारियों आदि की सम्भावना है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धन–संपत्ति का संचय करेंगे। आपको पिता से लाभ होगा। आपको कुछ–पैतृक–सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। व्यवसाय और जीवन–वृत्ति से उपार्जन में भी वृद्धि होगी। मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। अपनी जीविका के लिये सैन्य सेवा, सर्जरी तथा चिकित्सा कार्य, दन्तचिकित्सा, भूगर्भ–विज्ञानी अथवा रसायनज्ञ के कार्यों का चयन कर सकते हैं। आप असैनिक तथा यांत्रिक अभियंत्रण और औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अच्छा करेंगे। लौह–इस्पात, खेल के सामानों, ताम्बे, खनिज पदार्थों आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के लिये दशा उत्तम रहेगी। आपकी आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों के लिये समय समृद्धिशाली रहेगा। आय तथा गतिविधियों में वृद्धि होगी। व्यापार का विस्तार हो सकता है और व्यापार से जुड़े लोग व्यस्त रहेंगे। आर्थिक सफलता के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन के सुख मिलेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति होगी। मंगल तथा बुध की अन्तर्दशा में जमीन–जायदाद के मामले लाभदायक होंगे। यह अवधि सभी आर्थिक कारोबार के लिए उत्तम है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि और मंगल की अन्तर्दशाओं लम्बी यात्राएँ होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। गणित, विज्ञान तथा प्रशासन व प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन लाभदायक होगा। आप परीक्षाओं में सफल होंगे। इस अवधि में आप उच्च शिक्षा भी आरम्भ कर सकते हैं। आप अपने स्वभावगत नेतृत्व तथा बैद्धिक गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके संबंध मधुर रहेंगे। आपके बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेंगे और आपको उनसे बहुत सुख प्राप्त होगा। वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ मिल सकता है। सद्भावपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने के लिए कटु भाषा का प्रयोग न करें। आपकी माता को इस अवधि में लाभ प्राप्त होगा और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके पिता को उनके शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई–बहनों का शुभ उद्देश्यों के लिए व्यय होगा और उनकी यात्रा होगी तथा आपके बड़े भाई–बहनों को यश, ख्याति, आय, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी जिनसे आपको लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको पिता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी। इसके पश्चात् आरम्भ होनेवाली राहु की अन्तर्दशा के कारण समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के कारण आपकी शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुख में वृद्धि होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के कारण आय–व्यय समान होंगे और आपकी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह हो सकता है और साझेदारों से लाभ और सुख की प्राप्ति हो सकती है जबकि केतु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन और छोटी यात्राओं की प्राप्ति हो सकती है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सन्तान से सुख और निवेश तथा सट्टे में लाभ होगा।

अंर्तदशा :– मंगल – मंगल

(17/07/2008 - 13/12/2008)

इस अवधि में आप धन कमाएंगे; व्यापार में सफलता मिलेगी। धन का उपयोग सोच समझकर करना श्रेयस्कर रहेगा। लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा धन कमाने की प्रवृत्ति हो सकती है। विरासत में या जीवनसाथी के माध्यम से धन मिल सकता है। समृद्धि बढ़ेगी, निवेश से लाभ होगा, संतान से खुशी मिलेगी। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। मंगल की नवम भाव पर दृष्टि के कारण सर्जनात्मक कार्यों में मन लगेगा, किस्मत चमकेगी। कोई यात्रा हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को विरासत में या क्रय से जायदाद मिल सकती है। उनके निवेश लाभकारी रहेंगे। आपके पिता को मामूली चोट लग रही है या बीमारी हो सकती है। उन्हें उच्चपद प्राप्त हो सकता है, धनी बन सकते हैं, यात्रा पर जा सकते हैं। माता के लिए निवेश लाभकारी रहेंगे। आपको उनके साथ मधुर संबंध बनाकर रखने चाहिएं। आपके बड़े भाई–बहन जायदाद प्राप्त कर सकते हैं। छोटे भाई–बहनों को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपकी संतान की सक्रियता बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त होगी। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों के लिए निवेश लाभदायक रहेंगे।

गले, आंख और दांतों के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए तांबा, लाल चप्पल और लाल वस्त्र दान करें।

अंर्तदशा :– मंगल – राहु

(13/12/2008 - 01/01/2010)

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं, लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। विदेश से व्यापारिक संबंध हो सकते हैं; व्यापार संबंधी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। जीवनसाथी और साझेदार से मधुर संबंध बनाए रखने के लिए सावधानी की आवश्यकता है। अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के धन में वृद्धि होगी ; उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपकी माता तीर्थयात्रा कर सकती हैं। आपके भाई–बहनों को धन का लाभ होगा; उन्हें धनार्जन के बहुत से अवसर मिलेंगे। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे; लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

आपकी संतान को भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। अगर से सेवारत हैं तो उच्चपद और धन प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो शुत्रओं से सावधान रहें, वे आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारी अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :– मंगल – गुरु

(01/01/2010 - 08/12/2010)

इस अवधि में आपको सब सुख उपलब्ध रहेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। कार्यक्षेत्र में अचानक सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है। संतान का जन्म संभव है। विवाह हो सकता है। चुनाव में या कार्यों में सफलता मिल सकती है। मुकदमे में विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। लंबी यात्रा या तीर्थयात्रा संभव है। नये अवसर उपलब्ध होंगे।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद और धन का लाभ हो सकता है। पिता को सट्टेबाजी से लाभ संभव है। माता को सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, तीर्थयात्रा करेंगी। आपके भाई–बहन धन कमाएंगे; कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे; उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, ज्ञानार्जन करेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे, लंबी यात्राएं होंगी, प्रसिद्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ और सकारात्मक परिवर्तन का योग है। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय करेंगे; धनी बनेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले अनाज, स्वर्ण और हल्दी का दान करें।

अंर्तदशा :– मंगल – शनि

(08/12/2010 - 16/01/2012)

इस अवधि में आपको पुत्रों से धन और खुशी की प्राप्ति होगी। आपका मन अध्यात्म और दान–धर्म में लगेगा। ज्योतिष का अध्ययन कर सकते हैं। धन, सम्मान, और सफलता का संकेत है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आय में वृद्धि होगी। आपकी कार्यक्षमता की तारीफ होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। ठेकेदारी, नौकरी आदि से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी उत्साही रहेंगे। आपके पिता के कार्य पूर्ण होंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। भाई–बहनों की साख में वृद्धि होगी, विवाह हो सकता है, यात्रा और अनुबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं।

वातजन्य रोग, गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरवजी के रूप में शिवजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :– मंगल – बुध

(16/01/2012 - 13/01/2013)

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। एकांत में किये काम लाभप्रद रहेंगे। ध्यान, तंत्र आदि में रुचि हो सकती है। लंबी यात्रा या विदेशयात्रा से लाभ हो सकता है। आयात–निर्यात में सफल हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति के बहुत से अवसर मिलेंगे। धर्म में रुचि रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। किराये आदि से आमदनी अच्छी हो सकती है; किरायेदार सहयोग करेंगे।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे; स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता की समृद्धि बढ़ेगी, लंबी यात्राएं होंगी, धर्म में ध्यान लगाएंगी। आपके भाई–बहनों को नौकरी में तरक्की मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा, कार्यों में उन्नति होगी।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; शिक्षा पूर्ण हो सकती है या नये पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है या नौकरी में परिवर्तन हो सकता है, अचानक लाभ संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक कार्य से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को जनता से लाभ होगा। व्यापारियों के कार्यक्षेत्र में सुविधाएं बढ़ेंगी।

आंख, पैर और स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– मंगल – केतु

(13/01/2013 - 11/06/2013)

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से भी लाभ हो सकता है। विवाह हो सकता है। आप बहुत लोगों की मदद करेंगे। कोई भी निर्णय लेने से पहले गहराई से विचार करेंगे। अध्यात्म और ज्ञानार्जन में रुचि होगी। उच्चपद मिल सकता है।

आपके जीवनसाथी के सम्मान और पद में वृद्धि होगी। आपके पिता को हर प्रकार से लाभ होगा, सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे, लोकप्रियता मिलेगी। आपकी माता को अचल संपत्ति मिल सकती है; वे प्रसन्न रहेंगी। आपके भाई–बहनों को निवेश से लाभ होगा; मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेंगे, उनके पिता से मधुर संबंध रहेंगे।

आपकी संतान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़संकल्प का परिचय देगी। अगर से सेवारत हैं तो धनी बनेंगे, सब सुख उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ के अवसर मिलेंगे। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारियों को अच्छा लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। उदरशूल आदि की शिकायत हो सकती है। इस पर गंभीरता से ध्यान दें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल और सतनजे का दान दें।

अंर्तदशा :– मंगल – शुक्र

(11/06/2013 - 11/08/2014)

इस अवधि में आपको हर कार्य में सफलता मिलेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। निवेश से लाभ होगा। नये मित्र बनेंगे जो लाभप्रद होंगे। सब सुख–सुविधाएं उपलब्ध होंगी। संतान से संबंध मधुर होंगे। कला में रुचि से खुशी मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। कोई मंत्री या पार्षद आदि बन सकते हैं। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी समृद्ध होंगे। आपके पिता का उत्साह उत्तम होगा। माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, पति से धन का लाभ होगा, अध्यात्म में रुचि लेंगी। आपके भाई–बहन समृद्ध होंगे ; विवाह हो सकता है।

आपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो भागीदार से लाभ होगा, व्यापार में फ़ायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

नेत्र और कानों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए स्त्रियों के कल्याण की संस्थाओं में दान दें।

अंर्तदशा :– मंगल – सूर्य

(11/08/2014 - 17/12/2014)

इस अवधि में आपको कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर कुछ उतार–चढ़ाव रहेंगे। स्पर्धी परेशान कर सकते हैं। विदेश की यात्रा या निवास संभव है। खर्चे बढ़ेंगे। आध्यात्मिक उन्नति होगी। सूर्य की छठे भाव पर दृष्टि के कारण धन और उच्चपद प्राप्त हो सकते हैं। कार्यों में सफलता मिलेगी। किरायेदार, मातहत और सहकर्मी सहयोग करेंगे। कार्यालय के वातावरण में सुधार होगा, सरकार से सहायता मिलेगी।

जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

माता सौभाग्यशाली होंगी; घरेलू सुख उत्तम होगा। भाई–बहनों को प्रसिद्धि, प्रोन्नति, कार्यों में सफलता मिलेंगी। संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन जैसे शिक्षा का समापन आदि हो सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो स्थानांतरण, निवास में परिवर्तन, अप्रत्याशित लाभ हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में परिवर्तन या यात्राएं संभव हैं। व्यापारीगण सफल होंगे, स्पर्धियों को परास्त करेंगे।

सामान्य स्वास्थ्य, नेत्र और पैरों की देखभाल करें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– मंगल – चन्द्र

(17/12/2014 - 18/07/2015)

इस अवधि में आपका घरेलू जीवन सुखमय रहेगा। जनता आपकी मीठी वाणी से प्रसन्न होगी। शिक्षा उत्तम होगी। जनता के कार्यों में रुचि बढ़ेगी, राजनीति में भाग ले सकते हैं। धन और आभूषण की प्राप्ति, निवेश से लाभ के संकेत हैं। माता के माध्यम से धनलाभ होगा। विरासत में धन या संपत्ति की प्राप्ति संभव है। जीवनसाथी के धन से लाभ होगा। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी को विरासत में या साझेदार के माध्यम से धन का लाभ होगा। पिता स्पर्धियों पर विजयी होंगे, मातहतों से संबंध उत्तम रहेंगे। माता को सरलता से धन की प्राप्ति होगी। भाई–बहनों को मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, प्रतिस्पर्धियों पर विजयी होंगे, अचल संपत्ति में वृद्धि होगी, माता से संबंध उत्तम रहेंगे, जीवन का आनंद लेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी और उन्हें परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे और लाभ होगा। परामर्शदाताओं के लिए निवेश लाभकारी रहेंगे। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा; धनागम की संभावना है।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। चेहरे और मुख की मामूली तकलीफ संभव है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चावल, मिश्री, श्वेत वस्त्र दान दें।

महादशा :– राहु

(18/07/2015 - 17/07/2033)

राहु की महादशा 18/07/2015 को आरम्भ और 17/07/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपको सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु–सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व–गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान–पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई–बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार–व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शि क्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :– राहु – राहु

(18/07/2015 - 30/03/2018)

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बिना उद्देश्य के इधर–उधर भटक सकते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपसे दूर हो सकते हैं क्योंकि आपका व्यवहार शत्रुतापूर्ण हो सकता है। आप स्वार्थी, शक्की, विद्रोही और निम्न कोटि के कर्म करने वाले हो सकते हैं। आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए ; अपने बल पर कार्य करना चाहिए। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, इसके लिए अपरंपरागत उपचार का सहारा ले सकते हैं। विवाहत जीवन में तनाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – गुरु

(30/03/2018 - 23/08/2020)

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुख–सुविधासंपन्न होंगे। व्यायाम करेंगे, जिससे शरीर हष्ट–पुष्ट रहेगा। उत्तम वस्त्र धारण करेंगे, प्रसन्नचित्त रहेंगे। यह अंतर्दशा आपके और आपके परिवार के लिए बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जाप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :– राहु – शनि

(23/08/2020 - 30/06/2023)

शनि आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और

आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 11, 3, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके पेट में फोड़ा हो सकता है। आप साहसी होंगे, एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। धर्म में रुचि कम होगी, घरेलू जीवन में मितव्ययी हो सकते हैं। दान–धर्म की संस्था के व्यवस्थापक बन सकते हैं। शनि आपको धैर्यवान बनाएगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए नीलम चांदी या सोने की अंगूठी में जड वाकर शनिवार के दिन पूजा के बाद दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर शनि के वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :– राहु – बुध

(30/06/2023 - 16/01/2026)

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दर्शनिक प्रवृत्ति के हो सकते हैं, बुद्धि भ्रष्ट हो सकती है। चिंतित और भ्रमित रह सकते हैं। विवाहेतर यौन संबंध हो सकते हैं। मष्तिष्क का सकारात्मक उपयोग करना उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – केतु

(16/01/2026 - 03/02/2027)

आरम्भ और ढडक्ज्वझञ सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन विचलित हो सकता है। विषय–वासनाओं में आपकी रुचि आवश्यकता से अधिक हो सकती है। आपको और आपके जीवनसाथी को कोई बीमारी हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों में और मंदिर में कंबल बांटें

• कुत्तों को भोजन दें
• भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

अंर्तदशा :– राहु – शुक्र

(03/02/2027 - 03/02/2030)

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके उत्तम मित्र होंगे, सामाजिक जीवन सफल रहेगा, उच्चपद पर आसीन होंगे, धनी बनेंगे। सब सुख–साधन उपलब्ध होंगे। बहुत सी यात्राएं करेंगे, लोकप्रिय बनेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से मित्रता होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – सूर्य

(03/02/2030 - 29/12/2030)

सूर्य आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है। कार्यों में असफलता मिल सकती है। पापकर्म में रुचि हो सकती है। नेत्ररोगों और चोट से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। कार्यक्षमता और ऊर्जा उत्तम रहेंगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

• दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
• आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
• बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

अंर्तदशा :– राहु – चन्द्र

(29/12/2030 - 29/06/2032)

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ–हानि,

सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुरुचिपूर्ण, शिष्ट और प्रसन्नचित्त होंगे, कार्य/व्यापार और समाज में सफल रहेंगे। भाग्य साथ देगा, धनी बनेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्ति आपकी ओर प्रभावित होंगे मगर वे आप पर हावी हो सकते हैं। इस संबंध में सावधानी आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

चंद्रमा को चंद्र उदय के समय मंत्रोच्चार करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :– राहु – मंगल

(29/06/2032 - 17/07/2033)

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ–हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। द्वितीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 5, 8, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्यों में बाधाएं आएंगी, मगर आय अच्छी होगी। धन संचित होगा। आप कंजूस हो सकते हैं; परिवार में झगड़े हो सकते हैं। कटुवाणी के कारण शत्रुता बढ़ेगी। ऊर्जा का उपयोग सकारात्मक कार्यों में करना श्रेयस्कर रहेगा, इससे साख की रक्षा हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप प्रतिदिन करें।

महादशा :– गुरु

(17/07/2033 - 17/07/2049)

गुरु की महादशा की अवधि सोलह वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 17/07/2033 को आरम्भ और 17/07/2049 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु लग्न में स्थित है। यह शरीर रचना, रूपकार, स्वास्थ्य, स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रतिष्ठा, सामान्य रहन–सहन, चेहरे के ऊपरी भाग, दीर्घ आयु और सामान्य जीवन की संरचना के प्रति विचार का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित होकर पंचम, सप्तम तथा नवम भावों को देखता हुआ उनपर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष की यह दशा शान्ति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की दशा होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी अपने ही भाव में स्थित होकर भाव को शक्ति दे रहा है। फलतः इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप अपने सामान्य कार्यों का सम्पादन करने की स्थिति में होंगे।

अर्थ–सम्पत्ति :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति और पंचम तथा नवम (सप्तम के अतिरिक्त) भाव अर्थात् दो त्रिकोणों पर उसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आप अपनी आय के स्रोतों और चल–अचल सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आप भोग–विलास की वस्तुओं पर व्यय भी करेंगे।

व्यवसाय :

प्रथम भाव में स्थित गुरु के कारण आप अपने ही प्रयास से अपना जीविकोपार्जन करेंगे। आप जिस किसी भी व्यवसाय में हों, उन्नति करेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, जीवन में उन्नति करेंगे और मकान, वाहन आदि सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आपकी शिक्षा तथा ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति तथा पंचम, सप्तम तथा नवम भावों अर्थात् भूत–कर्म भाव, जीवन संगी भाव और सुख कर्म पर उसकी दृष्टि के कारण आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा सौहर्दपूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके माता–पिता आपके जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति के कारण इस दशा के दौरान आपको शिक्षा के उत्तम अवसर मिलेंगे और आपकी प्रशिक्षण–वृत्ति सफल होगी। ज्ञान के प्रति आपकी खोज के कारण आप अपनी इच्छा के अनुरूप साहित्य और धर्म की पुस्तकों का अध्ययन करेंगे।

अंर्तदशा :– गुरु – गुरु

(17/07/2033 - 04/09/2035)

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली रहेंगे, सम्मानित होंगे, धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। आत्म–विश्वास में वृद्धि होगी; योग्यता विकसित होगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, संतान सुखकारी होगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार से लाभ में वृद्धि होगी। चुनाव में जीत होगी; हर काम में सफल रहेंगे। पुत्र का जन्म हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकता है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विद्वानों, संतों से संपर्क बढ़ेगा।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, धनी बनेंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता की किस्मत चमकेगी; आपके भाई–बहनों के लिए परीक्षा में सफलता, संचार माध्यम में कुशलता, लघु यात्राओं का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, धनी बनेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित प्रगति या धनलाभ संभव है। परामर्शदाता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :– गुरु – शनि

(04/09/2035 - 18/03/2038)

इस अवधि में आप भाग्यशाली और धनी बनेंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। संन्यास में रुचि हो सकती है। धर्म और दर्शनशास्त्र में मन लग सकता है। पिता से संबंध मधुर होंगे। शिक्षा उत्तम होगी। संतान से सुख मिलेगा। पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। दान–धर्म की संस्थाओं से जुड़ सकते हैं।

आपके जीवनसाथी सब कार्यों को उत्साह और साहस से पूर्ण करेंगे। आपके पिता के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। माता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। आपके भाई–बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, व्यापार में लाभ, अचल संपत्ति और वाहनसुख, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण हो सकती है, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैष्चराय नमः

अंर्तदशा :– गुरु – बुध

(18/03/2038 - 23/06/2040)

इस अवधि में आपके शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे। अध्यात्म और ध्यान में रुचि होगी। अंतर्ज्ञान शक्ति और कल्पनाशीलता उत्तम रहेंगी। शिक्षा पूर्ण होगी। कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। सफलता के कई अवसर मिलेंगे। अध्यात्म और दर्शन में रुचि बढ़ेगी। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को मानसिक शांति और घरेलू सुख मिलेंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति और वाहन का सुख मिलेगा। माता की यात्राएं हो सकती हैं; सम्मान और उच्च पद प्राप्त करेंगी। आपके भाई–बहनों के लिए धनार्जन, लाभ, सुख–सुविधाएं, भरोसेमंद मित्र, महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर का संकेत है।

आपकी संतान परीक्षा में सफल रहेगी, ज्ञान–विज्ञान में रुचि होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, धनार्जन उत्तम होगा, कार्यों में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी, कुछ परिवर्तन हो सकता है, सफल रहेंगे। व्यापारियों को स्पर्धा में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य का, विशेषकर स्नायुतंत्र और नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :– गुरु – केतु

(23/06/2040 - 30/05/2041)

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा। व्यापार में अचानक वृद्धि होगी। घरेलू सुख होगा। विरोधियों पर विजय होगी। समाज में सफलता मिलेगी। व्यापार के संबंध में विदेश जा सकते हैं। प्रसिद्ध होंगे, अन्य लोग सहायता करेंगे, आत्म–विश्वास से पूर्ण होंगे, मन की शांति रहेगी। साधु–संतों में मन लगेगा। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी; प्रत्येक कार्य सुनियोजन और सावधानी से करेंगे।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि रहेगी, घर से बाहर अधिक रहने में मन लगेगा। माता के रिश्तेदारों से संबंध उत्तम रहेंगे। आपके भाई–बहनों के लिए कार्यों में सफलता, यात्रा और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान के कार्य पूर्ण होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो वेतन में वृद्धि होगी। परामर्शदाता व्यस्त रहेंगे। व्यापारी धन कमाएंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, कंबल, तिल, तेल और सतनजा दान करें।

अंर्तदशा :– गुरु – शुक्र

(30/05/2041 - 29/01/2044)

इस अवधि में आप सफल रहेंगे। किस्मत चमकेगी। धन और सब सुख–साधन उपलब्ध होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी। बड़े भाई–बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। समाज में सफलता मिलेगी; जीवन आमोद–प्रमोद में गुज़रेगा। धनागम होगा; वाहनसुख संभव है। अगर विवाहित हैं तो शिशु का जन्म हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी होगा। शिक्षा उत्तम होगी और प्रगति के अवसर मिलेंगे।

आपके जीवनसाथी के पद और सम्मान में वृद्धि होगी। आपके पिता को सफलता आसानी से मिल जाएगी। माता के जीवन में अचानक कुछ घट सकता है।

आपके भाई–बहनों के लिए धन, सामूहिक कार्यों और परीक्षा में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान अगर कार्यरत है तो साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत है तो कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा; धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों और पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :– गुरु – सूर्य

(29/01/2044 - 16/11/2044)

इस अवधि में आपकी अध्यात्म और तंत्र–मंत्र में रुचि होगी। धन के खर्च में सूझ–बूझ का परिचय देंगे; कर्ज़ से बचेंगे। विदेश यात्रा या विदेश में निवास संभव है। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। विरोधियों और स्पर्धियों पर विजय होगी। आप में प्रशासनिक क्षमता उत्तम है। अदालत में विजय होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे; उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। आपके भाई–बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है; बोनस आदि से अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारों या अनुबंधों से लाभ होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कर्मचारियों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों और पैरों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– गुरु – चन्द्र

(16/11/2044 - 18/03/2046)

इस अवधि में आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। परिवार में हंसी–खुशी का वातावरण रहेगा। आप कुनबे के प्रमुख बने रहेंगे। धन का संचय होगा। मृदुवाणी से लोग प्रभावित होंगे। राजनीति में सफल हो सकते हैं। शिक्षा उत्तम होगी। अध्यात्म में दिलचस्पी ले सकते हैं। विरासत से लाभ हो सकता है। अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। ज्ञान–विज्ञान में रुचि होगी। जीवनसाथी से धन का लाभ हो सकता है।

आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता के बहुत से मित्र होंगे। आपके भाई–बहनों के लिए यात्रा, स्पर्धियों के कारण समस्याएं, जीवन में खुशी और उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को अचानक लाभ और निवेश से धनागम होगा। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चेहरे और मुख की मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सफेद वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :– गुरु – मंगल

(18/03/2046 - 22/02/2047)

इस अवधि में आपको धनलाभ उत्तम होगा, मगर व्यर्थ के खर्चों से बचना श्रेयस्कर रहेगा। आपकी बुद्धि और कल्पनाशक्ति उत्तम रहेंगी। प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। परिवार में कटुता से बचाव करें। आपकी कार्यक्षमता उत्तम रहेगी, साझेदार के माध्यम से या विरासत द्वारा धनागम हो सकता है। अप्रत्याशित घटना या परिवर्तन संभव है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। सट्टेबाजी से लाभ, प्रोन्नति, परीक्षा में सफलता और उच्चाधिकारियों से लाभ की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को अचानक लाभ हो सकता है। आपके पिता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, आय बढ़ेगी, धनी बनेंगे और सम्मानित होंगे। माता को घरेलू सुख रहेगा, धनार्जन उत्तम होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके भाई–बहनों के लिए अधिक खर्च, उत्तम शिक्षा, अचल संपत्ति की प्राप्ति और वाहन सुख का संकेत है।

आपकी संतान सफलता और प्रशंसा प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उत्साह उत्तम रहेगा, सफल होंगे। परामर्शदाता सौभाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और दांतों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, मसूर और तांबा दान में दें।

अंर्तदशा :– गुरु – राहु

(22/02/2047 - 17/07/2049)

इस अवधि में आपका आत्मविश्वास उत्तम होगा, प्रसिद्ध बनेंगे। आप में नेतृत्व की उत्तम शक्ति है। आप धनी बनेंगे; सुख के साधन उपलब्ध होंगे। अध्यात्म और तंत्र–मंत्र में रुचि हो सकती है। मानसिक तनाव से रहित रहेंगे। नये उद्यम की योजना बना सकते हैं; लाभ में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन में कुछ तनाव हो सकता है; इसे नीति और धैर्य द्वारा दूर कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को व्यापार और साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता की तीर्थयात्रा हो सकती है। आपके भाई–बहनों के लिए समृद्धि, प्रभावशाली मित्र, आर्थिक सुअवसर, उत्साह और दृढ़निश्चय का संकेत है।

आपकी संतान उत्कृष्टता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे, यात्रा होगी, किस्मत चमकेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक धनागम हो सकता है। परामर्शदाताओं को पहले किये निवेश से लाभ हो सकता है। व्यापारियों को साझेदारों के माध्यम से धनलाभ होगा। स्वास्थ्य का, विशेषकर शरीर के ऊपरी अंगों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की पूजा, भैरव रुप में शनिवार के दिन करें।

महादशा :– शनि

(17/07/2049 - 17/07/2068)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 17/07/2049 को आरम्भ और 17/07/2068 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि नवम भाव में स्थित है। शनी को एक अशुभ ग्रह कहा जाता है, पर यह अशुभ और शुभ दोनों का कार्य करता है। इसे बाधक ग्रह माना जाता है। इसके कारण फल की प्राप्ति में देर होती है, पर यह उससे वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। यह जातक के धर्य की परीक्षा लेता है आपकी जन्मकुण्डली में नवम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 11वें, 3रे तथा छठे भाव पर है और यह उनके कार्य को प्रभावित कर रहा है। नवम भाव, जिसमें यह स्थित है, विश्वास, भाग्य, ध्यान साधना, बलिदान, दानशीलता, अध्यापन, धर्म, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्य ोतक है।

स्वास्थ्य :

नवम भावम में स्थित महादशा स्वामी शनि की दृष्टि तृतीय और षष्ठम भावों पर है जिससे आपका स्वास्थ्य उत्तम और जीवन खुशहाल रहेगा। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी या स्वास्थ्य समस्या परेशान नहीं करेगी।

धन–सम्पत्ति :

शनि नवम भाव में स्थित है और भाव को शक्ति प्रदान करता है। आपकी धार्मिक तथा दान–पुण्य के कार्यों में रुचि होगी। आपकी विदेश यात्रा होगी जिसमें आप धन अर्जित करेंगे। चल–अचल सम्पत्ति में वृद्धि के लिए दशा अत्यन्त अनुकूल है।

व्यवसाय :

शनि के नवम भाव में स्थित होने के कारण आप अपना पुश्तैनी व्यवसाय अथवा उपदेशक, शिक्षक या चिकित्सक का कार्य करेंगे। आपके जीवन पर आपके पिता का पूर्ण प्रभाव रहेगा ओर आप दान–पुण्य करने वाले एक कर्त्तव्यनिष्ठ पुत्र होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपकी सहायता करेंगे और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके समकक्ष साथियों की आपके पारिवारिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी पढ़ाई में दिलचस्पी है और आप अपनी शिक्षा पूरी करने में सफल होंगे। ज्ञान की खोज उच्च शिक्षा जारी रखने में सहायक होगी।

अंर्तदशा :– शनि – शनि

(17/07/2049 - 20/07/2052)

शनि आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। शनि अशुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 11, 3 ,6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको कोई उदर रोग हो सकता है। एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं, मगर साहसी होंगे। धर्म में रुचि कम हो सकती है मगर समाज सेवा और दान से संबंधित गतिविधियों में भाग लेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।
- पीपल को जल दें।

अंर्तदशा :– शनि – बुध

(20/07/2052 - 30/03/2055)

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक स्वभाव के हो सकते हैं, चिंतित रह सकते हैं। विषय–वासनाओं में रुचि हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शनि – केतु

(30/03/2055 - 08/05/2056)

आरम्भ और ढडक्ज्वझ्र सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपको और आपके जीवनसाथी को समस्याओं का सामना करना होगा। आपकी वासनाओं में रुचि अधिक होगी, जिससे विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है। अवैध संबंध के कारण अपमान हो सकता है, वीर्यशक्ति का ह्रास हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के निम्न उपाय करें :

- कुत्तों को भोजन दें।
- भूरा कुत्ता पालें।
- गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

अंर्तदशा :– शनि – शुक्र

(08/05/2056 - 09/07/2059)

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति। उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी खूब यात्राएं होंगी। इस कारण बहुत से व्यक्तियों से मित्रता होगी। मित्रों में महिलाएं भी होंगी। लोकप्रिय बनेंगे, खूब धन कमाएंगे। सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शनि – सूर्य

(09/07/2059 - 20/06/2060)

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उपेक्षित महसूस कर सकते हैं। कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। संतान के कारण भी कठिनाइयां आ सकती हैं। निराश हो सकते हैं। किसी गैरकानूनी कार्य से संबद्ध हो सकते हैं जिससे नेत्रों की शक्ति क्षीण हो सकती है। यह अंतर्दशा शुभ नहीं रहेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :– शनि – चन्द्र

(20/06/2060 - 19/01/2062)

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ–हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

चंद्रमा मन और माता का कारक है। द्वितीय भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के 8वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको देरी और कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी वाणी मृदु होगी, पसंद उत्तम रहेगी। लोकव्यवहार अच्छा होने के कारण कार्य–व्यवसाय और राजनीति में सफलता प्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से अच्छे संबंध रहेंगे मगर वे हावी रहकर समस्या खड़ी कर सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, धनी बनेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :– शनि – मंगल

(19/01/2062 - 28/02/2063)

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ–हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

द्वितीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 5, 8, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको लक्ष्य की प्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं मगर आय अच्छी होगी, धनी बनेंगे। इसके बावजूद आप कंजूस हो सकते हैं। परिवार में अशांति हो सकती है। कटु वचन बोलने से बचें अन्यथा परिवार और समाज में परेशानियां आ सकती हैं। नेत्र रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। ऊर्जा का दुरुपयोग न करें। इसका सही दिशा में उपयोग लाभकारी होगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

अंर्तदशा :– शनि – राहु

(28/02/2063 - 04/01/2066)

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके मन में नकारात्मक विचार आ सकते हैं, विवाहित जीवन में कटुता आ सकती है। सावधान रहना श्रेयस्कर रहेगा। अध्ययन में रुचि होगी मगर स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। आप में विद्रोह की भावना हो सकती है, शक्की स्वभाव के हो सकते हैं। पापकर्म में लिप्त होने से बचें।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शनि – गुरु

(04/01/2066 - 17/07/2068)

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बुद्धिमान और धनी होंगे। जिस वस्तु की इच्छा करेंगे, वह आपको प्राप्त हो जाएगी मगर सब कार्यों में बाधाएं आएंगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। यह अंतर्दशा शुभ रहेगी क्योंकि बृहस्पति की कृपा आप और आपके परिवारजनों पर रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

महादशा :– बुध

(17/07/2068 - 17/07/2085)

बुध की महादशा 17/07/2068 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 17/07/2085 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्यशित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान–विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हें। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन–सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय–व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा। आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन–देन भी हो सकता है। आप जमीन–जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध–परियोजनाएं आरम्भ कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य–क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य–स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई–बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई–बहनों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान–पुण्य तथा शुभ कार्यों पर व्यय करेंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

अंर्तदशा :– बुध – बुध

(17/07/2068 - 14/12/2070)

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। ध्यान, तंत्र–मंत्र आदि में रुचि होगी। अंतर्ज्ञान शक्ति का विकास हो सकता है। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। प्रगति में बाधा आ सकती है। मामा पक्ष से लाभ होगा। मुकदमे में जीत होगी।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; ज्ञान–विज्ञान में रुचि होगी, संपत्ति से आय उत्तम होगी, घरेलू सुख रहेगा। माता धनी होंगी।

आपके भाई–बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, प्रसिद्धि, उच्चाधिकारियों से सहयोग, धनलाभ, घरेलू सुख, उत्तम शिक्षा का संकेत है। आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, शिक्षा पूर्ण हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो किसी परिवर्तन के बाद प्रगति हो सकती है ; अचानक लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से सहयोग करने पर लाभ होगा। व्यापारियों को स्पर्धा का सामना करना होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे और व्यस्त रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। नेत्रों और त्वचा के विकारों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गाय को हरी घास और सब्जी खिलाएं।

अंर्तदशा :– बुध – केतु

(14/12/2070 - 11/12/2071)

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा। समाज में सफलता मिलेगी, लोकप्रिय और प्रसिद्ध बनेंगे। व्यापार में वृद्धि होगी, विदेश यात्रा या विदेशों से व्यापार संभव है। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। शत्रुओं और विरोधियों पर विजय होगी। केतु की लग्न पर दृष्टि के कारण आत्मविश्वास और संकल्प उत्तम रहेंगे। अध्यात्म और सात्विक जीवन में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी प्रत्येक कार्य सोच–समझकर करेंगे। आपके पिता का धनार्जन उत्तम होगा; सम्मानित होंगे, धनी बनेंगे। माता कुछ अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई–बहनों के लिए निवेश से लाभ, अध्ययन और अध्यात्म में रुचि, सौभाग्य, पिता से उत्तम संबंध का संकेत है।

आपकी संतान को सफलता और प्रशंसा मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल होंगे; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर सफल रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधिओं को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए कुत्ते को भोजन दें।

अंर्तदशा :– बुध – शुक्र

(11/12/2071 - 11/10/2074)

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। उच्चपद और सम्मान प्राप्त होंगे। सट्टेबाजी या निवेश से लाभ हो सकता है। आप धनी बनेंगे, खुद का मकान और वाहन हो सकते हैं। किस्मत साथ देगी। सुअवसर खूब मिलेंगे। कला में रुचि होगी। सब सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। घरेलू सुख होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, धनी बनेंगे, खुश रहेंगे और उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता प्रसन्न और समृद्ध होंगे। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचानक धनागम होगा, सुख के साधन क्रय करेंगी। आपके भाई–बहनों के लिए यात्रा, पिता से मधुर संबंध, खुशी, धन, कला में रुचि, सौभाग्य, घर और कार्यालय में सुखद वातावरण और सुखी जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी, परिश्रम से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में फ़ायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :– बुध – सूर्य

(11/10/2074 - 17/08/2075)

इस अवधि में आप अध्यात्म और दर्शन में रुचि लेंगे। स्पर्धी आपको परेशान करने की कोशिश करेंगे मगर आप विजयी रहेंगे। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। शत्रु परास्त होंगे; उत्तम स्वास्थ्य, धन, उच्च पद, प्रसन्नता, सफलता और लाभ का संकेत है। मुकदमे में जीत होगी। मातहत सहयोग करेंगे; कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी।

आपके जीवनसाथी को धन, उच्चपद, विरोधियों पर विजय का संकेत है। आपके पिता के लिए अचल संपत्ति, सरकार से लाभ और सब सुखों का योग है। माता को अध्यात्म में रुचि होगी, भाग्य साथ देगा, यात्रा होगी।

आपके भाई–बहनों की साख अच्छी होगी, कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ, उत्तम शिक्षा और खुशी का संकेत है। आपकी संतान के वातावरण में परिवर्तन हो सकता है, शिक्षा पूर्ण होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक प्रयास से सफल हो सकते हैं। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों को लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– बुध – चन्द्र

(17/08/2075 - 16/01/2077)

इस अवधि में आपका घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आप मृदुभाषी हैं। आपकी शिक्षा उत्तम होगी, धन और सुख–सुविधाएं प्राप्त होंगी। किस्मत साथ देगी, धन संचित होगा। रिश्तेदारों और परिवारजनों के साथ जीवन हंसी–खुशी से गुज़रेगा। घर के लिए अच्छी खरीदारी करेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। माता का प्रभाव आपके जीवन पर काफी रहेगा। बीमा, सेवानिवृत्ति की योजनाओं, ग्रेच्युटी आदि से धनलाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता के स्पर्धियों में कमी होगी। माता के बहुत से मित्र होंगे, संतान से संबंध मधुर रहेंगे, धन, निवेश से सफलता का योग है।

आपके भाई–बहनों के खर्चे बढ़ सकते हैं, सफलता आसानी से मिलेगी, यात्रा, उत्तम शि क्षा, समृद्धि, सुख और अचल संपत्ति से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त होंगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफलता, धन, उच्चपद और लोकप्रियता का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के काम में परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और चेहरे की मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंर्तदशा :– बुध – मंगल

(16/01/2077 - 13/01/2078)

इस अवधि में आप धन कमाएंगे। कटु वचन बोलने से बचें। घरेलू सुख उत्तम रहेगा। कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। विरासत द्वारा या साझेदार से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यात्रा, सफलता, प्रसिद्धि, उत्साह द्वारा लक्ष्य प्राप्ति का संकेत है। जायदाद के मालिक बन सकते हैं।

अध्यात्म क्षेत्र में उत्तम, सकारात्मक कार्य कर सकते हैं। समाज में प्रभाव बढ़ेगा। प्रोन्नति और वांछित स्थान पर तबादला संभव है। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता शक्तिशाली और सफल बनेंगे। माता धनी और सफल होंगी, निवेश से लाभ होगा।

आपके भाई–बहनों के खर्चे बढ़ सकते हैं, सफलता में बाधा, अचल संपत्ति की खरीद, उत्तम शिक्षा के संकेत हैं। आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसिद्धि, सफलता और उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी–मोटी व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :– बुध – राहु

(13/01/2078 - 01/08/2080)

इस अवधि में आप में आत्मविश्वास रहेगा और सब बाधाओं को पार कर लेंगे। धन का लाभ होगा, नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं। उच्च पद और सत्ता प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सफलता मिलेगी, साझेदारी से लाभ होगा, घरेलू सुख रहेगा। व्यापार में अचानक प्रगति होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। विवाह हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है। भौतिक सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी।

आपके जीवनसाथी की व्यापार से संबंधित यात्रा हो सकती है। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता सामाजिक, व्यापारिक और कार्यसंबंधी गतिविधियों में प्रगति करेंगी। आपके भाई–बहनों के लिए धन लाभ, प्रभावशाली मित्र, उत्साह, सौभाग्य और कार्य में अच्छी आय का संकेत है।

आपकी संतान की यात्रा होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, शिक्षा में प्रसिद्धि प्राप्त होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धन, सुख के साधन प्राप्त करेंगे, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ होगा, यात्रा होगी। परामर्शदाता निवेश के लिए धन खर्च करेंगे; धनलाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे, यात्राएं होंगी, व्यस्तता बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर के ऊपरी भाग का खास तौर पर ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन भैरव रूप में शिवजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– बुध – गुरु

(01/08/2080 - 07/11/2082)

इस अवधि में आप प्रसन्न, सफल और धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। संतानसुख रहेगा। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। अध्यात्म में उन्नति हो सकती है। विवाह हो सकता है। उच्चपद मिल सकता है। व्यापार में लाभ और विस्तार की संभावना है। धनी बनेंगे। यात्रा हो सकती है। कार्यों में सफलता मिलेगी, कार्यक्षमता उत्तम होगी। आपके जीवनसाथी को कार्यों और व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी होंगे; पारिवारिक सुख मिलेगा। माता सफल और प्रसिद्ध होंगी।

आपके भाई–बहनों के लिए धन का संचय, प्रभावशाली मित्र, यात्रा, सौभाग्य और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है। आपकी संतान सौभाग्यशाली होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो पिता से सकारात्मक संबंध होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को वर्तमान में किये निवेश से लाभ होगा। व्यापारियों के धनार्जन में वृद्धि होगी; यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :– बुध – शनि

(07/11/2082 - 17/07/2085)

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। धनार्जन उत्तम होगा। समाज में सफलता मिलेगी। वांछित प्रोन्नति और तबादला संभव है। छोटे भाई–बहनों से खुशियां मिलेंगी। प्रभाव में वृद्धि होगी, खुशियां बढ़ेंगी, कार्यों में सफलता मिलेगी। लेखन, विज्ञान और संचार माध्यम से संबंधित कार्यों के लिए समय शुभ है। प्रभावशाली व्यक्तियों से लाभप्रद मित्रता होगी। स्पर्धियों पर विजय होगी, मातहत सहयोग करेंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी की प्रोन्नति हो सकती है; उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। माता के कार्यालय में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी। आपके भाई–बहनों के लिए साझेदार या जीवनसाथी से लाभ, यात्रा, धनार्जन, प्रभावशाली मित्र, उत्तम शिक्षा और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल में किये कार्य से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारी मार्केटिंग में दक्षता से धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द की दाल, तेल और काले वस्त्र दान में दें।

महादशा :– केतु

(17/07/2085 - 17/07/2092)

केतु की महादशा 17/07/2085 को आरम्भ और 17/07/2092 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु सप्तम भाव में है जहाँ से इसकी दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी दशा 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, यश और ख्याति की प्राप्ति और लम्बी यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में यात्रा, व्यापार में वृद्धि और साझेदारों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्ति शाली तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, छूत की बीमारी, फोड़ा, जनन तथा मूत्राशय संबंधी समस्या हो सकती है। कुछ उपायकर इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको साझेदारों तथा व्यवसाय से लाभ होगा। सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। आपको कार्य में सफलता तथा यश और ख्याति मिलेगी। जीविका–व्यवसाय के लिए उद्योग, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, धातु अथवा खनिज प्रौद्योगिकी अथवा हाईवेयर निर्माण अथवा कृषि का चयन कर सकते हैं। रत्न, धातु, चमड़े, मशीनरी लोहा और इस्पात, हाईवेयर, खेल–सामग्री आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। व्यापार–व्यवसाय से जुड़े लोगों को यश, ख्याति, आदर, सफलता तथा जीवन में प्रगति होगी। यह दशा व्यवसाय में उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको सभी सुख मिलेंगे। जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी। आप एक मकान खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के लेन–देन के लिए यह दशा उत्तम है। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु, लाभदायक और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको अपना स्तर बनाए रखने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। गणित, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, भाषा, मेकैनिकल इंजीनियरिंग, प्रशासन और योजना में आपकी रुचि हो सकती है। आप साहसी और आत्मविश्वासी हैं और खेल तथा शिक्षा, अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी छोटी यात्रा होगी। उन्हें आपकी सहायता और मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी को यश, ख्याति और धर्म में रुचि होगी। अपने जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम

रहेगा। आपकी माता की जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी जबकि पिता को लाभ, विभिन्न स्रोतों से आय और इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को सट्टे में लाभ और शिक्षा उत्तम होगी। बड़ों की यात्रा होगी और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी। शुक्र के कारण आपको लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रगति होगी, व्यवसाय में सफलता और लाभ मिलेगा। राहु कुछ बाधा खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान शत्रु के कारण कुछ समस्या, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या और छोटी यात्रा होगी जबकि योगकारक शनि के कारण बच्चों से सुख, सफलता और जीवन का आराम मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति और समृद्धि मिलेगी तथा लम्बी यात्रा होगी।

अंर्तदशा :– केतु – केतु

(17/07/2085 - 13/12/2085)

इस अवधि में आप व्यापार में सफल होंगेः साझेदार द्वारा लाभ होगा। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। सार्वजनिक जीवन में सफलता मिलेगी। संयमित जीवन और साधना में रुचि हो सकती है। विवेक और बुद्धि उत्तम होंगे। अतींद्रिय शक्ति प्रबल हो सकती है। नये व्यापार की योजना बन सकती हैः धनार्जन उत्तम होगा।

आपके जीवनसाथी की आय अच्छी होगी, मानसिक शांति रहेगी। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी, सुख–सुविधा संपन्न होंगे, धनी बनेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई–बहनों के लिए निवेश से लाभ, सौभाग्य, पिता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, सुख–सुविधाएं उपलब्ध होंगी, विवाद में विजय होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धन में वृद्धि होगी, सहकर्मियों से उत्तम संबंध रहेंगे। परामर्शदाता सफलता प्राप्त करेंगे, लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की पूजा करें।

अंर्तदशा :– केतु – शुक्र

(13/12/2085 - 13/02/2087)

इस अवधि में आपकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। किस्मत साथ देगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। धनागम अच्छा होगा। धन संचित होगा, अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं। सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके बहुत से ज्ञानवान और प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी रहेंगे। कला में रुचि होगी। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उच्चपद प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली होंगे। आपके पिता को स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी; वे धनी बनेंगे, लघु यात्राएं होंगी। माता विरासत द्वारा अचल संपत्ति की मालिक बन सकती हैं ; धनी बनेंगी। आपके छोटे भाई–बहनों के लिए यात्रा, पिता से लाभकारी संबंध, धन–समृद्धि और प्रसन्नता का योग है। बड़े भाई–बहन उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध और धनी बनेंगे।

आपकी संतान सफल रहेगी, उत्तम मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा, किस्मत साथ देगी, धनार्जन अच्छा होगा। अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को विविध माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :– केतु – सूर्य

(13/02/2087 - 20/06/2087)

इस अवधि में आपको कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर मार्ग में बाधाएं आ सकती हैं। पराविद्या में रुचि हो सकती है। अध्यात्म में समय लगाएंगे। स्पर्धी और शत्रु परेशान कर सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। धनार्जन उत्तम रहेगा; उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। कार्यालय का वातावरण उत्तम होगा; अधीनस्थ कर्मचारी सहयोग करेंगे। आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी।

आपके भाई–बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, धन, कार्यों की पूर्णता और शिक्षा में सफलता का संकेत है। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, सफलता के मार्ग में बाधाएं हो सकती हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो विरासत या बीमे से लाभ हो सकता है; कार्यक्षेत्र में उतार–चढ़ाव हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को प्रचार और मार्केटिंग में सुधार से लाभ होगा। व्यापारियों को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य मंत्र का जाप करें।

ऊँ घृणि सूर्याय नमः

अंर्तदशा :– केतु – चन्द्र

(20/06/2087 - 19/01/2088)

इस अवधि में आपका धनार्जन उत्तम होगा। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। मधुर वाणी के कारण लोकप्रिय बनेंगे। घरेलू मामलों पर धन खर्च हो सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; विरासत से धन प्राप्त हो सकता है। अतींद्रिय शक्ति का विकास हो सकता है। ज्ञानार्जन की रुचि होगी। जीवनसाथी के धन द्वारा धनार्जन कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को विरासत आदि से अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। आपके पिता के अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से उत्तम संबंध रहेंगे। माता के बहुत से मित्र होंगे। आपके भाई–बहनों के लिए स्पर्धा में विजय, खर्चे, यात्रा, निवेश में सफलता, खुशी और ज्ञानार्जन का संकेत है। आपकी संतान प्रसिद्ध बनेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता धनी बनेंगे; आय बढ़ेगी। व्यापारियों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मुख और चेहरे की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सफेद वस्तुएं, चावल, दूध, दही आदि का दान करें।

अंर्तदशा :– केतु – मंगल

(19/01/2088 - 17/06/2088)

इस अवधि में आप धनी बन सकते हैं। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए कटु वचनों का प्रयोग न करें। आपकी कार्यक्षमता उत्तम होगी, जीवनसाथी के धन से लाभ हो सकता है। निवेश से लाभ होगा; संतान सुखकारी रहेगी। स्पर्धा कठिन हो सकती है पर आप सफल रहेंगे।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके पिता को अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलने में कठिनाई आ सकती है। माता धनी और सफल होंगी, उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा, निवेश से लाभ होगा।

आपके छोटे भाई–बहनों के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा होगी, सफलता में बाधा आ सकती है। बड़े भाई–बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान अगर कार्यरत है तो उच्चपद प्राप्त करेंगे, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति हो सकती है, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के लिए अचानक लाभ, परिवर्तन और साझेदार से लाभ का संकेत है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर खानपान में संयम बरतना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :– केतु – राहु

(17/06/2088 - 05/07/2089)

इस अवधि में आपका धनार्जन उत्तम होगा, भौतिक सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। अन्य लोग आपकी सहायता करेंगे; आप भी औरों की मदद करेंगे। विवाह हो सकता है। दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। विदेश यात्रा या व्यापार से संबंधित यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी सफल और लोकप्रिय होंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगी, तीर्थयात्राएं होंगी, प्रसिद्ध बनेंगी। आपके भाई–बहनों के लिए प्रभावशाली मित्र, आर्थिक प्रगति के अवसर, समृद्धि, इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में प्रसिद्धि प्राप्त करेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो विवाह हो सकता है, उच्चपद मिलेगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक धनलाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं की नींव मजबूत होगी, आय बढ़ेगी। व्यापारी विदेश जा सकते हैं, लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर के ऊपरी भाग के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की पूजा करें।

अंर्तदशा :– केतु – गुरु

(05/07/2089 - 11/06/2090)

इस अवधि में आप धनी और प्रसन्न होंगे। आय उत्तम होगी। शिक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जीवन प्रसन्नतापूर्ण रहेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। शिशु का जन्म हो सकता है। परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। आप धनी बनेंगे, पिता से लाभकारी संबंध रहेंगे, दान–धर्म में रुचि लेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की धर्म में रुचि होगी। माता सफल होंगी, धनी बनेंगी। आपके भाई–बहनों के लिए धन के संचय और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, ज्ञानार्जन उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी, सफल और भाग्यशाली होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, धनी बनेंगे। व्यापारियों का धनार्जन उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं, दाल, हल्दी या शहद दान में दें।

अंर्तदशा :– केतु – शनि

(11/06/2090 - 21/07/2091)

इस अवधि में आप भाग्यशाली और धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, यात्राएं होंगी। उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी। छोटे भाई–बहन सुखकारी होंगे। आपका खेती से कोई संबंध हो सकता है। निवेश से लाभ होगा। शत्रुओं पर विजय होगी; अधीनस्थ कर्मचारी सहयोग करेंगे। मामा प क्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के सब काम बन जाएंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, उनका कार्यालय उत्तम होगा। आपके भाई–बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, आय में वृद्धि और प्रभावशाली मित्रों का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे और निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख बढ़ेगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैष्चराय नमः

अंर्तदशा :– केतु – बुध

(21/07/2091 - 17/07/2092)

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। ध्यान और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। अतींद्रिय शक्ति विकसित हो सकती है। आपकी वाणी मधुर होगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। कार्यालय का वातावरण मधुर रहेगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। मार्ग की बाधाएं हट जाएंगी। सरकार से लाभ होगा, सम्मान बढ़ेगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, उनके बहुत मित्र होंगे, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। माता धनी बनेंगी, यात्रा और दर्शनशास्त्र में रुचि संभव है। आपके भाई–बहनों के लिए विविध माध्यमों से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारों से लाभ रहेगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी; उन्हें समाचार माध्यम से लाभ हो सकता है। व्यापारियों का कार्यालय उत्तम होगा।

नेत्रों और स्नायुतंत्र की मामूली शिकायतों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती ह। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	पुखराज		स्वास्थ्य,व्यावसायिक उन्नति,
भाग्य रत्नः	मूंगा		धन,भाग्योदय,
कारक रत्नः	मोती		धन,सन्तति सुख,
दशा	**रत्न**	**क्षमता**	**मंत्र–जप / व्रत / दान / लाभ**
शुक्र	पुखराज	80%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
05/03/1987	मूंगा	61%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
17/07/1992	मोती	41%	धनार्जन, पराक्रम, दुर्घटना से बचाव
सूर्य	पुखराज	87%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
17/07/1992	मूंगा	66%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
18/07/1998	मोती	49%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव
चन्द्र	पुखराज	87%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
18/07/1998	मूंगा	70%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
17/07/2008	मोती	66%	धन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मंगल	पुखराज	90%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
17/07/2008	मूंगा	83%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
18/07/2015	मोती	56%	धन, भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
राहु	पुखराज	87%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
18/07/2015	मूंगा	63%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
17/07/2033	मोती	46%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
गुरु	पुखराज	100%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
17/07/2033	मूंगा	70%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
17/07/2049	मोती	53%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति, दुर्घटना से बचाव
शनि	पुखराज	78%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
17/07/2049	मूंगा	66%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, दूध
17/07/2068	मोती	49%	भाग्योदय, धनार्जन, दुर्घटना से बचाव

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही ध ारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	ग्रह	नक्षत्र
माणिक्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	सूर्य	कृतिका, उ0फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	चन्द्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मंगल	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	बुध	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	गुरु	पुनर्वसु, विशाखा, पू0भाद्रपद
हीरा	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	शुक्र	भरणी, पू0फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	शनि	पुष्य, अनुराधा, उ0भाद्रपद
गोमेद	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	राहु	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	केतु	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	...	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	...	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है । शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/03/1987-16/12/1987
साढेसाती प्रथम ढैया	10/08/1995-16/04/1998
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती तृतीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती प्रथम ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती तृतीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बदनामी
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सन्तति कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपमुा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उमुद की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, शनि, सूर्य
		मारक	-	चंद्र, मंग, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	गुरु, राहु, शनि
		मारक	-	केतु, मंग, बुध

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	49%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति
चन्द्र	44%	धन, सन्तति सुख
मंगल	42%	धन, भाग्योदय
बुध	44%	कम खर्च, सुख, दम्पति
गुरु	71%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
शुक्र	59%	धनार्जन, पराक्रम, दुर्घटना से बचाव
शनि	59%	भाग्योदय, धनार्जन, कम खर्च
राहु	65%	स्वास्थ्य,
केतु	39%	दम्पति, कम खर्च

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शुक्र	17/07/1992	30	40	52	53	54	92	60	63	67
सूर्य	18/07/1998	87	53	52	72	66	35	49	38	25
चन्द्र	17/07/2008	55	84	71	53	54	62	48	38	25
मंगल	18/07/2015	55	84	83	28	66	62	48	38	50
राहु	17/07/2033	30	28	27	40	85	60	77	95	25
गुरु	17/07/2049	55	53	52	28	98	35	64	82	38
शनि	17/07/2068	43	28	27	65	70	60	92	80	25
बुध	17/07/2085	87	28	39	84	54	60	62	51	38
केतु	17/07/2092	30	28	52	40	54	77	35	38	82

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रमा के साथ जन्म कुंडली में स्थित है। अतः आप चन्द्र कुण्डली से मांगलिक हैं। परन्तु मंगल का योग चन्द्रमा से होने पर आपका मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है। ऐसा मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे। परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब होगा परन्तु विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं शान्त वातावरण में सम्पन्न होगा। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आप एक स्वस्थ पुरुष होंगे तथा मानसिक रूप से भी कभी विचलित नहीं रहेंगे। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से सुख संसाधनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप चल या अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त कर सकेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे स्वभाव से क्रोध के भाव को प्रदर्शित करेंगी। इससे दाम्पत्य जीवन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक कुशलता बनी रहेगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होते रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से शान्ति प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

अपने दापम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में मांगलिक दोष उचित नियमानुसार भंग हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो आप

अत्यन्त ही भाग्यशाली पुरुष सिद्ध होंगे। आप भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। साथ ही समाज में भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। आपकी पत्नी भी एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके परस्पर संबंध भी हमेशा मधुर रहेंगे एवं अनावश्यक तनाव तथा कटुता से आप मुक्त ही रहेंगे।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय समान भाव में मंगल की यदि आवश्यक न हो तो उपेक्षा ही करें क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिससे यदा कदा आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ रहेगा एवं दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझ कर इस विषय में अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ् खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्णरूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

नक्षत्रफल

आप भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, नाडी मध्य, योनि गज तथा वर्ग मृग होगा। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आपका राशिनाम "ले" से होगा। यथा लेखराज।

भरणी नक्षत्र में जन्म होने के कारण आप मनोरंजन के कार्यक्रमों यथा गीत,संगीत,नाटक तथा खेल कूदों के अधिक शौकीन होंगे तथा इन्हीं कार्यों पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे। यहां तक स्नानादि की इच्छा का भी यदा कदा अभाव रहेगा। आप चंचल प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा लोगों से मधुरता का व्यवहार अल्प मात्रा में ही करेंगे।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

आप अपने संकल्प के पक्के होंगे तथा जो निश्चय एक बार कर लेंगे उसे पूरा करके ही छोडेंगे। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगे। शरीर आपका स्वस्थ रहेगा तथा रोगों का अभाव रहेगा तथापि यदा कदा रोग ग्रस्त रहेंगे। कार्य आप जो भी करेंगे चतुराई से सम्पन्न करेंगे तथा सामान्य जीवन आपका समस्त सुखों से पूर्ण होकर व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारूग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

कभी कभी आपका स्वभाव अनावश्यक रूप से जिददी बन जाता है। जो हठ करते हैं उसे छोडते नही हैं। इससे अन्य जनों को भी परेशानी होगी। सम्पत्ति या धन दौलत तथा वैभव का आपको जीवन भर अभाव नहीं रहेगा। धनार्जन पर्याप्त मात्रा में होगा तथा शरीर की आरोग्यता बनी रहेगी। मुखाकृति भी आपकी निश्चित रूप से दर्शनीय होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।
जातक दीपिका

आप समय समय पर मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता का अनुभव करेंगे तथा लोग आपके चरित्र पर भी कभी कभी सन्देह प्रकट करेंगे। आप के हृदय में यदा कदा कठोरता का भाव भी रहेगा। आपके पास धन पर्याप्त मात्रा में रहेगा तथा संसार में धनवान बन कर रहेंगे।

याम्यर्क्षे विकलोळन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे

तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

मेष राशि में पैदा होने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे। तथा आप अपने अन्य भाई—बहनों में अकेले श्रेष्ठ रहेंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा तथा आखें लालिमा युक्त गोलाकार होंगी। आपके सिर पर किसी चोट या घाव का निशान हो सकता है।

सिर पर अल्प केश होंगे तथा हाथ पैर कमल की कान्ति के समान सुन्दर होंगे। जल से आप स्वभाविक रूप से भय करेंगे। धन को आप सम्मान समझेंगे तथा उसे इससे भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे। साहस एवं बुद्धि का आपके पास अभाव नहीं होगा जो भी कार्य करेंगे साहस तथा बुद्धि बल से उसे पूर्ण करेंगे। पुत्रों, सहयोगियों तथा मित्रों की आपके पास कभी भी कमी नहीं होगी। ये बड़ी संख्या में आपके साथ हमेशा रहेंगे। स्त्री वर्ग से आप पराजित रहेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के प्रति भी स्नेहशील रहेगा। जिससे आप समाज में मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञचलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू र्व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप शीघ्र ही नाराज हो जाएंगे परन्तु जल्दी प्रसन्न भी हो जाएंगे यह आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। आप भ्रमण प्रिय होंगे तथा सैर सपाटा करना आपको अच्छा लगेगा। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। आप स्त्रियों के अति प्रिय तथा सम्माननीय होंगे। दूसरे लोगों की सेवा करना तथा उन्हे सहयोग प्रदान करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे चाहे आपकी परिस्थितियां कैसी ही हों इसकी आप चिन्ता नहीं करेंगे।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।

कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करना से आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट होंगे। इसके फलस्वरूप या तो वे आपसे अलग हो सकते हैं या आप खुद उनसे अलग होंगे। आपके घर के सारे कार्य चूंकि अपनी पत्नी के सलाह से ही सम्पन्न होंगे तथा दूसरे लोगो की राय को कोई महत्व नहीं देंगे। अतः यह भी एक अलगाव का मुख्य कारण बनेगा। धन पुत्र तथा वैभव से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा समाज में अपने वैभव से कीर्ति प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप ऐसे स्थान पर जाना पसन्द करते हैं जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता हो। सामाजिक संबंध भी आपके विस्तृत होंगे। अतः अवसरानुकूल आप अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा आदि का भी भक्षण या सेवन कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता की झलक भी देखने को मिलेगी। लेकिन जब कभी आप अनावश्यक उग्रता का प्रर्दशन करेंगे आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपकी प्रवृति चंचल होगी तथा मौका पड़ने पर आप मिथ्या भाषण भी करेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरूग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाएं आपको रूचिकर लगेगी। आपके सिर में अल्प मात्रा में केश होंगे। पित्त या गरमी प्रदान करने वाले प्रदार्थों का परहेज रखे नहीं तो मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है। साथ ही शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे। ब्राहमणों तथा देवताओं की आप श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे। अभिमान भी आपके स्वभाव में रहेगा। धन की आपके पास कमी नहीं रहेगी। दया का भाव आपके अन्तःकरण में विद्यमान रहेगा तथा दीन दुःखियों के प्रति आप विशेष रूप से दयालु रहेंगे। आप शरीर से वलिष्ठ रहेंगे। आप कई कलाओं या कार्यों में निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में आपकी गहन रूचि होगी। शरीर आपका कान्तियुक्त रहेगा तथा आपके द्व ारा कई लोगों को सुख प्राप्त होगा।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतध्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा आजीवन विपुल धन के स्वामी बने रहेंगे। आखें आपकी बडी बडी होंगी तथा निशानेबाजी में सिद्धहस्त होंगे। शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाले होंगे। आप नगर के सम्मानीय नेता या अधिकारी भी हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

गजयोनि में जन्म लेने के कारण आप राजा के प्रिय होंगे अर्थात् बडे बडे मंत्रियों तथा अधिकारियों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध होंगे तथा वे सब आपका सम्मान करेंगे। आप आत्मबल, बाहुबल तथा बुद्धिबल से सुशोभित रहेंगे तथा अपने सारे कार्य आप अपने ही बल पर सुसम्पन्न करेंगे। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप उपभोग करेंगे। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी के सहयोगी या खुद भी उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आपकी प्रवृति उत्साही रहेगी तथा इसी प्रवृति से आप उन्नत शिखर पर पहुचेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके

हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षों की, मघा न क्षत्र, रविवार, विष्कुम्भ योग, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा यह समय आपके लिए अशुभ है अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियों तथा मघा नक्षत्र एवं विष्कुम्भ योग में कोई भी शुभ कार्य न करें। इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही

रविवार प्रथम प्रहर तथा मेषराशिस्थ चन्द्रमा में भी कोई शुभ कार्य न करें अनिष्ट ही होगा तथा इन दिनों शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

जब समय आपके लिए अनुकूल न लग रहा हो मानसिक तथा शारीरिक विकलता का अहसास हो रहा हो, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान हो रहा हो तो ऐसे समय में आप को अपने इष्ट श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। साथ ही सोना, तांबा, गेँहू, गुड़, घी, लाल वस्त्र, रक्त वस्त्र आदि पदार्थों का दान करना चाहिए। तथा साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में भी न्यूनता आएगी। साथ ही मंगलवार के उपवास करने से भी शुभ फल प्राप्त होंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र– ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।

शारीरिक गठन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सरलता एवं समानता का इनको प्रतीक माना जाता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इनमें रहता है।

प्राकृतिक द्रश्यों का अवलोकन करके इनको शांति एवं सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अतः सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रूचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी अतः विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगे। एक विचारक के रूप में भी आप सम्मानीय होंगे। यद्यपि ब्रहमादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगे परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपकी रूचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकते हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। आप सरकार या समाज में सम्मान प्राप्त करने में सफल होंगे। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरूचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुखैश्वर्य एवं धन वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख एवं शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन, लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। इसके प्रभाव से आप सतर्क, सक्रिय तथा बौद्धिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी उत्तम रहेगी एवं आसानी से किसी वस्तु को भूल नहीं पाएंगे। भाई बहिनों के सुख एवं सहयोग को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही वे भी साहसी एवं परोपकारी होंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वे महत्वाकांक्षी भी होंगे तथा आपके पूर्ण विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी रहेंगे। पारिवारिक शान्ति एवं परस्पर सौहार्द के भाव को रखने के लिए समय समय पर आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे तनाव एवं मतभेदों में न्यूनता रहेगी।

आप नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में सभी लोग आपकी संगठन शक्ति से प्रभावित होंगे तथा आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा दार्शनिक स्वभाव ईमानदार तथा स्पष्टवादिता आपके प्रमुख गुण रहेंगे। अतः इनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा समाज में प्रभावशाली पद को अर्जित करेंगे। आधुनिक संचार सुविधाओं का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे।जैसे टेलीफोन टेलीविजन वाहन या अन्य साधन आपको सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपका विशेष लगाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनसे मनोंरजन करके मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। जीवन में दूर समीप की यात्राओं से आप लाभ एवं ख्याति अर्जित करेंगे तथा यात्रा के मध्य आपके कई मित्र भी बनेंगे। ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों के अध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग के मित्र, प्रतापी, आतिथ्य सत्कार करने वाले, दानी यशस्वी विद्धान तथा अच्छे विचारों से सर्वदा युक्त रहेंगे ।

माता, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, जायदाद एवं शिक्षा

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते है।

बुद्धि, सन्तान एवं प्रणय सम्बन्ध

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम–प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शो से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम–प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता–पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता–पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन–मन–धन से माता–पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा–दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्ति के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य–कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप रक्त सम्बन्धियों से समय समय पर विरोध का सामना करेंगे साथ ही उनसे आपको अनुकूल सहयोग भी नहीं मिलेगा। आपके उत्कृष्ट कार्य कलापों से उनके मन में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध के कारण भी आपको कार्य क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रु उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे जो समाज या सरकार के विभिन्न क्षेत्रों से रहेंगे तथा वे हमेशा आपके मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी बुद्धिमता, चतुराई शक्ति तथा अन्य गुप्त सूत्रों से उनका सामना तथा पराजित करने में सफल सिद्ध होंगे।

सेवक वर्ग की सेवा प्राप्त करने के लिए आप प्रायः उत्सुक रहेंगे तथा इनके बिना आपके कई कार्य पूर्ण भी नहीं होंगे। आपके नौकर अच्छे होंगे तथा आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करने में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे लेकिन वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे। साथ ही वे यदा कदा चोरी आदि करने के लिए भी तत्पर हो सकते हैं। अतः कीमती वस्तुओं को उनकी पहुँच से बाहर रखना चाहिए। आप अपने उच्च स्तर को बनाने के लिए अनावश्यक व्यय करेंगे यह व्यय आपकी आय से अधिक होगा। यद्यपि आप सोच समझकर व्यय करेंगे परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है लेकिन समय पर वापस न करने में आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः ऋण आदि लेने की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

मामा मामियों से आपको समय समय पर इच्छित सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपकी वे पूर्ण रूप से सहायता करते रहेंगे परन्तु कभी कभी वे सवर्थवश आपकी मदद करेंगे जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंचेगी। दीवानी या फौजदारी मुकद्दमों में आप सामान्यतया धन तथा समय की ही बर्बादी करेंगे। लेकिन यदि आप नियमानुसार इन कार्यो को करेंगे तो इनमें आपको इच्छित लाभ तथा विजय प्राप्त हो सकती है । साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के खान पान का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा गर्म पदार्थो की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए ।

दम्पति, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यो में दक्ष होता है तथा वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यो में द क्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से आपका विवाह बंधु एवं संबधी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्यों संबधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सदव्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबधी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी ।

दहेज, बीमा आयु एवं दुर्घटना

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में विश्वास करेंगे। साथ ही आपकी पूर्वाभास तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी जिससे आप सही रूप से भविष्यवाणियां करने में समर्थ हो सकेंगे। इस क्षेत्र में आपकी काफी रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करेंगे एवं इसमें शोधकार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपको धनार्जन भी होगा एवं समाज में आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। साथ ही इससे आपके मित्रों की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा कई आध्यात्मिक एवं पराविद्या वेता आपके मित्र होंगे ।

आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा इससे आपको काफी लाभ होगा। साथ ही जमीन जायदाद के कार्य से आपको समय समय पर लाभ भी होता रहेगा। आपके कार्य से लोग सामान्यतया प्रसन्न रहेंगे तथा आपको मुंह मांगा दाम देंगे। शादी से भी आपको उचित लाभ होगा तथा किसी प्रकार से जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसमें आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन आभूषण एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपहार स्वरूप प्राप्त होंगे। इससे आप तथा आपकी पत्नी ससुराल वालों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। बीमे आदि से भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः न्यूनाधिक रूप से आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना के कोई विशेष अवसर नहीं आएंगे। यदि कोई ऐसी घटना घट भी गई भी तो उसका मामूली प्रभाव होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा उत्तम स्वास्थ से युक्त होकर आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से प्रारंभ में धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ आप मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक कार्य कलाप सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा को भी आरम्भ करेंगे। भाग्य आपके लिए प्रायः सहायक रहेगा। लम्बी यात्राओं के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र संबधी शास्त्रों में भी आपकी रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक संबधित ग्रंथों का अध्ययन करके इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अपने निवास स्थान में पूजा स्थल का भी निर्माण करवायें। परोपकार संबधी कार्यो तथा भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके साथ ही आप कई शुभ कार्य क्रमों को सम्पन्न करेंगे तथा हमेशा प्रसन्नचित रहेंगे।

युवावस्था में आप ध्यान, योगादिक्रियाओं में भी रूचि लेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनको सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे संबधित ग्रंथों को पढ़ेंगे। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी जिससे आपको पूर्वाभास या भविष्य संबधी जानकारियां हो सकती है। आप अपने जीवन में निश्चय ही कोई ध ार्मिक एवं पुण्य संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगे जैसे मंदिर अस्पताल या तालाब आदि का निर्माण। साथ ही अन्यत्र भी दानादि कार्य करते रहेंगे। प्रारंभिक अवस्था में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न कर सकते है । ये यात्राएं शिक्षा संबधी भी हो सकते है या व्यापारिक एवं धार्मिक कार्य संबधी भी लेकिन इनसे आपको सम्मान लाभ एवं ख्याति अवश्य प्राप्त होगी तथा समाज में अपने सत्कर्मों के लिए जाने जाएंगे। वृद्धावस्था में पौत्रों से आपको सौभाग्य, सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के प्रभाव से आपका यह जीवन सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

पिता, व्यवसाय एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नितत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्जवल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजैंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने,आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारभिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबधो में भी मधुरता होगी तथाा वैचारिक एवं सैद्वांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज, ज्येष्ठ भ्राता एवं आकांक्षाएं

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप किसी भी कार्य को सोच समझकर तथा व्यापारिक दृष्टि से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मानसिक शक्ति की भी आप में प्रबलता रहेगी। प्रबन्ध एवं संगठन शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा एक पराक्रमी परिश्रमी तथा योग्य व्यक्ति होंगे अतः जीवन में अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप एक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी पुरूष भी होंगे तथा प्रसिद्ध धन–ऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे । जीवन में उन्नति या लाभार्जन का आप कोई भी अवसर नहीं छोड़ेगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी तथा आय स्रोतों में नित्य वृद्धि होगी जिससे प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आप किसी भी प्रकार का खतरा नहीं उठाएंगे। लकड़ी या लोहे से संबंधित व्यापार या कार्य से आप विशिष्ट लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से जीवन में विशिष्ट लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा वे आपका पुत्रवत पालन करेंगी तथा समय समय पर मार्ग दर्शन भी करती रहेंगी। आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं होगा परन्तु मित्रवर्ग के मध्य आदरणीय विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठा से युक्त रहेंगे। समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा तथा सभी सामाजिक जनों से आपके अच्छे संबध रहेंगे एवं उनकी सेवा तथा भलाई करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। अतः अपने क्षेत्र या समाज में आपको अच्छी ख्याति प्राप्त होगी लेकिन यदा कदा बाएं कान संबधी परेशानी से आप कष्ट की अनुभूति कर सकते है परन्तु आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

हानि, बन्धन, कर्ज, आवास परिवर्तन एवं मोक्ष

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अच्छी व्यापारिक क्षमता रहेगी तथा धन एवं शक्ति से हमेशा युक्त रहेंगे। वृद्धावस्था में आप अपने बच्चो या किसी अन्य संबधी पर आश्रित नहीं रहेंगे क्योंकि पहले से ही इस समय के लिए पूर्ण धन सुरक्षित रखेंगे। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी तथा यत्नपूर्वक उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से सहायता करते रहेंगे।

आपको मध्यमवस्था में पूर्ण धन मान एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा धन का आप बुद्धि मता एवं सावधानी पूर्वक उपयोग करेंगे। इस प्रकार आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। परिवार के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधा रहन सहन एवं पठन पाठन का स्तर बढ़ाने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगे तथा ऐसे कार्यो पर आपका प्रचुर मात्रा में व्यय होगा। सांसारिक सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों के प्रति भी आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर भी आप प्रचुर मात्रा में श्रवयय करेंगे। साथ ही आवास संबधी साज सज्जा पर भी उपयुक्त व्यय होगा। जिससे आर्थिक स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त दान या ध ार्मिक कार्य कलापों पर भी समय समय पर आपका व्यय होता रहेगा।

यात्राओं के प्रति भी आपकी रूचि बनी रहेगी तथा समय समय पर व्यवसाय या कार्य संबधी याात्राएं होगी जिससे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा भ्रमण संबधी आपकी जीवन में विदेश यात्रा की भी संभावना रहेगी।

फलादेश - 2014

इस वर्ष में बृहस्पति की गोचरवश स्थिति चतुर्थ भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी समय अच्छा रहेगा एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष में आपके सोचे हुए कार्य एवं अन्य योजनाएँ भी कार्यान्वित होंगी। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में समय सामान्य उन्नति दायक रहेगा तथा परिश्रमपूर्वक लाभ एवं धन की भी प्राप्ति होगी फलतः आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। इस समय मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप सहयोग अर्जित करेंगे। जायदाद या वाहन सम्बन्धी सुख भी इस समय प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष में आप माता एवं ससुराल से लाभ अर्जित करेंगे परन्तु आयगोचरफल तथा दशाफल इस समय प्रतिकूल रहेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे तथा आपको संघर्ष एवं परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा।

इस वर्ष में शनि गोचर वश सप्तम भाव में परिभ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पत्नी भी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है फलतः दाम्पत्य सुख में यदा कदा न्यूनता की अनुभूति होगी। व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में नवीन कार्य प्रारंभ न करें तथा साझेदारों से भी सावधान रहें। इस समय इस क्षेत्र में आप परिश्रम एवं संघर्ष से किंचित सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य ही रहेगी तथा आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा जिससे मानसिक तनाव भी उत्पन्न होगा। इस समय आपको अनावश्यक यात्राओं तथा भ्रमण आदि की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि इसमें लाभ की अपेक्षा व्यय ही अधिक होगा तथा यात्रा के मध्य कोई शारीरिक या मानसिक परेशानी भी हो सकती है ।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशाफल भी विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेंगे। अतः सांसारिक महत्व के कार्यों में आप अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष से ही अन्य सुख एवं सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही आप आवास या जायदाद संबंधी योजना का प्रारूप भी तैयार कर सकते हैं लेकिन आपको यह वर्ष बुद्धिमता पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

इस वर्ष में गोचरीय भ्रमण के अनुसार राहु की स्थिति सप्तम तथा केतु की राशि में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा एवं यथा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी हो सकता है। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष से सम्पन्न होंगे। तभी किंचित लाभ एवं सुख की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य ही रहेगी एवं व्ययाधिक्य के कारण यदा कदा कोई परेशानी भी हो सकती है। व्यापार या कार्य क्षेत्र में इस समय साझेदार या सहयोगियों से आपके लिए न्यूनाधिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती है अतः इनसे इस समय पूर्ण सतर्क रहना चाहिए। इस समय आपको अपने समस्त सांसारिक कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करना चाहिए।

इसके साथ ही अन्य गोचर एवं दशा का प्रभाव भी शुभ नहीं रहेगा। जिससे कार्य या व्यापार आदि में परेशानियां रहेंगी तथा आय स्रोतों में भी व्यवधान आएंगे। अतः शुभ फलों में वृद्धि तथा अशुभ फलों में न्यूनता करने के लिए आपको राहु केतु की नियमित पूजा जप तथा दानादि कार्य सम्पन्न करने चाहिए।

फलादेश - 2015

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी। एवं सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहेंगे। इस समय आपकी योजनाएं भी पूर्ण होंगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष मध्यम रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। सम्पर्क के लोगो से इस समय आपको प्रसंशा मिलेगी तथा उनके मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। इस वर्ष में जायदाद या आवास सम्बन्धी सुख एवं लाभ की भी प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही माता एवं ससुराल पक्ष से सहयोग तथा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन गोचरफल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा शुभ फलदायक रहेगी। अतः उपर्युक्त फलों में यदा कदा विलम्ब या न्यूनता रहेगी परन्तु परिश्रमपूर्वक सफलता मिल सकेगी।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सु ख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतःइस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा में या मुकददमे आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्वि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

फलादेश - 2016

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति का भ्रमण पंचम भाव में होगा। अतः यह समय आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस समय ज्योतिष साहित्य एवं संगीत आदि के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इनका ज्ञान अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय सन्तोषजनक रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि अविवाहित हैं तो किसी प्रेम प्रसंग का शुभारम्भ होगा। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता के लिए भी यह वर्ष आपके लिए उन्नतिकारक रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस वर्ष महत्वपूर्ण राजनेताओं तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्पर्क बनेंगे एवं आपको उनसे मनोवांछित सहयोग तथा लाभ मिलेगा। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग मिलता रहेगा। परन्तु अन्यगोचर फल इस समय शुभ फल प्रदान नहीं करेंगे लेकिन दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव दृष्टिगोचर होगा।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष राहु की स्थिति पंचम तथा केतु की एकादश भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से इस वर्ष में आपको शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। इस समय मानसिक रूप से आप शान्त रहेंगे तथा मन में चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ नहीं रहेंगी। सन्तति पक्ष के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक या मानसिक रुप से वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा इस समय इच्छित मात्रामें धन एवं लाभ की प्राप्ति होती रहेगी अचानक धनलाभ के योग बनेंगे। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। इस वर्ष किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति या उच्चाधिकारी से आपका निकट का सम्बन्ध बनेगा जिससे भविष्य में आप इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। परन्तु गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल देंगे लेकिन दशा शुभ एवं अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी तथा मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी।

गोचरवश बृहस्पति की स्थिति इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी यदा कदा असन्तुष्टि बनी रहेंगी। अतः सांसारिक कार्य में परिश्रम पूर्वक ही आप उन्नति या सफलता अर्जित कर सकेंगे। व्यापार या नौकरी आदि में भी उन्नति के लिए अधिक पराक्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी सफलता प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही समय समय पर शत्रु या विरोधी भी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे लेकिन उनका सामना करने में आप समर्थ होंगे। इस समय आपका यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा लेकिन धन एवं लाभ की प्राप्ति आवश्यकतानुसार होती रहेगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी।

इसके साथ ही अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा अच्छी नहीं रहेंगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रारंभ में व्यवधान होंगे लेकिन बाद में स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धि से आप उनको सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा परन्तु परिश्रम एवं पराक्रम से आपको शुभ फलों की प्राप्ति भी होती रहेंगी अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का उपवाश, पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सु ख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष राहु की स्थिति पंचम तथा केतु की एकादश भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से इस वर्ष में आपको शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। इस समय मानसिक रूप से आप शान्त रहेंगे तथा मन में चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ नहीं रहेंगी। सन्तति पक्ष के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक या मानसिक रुप से वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा इस समय इच्छित मात्रामें धन एवं लाभ की प्राप्ति होती रहेगी अचानक धनलाभ के योग बनेंगे। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। इस वर्ष किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति या उच्चाधिकारी से आपका निकट का सम्बन्ध बनेगा जिससे भविष्य में आप

इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। परन्तु गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल देंगे लेकिन दशा शुभ एवं अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी तथा मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी।

फलादेश - 2018

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा कोई अचानक सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही बेरोजगारों को रोजगार मिलने की भी प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। इस वर्ष अविवाहितों का विवाह भी हो सकता है। दाम्पत्य सुख इस वर्ष आपका उत्तम रहेगा तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धों में भी मधुरता रहेगी। समाज में इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी समय शुभ रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा एवं अतिरिक्त आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन व्यय भी यदा कदा अधिक ही होगा। इसके साथ ही अन्य गोचरफल तथा दशाफल भी उत्तम रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण तथा भाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि नवम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप सफल होंगे तथा समाज में एक प्रभावी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आपकी छवि बनेगी। धर्म एवं धार्मिक कर्मो के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं यत्नपूर्वक आप इनमें अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। परन्तु मानसिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा अधिकांशतया आप किंकर्तव्यविमूढ़ से बने रहेंगे। अतः महत्वपूर्ण निर्णय लेने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस वर्ष में पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता हैं अतः उनका पूर्ण ध्यान रखें। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ फल प्रदान करेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए सौभाग्यपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश आपकी कुडँली में राहु की स्थिति। चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से आपके लिए यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप इस समय स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद संबन्धी कोई क्रय विक्रय करेंगे या वाहन आदि पर व्यय करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएँ बनेंगी। कार्यक्षेत्र में भी इस समय आपकी स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता पिता की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ भी अधिक मात्रा में होंगी। अन्य गोचरफल तथा दशा शुभफल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा आपका समय सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

फलादेश - 2019

इस वर्ष में गोचर वश बृहस्पति की स्थिति अष्टम भाव में रहेगी अतः यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा अपने सांसारिक कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको सफलता भी प्राप्त होती रहेगी। शत्रु तथा विरोधी पक्ष इस समय निर्बल रहेंगे अतः व्यापार नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपको सफलता या उन्नति प्राप्त हो सकती है। धन मान एवं सम्मान से सामान्यतया आप युक्त रहेंगे तथा इच्छित मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे इस समय आपको कोई विशिष्ट या अचानक लाभ की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी इस समय आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा इनके प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा न्यूनाधिक रूप से इसका ज्ञान अर्जित करने में भी आप समर्थ रहेंगे।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी शुभ ही रहेंगे अतः आपके सर्वत्र उन्नति एवं लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस समय आप अनुकूल लाभ एवं सहयोग प्राप्त कर सकते है। अतः वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि नवम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप सफल होंगे तथा समाज में एक प्रभावी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आपकी छवि बनेगी। धर्म एवं धार्मिक कर्मो के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं यत्नपूर्वक आप इनमें अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। परन्तु मानसिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा अधिकांशतया आप किंकर्तव्यविमूढ़ से बने रहेंगे। अतः महत्वपूर्ण निर्णय लेने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस वर्ष में पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता हैं अतः उनका पूर्ण ध्यान रखें। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ फल प्रदान करेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए सौभाग्यपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचरवश तृतीय भाव में तथा केतु की नवम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आपके मान प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी परास्त होंगे तथा आपके समक्ष समर्पण करेंगे। मानसिक रूप से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा सभी चिन्ताएँ समाप्त हो जाएँगी। आर्थिक दृष्टि से भी इस समय आपकी उन्नति होगी। तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल होंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय स्वपरिश्रम से कोई विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित करेंगे साथ ही मित्रवर्ग से भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग मिलेगा। परन्तु बन्धुवर्ग से यदा कदा चिन्ता उत्पन्न हो सकती है। साथ ही नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपको यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। लेकिन आय गोचरफल तथा दशाफल अनुकूल होने के कारण यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा।

फलादेश - 2020

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए अनुकूल रहेगा तथा इच्छित सफलता प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों तथा उच्चाधिकारियों से आपके सम्बन्ध बनेंगे एवं उनसे वांछित लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगे। साथ ही राज्यस्तर पर आपको कोई विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। इस समय पारिवारिक सुख समृद्धि तथा शान्ति उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेम से रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस समय कार्यों को करने में अत्यन्त ही परिश्रमशील रहेंगे। अतः विश्राम का अभाव रहेगा। साथ ही अन्य जनों से मधुर व्यवहार रखने में भी सावधानी से काम लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल तथा दशा भी अनुकूल रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष शनि गोचरवश दशम भाव में परिभ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय आपकी महत्वपूर्ण उन्नति होगी तथा उन्नतिकारक किसी परिवर्तन की भी संभावना रहेगी तथा राजनैतिक क्षेत्र के लिए यह समय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपको इस क्षेत्र में आपको किसी उच्च पद की भी प्राप्ति हो सकती है। नौकरी या अन्य क्षेत्र में भी आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा किसी महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति की संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष शुभ रहेगा। इस समय सर्वत्र आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा इच्छित मात्रा में धन का लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल एवं दशाफल भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय अत्यन्त ही उन्नतिकारक एवं शुभ रहेगा।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचरवश तृतीय भाव में तथा केतु की नवम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आपके मान प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी परास्त होंगे तथा आपके समक्ष समर्पण करेंगे। मानसिक रूप से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा सभी चिन्ताएँ समाप्त हो जाएँगी। आर्थिक दृष्टि से भी इस समय आपकी उन्नति होगी। तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल होंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय स्वपरिश्रम से कोई विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित करेंगे साथ ही मित्रवर्ग से भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग मिलेगा। परन्तु बन्धुवर्ग से यदा कदा चिन्ता उत्पन्न हो सकती है। साथ ही नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपको यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। लेकिन आय गोचरफल तथा दशाफल अनुकूल होने के कारण यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा।

फलादेश - 2021

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष शनि गोचरवश दशम भाव में परिभ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय आपकी महत्वपूर्ण उन्नति होगी तथा उन्नतिकारक किसी परिवर्तन की भी संभावना रहेगी तथा राजनैतिक क्षेत्र के लिए यह समय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपको इस क्षेत्र में आपको किसी उच्च पद की भी प्राप्ति हो सकती है। नौकरी या अन्य क्षेत्र में भी आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा किसी महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति की संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष शुभ रहेगा। इस समय सर्वत्र आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा इच्छित मात्रा में धन का लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल एवं दशाफल भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय अत्यन्त ही उन्नतिकारक एवं शुभ रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति द्वितीय भाव तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। अतः आपके लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग एक दूसरे को अपना यथोचित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी बनी रहेगी। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे तथापि इसमें अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा परन्तु व्यय भी यदा कदा अधिक होगा। इससे कोई खास परेशानी नहीं होगी। साथ ही जायदाद संबंधी लाभ की भी संभावना बनेंगी।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आपके महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कार्य क्षेत्र में भी उन्नति की संभावना रहेंगी। इस प्रकार आपके लिए यह समय सामान्यतया अच्छा ही रहेगा।

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से बृहस्पति की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। आर्थिक स्थिति भी आपकी सामान्य रहेगी तथा व्यय अधिक होगा जिससे आप अल्प मात्रा में परेशानी की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आप किसी शुभ एवं मांगलिक कार्य पर व्यय भी कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए आपको अधिक पराक्रम एवं परिश्रम करना पड़ेगा तभी न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की कोई यात्रा सम्पन्न होगी साथ ही इसमें व्यय की भी अधिकता रहेगी जिससे आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी परन्तु भविष्य में आपकी लाभ की संभावनाएं बन सकती हैं।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पराक्रम एवं परिश्रम से ही लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यत्न पूर्वक आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति का पूजन व्रत तथा दानादि करना चाहिए।

गोचरवश शनि इस वर्ष एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके शुभ प्रभाव से यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी अर्जित होगा। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति तथा प्रतिभा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित आदर प्रदान करेंगे। राजनीति या नौकरी आदि में इस समय आप कोई पद भी प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा एवं सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे साथ ही प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस वर्ष में आपको स्वयं तथा सन्तति पक्ष के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके साथ ही इस वर्ष आय गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करने वाली होगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों को यदा कदा आप अल्पता की भी अनुभूति करेंगे तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई बार परिश्रम एवं संघर्ष भी अधिक करना पड़ा परन्तु सामान्यतया यह समय आपके लिए उत्तम एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

बृहस्पति इस वर्ष में गोचरवश प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपको किचिंत मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इस वर्ष व्यापार या अन्य कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय अविवाहितों के विवाह की भी संभावना बढ़ेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। एवं यत्नपूर्वक आर्थिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आपके आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी। साथ ही विगत रुके हुए कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको सफलता मिलेगी। आप स्वतन्त्र प्रवृति का अनुपालन करेंगे एवं अपने को अत्यन्त ही अनुभवी समझने लगेंगे। अतः यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण परन्तु विश्रामरहित रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल अशुभ होने से परन्तु दशा फल अनुकूल रहने से उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको न्यूनता का आभास होगा। परन्तु परिश्रम करने के उपरान्त आप सकरात्मक फल प्राप्त करने में सफल होंगे।

गोचरवश शनि इस वर्ष एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके शुभ प्रभाव से यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी अर्जित होगा। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति तथा प्रतिभा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित आदर प्रदान करेंगे। राजनीति या नौकरी आदि में इस समय आप कोई पद भी प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा एवं सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे साथ ही प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस वर्ष में आपको स्वयं तथा सन्तति पक्ष के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके साथ ही इस वर्ष आय गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करने वाली होगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों को यदा कदा आप अल्पता की भी अनुभूति करेंगे तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई बार परिश्रम एवं संघर्ष भी अधिक करना पड़ा परन्तु सामान्यतया यह समय आपके लिए उत्तम एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः आपको

शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

बृहस्पति इस वर्ष आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में प्रवेश करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन का लाभ प्राप्त करने आप समर्थ रहेंगे। पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। तथा लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की भी प्राप्ति हो सकती है। लेकिन कभी कभी व्यय की भी अधिकता होगी जिससे आप का मन खिन्न रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष शुभ रहेगा तब समाज में एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आदरणीय समझे जाएंगे। धार्मिक कर्मो में भी आपको रुचि उत्पन्न होगी व वाणी में मधुरता तथा ओजस्विता का भाव आएगा एवं अन्य लोग आपकी वातो से प्रभावित होंगे। इस वर्ष में जायदाद या व्यापारिक क्षेत्र में भी आप इच्छित लाभ अर्जित करेंगे। परन्तु इस वर्ष में आय गोचरफल अधिक शुभ नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की समय समय पर प्राप्ति होगी परन्तु दशाफल अनुकूल फल प्रदान करेगी तथापि यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास अवश्य होगा। परन्तु शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक होगी यद्यपि इसके लिए आपको अतिरिक्त परिश्रम तथा संघर्ष करना पड़ेगा।

गोचरवश शनि इस वर्ष एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके शुभ प्रभाव से यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी अर्जित होगा। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति तथा प्रतिभा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित आदर प्रदान करेंगे। राजनीति या नौकरी आदि में इस समय आप कोई पद भी प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा एवं सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे साथ ही प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस वर्ष में आपको स्वयं तथा सन्तति पक्ष के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके साथ ही इस वर्ष आय गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करने वाली होगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों को यदा कदा आप अल्पता की भी अनुभूति करेंगे तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई बार परिश्रम एवं संघर्ष भी अधिक करना पड़ा परन्तु सामान्यतया यह समय आपके लिए उत्तम एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में राहु को गोचरीय भ्रमण द्वादश भाव में तथा केतु का षष्ठ भाव में रहेगा। अत : यह वर्ष आपके लिए शुभाशुभ फल प्रदान करेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक रूप से भी आप या कदा अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपकी लम्बी दूरी की यात्राएँ तथा विदेश सम्बन्धी कोई यात्रा हो सकती है। इनमें आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही मनोरंजन सम्बन्धी कार्यों में भी आप अधिक व्यय करेंगे। फलतः इस वर्ष में आपको यदा कदा आर्थिक परेशानी हो सकती है। लेकिन षष्ठ भाव में स्थित केतु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। फलतः सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।। इस समय शत्रु तथा प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। लेकिन इस समय आप नेत्र सम्बन्धी कष्ट से परेशान हो सकते हैं। साथ ही इस वर्ष में गोचरफल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्प मात्रा में प्राप्त होंगे परन्तु अशुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे।

फलादेश - 2025

इस वर्ष बृहस्पति गोचरवश तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से आपकी दूर समीप की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी। ये यात्राएँ आपके लिए शुभ रहेगी तथा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होगा जिससे आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। साहित्य एवं दर्शन के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा इसके अध्ययन में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष पुराने मित्रों से आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी। साथ ही इस मित्रता से भविष्य में आपके कई महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे एवं लाभ स्रोतों में भी वृद्धि की संभावना रहेगी। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप सामान्य स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे तथा संकीर्णता की भावना भी दूर होगी एवं विशाल हृदय का आप प्रदर्शन करेंगे फलतः सामाजिक स्तर में भी वृद्धि होगी। परन्तु आय गोचरफल तथा दशा फल शुभ फल प्रदान करेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फलों में न्यूनता रहेगी तथा आपको परिश्रम अधिक करना पड़ेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी तथा कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप अपने स्तर पर किसी बडी योजना का कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं। इस वर्ष आपको अपने कार्यों को पूर्ण करने में कई प्रकार की बाधाओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से वाद विवाद आदि के भी योग बनेंगे। मित्र बन्धुओं तथा अन्य शुभचिन्तकों से भी आपको इस समय कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा एवं स्वपरिश्रम तथा बुद्धिबल से ही आप अपने कार्यों को पूर्ण करने में सफल हो सकते हैं। इसके साथ ही आपकी मानसिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा मन में उद्विग्नता तथा अशान्ति बनी रहेगी। इस वर्ष मेंआपके आय गोचरफल तथा दशाभी अशुभ फल ही प्रदान करेंगी। अतः यह समय आपके लिए काफी संघर्षपूर्ण रहेगा। शनि की साढेसाती के प्रभाव को दूर करने के लिए आपको शनि का पूजन एवं दान करना चाहिए। इससे आपको अशुभ फलों में निश्चित रूप से न्यूनता की अनुभूति होगी।

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से राहु की स्थिति पंचम तथा केतु की स्थिति एकादश भाव में रहेगी। अतः इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य फल दायक रहेगा तथा समय समय पर अशुभ फल भी प्रापत होंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में आप इस वर्ष कोई वांछित सफलता प्राप्त करेंगे तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी आप किसी पद की प्राप्ति कर सकते हैं। इससे आपकी समाज में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष शुभ रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि करके आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी परन्तु इस समय आपके स्वभाव में उग्रता रहेगी तथा बात बात पर आप क्रोध का प्रदर्शन करेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी आप चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल एवं दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आपके शुभ फलों में न्यूनता रहेगी तथा अशुभ फल भी होते रहेंगे। अतः इस समय को धैर्य एवं बुद्धि मतापूर्वक व्यतीत करें।

फलादेश - 2026

इस वर्ष में बृहस्पति की गोचरवश स्थिति चतुर्थ भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी समय अच्छा रहेगा एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष में आपके सोचे हुए कार्य एवं अन्य योजनाएँ भी कार्यान्वित होंगी। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में समय सामान्य उन्नति दायक रहेगा तथा परिश्रमपूर्वक लाभ एवं धन की भी प्राप्ति होगी फलतः आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। इस समय मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप सहयोग अर्जित करेंगे। जायदाद या वाहन सम्बन्धी सुख भी इस समय प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष में आप माता एवं ससुराल से लाभ अर्जित करेंगे परन्तु आयगोचरफल तथा दशाफल इस समय प्रतिकूल रहेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे तथा आपको संघर्ष एवं परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी तथा कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप अपने स्तर पर किसी बडी योजना का कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं। इस वर्ष आपको अपने कार्यों को पूर्ण करने में कई प्रकार की बाधाओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से वाद विवाद आदि के भी योग बनेंगे। मित्र बन्धुओं तथा अन्य शुभचिन्तकों से भी आपको इस समय कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा एवं स्वपरिश्रम तथा बुद्धिबल से ही आप अपने कार्यों को पूर्ण करने में सफल हो सकते हैं। इसके साथ ही आपकी मानसिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा मन में उद्विग्नता तथा अशान्ति बनी रहेगी। इस वर्ष मेंआपके आय गोचरफल तथा दशाभी अशुभ फल ही प्रदान करेंगी। अतः यह समय आपके लिए काफी संघर्षपूर्ण रहेगा। शनि की साढेसाती के प्रभाव को दूर करने के लिए आपको शनि का पूजन एवं दान करना चाहिए। इससे आपको अशुभ फलों में निश्चित रूप से न्यूनता की अनुभूति होगी।

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से राहु की स्थिति पंचम तथा केतु की स्थिति एकादश भाव में रहेगी। अतः इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य फल दायक रहेगा तथा समय समय पर अशुभ फल भी प्रापत होंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में आप इस वर्ष कोई वांछित सफलता प्राप्त करेंगे तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी आप किसी पद की प्राप्ति कर सकते हैं। इससे आपकी समाज में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष शुभ रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि करके आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी परन्तु इस समय आपके स्वभाव में उग्रता रहेगी तथा बात बात पर आप क्रोध का प्रदर्शन करेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी आप चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल एवं दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आपके शुभ फलों में न्यूनता रहेगी तथा अशुभ फल भी होते रहेंगे। अतः इस समय को धैर्य एवं बुद्धि मतापूर्वक व्यतीत करें।

फलादेश - 2027

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति पंचम भाव में भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से यह समय आपके लिए सामान्य शुभ रहेगा। इस समय ज्योतिष, संगीत एवं साहित्य के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा प्रयत्नपूर्वक आप इसका ज्ञानार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय आपकी सन्तोषप्रद रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। राजनैतिक महत्व के लोगो तथा सरकार के उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय आपके सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा उनसे आपको न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपकी अभिलाषाएं भी न्यूनाधिक पूर्ण करेंगे। साथ ही आपकी कार्यक्षमता में भी वृद्धि होगी परन्तु आयगोचर तथा दशाफल इस वर्ष में अशुभ फल प्रदान करेंगे तथा उपर्युक्त शुभ फल यदा कदा अल्प मात्रा में ही घटित होंगे।

इस वर्ष में गोचर वश शनि आपकी राशि पर भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा समय समय पर वातजनित रोगों से आप कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही मानसिक रूप से भी उद्विग्नता तथा अशान्ति बनी रहेगी पारिवारिक सुख शान्ति इस समय मध्यम रहेगी तथा परस्पर विवाद एवं तनाव का भाव विद्यमान रहेगा। पत्नी का स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दाम्पत्य जीवन सामान्य रूप से व्यतीत होगा। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति की दृष्टि से वर्ष संघर्ष एवं परिश्रम पूर्ण रहेगा तथा अत्यधिक पराक्रम एवं संघर्ष से ही आपको लाभ एवं सफलता प्राप्त होगी। नौकरी या राजनीति में पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा आय स्रोतों में भी न्यूनता रहेंगी जिससे आर्थिक रूप से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा फल भी अनुकूल नहीं रहेंगे फलतः आप सर्वत्र परिश्रम संघर्ष एवं पराक्रम से ही सफलता प्राप्त करेंगे जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा साथ ही शनि की साढ़े साती के दुष्प्रभाव से भी आप परेशान रहेंगे अतः इसके दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको शनि का पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए। साथ ही शनिवार को मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे आपको सुख शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति दशम भाव में तथा केतु की स्थिति चतुर्थ भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आपकी परिश्रम एवं पराक्रम से उन्नति होगी तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी तथा राजनीति में इस समय आपको किसी पद की प्राप्ति भी हो सकती है तथा समाज में इस समय न्यूनाधिक रूप से आपकी प्रतिष्ठा बढेगी। इस वर्ष राजनैतिक महत्व के लोगों से आपके सम्बन्ध बनेंगे तथा उनका आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा तथा आय स्रोतों में वृद्धि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा। लेकिन माता पिता की दृष्टि से समय अच्छा नहीं रहेगा। वाहन सुख की भी न्यूनता रहेगी। साथ ही गोचर तथा दशा भी प्रतिकूल फल प्रदान करेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए परिश्रम एवं संघर्षपूर्ण रहेगा।

फलादेश - 2028

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति का भ्रमण पंचम भाव में होगा। अतः यह समय आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस समय ज्योतिष साहित्य एवं संगीत आदि के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इनका ज्ञान अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय सन्तोषजनक रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि अविवाहित हैं तो किसी प्रेम प्रसंग का शुभारम्भ होगा। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता के लिए भी यह वर्ष आपके लिए उन्नतिकारक रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस वर्ष महत्वपूर्ण राजनेताओं तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्पर्क बनेंगे एवं आपको उनसे मनोवांछित सहयोग तथा लाभ मिलेगा। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग मिलता रहेगा। परन्तु अन्यगोचर फल इस समय शुभ फल प्रदान नहीं करेंगे लेकिन दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव दृष्टिगोचर होगा।

गोचरवश शनि की स्थिति इस समय आपकी राशि में रहेंगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति तथा असन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी शनि के विशेष अनुकूल न होने के कारण परिश्रम एवं संघर्ष से ही सम्पन्न होंगे तथा इसमें आपको आंशिक सफलता प्राप्त होगी। स्त्री का स्वास्थ्य भी इस समय मध्यम रहेगा परन्तु संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति भी मध्यम रहेगी परन्तु कार्य क्षेत्र में परिश्रम पूर्वक सफलता मिल सकेगी। नौकरी या राजनीति में आपकी पदोन्नति में विलम्ब की भी संभावना रहेगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम ही रहेगी।

इसके साथ ही अन्य दशा एवं गोचर फल भी सामान्य फलदायक रहेंगे अतः इच्छित सफलता अर्जित करने के लिए आपको परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। साथ ही शनि के साढ़ेसाती के प्रभाव को भी अल्प करने के लिए नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करें तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी ध ारण करें। इससे आप मानसिक शान्ति तथा अन्यत्र सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे।

गोचरीय भ्रमण के अनुसार इस वर्ष में राहु की स्थिति नवम एवं केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी इसके प्रभाव से यह वर्ष अधिकांशतया शुभ ही रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में इस समय श्रद्धा में न्यूनता आएगी तथा महत्वपूर्ण कार्यों में समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड ेगा परन्तु स्वपराक्रम एवं परिश्रम से आप इनमें सफलता प्राप्त करेंगे साथ ही भाग्य बल में अल्पता होने से मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। परिवारिक वातावरण में भी इस समय शान्ति तथा सदभावना कम ही दृष्टिगोचर होगी। लेकिन केतु के प्रभाव से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस समय कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके साथ ही इस समय गोचरफल अशुभ एवं दशा फल शुभ रहेगा। अतः इस वर्ष में अशुभ फलों के साथ सामान्यतया शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी।

फलादेश - 2029

गोचरवश बृहस्पति की स्थिति इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी यदा कदा असन्तुष्टि बनी रहेंगी। अतः सांसारिक कार्य में परिश्रम पूर्वक ही आप उन्नति या सफलता अर्जित कर सकेंगे। व्यापार या नौकरी आदि में भी उन्नति के लिए अधिक पराक्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी सफलता प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही समय समय पर शत्रु या विरोधी भी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे लेकिन उनका सामना करने में आप समर्थ होंगे। इस समय आपका यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा लेकिन धन एवं लाभ की प्राप्ति आवश्यकतानुसार होती रहेगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी।

इसके साथ ही अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा अच्छी नहीं रहेंगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रारंभ में व्यवधान होंगे लेकिन बाद में स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धि से आप उनको सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा परन्तु परिश्रम एवं पराक्रम से आपको शुभ फलों की प्राप्ति भी होती रहेंगी अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का उपवाश, पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए।

गोचरवश शनि की स्थिति इस समय आपकी राशि में रहेंगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति तथा असन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी शनि के विशेष अनुकूल न होने के कारण परिश्रम एवं संघर्ष से ही सम्पन्न होंगे तथा इसमें आपको आंशिक सफलता प्राप्त होगी। स्त्री का स्वास्थ्य भी इस समय मध्यम रहेगा परन्तु संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति भी मध्यम रहेगी परन्तु कार्य क्षेत्र में परिश्रम पूर्वक सफलता मिल सकेगी। नौकरी या राजनीति में आपकी पदोन्नति में विलम्ब की भी संभावना रहेगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम ही रहेगी।

इसके साथ ही अन्य दशा एवं गोचर फल भी सामान्य फलदायक रहेंगे अतः इच्छित सफलता अर्जित करने के लिए आपको परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। साथ ही शनि के साढ़ेसाती के प्रभाव को भी अल्प करने के लिए नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करें तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी ध ारण करें। इससे आप मानसिक शान्ति तथा अन्यत्र सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे।

गोचरीय भ्रमण के अनुसार इस वर्ष में राहु की स्थिति नवम एवं केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी इसके प्रभाव से यह वर्ष अधिकांशतया शुभ ही रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में इस समय श्रद्धा में न्यूनता आएगी तथा महत्वपूर्ण कार्यों में समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड ेगा परन्तु स्वपराक्रम एवं परिश्रम से आप इनमें सफलता प्राप्त करेंगे साथ ही भाग्य बल में अल्पता होने से मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। परिवारिक वातावरण में भी इस समय शान्ति तथा सदभावना कम ही दृष्टिगोचर होगी। लेकिन केतु के प्रभाव से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी

लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस समय कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके साथ ही इस समय गोचरफल अशुभ एवं दशा फल शुभ रहेगा। अतः इस वर्ष में अशुभ फलों के साथ सामान्यतया शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी।

फलादेश - 2030

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा कोई अचानक सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही बेरोजगारों को रोजगार मिलने की भी प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। इस वर्ष अविवाहितों का विवाह भी हो सकता है। दाम्पत्य सुख इस वर्ष आपका उत्तम रहेगा तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धों में भी मधुरता रहेगी। समाज में इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी समय शुभ रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा एवं अतिरिक्त आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन व्यय भी यदा कदा अधिक ही होगा। इसके साथ ही अन्य गोचरफल तथा दशाफल भी उत्तम रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण तथा भाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि का परिभ्रमण द्वितीय भाव में रहेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अच्छी रहेंगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। साथ ही परिवार की भौतिक तथा आर्थिक स्थिति भी अनुकूल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। शत्रु या विरोधी पक्ष इस समय आपसे पराजित तथा भयभीत रहेगा फलतः नौकरी या व्यापार के क्षेत्र में कमजोर विपक्ष के कारण आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मानसिक स्थिति भी अच्छी रहेगी तथा सभी सांसारिक कार्य कलाप शान्ति पूर्वक सम्पन्न होंगे।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल भी आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगे अतः सर्वत्र सफलता अर्जित करने में आप समर्थ होंगे साथ ही उत्साह एवं पराक्रम का भाव मन में बना रहेगा परन्तु शनि की साढ़े साती की अन्तिम दशा होने के कारण यदा कदा न्यूनाधिक परेशानियां भी हो सकती हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा इसके प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए। साथ ही शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे आपको सर्वत्र शुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

इस वर्ष गोचर वश राहु की स्थिति अष्टम भाव तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। इस समय शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मन में शान्ति तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी समयानुकूल शुभ रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर स्नेह एवं सहयोग का भाव रखेंगे। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इस वर्ष आपको विशिष्ट या आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। लाटरी सट्टे या जुए आदि से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए समय उन्नतिशील रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आपके लाभ तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशा भी शुभ रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर सम्पन्न करेंगे तथा आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक ही अधिक रहेगा।

फलादेश - 2031

इस वर्ष में गोचर वश बृहस्पति की स्थिति अष्टम भाव में रहेगी अतः यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा अपने सांसारिक कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको सफलता भी प्राप्त होती रहेगी। शत्रु तथा विरोधी पक्ष इस समय निर्बल रहेंगे अतः व्यापार नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपको सफलता या उन्नति प्राप्त हो सकती है। धन मान एवं सम्मान से सामान्यतया आप युक्त रहेंगे तथा इच्छित मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे इस समय आपको कोई विशिष्ट या अचानक लाभ की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी इस समय आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा इनके प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा न्यूनाधिक रूप से इसका ज्ञान अर्जित करने में भी आप समर्थ रहेंगे।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी शुभ ही रहेंगे अतः आपके सर्वत्र उन्नति एवं लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस समय आप अनुकूल लाभ एवं सहयोग प्राप्त कर सकते है। अतः वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि का परिभ्रमण द्वितीय भाव में रहेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अच्छी रहेंगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। साथ ही परिवार की भौतिक तथा आर्थिक स्थिति भी अनुकूल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। शत्रु या विरोधी पक्ष इस समय आपसे पराजित तथा भयभीत रहेगा फलतः नौकरी या व्यापार के क्षेत्र में कमजोर विपक्ष के कारण आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मानसिक स्थिति भी अच्छी रहेगी तथा सभी सांसारिक कार्य कलाप शान्ति पूर्वक सम्पन्न होंगे।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल भी आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगे अतः सर्वत्र सफलता अर्जित करने में आप समर्थ होंगे साथ ही उत्साह एवं पराक्रम का भाव मन में बना रहेगा परन्तु शनि की साढ़े साती की अन्तिम दशा होने के कारण यदा कदा न्यूनाधिक परेशानियां भी हो सकती हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा इसके प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए। साथ ही शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे आपको सर्वत्र शुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

इस वर्ष गोचर वश राहु की स्थिति अष्टम भाव तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। इस समय शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मन में शान्ति तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी समयानुकूल शुभ रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर स्नेह एवं सहयोग का भाव रखेंगे। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इस वर्ष आपको

विशिष्ट या आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। लाटरी सट्टे या जुए आदि से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए समय उन्नतिशील रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आपके लाभ तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशा भी शुभ रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर सम्पन्न करेंगे तथा आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक ही अधिक रहेगा।

फलादेश - 2032

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए अनुकूल रहेगा तथा इच्छित सफलता प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों तथा उच्चाधिकारियों से आपके सम्बन्ध बनेंगे एवं उनसे वांछित लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगे। साथ ही राज्यस्तर पर आपको कोई विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। इस समय पारिवारिक सुख समृद्धि तथा शान्ति उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेम से रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस समय कार्यों को करने में अत्यन्त ही परिश्रमशील रहेंगे। अतः विश्राम का अभाव रहेगा। साथ ही अन्य जनों से मधुर व्यवहार रखने में भी सावधानी से काम लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल तथा दशा भी अनुकूल रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में शनि तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ रहेगा। इस समय आपको समस्त रूके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक परिवर्तन होगा। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी के शुभ एवं महत्वपूर्ण यात्रा भी सम्पन्न होगी। जिससे आपको वर्तमान तथा भविष्य में आशातीत लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे एवं किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा धन ऐश्वर्य एवं समृद्धि को प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति सप्तम तथा केतु की स्थिति राशि पर रहेंगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मानसिक स्थिति भी ठीक ही रहेंगी। आपके सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय पूर्ण होंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। इस वर्ष पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहेगी। फलतः आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी ही रहेगा। व्यापार या कार्य क्षेत्र में इस समय साझेदार या सहयोगियों से लाभ की संभावनाएं बनेंगी साथ ही सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी परन्तु उपर्युक्त कार्यों में आपको पराक्रम तथा उत्साह का प्रदर्शन करना पड़ेगा। बन्धु एवं मित्रवर्ग से भी आप सामान्य सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

इसके साथ ही अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ ही रहेंगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय पूर्ण होंगे तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि करने में आपको सफलता मिलेगी। इस प्रकार वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा।

फलादेश - 2033

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष में तृतीय भाव में गोचर वश शनि भ्रमण करेगा। यह समय आपके लिए शुभ फल दायक समझा जाएगा। इस समय आपके लिए सभी रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण करेंगे। साथ ही आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति में भी उन्नति होगी जिससे आप उचित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसवर्ष में आपकी लम्बी दूरी की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा उनसे आप मनोवांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय शुभ रहेगा तथा इस समय आपकी पदोन्नति की प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। साथ ही इस वर्ष गोचरफल की भी प्रतिकूलता रहेगी परन्तु दशा फल शुभ रहेगा अतः यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास होगा तथापि आपका सामान्य समय इस वर्ष अच्छा ही व्यतीत होगा एवं सुखपूर्वक आप अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतःइस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा में या मुकददमे आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्वि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

फलादेश - 2034

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से बृहस्पति की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। आर्थिक स्थिति भी आपकी सामान्य रहेगी तथा व्यय अधिक होगा जिससे आप अल्प मात्रा में परेशानी की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आप किसी शुभ एवं मांगलिक कार्य पर व्यय भी कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए आपको अधिक पराक्रम एवं परिश्रम करना पड़ेगा तभी न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की कोई यात्रा सम्पन्न होगी साथ ही इसमें व्यय की भी अधिकता रहेगी जिससे आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी परन्तु भविष्य में आपकी लाभ की संभावनाएं बन सकती हैं।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पराक्रम एवं परिश्रम से ही लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यत्न पूर्वक आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति का पूजन व्रत तथा दानादि करना चाहिए।

इस वर्ष में तृतीय भाव में गोचर वश शनि भ्रमण करेगा। यह समय आपके लिए शुभ फल दायक समझा जाएगा। इस समय आपके लिए सभी रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण करेंगे। साथ ही आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति में भी उन्नति होगी जिससे आप उचित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसवर्ष में आपकी लम्बी दूरी की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा उनसे आप मनोवांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय शुभ रहेगा तथा इस समय आपकी पदोन्नति की प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। साथ ही इस वर्ष गोचरफल की भी प्रतिकूलता रहेगी परन्तु दशा फल शुभ रहेगा अतः यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास होगा तथापि आपका सामान्य समय इस वर्ष अच्छा ही व्यतीत होगा एवं सुखपूर्वक आप अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतःइस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा में या मुकददमे आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्वि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

फलादेश - 2035

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से इस समय आपके मानसिक शारीरिक एवं सामाजिक धरातल में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे तथा कार्यक्षेत्र में आपको विशिष्ट उन्नति प्राप्त होगी। इस वर्ष में अविवाहितों के लिए विवाह का योग बनेगा। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथाधार्मिक कार्य कलपों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि भी सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होकर प्रचुर मात्रा में धन लाभ होगा। आपके विगत रुके हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्व होंगे। इस समय आप अपने को अनुभवी व्यक्ति समझेंगे परन्तु विश्राम का अभाव रहेगा तथा कार्य करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण सिद्व होगा।

इस वर्ष में शनि का संक्रमण चतुर्थ भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपका समय सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में विस्तार तथा उन्नति की संभावना रहेगी। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। बन्धु एवं पारिवारिक जनों से आपको सहयोग मिलता रहेगा तथा माता का स्वास्थ्य भी अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आप नवीन कार्य अथवा आवास या जमीन जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ कर सकते हैं। यद्यपि प्रारंभ में किंचित समस्याएं उत्पन्न होंगी परन्तु भविष्य में इससे लाभ होगा।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल भी अनुकूल रहेंगे अतः आपको सफलताएं समय समय पर मिलती रहेंगी। परन्तु शनि की दशा के प्रभाव से यदा कदा मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान या विलम्ब की संभावना बनेंगी। अतः इसके प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे समस्त बाधाएं दूर होगी एवं आप मानसिक रूप से सन्तुष्टि तथा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु पंचम तथा केतु एकादश भाव में भ्रमण करेगा। इनके प्रभाव से इस वर्ष आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इस समय आपकी मानसिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा मन में अनावश्यक चिन्ता तथा परेशानियों का अभाव रहेगा। इस समय आपके प्रेम प्रसंग स्थापित होने की संभावना रहेगी। साथ ही सन्तति पक्ष से आपको संतुष्टि मिलेगी तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही अनायास ही धन या लाभ प्राप्ति के योग भी बनेंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय उन्नति होती रहेगी एवं किसी राजनैतिक महत्व के व्यक्ति या उच्चाधिकारी वर्ग से आपका सम्बन्ध होगा जिससे भविष्य में आपको इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आय गोचरफल तथा दशाफल भी शुभ ही रहेंगे। अतः वर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

फलादेश - 2036

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में संक्रमण करेगा।अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में वृद्वि करके प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि बनी रहेगी तथा पुत्र संतति की भी प्राप्ति की संभावना रहेगी। परन्तु यदा कदा व्यय की अधिकता से मन में उद्विग्नता उत्पन्न होगी तथा समाज में आपकी इस समय मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आप समाज में आदरणीय समझे जाएंगे। इस समय धर्म सम्बन्धी कर्मो में भी आप रुचिशील रहेंगे। साथ ही वाणी की ओजस्विता में भी वृद्धि होगी तथा लोग आपकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में आपके उत्तम संयोग बनेंगे। साथ ही गोचरफल तथा दशाफल भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में शनि का संक्रमण चतुर्थ भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपका समय सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में विस्तार तथा उन्नति की संभावना रहेगी। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। बन्धु एवं पारिवारिक जनों से आपको सहयोग मिलता रहेगा तथा माता का स्वास्थ्य भी अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आप नवीन कार्य अथवा आवास या जमीन जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ कर सकते हैं। यद्यपि प्रारंभ में किंचित समस्याएं उत्पन्न होंगी परन्तु भविष्य में इससे लाभ होगा।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल भी अनुकूल रहेंगे अतः आपको सफलताएं समय समय पर मिलती रहेंगी। परन्तु शनि की दशा के प्रभाव से यदा कदा मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान या विलम्ब की संभावना बनेंगी। अतः इसके प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे समस्त बाधाएं दूर होगी एवं आप मानसिक रूप से सन्तुष्टि तथा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश आपकी कुडँली में राहु की स्थिति। चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से आपके लिए यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप इस समय स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद संबन्धी कोई क्रय विक्रय करेंगे या वाहन आदि पर व्यय करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएँ बनेंगी। कार्यक्षेत्र में भी इस समय आपकी स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता पिता की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ भी अधिक मात्रा में होंगी। अन्य गोचरफल तथा दशा शुभफल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा आपका समय सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

फलादेश - 2037

इस वर्ष में बृहस्पति तृतीय भाव में गोचरवश भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी दूर समीप की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी। इससे आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस समय साहित्य और दर्शन की ओर आपकी रुचि उत्पन्न होगी। पुराने मित्रों से इस वर्ष में आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी। साथ ही मित्रवर्ग के द्वारा भविष्य में लाभ के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतया अच्छा रहेगा एवं कार्यक्षेत्र में भी उन्नति करते रहेंगे। साथ ही इस समय मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशालहृदयी के रूप में अन्य जनों के सम्मुख अपने आप को प्रस्तुत करेंगे। अतःसमाज से आप को इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस समय आय गोचर तथा दशा फल भी अनुकूल रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए उत्तम एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। इस समय आपकी मानसिकता में परिवर्तन की संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। संतति पक्ष से आपको सन्तुष्टि रहेगी तथा अपने क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। इस समय स्त्री का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस वर्ष अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। अतः आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनैतिक व्यक्तियों से भी आप संबंध स्थापित करेंगे एवं उनसे उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति हो सकती है अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे तथा समय का सदुपयोग करें।

इस वर्ष में गोचरवश आपकी कुडँली में राहु की स्थिति। चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से आपके लिए यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप इस समय स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद संबन्धी कोई क्रय विक्रय करेंगे या वाहन आदि पर व्यय करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएँ बनेंगी। कार्यक्षेत्र में भी इस समय आपकी स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता पिता की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ भी अधिक मात्रा में होंगी। अन्य गोचरफल तथा दशा शुभफल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा आपका समय सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

फलादेश - 2038

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति का भ्रमण चतुर्थ भाव में रहेगा। अतःयह वर्ष आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस वर्ष आप शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ तथा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर स्नेहपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष आपकी विगत सोचे हुए योजनाएँ तथा महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में भी इस समय आपकी उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। साथ ही समाज से आपको यथोचित मान सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप आवास, जायदाद या वाहन संबन्धी सुख भी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस वर्ष माता तथा ससुराल से भी लाभ के योग बनेंगे। साथ ही इस वर्ष में आयगोचरफल तथा दशा भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। इस समय आपकी मानसिकता में परिवर्तन की संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। संतति पक्ष से आपको सन्तुष्टि रहेगी तथा अपने क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। इस समय स्त्री का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस वर्ष अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। अतः आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनैतिक व्यक्तियों से भी आप संबंध स्थापित करेंगे एवं उनसे उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति हो सकती है अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे तथा समय का सदुपयोग करें।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचरवश तृतीय भाव में तथा केतु की नवम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आपके मान प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी परास्त होंगे तथा आपके समक्ष समर्पण करेंगे। मानसिक रूप से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा सभी चिन्ताएँ समाप्त हो जाएँगी। आर्थिक दृष्टि से भी इस समय आपकी उन्नति होगी। तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल होंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय स्वपरिश्रम से कोई विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित करेंगे साथ ही मित्रवर्ग से भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग मिलेगा। परन्तु बन्धुवर्ग से यदा कदा चिन्ता उत्पन्न हो सकती है। साथ ही नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपको यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। लेकिन आय गोचरफल तथा दशाफल अनुकूल होने के कारण यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा।

फलादेश - 2039

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति पंचम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय ज्ञानार्जन करने में आपकी रुचि रहेगी तथा विभिन्न विषयों का आप रुचि पूर्वक अध्ययन करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में आय होगी एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो प्रेमप्रसंग चलने की संभावना रहेगी। व्यापारिक क्षेत्र में तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय अनुकूल रहेगा। इस समय मंत्रीगण या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा उनसे आप वांछित मात्रा में लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। सन्तति पक्ष से इस समय आप निश्चिंत रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए उत्तम रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। इस समय आपकी मानसिकता में परिवर्तन की संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। संतति पक्ष से आपको सन्तुष्टि रहेगी तथा अपने क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। इस समय स्त्री का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस वर्ष अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। अतः आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनैतिक व्यक्तियों से भी आप संबंध स्थापित करेंगे एवं उनसे उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति हो सकती है अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे तथा समय का सदुपयोग करें।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति द्वितीय भाव तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। अतः आपके लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग एक दूसरे को अपना यथोचित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी बनी रहेगी। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे तथापि इसमें अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा परन्तु व्यय भी यदा कदा अधिक होगा। इससे कोई खास परेशानी नहीं होगी। साथ ही जायदाद संबंधी लाभ की भी संभावना बनेंगी।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आपके महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कार्य क्षेत्र में भी उन्नति की संभावना रहेंगी। इस प्रकार आपके लिए यह समय सामान्यतया अच्छा ही रहेगा।

फलादेश - 2040

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी। अतः यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा पराक्रम से सम्पन्न करेंगे। व्यापारिक अथवा कार्य क्षेत्र की स्थिति भी अच्छी रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर रहेंगे। शत्रु या विरोधी प क्ष इस समय निर्बल रहेगा तथा आप उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आप किसी शुभ या मांगलिक कार्य पर व्यय भी करेंगे। आर्थिक रूप से आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेंगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे ।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेंगी। अतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप यथा समय पूर्ण करेंगे। अतः यह समय आपके लिए सामान्यतया शुभ ही समझा जाएगा ।

इस वर्ष में शनि षष्ठ भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण होगा। इस समय आपकी महत्वपूर्ण यात्राएँ सम्पन्न होंगी तथा व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से भी आप सुदृढ़ रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में ध ान एवं लाभ अर्जित करने में भी आप सफल होंगे। व्यापार में आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। शत्रु पक्ष आपसे भयभीत रहेगा तथा किसी प्रतियोगी परीक्षा या मुकदमे आदि में आपको सफलता मिलेगी। साथ ही अन्य गोचर एवं दशा फल भी शुभ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेगा तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सर्वत्र आदर प्राप्त होगा।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति द्वितीय भाव तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। अतः आपके लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग एक दूसरे को अपना यथोचित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी बनी रहेगी। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे तथापि इसमें अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा परन्तु व्यय भी यदा कदा अधिक होगा। इससे कोई खास परेशानी नहीं होगी। साथ ही जायदाद संबंध ी लाभ की भी संभावना बनेंगी।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आपके महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कार्य क्षेत्र में भी उन्नति की संभावना रहेंगी। इस प्रकार आपके लिए यह समय सामान्यतया अच्छा ही रहेगा।

फलादेश - 2041

गोचरवश बृहस्पति की स्थिति इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी यदा कदा असन्तुष्टि बनी रहेंगी। अतः सांसारिक कार्य में परिश्रम पूर्वक ही आप उन्नति या सफलता अर्जित कर सकेंगे। व्यापार या नौकरी आदि में भी उन्नति के लिए अधिक पराक्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी सफलता प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही समय समय पर शत्रु या विरोधी भी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे लेकिन उनका सामना करने में आप समर्थ होंगे। इस समय आपका यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा लेकिन धन एवं लाभ की प्राप्ति आवश्यकतानुसार होती रहेगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी।

इसके साथ ही अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा अच्छी नहीं रहेंगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रारंभ में व्यवधान होंगे लेकिन बाद में स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धि से आप उनको सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा परन्तु परिश्रम एवं पराक्रम से आपको शुभ फलों की प्राप्ति भी होती रहेंगी अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का उपवाश, पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए।

गोचरवश शनि इस वर्ष में षष्ठ भाव में भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आप व्यापार अथवा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आर्थिक दृष्टि से भी आपकी स्थिति सुदृढ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होता रहेगा। इस समय व्यापार में आपकी आश्चर्यजनक एवं उन्नति कारक परिवर्तन की संभावना रहेगी। साथ ही नौकरी आदि में आप किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रु को पराजित करेंगे तथा किसी प्रतियोगी परीक्षा या मुकदमे आदि में भी सफल रहेंगे। इस समय आपकी लाभ एवं सम्मानित यात्राओं का भी योग बनता है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में अन्य गोचर फल अशुभ रहेगा परन्तु दशाफल शुभ रहेगा। इसके प्रभाव से यदा कदा आपको उपर्युक्त शुभ फलो में अल्पता का आभास होगा परन्तु स्वयं के परिश्रम एवं बुद्धिबल से आप इच्छित सफलता प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

फलादेश - 2042

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति होगी तथा अनायास ही किसी सफलता के योग बनेंगे। इस समय वेरोजगारो के रोजगार मिलने के भी अवसर आएंगे। इस समय अविवाहितों का विवाह भी सम्पन्न हो सकता है। स्त्री से आप इस वर्ष पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धो में भी मधुरता रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय समाज में आपके प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। परन्तु यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आय गोचरफल अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशाफल शुभ रहेगा। अतः शुभ फलों की अधिकता रहेगी परन्तु यदा कदा अशुभ फल भी घटित होंगे।

गोचर वश शनि की स्थिति इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय व्यापार या कार्य क्षेत्र में आप पराक्रम एवं परिश्रम से उन्नति करेंगे तथा नौकरी या राजनीति में भी कोई सफलता मिल सकती है। इस समय माता तथा पत्नी का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही यदा कदा दाम्पत्य संबंधों में भी तनाव की भी संभावना रहेगी। मानसिक रूप से आप परेशान से रहेंगे लेकिन अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें आपको न्यूनाधिक सफलता मिलती रहेगी। आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम रहेगी परन्तु भविष्य में लाभदायक स्रोतों में वृद्धि होगी साथ ही दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी लेकिन इसमें व्यय अधिक तथा लाभ कम होगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे फलत : यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों में व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु आप इनका समाधान करने में समर्थ रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आप आवास या जायदाद संबंधी कार्य के विषय में भी कोई योजना बना सकते है।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः आपको

शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

फलादेश - 2043

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा अन्य जनों के परोपकार सम्बन्धी कार्य भी सम्पन्न करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण रुके हुए कार्य बन जाएँगे तथा व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी नवीन लाभदायक योजनाओं का प्रारम्भ होगा। साथ ही नौकरी या राजनैतिक क्षेत्र में भी आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी। समाज में इस समय आप एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में उभर सकेंगे तथा मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा फल शुभ रहेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्पता का आभास होगा परन्तु सामान्यतया परिणाम सुखद ही रहेंगे।

गोचर वश शनि की स्थिति इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय व्यापार या कार्य क्षेत्र में आप पराक्रम एवं परिश्रम से उन्नति करेंगे तथा नौकरी या राजनीति में भी कोई सफलता मिल सकती है। इस समय माता तथा पत्नी का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही यदा कदा दाम्पत्य संबंधों में भी तनाव की भी संभावना रहेगी। मानसिक रूप से आप परेशान से रहेंगे लेकिन अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें आपको न्यूनाधिक सफलता मिलती रहेगी। आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम रहेगी परन्तु भविष्य में लाभदायक स्रोतों में वृद्धि होगी साथ ही दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी लेकिन इसमें व्यय अधिक तथा लाभ कम होगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे फलत : यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों में व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु आप इनका समाधान करने में समर्थ रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आप आवास या जायदाद संबंधी कार्य के विषय में भी कोई योजना बना सकते है।

इस वर्ष में राहु को गोचरीय भ्रमण द्वादश भाव में तथा केतु का षष्ठ भाव में रहेगा। अत : यह वर्ष आपके लिए शुभाशुभ फल प्रदान करेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक रूप से भी आप या कदा अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपकी लम्बी दूरी की यात्राएँ तथा विदेश सम्बन्धी कोई यात्रा हो सकती है। इनमें आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही मनोरंजन सम्बन्धी कार्यों में भी आप अधिक व्यय करेंगे। फलतः इस वर्ष में आपको यदा कदा आर्थिक परेशानी हो सकती है। लेकिन षष्ठ भाव में स्थित केतु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। फलतः सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।। इस समय शत्रु तथा प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। लेकिन इस समय आप नेत्र सम्बन्धी कष्ट से परेशान हो सकते हैं। साथ ही इस वर्ष में गोचरफल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्प मात्रा में प्राप्त होंगे परन्तु अशुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे।

लाल किताब

बिमारी का बगैर दवाई भी इलाज है, मगर मौत का कोई इलाज नहीं।
ज्योतिष दुनियाबी हिसाब–किताब है, कोई दावाऐ खुदाई नहीं।

लिंग	पुल्लिंग	दादा का नाम	fsgdg
जन्म तिथि	**05/03/1987**	पिता का नाम	gdh
दिन	गुरुवार	माता का नाम	ghjt
जन्म समय	**07:15:00 घंटे**	जाति	435
इष्ट	02:23:21 घटी	गोत्र	siuyyj
स्थान	**Jeypore**		
राज्य	Orissa		
देश	India		

अक्षांश	18:52:00 उत्तर	चैत्रादी संवत शक	2043 / 1908
रेखांश	82:38:00 पूर्व	माह	फाल्गुन
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व	पक्ष	शुक्ल
स्थानिक संस्कार	00:00:32 घंटे	सूर्योदय कालीन तिथि	6
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे	तिथि समाप्ति काल	02:35:25
स्थानिक समय	07:15:32 घंटे	जन्म तिथि	6
वेलान्तर	-00:11:41 घंटे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	भरणी
साम्पातिक काल	18:04:40 घंटे	नक्षत्र समाप्ति काल	14:08:07 घंटे
सूर्योदय	06:17:39 घंटे	जन्म नक्षत्र	भरणी
सूर्यास्त	18:04:50 घंटे	सूर्योदय कालीन योग	ऐन्द्र
दिनमान	11:47:11 घंटे	योग समाप्ति काल	13:08:03 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण	जन्म योग	ऐन्द्र
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण	सूर्योदय कालीन करण	कौलव
ऋतु	वसन्त	करण समाप्ति काल	13:54:48 घंटे
सूर्य के अंश	20:16:24 कुम्भ	जन्म करण	कौलव
लग्न के अंश	07:48:46 मीन	भयात	46:15:42
		भभोग	63:28:30
		भोग्य दशा काल	शुक्र 5 वर्ष 4 मा 13 दि

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह		राशि	अंश	स्थिति	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
लग्न		मीन	07:48:46	———	..	..	..	नेक
सूर्य		कुम्भ	20:16:24	शत्रु राशि	..	..	..	नेक
चन्द्र		मेष	23:05:13	सम राशि	..	हाँ	..	नेक
मंगल		मेष	14:53:27	स्वराशि	..	हाँ	..	नेक
बुध	व	कुम्भ	09:35:27	सम राशि	..	..	..	मन्दा
गुरु		मीन	06:52:00	स्वराशि	..	..	..	मन्दा
शुक्र		मकर	08:21:49	मित्र राशि	..	..	..	नेक
शनि		वृश्चिक	26:55:11	शत्रु राशि	..	..	..	नेक
राहु		मीन	18:06:07	सम राशि	..	..	..	मन्दा
केतु	व	कन्या	18:06:07	शत्रु राशि	..	..	..	नेक

भाव स्थिति

खाना नं.	मालिक	पक्का घर	किस्मत जगानेवाला	सोया	उच्च	नीच
1	मंग	सूर्य	मंग	..	सूर्य	शनि
2	शुक्र	गुरु	चंद्र	..	चंद्र	..
3	बुध	मंग	बुध	हाँ	राहु	केतु
4	चंद्र	चंद्र	चंद्र	हाँ	गुरु	मंग
5	सूर्य	गुरु	सूर्य	हाँ	..	..
6	बुध	बुधएकेतु	केतु	..	बुधएराहु	शुक्रएकेतु
7	शुक्र	शुक्रएबुध	शुक्र	..	शनि	सूर्य
8	मंग	मंगएशनि	चंद्र	हाँ	..	चंद्र
9	गुरु	गुरु	शनि	..	केतु	राहु
10	शनि	शनि	शनि	हाँ	मंग	गुरु
11	शनि	शनि	गुरु	..	..	..
12	गुरु	गुरुएराहु	राहु	..	शुक्रएकेतु	बुधएराहु

लग्न कुंडली

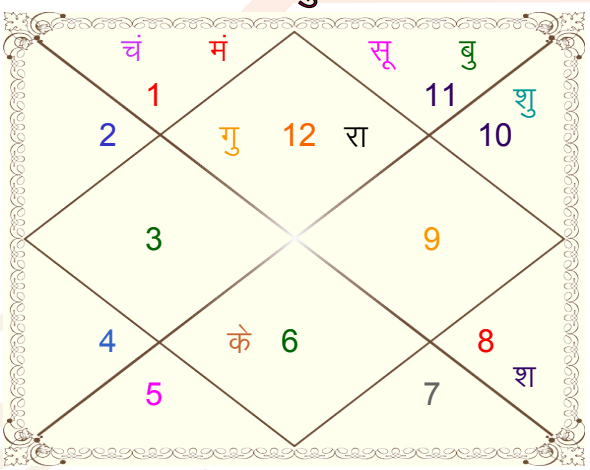

लालकिताब कुंडली

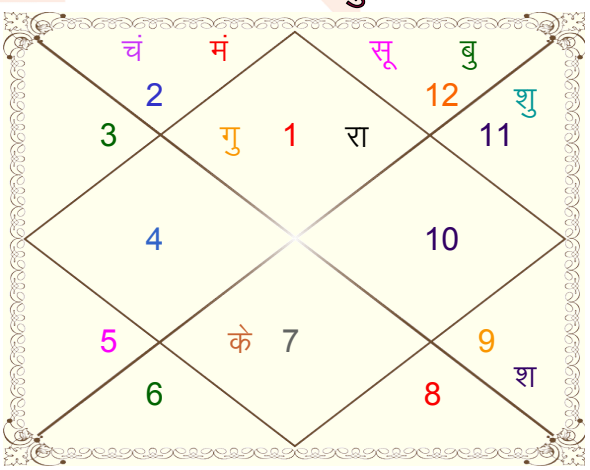

मैत्रीचक्र सारिणी

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	...	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
मंग	मित्र	मित्र	...	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
बुध	मित्र	सम	शत्रु	...	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	सम	...	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	...	मित्र	सम	मित्र
शनि	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	...	मित्र	शत्रु
राहु	सम	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	...	मित्र
केतु	शत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	...

ग्रह/राशि फल

ग्रह	वर्णन	फल
सूर्य	सुख की नींद, मगर पराई आग से जल मरने वाला।	––
चंद्र	स्वयं पैदा की हुई माया की देवी।	––
मंग	धर्म मूरत।	––
बुध	नेक लंबी आयु मगर रात की नींद उजाड़ने वाला।	राशि
गुरु	राजगुरु या गद्दीनशीं साधु।	––
शुक्र	माया के ताल्लुक में घूमता हुआ व्यक्ति।	––
शनि	कलम विधाता मकाना मर्दा।	राशि
राहु	सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी, धन का प्रतीक।	राशि
केतु	शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता।	––

चन्द्र कुंडली

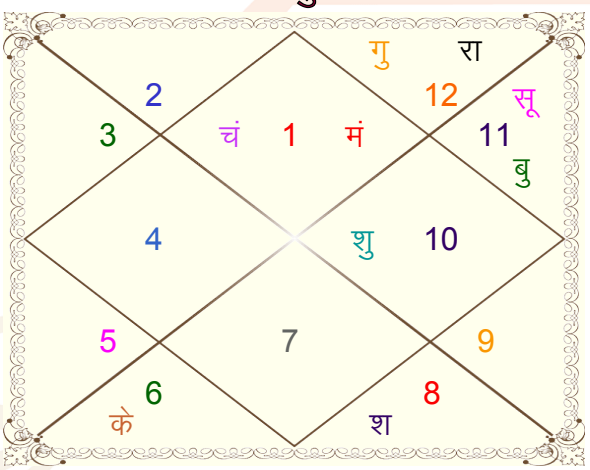

लालकिताब चन्द्र

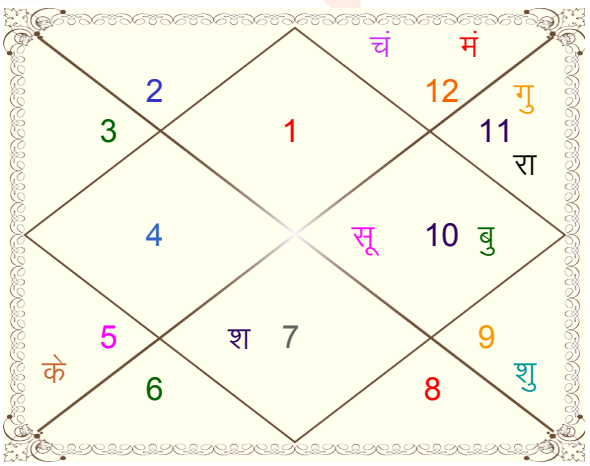

लालकिताब दशा

शनि		राहु		केतु		गुरु		सूर्य	
05/03/1987		04/03/1993		05/03/1999		05/03/2002		04/03/2008	
04/03/1993		05/03/1999		05/03/2002		04/03/2008		05/03/2010	
राहु	04/03/1989	मंग	05/03/1995	शनि	04/03/2000	केतु	04/03/2004	सूर्य	03/11/2008
बुध	05/03/1991	केतु	04/03/1997	राहु	04/03/2001	गुरु	05/03/2006	चंद्र	04/07/2009
शनि	04/03/1993	राहु	05/03/1999	केतु	05/03/2002	सूर्य	04/03/2008	मंग	05/03/2010

चन्द्र		शुक्र		मंगल		बुध		शनि	
05/03/2010		05/03/2011		05/03/2014		04/03/2020		05/03/2022	
05/03/2011		05/03/2014		04/03/2020		05/03/2022		04/03/2028	
गुरु	04/07/2010	मंग	04/03/2012	मंग	04/03/2016	चंद्र	03/11/2020	राहु	04/03/2024
सूर्य	03/11/2010	शुक्र	04/03/2013	शनि	05/03/2018	मंग	04/07/2021	बुध	05/03/2026
चंद्र	05/03/2011	बुध	05/03/2014	शुक्र	04/03/2020	गुरु	05/03/2022	शनि	04/03/2028

राहु		केतु		गुरु		सूर्य		चन्द्र	
04/03/2028		05/03/2034		04/03/2037		05/03/2043		04/03/2045	
05/03/2034		04/03/2037		05/03/2043		04/03/2045		05/03/2046	
मंग	05/03/2030	शनि	05/03/2035	केतु	05/03/2039	सूर्य	03/11/2043	गुरु	04/07/2045
केतु	04/03/2032	राहु	04/03/2036	गुरु	04/03/2041	चंद्र	04/07/2044	सूर्य	03/11/2045
राहु	05/03/2034	केतु	04/03/2037	सूर्य	05/03/2043	मंग	04/03/2045	चंद्र	05/03/2046

शुक्र		मंगल		बुध		शनि		राहु	
05/03/2046		04/03/2049		05/03/2055		04/03/2057		05/03/2063	
04/03/2049		05/03/2055		04/03/2057		05/03/2063		04/03/2069	
मंग	05/03/2047	मंग	05/03/2051	चंद्र	03/11/2055	राहु	05/03/2059	मंग	04/03/2065
शुक्र	04/03/2048	शनि	04/03/2053	मंग	04/07/2056	बुध	04/03/2061	केतु	05/03/2067
बुध	04/03/2049	शुक्र	05/03/2055	गुरु	04/03/2057	शनि	05/03/2063	राहु	04/03/2069

केतु		गुरु		सूर्य		चन्द्र		शुक्र	
04/03/2069		04/03/2072		05/03/2078		04/03/2080		04/03/2081	
04/03/2072		05/03/2078		04/03/2080		04/03/2081		04/03/2084	
शनि	05/03/2070	केतु	05/03/2074	सूर्य	03/11/2078	गुरु	04/07/2080	मंग	05/03/2082
राहु	05/03/2071	गुरु	04/03/2076	चंद्र	05/07/2079	सूर्य	03/11/2080	शुक्र	05/03/2083
केतु	04/03/2072	सूर्य	05/03/2078	मंग	04/03/2080	चंद्र	04/03/2081	बुध	04/03/2084

मंगल		बुध		बुध		बुध		बुध	
04/03/2084		05/03/2090		05/03/2090		05/03/2090		05/03/2090	
05/03/2090		04/03/2092		04/03/2092		04/03/2092		04/03/2092	
मंग	05/03/2086	चंद्र	03/11/2090	चंद्र	03/11/2090	चंद्र	03/11/2090	चंद्र	03/11/2090
शनि	04/03/2088	मंग	05/07/2091	मंग	05/07/2091	मंग	05/07/2091	मंग	05/07/2091
शुक्र	05/03/2090	गुरु	04/03/2092	गुरु	04/03/2092	गुरु	04/03/2092	गुरु	04/03/2092

नोट : 35 साला लाल किताब दशा लगभग तीन चक्र के लिए दी गई है।

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

रतांध ग्रह/अंधा टेवा

लाल किताब के अनुसार रतांध ग्रह को नहोराता के ग्रह भी कहते हैं। ये ग्रह दिन में दे खते हैं, परंतु यही ग्रह रात्रि में अंधे हो जाते हैं। ये ग्रह अर्द्ध–अंधे कहे जाते हैं अर्थात् चौथे खाने में सूर्य और सातवें खाने में शनि हो तो वह टेवा आधा अंधा टेवा कहलाएगा।

इस प्रकार का टेवा जातक के व्यावसायिक जीवन में, मन की शांति के लिए और गृहस्थ सुख के लिए काफी हद तक अशुभ असर पड़ता है। सातवें खाने में बैठा शनि बहुत शक्तिशाली हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सप्तम खाने के शनि को दिग्बल प्राप्त हो जाता है। इस भाव का शनि अपनी दसवीं संपूर्ण दृष्टि से सुख स्थान में स्थित सभी ग्रहों को प्रभावित करता है। शत्रु दृष्टि से सूर्य के शुभ फल अशुभता में परिणत हो जाएगा। चतुर्थ स्थान से सूर्य की सप्तम दृष्टि कर्म भाव पर पड़ कर कर्म फल को अशुभ कर देगा। सभी प्रकार की मन की शांति को पूर्ण रूपेण कम कर सभी प्रकार के सुखों को नष्ट कर देगा। कुंडली पर अशुभ प्रभाव देने वाला शनि और उसकी दृष्टि है। अतः सूर्य के उपाय की उपयोगिता नहीं। मात्र शनि की अशुभता नष्ट करने के लिए शनि का उपाय करना चाहिए।

निष्कर्ष

आपकी पत्री रतांध ग्रह से प्रभावित नहीं है।

धर्मी टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ धर्मी टेवा होते हैं। धर्मी टेवा के अशुभ ग्रहों का प्रभाव बहुत हद तक कम हो जाता है। जिस टेवा में बृहस्पति के साथ शनि किसी भी घर में अर्थात् शुभ घ ार में स्थित हो तो ऐसा टेवा धर्मी टेवा हो जाता है। धर्मी टेवा वाला जातक मुश्किल या कष्ट के समय, जब उसकी सभी राहें अवरुद्ध हो जाती हैं उस समय ईश्वर अपने हाथों से उसकी सहायता करते हैं। शनि ग्रह मुश्किलों का एवं हमारे भाग्य का कारक भी लाल किताब के अनुसार होता है। टेवा में बृहस्पति के साथ अथवा बृहस्पति की राशि में शनि बैठ जाए तो शनि के स्वभाव में शुभता आ जाती है। बृहस्पति और शनि का संबंध बहुत से दोषों को दूर कर देता है। 6ठें, 9वें, 11वें एवं 12वें घ ारों में शनि बृहस्पति का संयोग होना बड़ी समस्याओं का शमन एवं जीवन के उतार–चढ़ाव को नियंत्रित कर देता है। इसके प्रभाव से (कुंडली) टेवा की अशुभता समाप्त और सारी विपदाओं का अंत हो जाता है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री धर्मी टेवा नहीं है।

नाबालिग टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ हालातों में बारह साल की आयु तक कुछ नाबालिग टेवे होते हैं। उस दशा में बारह साल तक के बालक की कुंडली का प्रभाव नहीं उसके पिछले जन्म के भाग्य का असर ही प्रभावी रहता है। नाबालिग टेवा उसको कहते हैं जबकि टेवा 1,4,7 और 10 खाने अर्थात् केंद्र स्थान खाली हो अथवा सिर्फ पापी ग्रह शनि, राहु और केतु ही हो या अकेला बुध ही हो तो वह नाबालिग ग्रहों का टेवा होगा।

उसकी किस्मत का हाल 12 साल तक शक्की होगा।

लाल किताब के अनुसार नाबालिग टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक–एक ग्रह का प्रभाव निम्नरूपेण पड़ा करता है। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1. उम्र के पहले साल में सातवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
2. उम्र के दूसरे साल में चौथे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
3. उम्र के तीसरे साल में नौवे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
4. उम्र के चौथे साल में दसवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
5. उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
6. उम्र के छठे साल में तीसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
7. उम्र के सातवें साल में दूसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
8. उम्र के आठवें साल में पांचवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
9. उम्र के नवमें साल में छठे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
10. उम्र के दसवें साल में बारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
11. उम्र के ग्यारहवें साल में पहले घर के ग्रह का असर पड़ता है।
12. उम्र के बारहवें साल में आठवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री नाबालिग ग्रहों का टेवा नहीं है।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति–रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख–दुःख का

ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी–नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू–टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने–जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने–बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घ ाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन–दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल–ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर धन (एक–एक या पांच–पांच या दस–दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों–करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी–ठगी–गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा–मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी–व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक–एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधू बनना चाहो तो साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे। आपको बड़े–बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगे। नौकरी–व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद रहेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगे। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिलेगा या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधवा स्त्री से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाले होंगे। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों, लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी–व्यापार में नुकसान उठाएंगे। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधवा स्त्री से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :

1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से यह आपके भाग्य को जगाता है। धन–संपदा से संपन्न रहेंगे। आपके वंश की वृद्धि होगी। पैतृक सुख और संपत्ति से पूरे रहेंगे। आपके घर में लक्ष्मी की वृद्धि होगी। आपको जद्दी–जायदाद और विरासत का हिस्सा अवश्य मिलेगा। आपको वृद्धावस्था में सभी शुभ फल अवश्य मिलेंगे। बुढ़ापे में सुखकारक समय होगा। आपको भाई का सुख अवश्य मिलेगा। आप सफल प्रेमी होंगे। आप धनवान और उच्चाधिकारी बनेंगे। आपके ससुराल की माली–हालत अच्छी होगी। पिता और ससुराल से धन–संपत्ति का लाभ मिलता है। 48 वर्ष आयु तक माता का सुख मिलता है। परिवार में किसी के जुड़वा बच्चे भी पैदा हो सकते हैं। सफेद चीजों (चावल–चांदी, दूध आदि) से अधिक लाभ मिल सकता है।

यदि आपने बूढ़ी स्त्री या माता का अपमान किया, ससुराल वालों को तंग करके धन प्राप्त किया, मांस–मदिरा का सेवन किया, घर में मंदिर बना कर पूजा–पाठ किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 25 और 34 वर्ष की आयु में गरीबी का सामना करना पड़ सकता है। आप दुनियावी प्रेम संबंधों के कारण बर्बाद हो सकते हैं। आपको संतान में विघ्न या संतान का सुख देर से मिलेगा। आपको बहन का सुख नहीं मिले ऐसा संभव है। बहन–बेटी या परिवार की किसी लड़की को मिरगी का दौरा पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर के मंदिर में शिवलिंग, मूर्तियां, घंटी, शंख आदि न रखें।
2. शराब और मादक वस्तुओं का प्रयोग न करें।

उपाय :

1. माता या बूढ़ी स्त्री के पैर छूकर आशीर्वाद लें।
2. माता से चावल–चांदी, सफेद कपड़े की थैली में लेकर पास रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दयालु, रक्षक, भाई और मित्रों के पालनहार, आप दूसरों की जरूरत हमेशा पूरी करेंगे। आप किसी संस्था के प्रधान भी हो सकते हैं। आप बहुत लोगों को सहारा देने वाले होंगे। आप दूसरों को खाली हाथ नहीं लौटाएंगे। आपको ससुराल से सहायता मिलेगी। आप छोटे भाई से पुत्र जैसा प्यार करेंगे और उसे सहायता देंगे। छोटे भाई की सहायता से आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सहायता करते रहेंगे। इस वजह से आप भी भरपूर रहेंगे। आपको दूसरों की भलाई के लिए धन–संपत्ति मिलती रहेगी। आप दूसरों के लिए लंगर लगाएंगे। आप नेक और पक्के इरादे के हैं। आप परिश्रम से धनी होंगे। आपको खुराक, पोशाक तथा अन्य जीवन के सुख प्राप्त होंगे। जरूरत पड़ने पर खुद ब खुद पैसे मिल जाएंगे। आपको भगवान की कृपा से बहुत धन मिलेगा। आप अधिकारी बन कर हुकूमत करेंगे। आप तीर्थ यात्रा करने से शुभ फल को प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी दौलत में बढ़ोत्तरी होगी। ससुराल पक्ष से सुखी रहेंगे।

यदि आपने दूसरों के धन–स्त्री पर बुरी नजर रखी, बुरी आदतों के शिकार हुए या छल–कपट करके भाई–बंधुओं, मित्रों के साथ ठगी की तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से अगर विद्या में रुकावट, जरूरत पड़ने पर आपको धन मिलता रहेगा। नौकरी–व्यापार में बार–बार हानि हो सकती है। 28 वर्ष से पहले बड़े

भाई को शरीर कष्ट संतान की चिंता, धन हानि होगी। यदि आपका बड़ा भाई है तो उसका सुख आपको नहीं मिलेगा या वह आपसे हालत में कमजोर होगा या आप और आपका भाई निःसंतान भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. लड़ाई–झगड़े से दूर रहें।
2. मेहमानों की सेवा से मुंह न फेरें।

उपाय :

1. बच्चों को दोपहर के समय गुड़–गेहूं बांटें।
2. नाश्ते में मीठा भोजन करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से अच्छी स्थिति बन सकती है। वैसे आपको धन–संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच–विचार कर कार्य करेंगे। आपकी बहन–लड़की अपने ससुराल में ही सुखी रहकर बसेगी। मगर अपने पिता के घर में दुःखी रहेगी। आप सोच–विचार कर कार्य करेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों–द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये–लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदा असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल करेगा। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगे। सट्टे–लाटरी का काम या दलाली के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी–कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता के लिए अशुभ होगा। आपकी पत्नी का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :

1. स्टैनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी कुंडली में वृहस्पति पहले खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप एक पढ़े–लिखे या उपदेशक या गुरु भी हो सकते हैं। आप विद्वान, अच्छी बुद्धि के संतानयुक्त, शासन द्वारा सम्मान पाने वाले बड़प्पन से युक्त होंगे। विद्या के माध्यम से अपनी आजीविका चलाऐंगे। पैतृक धन से भी धनी होंगे। यदि आपकी शिक्षा कम भी हो तो फिर भी धन आपको प्राप्त होता रहेगा। आप पैसे की वजह से नहीं, करामाती गुण से सम्मान पाएंगे। आप ऊंचे लोगों के साथ रह कर अपनी दिमागी शक्ति और राजदरबार से संबंधित रह कर, सम्मान प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी अर्थिक स्थिति अच्छी हो जाएगी और भाग्योदय होगा। आप अपनी कमाई से नया मकान बनवाएंगे। आपको बहुत जायदाद का लाभ होगा। आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। उम्र बढ़ने के साथ–साथ सुख में भी वृद्धि होगी। आपकी पत्नी आपकी आज्ञाकारिणी और सेविका रहेगी।

यदि आपने विद्या अधूरी छोड़ दी, लोगों की व्यर्थ निंदा की, मुफ्त माल, दान आदि से जीवन व्यतीत करना शुरु किया, छोटी आयु में शराब–बीयर पीना शुरु कर दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अप्रत्याशित घटनाओं एवं अव्यवस्था से सतर्क रहें। विद्या में रुकावट हो सकती है, आपके पिता की मौत दमा या दिल की बीमारी या मानसिक रोग से हो ऐसी आशंका है। आपको श्वास या दमे की बीमारी होगी। प्रथम पुत्र संतान की प्राप्ति से अशुभ फल प्राप्त होने की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त गिफ्ट या दान न लेवें।
2. किस्मत पर भरोसा रखें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लेवें।
3. शिक्षा बी.ए. या समकक्ष अवश्य पढ़ें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या

संतान अधिक होगी। आपकी पत्नी दिखने में भोली–भाली परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छी होगी। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपकी पत्नी में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आप भोले स्वभाव के प्राणी होंगे। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने के आदी हो जाएंगे। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहे, चाल–चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके कुश्ता फौलाद या मछली का तेल प्रयोग करें वैसे चांदी का कुश्ता भी लाभदायक रहेगा)। आपकी पत्नी के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या स्त्री द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड, जेल यात्रा का भय रहेगा। आपका चाल–चलन शक्की होगा। आप यदा–कदा मू र्खता भी कर बैठेंगे। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी–व्यापार बार–बार न बदलें।

उपाय :

1. स्त्री से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि नौवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप लोगों पर परोपकार करेंगे तथा इसके अच्छे लाभ भी आपको मिलेंगे। आप बड़े परिवार के सदस्य होंगे। आप भाई एवं मित्रों से सहयोग प्राप्त कर धनवान बनेंगे। आपको चलते–फिरते कामों से अधिक लाभ मिलेगा। आपको संतान का सुख होगा। परंतु संतान के सुख प्राप्ति में विलंब हो सकता है। आपकी पत्नी धनी परिवार से होगी। आपके पास प्रचुर मात्रा में धन रहेगा। आप धन के विषय में लापरवाह रहेंगे। आप उदार प्रवृत्ति के, जागीरदार, सदा सुखी होंगे। माता–पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप विद्वान होंगे। आप पर कभी भी कर्ज का बोझ नहीं पड़ेगा। आपका भाग्य अपने माता–पिता के भाग्य से अच्छा होगा। आपकी पत्नी भाग्यवान और अमीर खानदान की होगी। आप पैसे के प्रति बहुत मोह नहीं करेंगे। तीर्थ यात्रा करेंगे भाग्योन्नति होगी उससे अधिक शुभ फल प्राप्त होते रहेंगे। आप धार्मिक विचार वाले होंगे।

यदि आपने दूसरों के माल पर बुरी नजर रखी, जुआ आदि खेला, बुरे काम किये, लोहा/मशीनरी आदि के कार्य किये, घर में शीशम का पेड़ हो, जब आपके नाम 3 मकान बन जायें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप ब्याज का धंधा करें तो नुकसान होगा। आपके दिल में दूसरों से बदला लेने की भावना रहती है। अग्निकाण्ड की शंका है। आपको सांस या दमे की बीमारी हो सकती है। संतान सुख में विघ्न या पुत्र–पौत्र संतान की चिंता रहेगी। मंदे कामों से बदनामी भी हो सकती है। आंखों की दृष्टि खराब हो ऐसी आशंका है। अमीरों से धन लूट कर गरीबों में बांटना, ऐसी आपकी सोच रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न करें।
2. घर की छत पर ईंधन–चौगाठ आदि न रखें।

उपाय :

1. माथे पर केसर का तिलक करें।
2. घर के अंत में अंधेरा कमरा बनायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होंगे। अगर सरकारी अधिकारी हुए तो राजदरबार में आपका बहुत सम्मान होगा। आपके ननिहाल वाले आपके जन्म के बाद अमीर होंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा या जन्म के समय आकाश पर बादल छाये हुए होंगे, ऐसी आशंका है। 42 वर्ष की उम्र तक समय मध्यम है जो कुछ भी बुरा हुआ होगा, इसके बाद बहुत अच्छा और शुभ रहेगा। आपका जन्म जिस घर में होगा उस घर के सामने घर में उजाड़ हो जाएगा। आपकी रोजी–रोटी के लिए दूसरा काम भी चालू रहेगा। यदि एक काम या नौकरी छूटेगी तो दूसरी नौकरी या व्यवसाय चालू हो जाएगा। आप धनी होंगे। आपको संतान सुख अच्छी या बुरी अवश्य मिलेगी। आपके लिए हर समय बोलते रहना अच्छी बात नहीं है। आपमें बेईमानी और धोखेबाजी की आदत भी विद्यमान रहेगी। जीवन में कई परिवर्तन आएंगे। माता और मन की शांति के लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने विवाह के बाद ससुराल से लोहा, बिजली का समान, काले–नीले कपड़े मुफ्त या दान में लिये, मकान के आंगन में धुआं किया, बिल्ली की जेर, चमड़े के पर्स में रखी तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके बनते कामों में रुकावट, तरक्की कम मगर बदला–बदली अधिक बार होगी। 11–21–42 वर्ष आयु में पिता के लिए समय अशुभ, परिवार में किसी को दमा–मिरगी का रोग हो सकता है। आप शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव के होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आंगन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो, विशेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़–गेहूं दान देवें।
2. दूध से स्नान करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप 24 वर्ष की उम्र से ही धन कमाने में जुट जाएंगे। जैसे–जैसे आपकी संतान की उम्र बढ़ती जाएगी वैसे–वैसे धन में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। आजीविका का साधन बना रहेगा। रोजगार द्वारा अच्छी कमाई होगी। आपकी संतान बलशाली होगी। आप अपनी बात के पक्के होंगे। आप सब तरह से सुखी और संपन्न रहेंगे फिर भी पश्चात्ताप करते ही रहेंगे। आपकी संतान शेर का मुकाबला करने वाली होगी। आपकी पत्नी के जितनी संख्या में भाई–बहन होंगे उतनी ही संख्या में आपकी संतान होंगी। 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। परंतु इसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। धनधान्य में बरकत होगी। 24 साल की उम्र में इतना धन आएगा जो कि आने वाले 40 वर्षों तक के लिए काफी होगा। आपके दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे। दुश्मन अपने आप तबाह हो जाएंगे। जीवन में कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपने हर समय लिखने का काम किया, झूठा वायदा किया, परस्त्री गमन किया। अपनी पत्नी से झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 7 वर्ष तक ननिहाल की हालत खराब, 34 वर्ष बाद सुख नष्ट होना शुरु हो जाएगा। झूठ बोलना, झूठा वायदा करना आपको अवनति देगा। शरीर में दर्द या बीमारी होगी। आपकी संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपका मन स्त्री और पुत्र के संबंध में अशांत रहेगा। आप अपनी जुबान से गंदी बातें बोलेंगे। आप अभिमान के कारण बर्बाद हो जाएंगे। किसी को दिया गया आश्वासन पूरा न करना आपके लिए हानिकारक होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का अधिक काम न करें।

उपाय :

1. 4 केले 4 दिन जल में प्रवाह करें।
2. 4 नीबू 4 दिन जल में प्रवाह करें।

लाल किताब – वर्ष कुँडली

2014

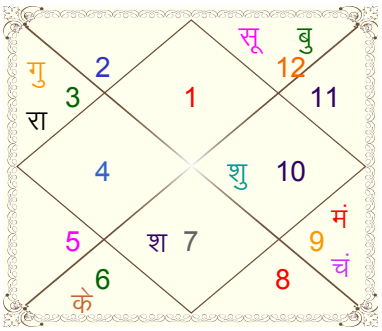

2015

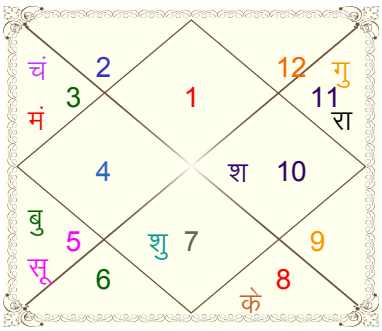

2016

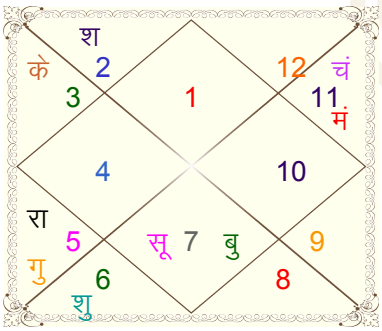

2017

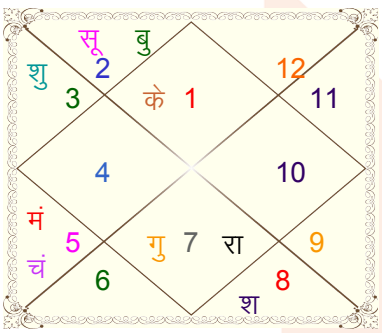

2018

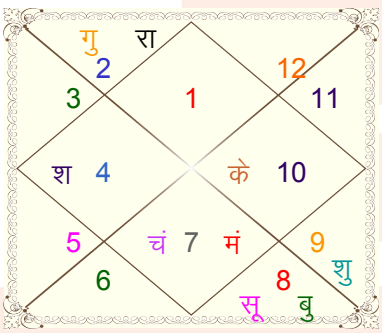

2019

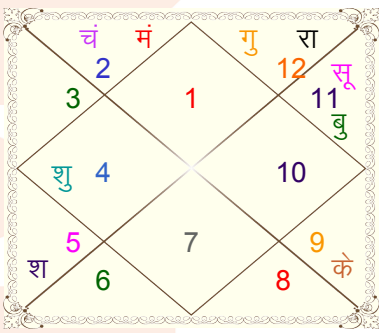

2020

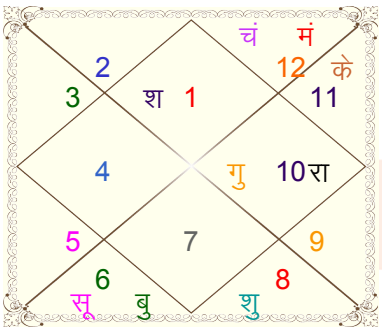

2021

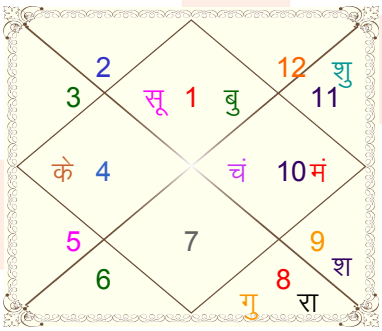

2022

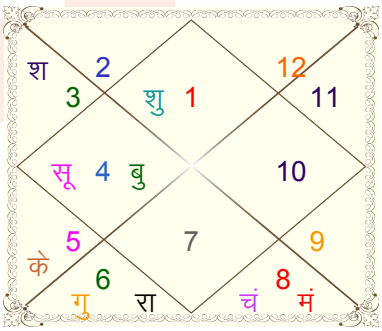

2023

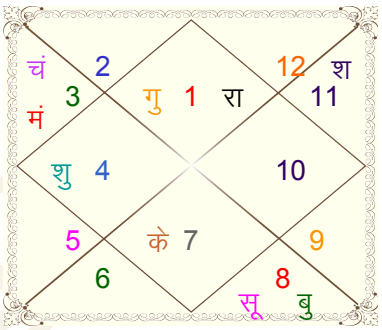

2024

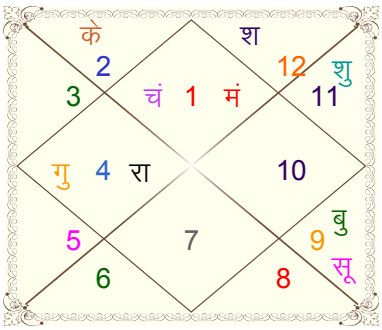

2025

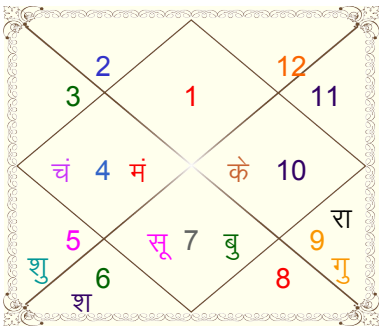

लाल किताब वर्षफल 2014-2015

वर्त्तमान आयु - 27
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	..	..	नेक
चंद्र	..	..	..	नेक
मंग	..	..	..	नेक
बुध	..	..	..	मन्दा
गुरु	..	..	..	मन्दा
शुक्र	..	..	..	नेक
शनि	..	..	..	नेक
राहु	..	..	..	मन्दा
केतु	..	हाँ	..	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	हाँ	..	हाँ	हाँ	..	..	हाँ	..	..	..	..

वर्ष कुंडली 2014 – 2015

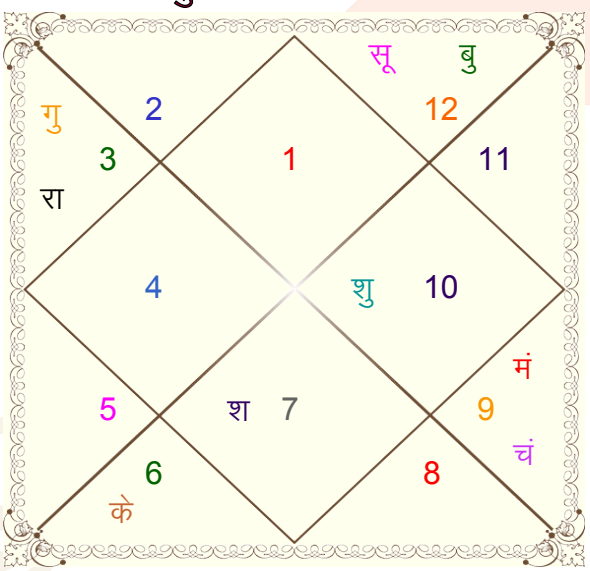

वर्ष चन्द्र कुंडली 2014 – 2015

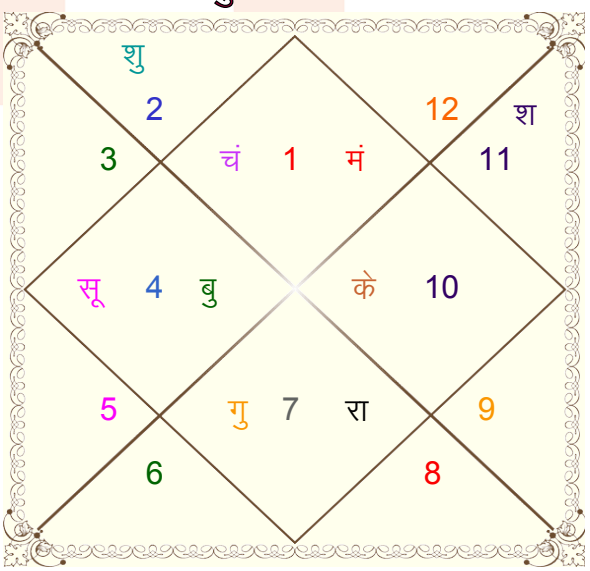

लाल किताब वर्षफल 2014–2015

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे, बड़े–बड़े कामों से धन लाभ मिलेगा, गुप्त विद्या, आध्यात्म में रूचि रहेगी। विदेश संबंधी कामों से भी लाभ मिलेगा या विदेश यात्रा भी हो सकती है। सुख की नींद मिलेगी, बुजुर्गों का आपके ऊपर आशीर्वाद रहेगा। आपके परिवार में चहल–पहल रहेगी।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. आपके पास किसी के द्वारा रखी चीज़ पर नियत खराब न करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष समाज के लोगों से हमर्ददी होगी। आपको पैतृक जायदाद का लाभ मिलेगा। तीर्थ यात्रा का अच्छा फल मिलेगा। आपकी संगीत विद्या में रूचि, धार्मिक विचार या धर्म–कर्म में रूचि अधिक रहेगी। आपको विनम्र स्वभाव रखना ही शुभ है जिससे आप तरक्की के शिखर पर पहुंच जाएंगे, धन–दौलत में बरकत होगी।

चंद्र की शुभा बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. झूठ न बोलें, झूठा भोजन न खिलाये और न खायें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति में वृद्धि और उसका लाभ मिलेगा, परिवार में धार्मिक उत्सव भी हो सकता है। नौकरी–व्यापार में अधिक धन लाभ मिलेगा। विवाहित भाई के साथ रहेंगे या उसकी पत्नी की सेवा करेंगे तो आप समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की हैसियत से उभरेंगे और आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. परदेश में रिहाईश न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष मादक द्रव्यों या चीज़ों का प्रयोग आपको बदजुबान बना सकता है जो आपके लिये हानिकारक होगा, ख्याली कारोबार (सोच–विचार कर करने वाले काम) या सघ/जुआं, लाटरी, शेयर आदि आपके लिये अनुकूल नहीं है। भ्रम या अज्ञानता के कारण आपका नुकसान हो सकता है।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. स्टील की बेजोड़ अंगूठी बांये हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा अंगुली में पहनें।
2. खाली घड़ा ढक्कन लगाकर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 3 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष धर्म के विरुद्ध कार्य नहीं करने चाहिये। धन बुरे तरीकों से कमाने की नीयत रहेगी, बेमतलब गाली–गलौज, बकवासबाजी आप को समाज में अपमानित कर सकती है। पीपल का पेड़ काटना आप की संतान को कष्ट देगा। जिस पर आप बिगड़ेंगे उसका नाश कर देंगे। अपवित्र धर्म स्थान घर में होगा।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दुर्गा पाठ या कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों की सेवा करें)
2. केसर या हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 10 में शुभ हैं जिसकी वजह से आपकी इस वर्ष कामशक्ति की अधिकता होगी। पत्नी के साथ रहते कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी और आपको किसी प्रकार का दुःख नहीं झेलना पड़ेगा। पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। आपमें लोभ और शक करने की भावना बढ़ सकती है। दस्तकारी के कामों से अधिक लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब–बीयर न पियें, मछली न खावें।
2. आशिक मिजाज न बनें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 7 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष

परोपकार करने से धन लाभ पाएंगे। यह लाभ 7 गुणा तक हो सकता है। मकान बनेगा और बुजुर्गों से जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा। आपको गांव/शहर या किसी संस्था में पद मिल सकता है। पिता/ससुर और पत्नी के लिये समय शुभ रहेगा। चाल–चलन खराब रखने से धन हानि होगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. डाक्टर/कैमिस्ट का साथ न रखें।
2. चोर–डाकू से संबंध न रखें।
3. बुजुर्गी मकान के मुख्य द्वार की दहलीज ठीक रखें उसके दोनों तरफ सूर्योदय से पहले सरसों का तेल डालें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष यदि आपने बहन–बेटी, साली–बुआ का धन उपभोग किया तो आपकी हानि हो सकती है। आपके भाई–बंधु धोखे से आपका धन हड़प कर सकते हैं सावधान रहें। कर्ज का बोझ बढ़ सकता है मगर आप बुद्धिमत्ता से कर्ज मुक्त हो जायेंगे। बदनीयती करना आपके लिये हानिकारक है।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

उपाय :

1. ठोस चांदी घर में रखें।
2. कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों) की सेवा या दुर्गा पाठ करें या कन्यादान करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 6 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष सोना न बिके और न ही गुम हो, खासकर विवाह समय मिली सोने की अंगूठी। यात्रा से हानि हो ऐसी आंशका है। चमड़ी, पांव में कष्ट हो सकता है। फिजूल खर्च बढ़ने की संभावना है। मामा को कष्ट का भय, संतान सुख की चिंता। शत्रु अकारण उभरेंगे और उनसे हानि का भय रहेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. शुद्ध सोने की अंगूठी बांये हाथ की अनामिका अंगुली में पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• खाली घड़ा ढक्कन देकर जल प्रवाह करें या स्टील की अगुंठी बायें हाथ की कनिष्ठका अंगुली में पहनें।

लाल किताब वर्षफल 2015-2016

वर्त्तमान आयु - 28
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	हाँ	..	नेक
चंद्र	..	..	..	नेक
मंग	..	..	..	नेक
बुध	..	हाँ	..	नेक
गुरु	..	..	..	मन्दा
शुक्र	..	..	..	नेक
शनि	..	..	..	नेक
राहु	..	..	..	मन्दा
केतु	..	हाँ	..	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	..	..	हाँ	..	हाँ	..	..	..	..	..	..

वर्ष कुंडली 2015 – 2016

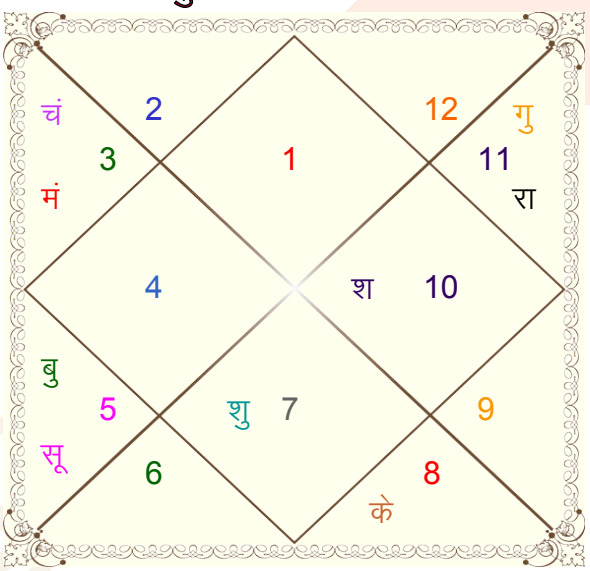

वर्ष चन्द्र कुंडली 2015 – 2016

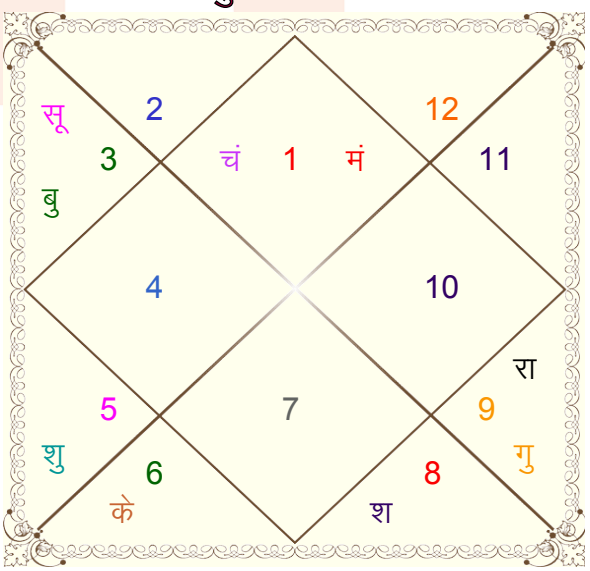

लाल किताब वर्षफल 2015–2016

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 5 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार का भाग्य चमकेगा, यदि राजा आपका भला न करे तो फकीर से आपका भला होगा, सरकारी अधिकारियों से मधुर संबंध बनेंगे, परिवार की उन्नति होगी। गुप्त विद्या या ज्योतिष में रूचि रहेगी, अचानक धन प्राप्ति के भी योग हैं या सरकारी विभाग से लाभ मिलेगा।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. ईष्यालु वृत्ति न रखें।
2. झूठ न बोलें, जूठा भोजन न करें/न करावें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 3 शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चरित्र सुधरेगा और पराक्रम बढ़ेगा, चोरी से बचाव होगा। विद्या अच्छी रहेगी। 3, 6, 8, 12वां मास अधिक लाभदायक होगा, कुदरत खुद आपकी किस्मत बनाने में सहायक होगी, गरीबों से आपकी हमदर्दी रहेगी, किसी अंतर्राष्ट्रीय खेल में आपकी रूचि रहेगी या खुद भी उस खेल में हिस्सा ले सकते हैं।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बहन–भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों के लिये मिला सामान हड़प न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष दूसरों की सहायता कर के प्रसन्नता प्राप्त होगी मगर जरूरी नहीं कि दूसरों की सहायता के बदले में आपको सम्मान मिलेगा, आपको कसरत करने या जिम आदि जाने का शौक रहेगा, मुकाबले की विद्या (प्रतियोगी परीक्षा) में आपकी जीत होगी, नर्म स्वभाव रखेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। ध न–परिवार/संतान का सुख मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पेट का विशेष ध्यान रखें।
2. हाथी दांत न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अचानक धन लाभ होगा और सुख के साधन मिलेंगे, ज्योतिष विद्या और धर्म–अध्यात्म के प्रति रुचि, आप जो बात मुंह से कहेंगे वह सच हो सकती है अर्थात् आपके मुंह से निकला वाक्य ब्रह वाक्य माना जा सकता है। अचानक धन लाभ होगा और बहुत अच्छे दिन देखने को मिलेंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. गऊ मुख घर में रिहाईश न करें।
2. चाल–चलन ठीक रखें और अनैतिक सम्बन्ध न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 11 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चाल–चलन खराब हो सकता है। चाल–चलन संभालना आप के लिये एक जरूरी चीज़ है। दादा–पिता को कष्ट, सोने के आभूषणों की हानि, आंखों की नजर कमज़ोर हो सकती है। किस्मत का फल कुछ मध्यम रहेगा। परिवार के लोगों की हिफाजत करना आपके लिए एक जरूरी कर्म होगा।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पीला रूमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 7 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मकान–वाहन का सुख मिलेगा। काले रंग की स्त्री का साथ, आपका भाग्य को जगाने और आपकी तरक्की में सहायक हो सकती है। विवाह से संबंधित चीजों के कारोबार से लाभ मिले। जददी घर से दूर जाना पड़ सकता है। पत्नी–माता में मां–बेटी जैसा संबंध रहेगा। पत्नी सुशीला और सेवा करेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सफेद गाय की पालना या सेवा न करें।
2. बिल्ली की जेर चमड़े के पर्स में न रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकारी विभाग या सरकार द्वारा लाभ मिलेगा। इस वर्ष का हर दसवां दिन और दसवां महीना आपके लिये शुभ और लाभकारी है। धर्मात्मा होना आपके लिये ठीक नहीं रहेगा। स्थायी कामों अर्थात एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से मान–सम्मान बढ़ेगा और अधिक धन लाभ मिलेगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मादक द्रव्यों/चीजों का प्रयोग न करें और मछली न खायें।
2. भाग–दौड़ के काम न करें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 11 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पिता की चिंता रहेगी, पिता से दूरी या जुदाई हो सकती है। समय कुछ गरीबी में कट सकता है। मौके के ऑफिसर से झगड़ा करना आपको नुकसान पहुंचा सकता है। लॉकर/ दराज खाली न रखें उनमें कुछ धन रखें। परिवार पर गोली चलने का भय, नीला नग–नीलम और नीला–काला कपड़ा पहनना हानिकारक है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. सिर पर चोटी रखें या सिर सफेद–शरबती टोपी पहनें या पगड़ी बांधे।
2. 4 किलो सिक्का (औफदप टुकड़ा और) चौरस, 4 नारियल सूखे (बजने वाले) जल प्रवाह करें।
3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाईप में लगा कर पियें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 8 में है जिसकी वजह से आपके लिए इस वर्ष शराब–मीट का सेवन हानिकारक है। खराब चाल चलन या अनैतिक संबंध गुप्त रोग देगा। संतान सुख चाहते हैं तो चाल–चलन ठीक रखें। संतान की चिंता रहे ऐसी आशंका है। कारोबार में हानि और यात्रा में परेशानी या अपव्यय होगा। किसी को अपना भेद न बतायें, कारण आपका भेदी तबाह करेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काले–सफेद कंबल धर्म स्थान में देवें (संतान की लंबी आयु के लिए)।
2. काले–सफेद कंबल के टुकड़े में केतु के साथ बैठे ग्रह की चीज बांध कर शमशान में दबायें (जब

(1) सूर्य–गेहूँ, (2) चंद्र–चावल, (3) मंगल–दाल मसूर, (4) बुध–मूंग, (5) गुरू–चने की दाल, (6) शुक्र–चरी, (7) शनि–काली उड़द, (8) राहु–जौं, (9) केतु–काले–सफेद तिल।

3. कुत्ते को भोजन का हिस्सा देवें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- पीला रूमाल पास रखें।

वर्त्तमान आयु - 29
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	..	..	नेक
चंद्र	..	..	..	नेक
मंग	..	..	..	नेक
बुध	..	..	..	नेक
गुरु	..	हाँ	..	मन्दा
शुक्र	..	हाँ	..	नेक
शनि	..	..	..	नेक
राहु	..	हाँ	..	मन्दा
केतु	..	..	..	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	..	..	हाँ	..	..	..	हाँ	..	हाँ	..	हाँ

वर्ष कुंडली 2016 – 2017

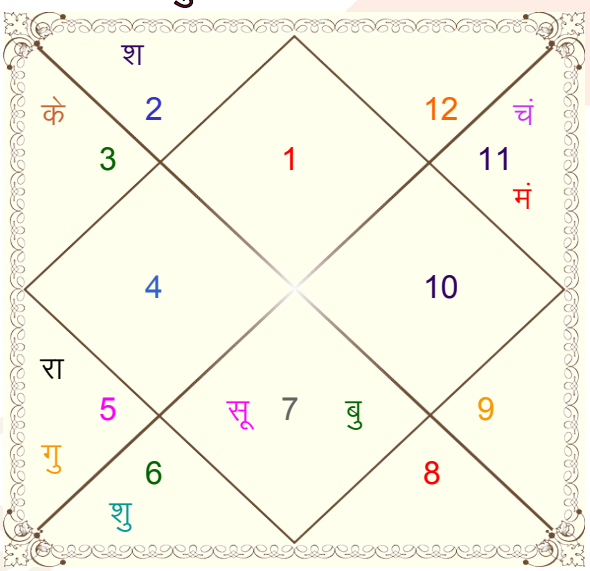

वर्ष चन्द्र कुंडली 2016 – 2017

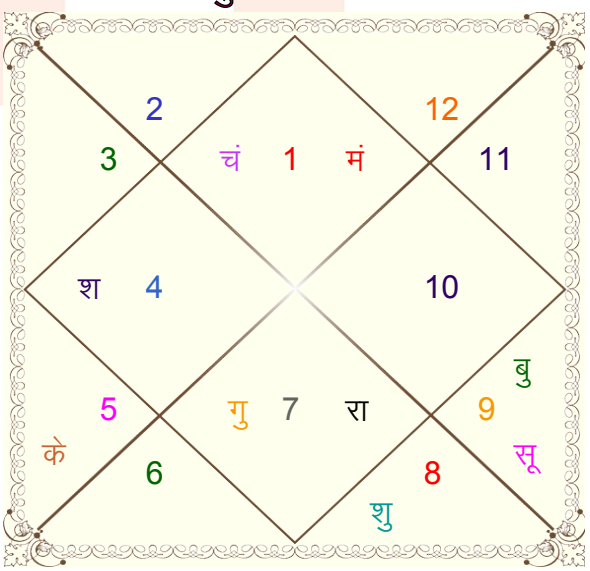

लाल किताब वर्षफल 2016–2017

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके माता–पिता की हालत में सुधार होगा आपकी गिनती एक सम्मानित व्यध्यिों में होगी। कारोबार और परिवार में तरक्की होगी, भागीदारी के कामों में लाभ मिलेगा। ज्योतिष या कर्मकांड में रूचि रहेगी। कष्ट के समय आप अपने परिवार में रहेगे जिससे आपके कष्टों का निवारण हो जाएगा।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अगर दुकानदारी या प्राइवेट नौकरी करते है तो मिजाज गर्म न रखें।
2. सरकारी अधिकारी हैं तो गर्म मिजाज रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से लाभ होगा, सुख के साधन मिलेगें, आपको स्त्रियों द्वारा सहयोग प्राप्त होगा, माता–संतान का सुख मिलेगा, कोर्ट, इंजीनियरिंग, डाक्टरी से संबंधित कामों से लाभ मिलेगा, कारोबार में बरकत होगी। रात्रि समय विद्या पढ़ने या रात्रि समय विद्या से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. विद्या पढ़ने में अरूचि न रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 11 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वभाव न्यायप्रिय रहेगा, अपनी किस्मत स्वयं अपने हाथों से बनाएगें, कारोबार में तरक्की होगी, जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा और इस वर्ष आपको सभी सुख–सुविधाएं मिलेंगी। पुत्र–पौत्र का सुख मिलेगा, आपको शत्रुओं से कोई भय नहीं रहेगा या शत्रु भी मित्र बन जायेंगे।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किसी पर भी भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 7 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष परिवार में सम्मान मिलेगा, विदेश यात्रा या विदेश से लाभ का योग है। स्त्रियों से सम्बन्धित कामों से या पत्नी से लाभ मिलेगा। कपड़े, डाक्टरी के कामों से अधिक लाभ मिल सकता हैं। आपकी कलम में तलवार से भी अधिक ताकत होगी। बेटी–बहन, बुआ–साली से लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बिना सींग वाली गाय या बकरी घर में न रखें।
2. हरी घास घर में न लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 5 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मुफ्त लंगर खाना या दान लेना हानिकारक है जो आपकी बुद्धि भ्रष्ट कर सकता है। गुरु–साधु से गाली–गलौज करना आपके लिये हानिकारक है। मांसाहारी होने से संतान को कष्ट होगा। आलस्य तरक्की में रुकावट बनेगा। नाव से नदी/समुद्र पार न जाए आशंका है आपका जीवन संकट में पड़ सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. साधू–महात्मा की सेवा करें।
2. धर्म मन्दिर की सफाई करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 6 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष कामपूर्त्ति के लिए स्त्री की प्रशंसा करेंगे और स्त्री की गुलामी भी करनी पड़ सकती है। धन का लाभ बहुत होगा। पुत्र संतान की बजाय कन्या संतान का सुख मिलने की आशंका है। जन्मदिन के बाद ध न वृद्धि भी होगी। मान–सम्मान बढ़ेगा और वाहन सुख प्राप्त हो सकता है।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. स्त्री जाति का अपमान न करें।
2. पत्नी नंगे पैर ज़मीन पर न चले।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष ईश्वर भक्ति में आपका विश्वास बढ़ेगा। पिता/ससुराल से धन–संपति का लाभ होगा। कोयला, चमड़ा, मशीनरी के कामों से लाभ होगा। मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अक्ल की बारीकी से उलझनों को सुलझा लेंगे। बने बनाये मकान का लाभ मिल सकता है। धन की कमी नहीं रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माथे पर सरसों का तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 5 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों में परेशानी, पत्नी से झगड़ा–तलाक या जुदाई तक हो सकती है जो आगे चल कर आपको कष्टकारी बनेगी। दूसरी पत्नी से संतान सुख नहीं मिलेगा इसलिये पत्नी से संबंध विच्छेद न करें। पहली संतान (लड़के) का सुख शक्की है, भाई अमीर निःसंतान या उसे संतान की चिंता रहेगी।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी का ठोस हाथी चांदी की प्लेट पर खड़ा करके घर में रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।
3. अपनी पत्नी से दो बार विवाह (फेरे) करें (पुत्र सुख के लिए)

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष दूसरों की सलाह लेना आपके लिये हानिकारक हैं। आवारा घूमना या भाई से दूर प्रदेश में जीवन व्यतीत करना ठीक नहीं, शरीर पर फोड़े–फुंसी की शिकायत भी हो सकती है। किसी के किये पेशाब पर पेशाब करना आप को गुप्तांग में रोग और शरीर कष्ट देगा या संतान सुख की चिंता रहे ऐसा भी संभव है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. कानों में शुद्ध सोने की ननतियां पहनें।
2. शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- शुद्ध चांदी का ठोस हाथी चांदी की प्लेट में रखकर घर में स्थापित करें।

वर्त्तमान आयु - 30
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	हाँ	..	मन्दा
चंद्र	..	हाँ	..	नेक
मंग	..	हाँ	..	नेक
बुध	..	हाँ	..	नेक
गुरु	..	..	..	मन्दा
शुक्र	..	हाँ	..	मन्दा
शनि	..	..	..	नेक
राहु	..	..	..	मन्दा
केतु	..	..	..	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	..	..	..	हाँ	..	..	..	..	..	हाँ	..	..

वर्ष कुंडली 2017 – 2018

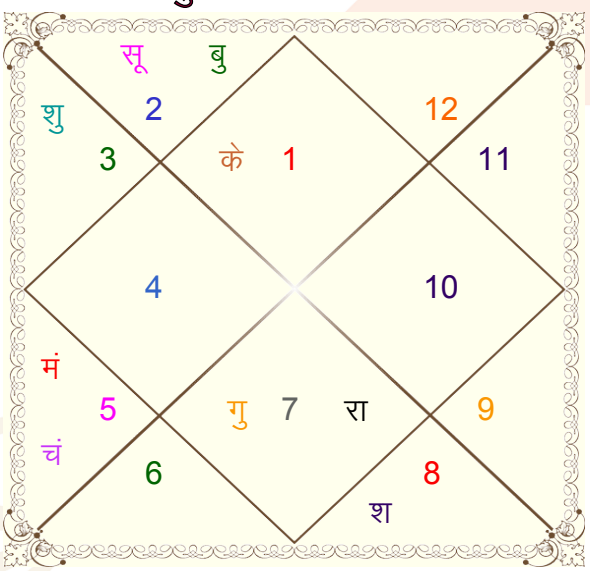

वर्ष चन्द्र कुंडली 2017 – 2018

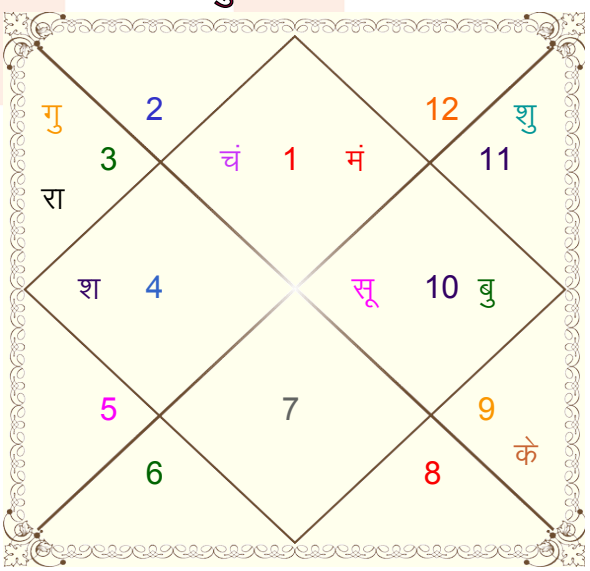

लाल किताब वर्षफल 2017–2018

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष किसी की अमानत को हड़प करने से आपका आने वाला समय खराब हो सकता है, किसी से दूध, चावल, चांदी आदि मुफ्त या दान न लेवें। चाल–चलन खराब या अनैतिक रखने से आप की अवनति हो सकती है। धन/जमीन/स्त्री के झगड़े मे न पड़ें इससे धन–मान की हानि हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. बादाम, नारियल या सरसों का तेल धर्म स्थान में देवें।
2. पैतृक मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 5 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार वालों को सोने–चांदी का लाभ होगा, विद्या का लाभ होगा, आप दूसरों के कष्ट अपने पर झेलेंगे, दूसरों पर परोपकार करेंगे, लड़ाई–झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे उस व्यक्ति की जीत होगी। आपकी बहुत प्रसिद्धि होगी और समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हर कार्य में किसी की सलाह जरूर लेवें।
2. पाप के कामों में अपना हस्तोप न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 5 में शुभ है। जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गृहस्थ/संतान का सुख मिलेगा, परिवार में उन्नति होगी, यात्रा बहुत होगी। इस जन्म दिन के बाद ध ान दिनों–दिन बढ़ता जाएगा, पिता–दादा की हैसियत भी बढ़ेगी, चाल–चलन आपको उम्दा रखना होगा, शत्रु को भी मित्र बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे और शत्रु आपका सहायक बन जाएगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।
2. शराब–बीयर न पिये, मांस–मछली का भोजन न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पिता–दादा से धन लाभ होगा, आपको ज्ञान की बातों में अधिक रुचि रहेगी, बातें करते–करते बात बदलना आप की आदत हो सकती है। अपने भाग्य को चमकाने के लिये आपको अधिक मेहनत भी करनी पड़ सकती है। इस वर्ष हाजिर जबावी की कला आप में विद्यमान रहेगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हरा रंग निषेध।
2. धागा–ताबीज, जल, भभूतियों से दूर रहें।
3. तोता, भेड़–बकरी न पाले।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष घर में मंदिर बना कर पूजा करना धन–परिवार के लिये अशुभ होगा। घर में मंदिर हानिकारक मगर दीवार पर तस्वीरें लगा कर पूजा–पाठ कर सकते हैं। घूमने–फिरने वाले साधू की संगत से भाग्य खराब हो जाएगा और जीवन में उतार–चढ़ाव देखना पड़ेगा। मामा को संतान की चिंता रहेगी। बुरे लोगों की संगति से बचे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध सोना और रत्तियां पीले कपड़े में बांध कर रखें।
2. आप विवाहित हैं तो स्त्री मायके से कुछ न कुछ सामान लावें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष राग–रंग में आपकी रूचि आपके लिये ठीक नहीं रहेगी। पत्नी का क्रोध बढ़ सकता है। खराब चाल–चलन सें हानि का भय और मान–सम्मान को धक्का लगेगा। संतान की चिंता या संतान को शरीर कष्ट भी भोगना पड़ सकता है। दूसरे के घर में भी आपका निवास हो सकता है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पत्नी या स्त्रियों की सेवा करें।
2. मंगल की चीजों का प्रयोग करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका मनमौजी स्वभाव रहेगा। एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से लाभ होगा। भाग–दौड़ के काम न करें। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। पुत्र संतान की खुशी मिले, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आपके मकान के साथ बंद गली हो उस मकान में आप रिहाइश नहीं रखेंगे तो लाभ होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अपने नाम पर मकान न खरीदें।
2. सांप न मारें।
3. मकान के मुख्य द्वार की दहलीज की पूजा करें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बिजली या पुलिस विभाग से संबंधित कामों में हानि का भय, ट्रांसपोर्ट का काम करने से हानि या आयु शक्की हो सकती है। साझेदारों से झगड़ा। कारोबार में उथल–पुथल भी हो सकती है। पत्नी को सिर दर्द का रोग हो सकता है। पत्नी से तनाव या पत्नी से जुदाई भी हो सकती है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नारियल का दान करें।
2. शुद्ध चांदी की दो ईंटे घर में कायम करें।
3. प्लास्टिक की डिब्बी में शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष तरक्की का योग है। मगर तबदीली का योग कम ही है। यात्रा के आदेश पत्र के बावजूद यात्रा न होगी या बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ेगा। पिता–गुरु की सेवा में रूचि रहेगी। परिवार में किसी स्त्री के संतान पैदा होने का योग हो तो उसे पुत्र लाभ हो सकता है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बकरी न पालें और बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिर के मकान में रिहाइश न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• नारियल या तेल या बादाम धर्म स्थान में देवे।

वर्त्तमान आयु - 31
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	..	..	नेक
चंद्र	..	..	..	नेक
मंग	..	..	..	नेक
बुध	..	..	..	मन्दा
गुरु	..	हाँ	..	मन्दा
शुक्र	..	..	..	मन्दा
शनि	..	..	..	नेक
राहु	..	हाँ	..	मन्दा
केतु	..	..	..	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	..	हाँ	..	हाँ	..	..	..	..	..	हाँ	..

वर्ष कुंडली 2018 – 2019

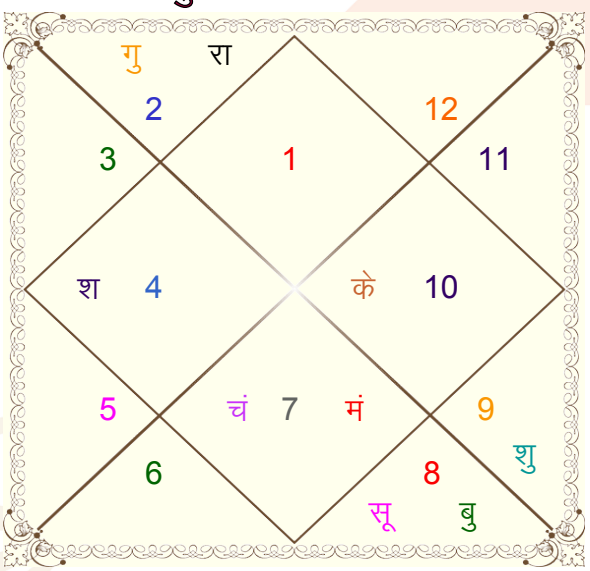

वर्ष चन्द्र कुंडली 2018 – 2019

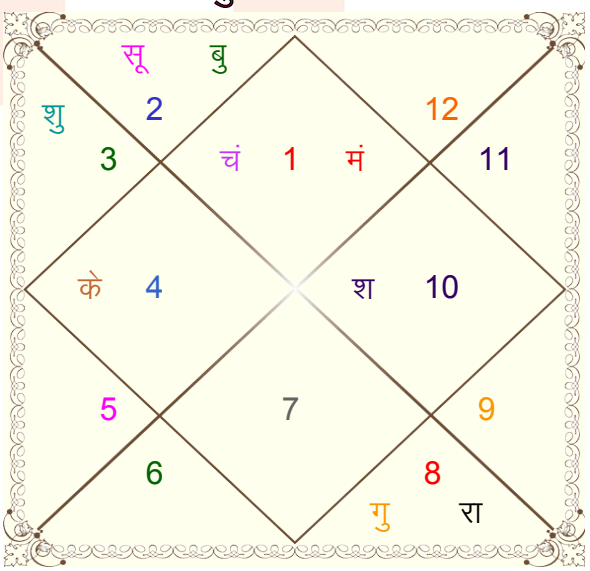

लाल किताब वर्षफल 2018–2019

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप मृत्यु शैय्या पर पड़े किसी व्यक्ति के पास जब तक बैठें रहेगे तब तक उसकी मृत्यु नहीं होगी। हर काम को जिम्मेदारी के साथ निभाने में प्रत्यनशील रहेंगे, स्वभाव साधु जैसा होगा। आप अपने लिये किये गये कार्यों को लोगों को समर्पित करेंगे। सच्चाई से अधिक तरक्की करेंगे।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. रसोई को अपवित्र न रखें।
2. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके माता–पिता को अधिक धन लाभ होगा। आपको किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। ज्योतिष विद्या, योगाभ्यास तथा शायरी में आपका शौक रहेगा। जल से संबंधित कामों से लाभ होगा। नये विषयों की खोज भी कर सकते हैं, विदेश यात्रा या विदेश से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. दूध–पानी का व्यापार न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार की तरक्की और वृद्धि होगी। रोते हुए व्यक्ति को हंसाना और उसको ढांढस देकर मदद करना अपना कर्त्तव्य समझेंगे, इन्साफ पसन्द, ज्योतिष विद्या में रुचि रहेगी, विष्णु भगवान की तरह संसार के पालक सिद्ध हो सकते हैं। जज, सरपंच, नेता जैसे आदि पद का अधिकार भी मिल सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें और अनैतिक सम्बन्ध न रखें।
2. घर में बेलदार पौधे या बेलें न लगावें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जादू–टोना आदि विद्याओं में रुचि या इनका प्रभाव रहेगा जो आपको लाभ न देगी। अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से आपको शरीर कष्ट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। गृहस्थ में कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आलस्य आपके पतन का कारण बनेगा। खराब चाल–चलन और अनैतिक संबंध हार और हानि देंगे।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. इस वर्ष विवाह हो तो तांबे का बर्तन (गागर) मूंग साबित भरकर संकल्प करके पति/पत्नी दोनों जल प्रवाह करें। यदि विवाह हो चुका हो तो भी यह उपाय करना लाभ देगा।
3. गुदा पर सुरमा लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके पिता को कष्ट, सर्राफी/जौहरी के कामों अर्थात् अधिक लागत के कामों से हानि मिलेगी और मिधे के कामों अर्थात् कम लागत के कामों से अधिक लाभ होगा। दूसरों के झगड़े में पड़ कर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, सावधान रहें। आपमें कुछ बेरहमीपन भी आ सकता है जिसके कारण आप दुःखी रहेंगे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान में कच्चा हिस्सा जरुर रखें या फूलों वाले गमले लगावें।
2. केसर या हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 9 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष एल्युमिनियम के बर्तनों का प्रयोग करेंगे तो वह आपको हानिकारक हो सकते है। मादक द्रव्यों और चीजों का कुसंगति के कारण प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं इससे बच कर रहें। स्त्री, धन, संतान पर समय मध्यम रहेगा। चाल–चलन ठीक रखें कारण गुप्त रोग का भय है। भाई–बंधुओं से सावधान रहें।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान बनाएं तो नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष घर से दूर विद्या अध्ययन करने या कारोबार करने से लाभ होगा। विदेश संबंधित काम या विदेश यात्रा भी हो सकती है। नौकरी–व्यापार में बदली, चाल–चलन ठीक रखेंगे। खराब स्वास्थ्य के समय अल्कोहल से लाभ होगा मगर ठीक स्वास्थ्य के समय अल्कोहल का प्रयोग हानिकारक है।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब न पियें, मछली न खावें
2. काला कपड़ा न पहनें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 2 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जुआ–सघ आदि का व्यापार हानिकारक है। ससुराल और साले का विरोध किया तो हानि होगी, धर्म स्थान में आपके ऊपर चोरी आदि लांछन लग सकता है। फौजदारी मुकददमे में हानि का भय, मुफ्त अन्न या दान का अन्न न खायें इससे जीवन नष्ट होगा। चाल–चलन खराब हो तो दंड का भय रहेगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चांदी की ठोस गोली सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।
2. माथे पर केसर/हल्दी का तिलक करें या शुद्ध सोना पहनें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मिधि के कामों से सोना बनेगा, शहर/गोव/देश/विश्व प्रसिद्ध हो सकते हैं। समाज में आपकी ख्याति बढ़ेगी, धन का अभाव नहीं रहेगा। आपका स्वभाव कुछ शक्की बन सकता है। संतान सुख का योग भी इस वर्ष है मगर माता को कष्ट हो सकता है सास/माता की सेहत खराब या उनसे जुदाई हो सकती है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन खराब या अनैतिक संबंध न रखें।
2. कुत्तों से नफरत न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• तांबे की बर्तन मूँग भरकर जल प्रवाह करें ।

वर्त्तमान आयु - 32
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	..	..	मन्दा
चंद्र	..	हाँ	..	मन्दा
मंग	..	हाँ	..	नेक
बुध	..	..	..	नेक
गुरु	..	..	..	मन्दा
शुक्र	..	हाँ	..	मन्दा
शनि	..	..	..	मन्दा
राहु	..	..	..	मन्दा
केतु	..	..	..	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	..	हाँ	..	..	..	हाँ	हाँ	..	..	..	..

वर्ष कुंडली 2019 – 2020

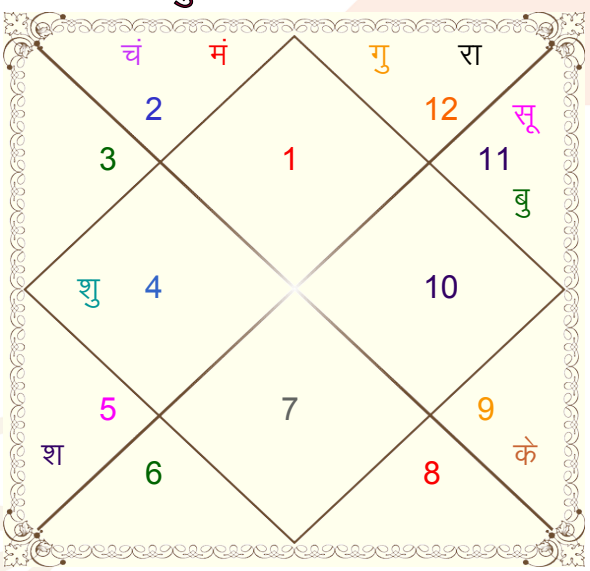

वर्ष चन्द्र कुंडली 2019 – 2020

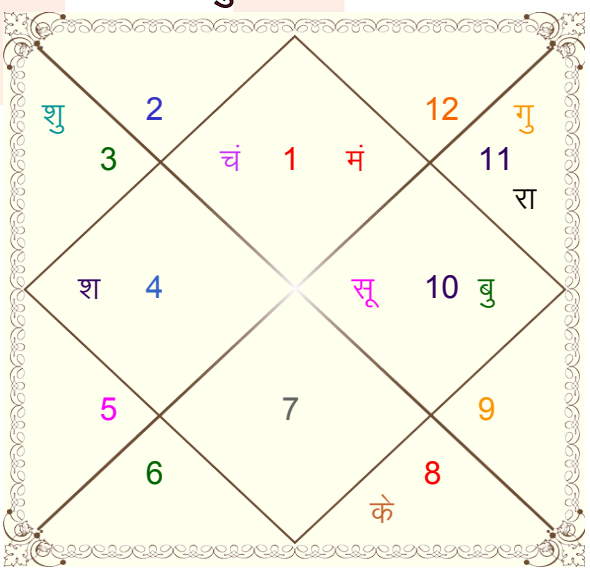

लाल किताब वर्षफल 2019–2020

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 11 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष सुस्ती और लापरवाही से जीवन में तरक्की के कई अवसर खो सकते हैं। मांस–शराब के इस्तेमाल करना संतान को कष्ट होगा या संतान सुख की चिंता रहेगी। दूसरे लोगों को गाली देना, झूठी गवाही देना, लड़ाई–झगड़ा करना आपके लिये ठीक नहीं है इन बातों से बचें। सरकारी विभाग द्वारा दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. झूठ न बोलें, जूठा भोजन न खावें और न खिलावें।
2. मांस–मछली न खावें और शराब आदि न पिये मादक चीजों का सेवन न करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 2 में है जिसकी वजह से आपको बूढ़ी स्त्री या माता से झगड़ा करना आपकी तरक्की में रूकावट होगा, मांस–शराब का सेवन संतान विद्या या संतान की चिंता हो सकती है। आँखों में रोग का भय रहेगा, बहन–बेटी की चिंता रहेगी। जमीन–जायदाद के लाभ में रूकावट का कारण आपके अपने भाई–बंधु होंगे फिर भी उनसे झगड़ा न करें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. माता या माता समान स्त्री के पैर छूकर आशीर्वाद लेवें।
2. माता से दूरी के समय माता से चावल–चांदी सफेद कपड़े में बांध कर पास रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष आपके परिवार में अन्न–धन की कोई कमी नहीं रहेगी। आप भाई–बंधुओं के दुःख में हर समय साथ देगें, आप नेक और इरादे के पक्के रहेंगे जो बात ठान ली वह पूरी कर दिखायेंगे। अगर बड़ा भाई जीवित हो तो उससे अधिक धन, मान आपको मिलेगा। परिवार के लोगों से भी लाभ मिलेगा।

मंगल की शुभता हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़ाई–झगड़ों से दूर रहें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा में कमी न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष हर बुधवार का दिन और दोपहर (3 से 5 बजे) का समय शुभ रहेगा। आपका भाग्योदय होगा या तरक्की होगी, आलस्य से दूर रहें। आप अपनी बुद्धि के द्वारा अधिक लाभ अर्जित करेंगे। आपकी मान–सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पैतृक सम्पति का लाभ मिलेगा। आपकी मित्रता से सबको लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मनी प्लांट, रबर प्लांट आदि चौड़े पत्तों के पेड़–पौधे घर पर न लगावें।
2. पीतल के खाली बर्तन बन्द या उल्टे न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 12 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष किसी से धोखा–फरेब कर सकते हैं जो आपके लिये आगे आने वाले समय के लिए ठीक नहीं रहेगा, झूठी गवाही देना और गबन करना भी आपके लिये हितकर नहीं है। धन का अपव्यय या धन बुरे कामों में बर्बाद हो सकता है। आप समय को व्यर्थ न गवां कर हित और शुभ कामों में लगावें।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुरु/साधू की सेवा करें।
2. पीपल के वृक्ष को जल से सीचें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 4 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष पत्नी के अतिरिक्त दूसरी स्त्री से संबंध रह सकता है जो आपके लिये हानिकारक है और संतान के लिये चिंताजनक। चाल–चलन चाल–चलन पर धब्बा लगेगा, चाल–चलन संभालना एक जरूर चीज है। माता, पत्नी का झगड़ा होगा। कारोबार में हानि, मानसिक तनाव रहेगा। मामा को कष्ट हो सकता है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर कुएं में डाले।
2. चार आडू की गिटकों में सुरमा भर कर वीराने में दबाये।
3. अपनी पत्नी से दो बार विवाह (फेरे) करें। (पुत्र सुख के लिए)

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 5 मे है जिसकी वजह से इस वर्ष आप भाई–बंधुओं के साथ लड़ाई–झगड़ा या धोखा न करें। मांस–मदिरा का सेवन करना आपको हार और हानि देगा। परिवार में समस्याएं बढ़ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें विशेष कर पेट/गुर्दे में पथरी का। आपके नाम पर अगर मकान बनेगा तो पुत्र सुख में बाधा आ सकती है।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध सोना या केसर पास रखें।
2. सांप को दूध पिलायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 12 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष बिना सोचे समझे या शेख चिल्ली की तरह कार्य करेंगे तो आपको हानि होगी, दीवानी या फौजदारी मुकददमें में न उलझें। रात्रि समय नींद का सुख कम मिलेगा। बिना सोचे समझे कोई कार्य न करें। परिवार का अतिरिघ बोझ आप पर हो सकता है। धन का व्यय परिवार की बेहतरी या शुभ कामों पर होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. घर के आखिर में अंधेरी कोठरी बनावें।
2. शुद्ध चांदी का ठोस हाथी (चांदी की प्लेट पर खड़ा करके) घर में रखें।
3. शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा में सूराख करके सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष प्रगति मिले ऐसी संभावना है। तबदीली का चांस कम है। यात्रा से लाभ होगा। प्रदेश में भी कुछ समय व्यतीत हो सकता है। अपनी संतान के साथ या उसकी सलाह से कोई काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ होगा। आप जिसको पुत्र होने का आशीर्वाद देंगे उसके घर पुत्र पैदा होगा।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चोर–डाकू का साथ न रखें।
2. कुत्ते को चोट न मारे।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- 43 दिन रेत का तकिया बना कर रात को सिर के नीचे रख कर सोये।

वर्त्तमान आयु - 33
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	हाँ	..	नेक
चंद्र	..	..	..	मन्दा
मंग	..	..	..	नेक
बुध	..	हाँ	..	नेक
गुरु	..	..	..	मन्दा
शुक्र	..	..	..	मन्दा
शनि	..	हाँ	..	नेक
राहु	..	..	..	मन्दा
केतु	..	..	..	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	..	..	हाँ	हाँ	हाँ	..	..	..	हाँ	..	..	..

वर्ष कुंडली 2020 – 2021

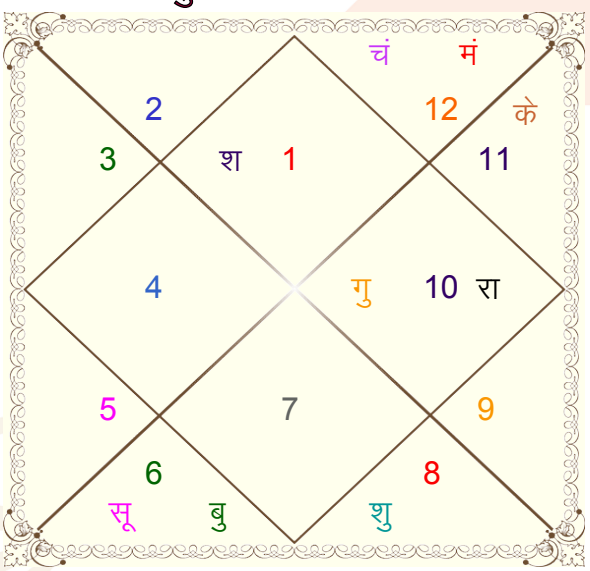

वर्ष चन्द्र कुंडली 2020 – 2021

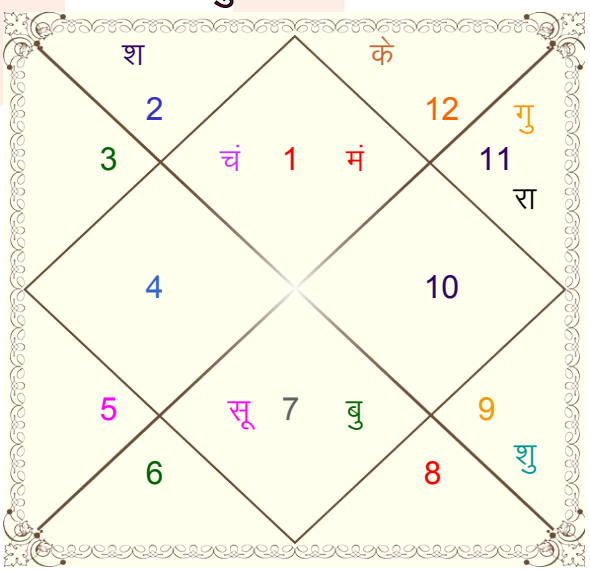

लाल किताब वर्षफल 2020–2021

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 6 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप भाग्य पर भरोसा करेंगे, शत्रु दबे रहेंगे। मुकददमें में जीत होगी, संतान जन्म से भाग्योदय होगा। ननिहाल से लाभ होगा, पिता के रूतबे में कुछ उथल–पुथल का भय रहेगा। परस्त्री के साथ आपके संबंध बन सकते हैं मगर चाल–चलन ठीक रखें। सरकारी विभाग से लाभ होगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बेटी–बहन, साली–बुआ से झगड़ा न करें।
2. कर्ज और दान मुफ्त का माल न लेवें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके सभी काम तरस–तरस कर बनेंगे, विद्या संबंधी कामों में रूकावट हो सकती है, आपकी बात बदलने की आदत बनेगी, व्यतीत समय की बातें लोगों को सुना कर अपनी बढ़ाई करेंगे। 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना' जैसी कहावत आप पर चरितार्थ हो सकती है। मुकददमें में हार का भय रहेगा।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर में रखें या आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में कायम करें।
2. 16 लीटर वर्षा का पानी कनस्तर में भरकर 4 शुद्ध चांदी के चौरस टुकड़े डाल कर रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी समाज में आवाज बुलन्द रहेगी, शत्रु मुंह की मार खायेंगे, मुसीबतें टल जाएगी, गुरु निर्धन–ब्राघ्ण की सेवा में तत्पर रहेंगे, आप अपनी मनमर्जी के अनुसार कार्य करेंगे, किसी से दब कर नहीं रहेंगे। मीठा–भोजन या मिठाई आपको अधिक पसन्द रहेगी। मुकददमे में जीत या सरकारी विभाग से लाभ से लाभ हो सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।
2. लोग आपका नमक खाकर नमक–हरामी करेंगे, सतर्क रहे।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 6 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिमागी कार्यों से लाभ मिलेगा, विदेश भ्रमण की इच्छा भी रहेगी, समुद्री यात्रा से लाभ मिलेगा, कृषि से संबंधित कार्यों से लाभ मिलेगा। वक्तव्य देना, एकाउटेंट/चार्टर्ड एकाउंटेंट, लेखन, प्रिंटिंग से संबंधित कामों से लाभ होगा। मुंह से निकली बात शत प्रतिशत सही हो सकती है। ननिहाल से लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़की/बहन का विवाह अपने रिहाइशी मकान की उत्तर दिशा में न करें।
2. सेवक/नौकरों पर हमेशा नज़र रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से अधिक लाभ नहीं होगा। ख्वाबों के महल बनाना आपकी आदत बनेगी। ख्वाबी महल न बना कर आप समय का सदुपयोग करें। साधू को कष्ट दिया, पीपल का वृक्ष उजाड़ा से तो आपको हानि का मुंह देखना पड़ेगा। संतान की चिंता, पिता–दादा का स्वास्थ्य भी खराब रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुरु/साधू की सेवा करें या पीपल के वृक्ष को पानी से सींचें (रविवार को छोड़कर) ।
2. तांबे का पैसा 43 दिन लगातार बहते पानी में डालें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गुप्त रोग का भय है। चाल–चलन ठीक रखें वरना पत्नी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है। पत्नी से झगड़ा करना आपके लिये हार और हानि का कारण होगा। पत्नी की हर बात में हां में हां जरूर मिलायें मगर करें अपने मन की। आपके द्वारा दी गई जमानत आपको भरनी पड़ सकती है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालें।
2. धर्म स्थान में सिर झुकाएं।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कैमिस्ट या डाक्टर, इंजीनियरिंग, से संबंधित कामों से लाभ हो सकता है। लोहा–लकड़ी के काम भी लाभ देंगे, माता–पिता के पास धन की बढ़ोत्तरी होगी। आपकी जायदाद बढ़ने की आशा है। सरकारी विभाग से लाभ मिलेगा और उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध बनेंगे।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. परिवार में कोई खुशी का समय हो तो बाजे न बजवायें।
2. शराब आदि पीना, मांस–मछली खाने और इश्कबाजी से दूर रहें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मौके के ऑफिसर से झगड़ा नहीं करना चाहिए। परिवार वालों से नेक संबंध बनाये रखने में आपका भला है। परिवार से अलग रहना हानि देगा। पिता–ससुर को कष्ट की आशंका है। कारोबार में परेशानी का योग है आप अपनी संपत्ति बेच सकते हैं। बिना कारण जुर्माना/दंड का भय रहेगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती टोपी पहनें–पगड़ी बांधे या स्कार्फ बांधें।
2. अंधे व्यक्तियों को स्वादिष्ट भोजन खिलायें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष कभी हिम्मत नहीं हारेगें। भाग्य आपका साथ देगा। धन–दौलत का अधिक लाभ होगा। आपको पुत्र संतान का सुख मिलेगा तो माता/सास को शारीरिक कष्ट हो सकता है खासकर आंखों में। चाल–चलन ठीक रखें वरना शारीरिक कमजोरी हो सकती है। आने वाले समय की अधिक सोच रहेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय कोई पीछे से आवाज दे तो काम पर न जायें क्योकि आगे काम नहीं बनेगा।
2. व्यतीत समय की बातें करके को याद कर लोगों को न सुनायें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- गुरु–साधू की सेवा करें या पीपल का वृक्ष लगावे।

लाल किताब वर्षफल 2021-2022

वर्त्तमान आयु - 34
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	हाँ	..	नेक
चंद्र	..	..	..	मन्दा
मंग	..	..	..	नेक
बुध	..	हाँ	..	नेक
गुरु	..	हाँ	..	मन्दा
शुक्र	..	..	..	नेक
शनि	..	..	..	नेक
राहु	..	हाँ	..	मन्दा
केतु	..	..	हाँ	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	..	..	हाँ	..	हाँ	हाँ	..	..	..	..	..	..

वर्ष कुंडली 2021 – 2022

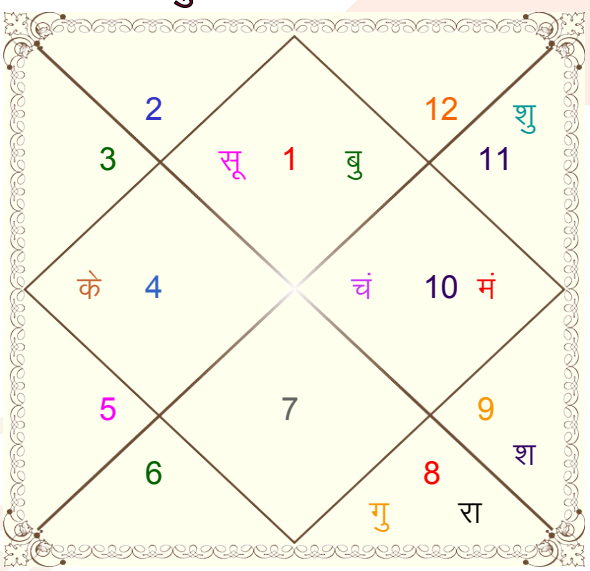

वर्ष चन्द्र कुंडली 2021 – 2022

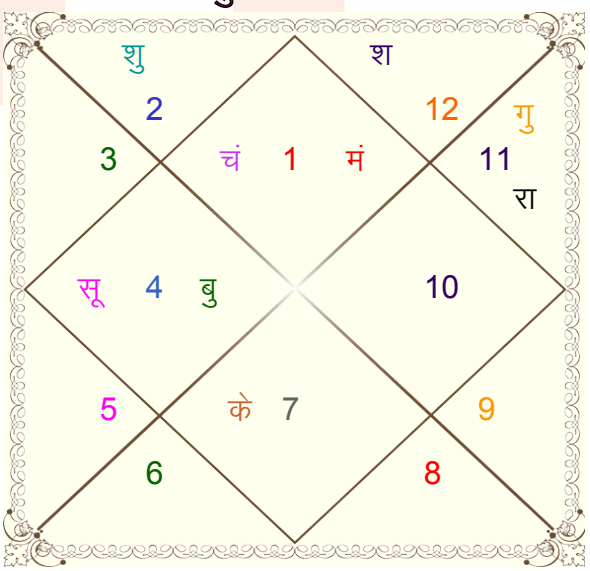

लाल किताब वर्षफल 2021–2022

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका तेज व प्रताप बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, परोपकार की भावना रहेगी, आप दृढ़ निश्चयी, नशों से दूर रहेंगे। अधिक मेहनत करके आप अपना भाग्य चमकाएंगे। सरकारी विभाग में रूके काम बनेंगे। सरकारी अधिकारियों से अच्छे संबंध रहेंगे और उनसे लाभ मिलेगा।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब आदि न पियें, मांस–मछली का भोजन न करें।
2. सूर्योदय से सूर्यास्त तक स्त्री से शारीरिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 10 में है जिसकी वजह से इस वर्ष खराब स्वास्थ्य के समय या वैसे ही रात के समय लिक्वड दवाई का प्रयोग आपके लिए हानिकारक है। विद्या संबंधी कामों में भी परेशानी आ सकती है। चोरों–जुआरियों, शराबी लोगों द्वारा आपका नुकसान होगा। किसी स्त्री या प्रेमिका द्वारा गलत सलाह से आपका धन–सम्मान नष्ट हो सकता है, सतर्क रहें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दूध को फाड़ कर उसका पानी पीयें अर्थात पनीर का पानी पियें (स्वास्थ्य खराब के समय)
2. 10 दिन सुबह नाश्ते में कच्चा पनीर खावें।
3. रात्रि समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दूध न पिये।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 10 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप की गिनती उच्च/प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी। आपका मान–सम्मान बढ़ेगा। कोई सरकारी विभाग या पुलिस/सेना विभाग में कार्यरत है तो तरक्की मिलेगी नौकरी व्यापार में अधिक धन लाभ होगा। आप राजसी समय व्यतीत करेंगे। अच्छे या बुरे तरीके से आप धन कमाएंगे, जायदाद और वाहन का सुख होगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सोना न बेचे न गिरवी रखें।
2. दूध उबाल कर रसोई में गैस चूल्हे/ अंगीठी /चूल्हे आदि पर गिर कर न जले इसका विशेष ध्यान रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विदेश यात्रा या विदेश से सम्बन्धित कामों से लाभ हो सकता है। आपके मुंह से निकली हुई बात में दम होगा, आप दूसरों की परवाह नहीं करेंगे। मधुर भाषा बोलेंगे, कल्पनाशील विचार होंगे। आप पर दूसरे लोगों का प्रभाव रहेगा। आप परिवार के झगड़ों में सुलह करने में भूमिका निभाएंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अण्डा–पेस्ट्री आदि अण्डे से बनी चीजें न खावें।
2. शराब–बीयर न पियें, मांस–मछली का भोजन न करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आप अफवाहों का शिकार हो सकते हैं, पेशाब का रोग होने की संभावना है। आपको इस समय आलस्य त्याग कर भाग–दौड़ से अपने कामों को करना चाहिए और कोई ऐसा काम न करें जो आगे आने वाले समय में आपके लिए मुसीबत का कारण बने। आपका मन उदासी भरा भी रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।
2. दही, आलू, देशी घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कन्या संतान का सुख मिल सकता है। आप अकारण पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आपमें अच्छे गुण बढ गे मगर आपकी गुप्त कार्य करने की आदत हो जाएगी। विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे, ससुराल पा के लोग सहायक होंगे। बहन–साली से भी लाभ मिलेगा स्त्री आपके कार्यों में साथ निभायेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माता/पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी–व्यापार में बार–बार बदला–बदली न करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 9 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मन

में परोपकार की भावना रहेगी, भाई–बंधुओं का सहयोग मिलेगा। कर्ज का बोझ आप में नहीं रहेगा। पैसे के प्रति आप की दौड़ नहीं रहेगी। पत्नी के नाम पर काम शुरू करने से लाभ होगा, मकान–वाहन का सुख मिलेगा। तीसरा रिहाइशी मकान न बनावें वरना स्वास्थ्य को खतरा होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न रखें।
2. घर की छत पर ईंधन–चौगाठ आदि न रखें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 8 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष अंगहीन, नि :संतान, काने, गंजे व्यधि से दूर रहें। जन्म दिन के बाद आठवें मास से उलझनें बढ़ सकती हैं। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर–नीचे होता रहेगा, बिजली विभाग, जंगल विभाग, पुलिस विभाग से संबंधित कामों में परेशानी या धन और समय नाश हो सकता है। बंधन और कैद में न रहेंगे।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 चौरस सिक्के (औफदप) के टुकड़े जल प्रवाह करें।
3. जिस दिन इस वर्ष का 8वां मास शुरू हो उस दिन 43–43 बादाम मंदिर में ले जाकर वहां रखें, उसमें से 43 बादाम उठा कर घर पर लाकर सफेद थैली में रख लें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 4 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष रीड़ की हड्डी या जोड़ों का दर्द, शुगर/पेशाब का रोग हो सकता है। माता की चिंता हो सकती है या माता को कष्ट हो सकता है। ध्दय रोग के प्रति आलस्य न बरतें। पुत्र संतान के सुख की चिंता रहेगी। कुल पुरोहित से संबंध ठीक रखे तो पुत्र चिंता दूर होगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। यात्रा में रूकावट आयेगी या यात्रा में हानि हो सकती है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चने की दाल और केसर धर्म स्थान में देवें।
2. कुल पुरोहित को धन वस्त्र आदि देकर आशीर्वाद प्राप्त करें। अगर कुल पुरोहित न हो तो 4 किलो चने की दाल महीने दो महीने में धर्म स्थान में देवें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• सिक्के के (औफदप) 8 पीस चौरस जल प्रवाह करें या चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।

लाल किताब वर्षफल 2022-2023

वर्त्तमान आयु - 35
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	हाँ	..	नेक
चंद्र	..	हाँ	..	मन्दा
मंग	..	हाँ	..	मन्दा
बुध	..	हाँ	..	नेक
गुरु	..	हाँ	..	मन्दा
शुक्र	..	हाँ	..	नेक
शनि	..	हाँ	..	नेक
राहु	..	हाँ	..	मन्दा
केतु	..	हाँ	..	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..

वर्ष कुंडली 2022 – 2023

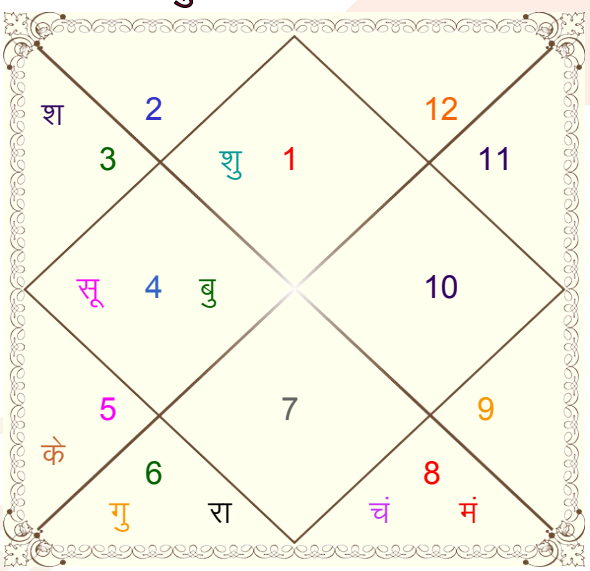

वर्ष चन्द्र कुंडली 2022 – 2023

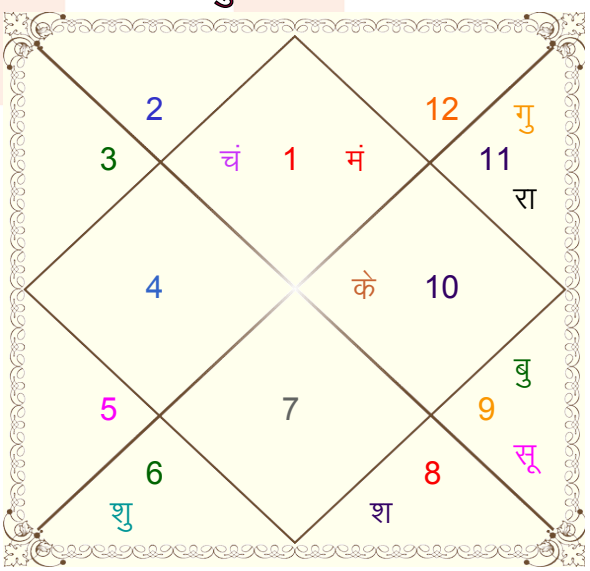

लाल किताब वर्षफल 2022–2023

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके धन का उपयोग दूसरे लोग करेंगे मगर आप उनसे लाभ उठायेंगे। परिवार में नये कार्य शुरू हो सकते हैं जो लाभदायक रहेंगे। वस्त्रों के काम से लाभ मिलेगा, रात्रि समय किये कार्यों से अधिक लाभ मिलेगा, सरकारी विभाग या समुद्र की यात्रा से भी लाभ मिलेगा। माता/सास से झगड़ा न करें।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चोरी न करें बल्कि चोरी की सोच मन में न लायें।
2. किसी भी स्त्री से झगड़ा न करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता–पिता का सुख कम मिलेगा। जौहरी–जुएं के कामों में हानि होगी। ननिहाल को कष्ट या उनसे झगड़ा होगा। मन की शद्धि क्षीण, विद्या में रुकावट या माता का सुख मिले, घर से दूर भी रहना पड़ सकता है। सर्दी–जुकाम और पानी से कष्ट का भय, ध्दय रोग का भय रहेगा। बुजुर्गों को सांस–दमा रोग की आशंका है।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मीठा भोजन या केसर–दाल चना या गुड़–गंदम धर्म स्थान में देवें।
2. अमावस्या के दिन दूध–चावल धर्म स्थान में देवें।
3. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको किसी विधवा स्त्री से झगड़ा नहीं करना चाहिये। वैवाहिक समस्याएं या परिवार में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। छोटे भाई अगर हों तो उस के लिये समय ठीक नहीं। आपकी जुबान से निकला अपशब्द लड़ाई–झगड़े का कारण होगा। आपको गुस्सा करना नुकसानदेह है, समय धैर्य से निकालें।

मंगल की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री को उपहार देकर चरण स्पर्श कर आर्शीवाद लेवें।
2. तन्दूर में मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलायें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष धन लाभ, परिवार में सभी सुखी और सुख के साधन मिलेंगे। कुल मिला कर राजयोग का समय है, विदेश यात्रा या विदेश से लाभ प्राप्त हो ऐसा योग है। बहन–बेटी, बुआ–साली से भी लाभ हो सकता है। माता से धन–जायदाद का लाभ होगा मगर मातृ सुख में कमी की आंशका रहेगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बेटी–बहन, बुआ–साली से झगड़ा न करें।
2. विधवा स्त्री से सम्बन्ध न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मामा की चिंता रहेगी, किसी से भी कोई चीज मांगने पर भी न मिलेगी, आवारा घूमने की आदत आपको हर जगह तिरस्कृत करेगी। मामा/ताऊ/चाचा से झगड़ा आपको हानि देगा। कर्ज लेना, दान/भिा मांगना, आने वाले समय को खराब कर सकता है। शत्रु पैदा होंगे मगर शत्रु अपने–आप मरते रहेंगे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म मन्दिर के पुजारी को वस्त्र दान देवे।
2. शुद्ध सोना, केसर, चना दाल आदि पीली चीज़ें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, सुंदर बनना, संवराना आपकी आदत बन जायेगी, आशिकाना मिजाज भी हो सकता है। अपनी आयु के लोगों में आप प्रधान बन सकते हैं। धार्मिक होते हुए भी आप में इश्क की हवस रहेगी। उत्तम भवन व वाहन का सुख प्राप्त हो सकता है। लोगों से मार्ग दर्शन लेंगे।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन खराब न करें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. धर्म–कर्म में रूचि रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके

हाथों से खर्च अधिक होगा या धन की कमी रहेगी। आप सबकी मदद करेंगे मगर लोग आपका कार्य बिगाड़ सकते हैं। लोहा, मशीनरी से संबंधित कार्यों से लाभ होगा। आप साहसपूर्ण कार्य करेंगे जिसके कारण आपको जोखिम भी उठाना पड़ सकता है।

शनि की शुभता बढ़ाने निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मछली का शिकार न करें, मछली न खायें। शराब न पिये।
2. कीकर या बेरी का वृक्ष घर में न लगायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष शस्त्र भय है, बिना लाइसेंस का हथियार रखने से आपको दण्ड/जुर्माने का भय है। चाचा से झगड़ा करने पर आपको हानि होगी। निम्न स्तर के लोगों के साथ मित्रता से हानि होगी। आप पर चोरी का लांछन भी लग सकता है। साहूकारी करना या लिखा–पढ़ी के बिना किये कार्यों से लाभ न होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते को भोजन का हिस्सा खिलायें।
2. 6 सिक्के (औफदप) की गोलियां पास रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष गुरु भद्दि में रूचि रहेगी। चाल–चलन ठीक रहेगा। धर्म–ईमान की स्थिति शुभ होने के कारण संतान का सुख मिलेगा। पुत्र के द्वारा आपका भाग्योदय होगा और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में किसी स्त्री के संतान पैदा होने का योग है तो पुत्र लाभ होगा। यात्रा से तरक्की होगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बुरे चलन के लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक/ट्रंक/अलमारी को हमेशा ताला न लगा रहें। ताले को कभी–कभी खोलते रहें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- 8 दिन नाश्ते में पनीर खावे या पनीर का बचा शेष पानी पिये।

वर्त्तमान आयु - 36
वर्त्तमान दशा – मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक / मन्दा
सूर्य	..	हाँ	..	नेक
चंद्र	..	..	..	नेक
मंग	..	..	..	नेक
बुध	..	हाँ	..	मन्दा
गुरु	..	..	..	मन्दा
शुक्र	..	हाँ	..	नेक
शनि	..	..	हाँ	नेक
राहु	..	..	..	मन्दा
केतु	..	..	..	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	..	..	..	..	हाँ	हाँ	..	..	..	..	..	..

वर्ष कुंडली 2023 – 2024

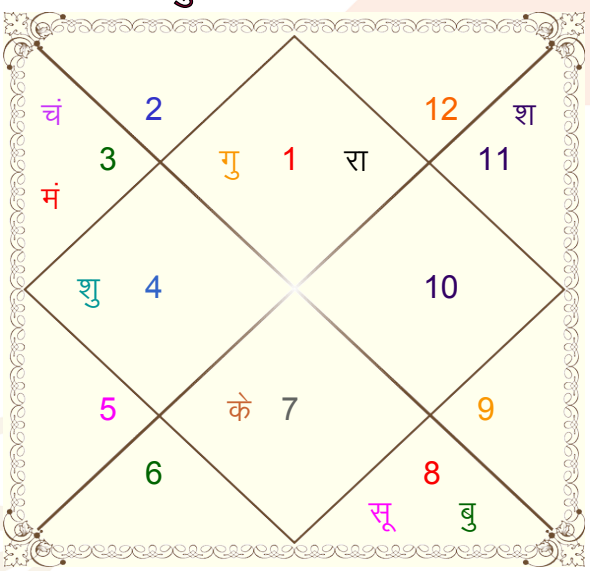

वर्ष चन्द्र कुंडली 2023 – 2024

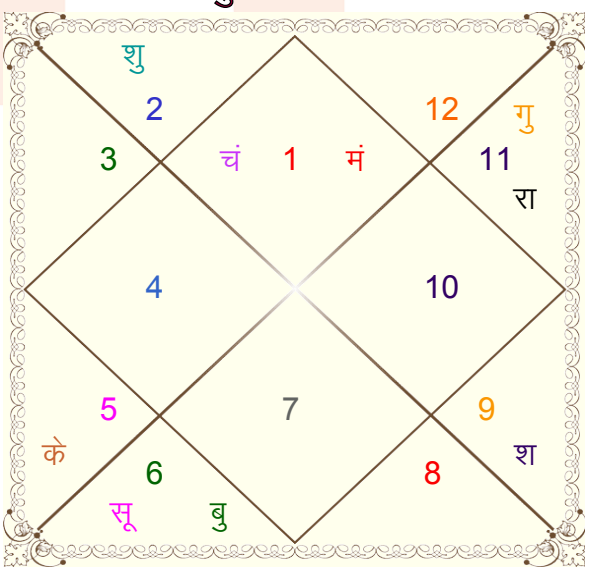

लाल किताब वर्षफल 2023–2024

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप मृत्यु शैय्या पर पड़े किसी व्यक्ति के पास जब तक बैठें रहेगे तब तक उसकी मृत्यु नहीं होगी। हर काम को जिम्मेदारी के साथ निभाने में प्रत्यनशील रहेंगे, स्वभाव साधु जैसा होगा। आप अपने लिये किये गये कार्यों को लोगों को समर्पित करेंगे। सच्चाई से अधिक तरक्की करेंगे।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. रसोई को अपवित्र न रखें।
2. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 3 शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चरित्र सुधरेगा और पराक्रम बढ़ेगा, चोरी से बचाव होगा। विद्या अच्छी रहेगी। 3, 6, 8, 12वां मास अधिक लाभदायक होगा, कुदरत खुद आपकी किस्मत बनाने में सहायक होगी, गरीबों से आपकी हमदर्दी रहेगी, किसी अंतर्राष्ट्रीय खेल में आपकी रूचि रहेगी या खुद भी उस खेल में हिस्सा ले सकते हैं।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बहन–भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों के लिये मिला सामान हड़प न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष दूसरों की सहायता कर के प्रसन्नता प्राप्त होगी मगर जरूरी नहीं कि दूसरों की सहायता के बदले में आपको सम्मान मिलेगा, आपको कसरत करने या जिम आदि जाने का शौक रहेगा, मुकाबले की विद्या (प्रतियोगी परीक्षा) में आपकी जीत होगी, नर्म स्वभाव रखेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। ध न–परिवार/संतान का सुख मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पेट का विशेष ध्यान रखें।
2. हाथी दांत न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जादू–टोना आदि विद्याओं में रुचि या इनका प्रभाव रहेगा जो आपको लाभ न देगी। अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से आपको शरीर कष्ट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। गृहस्थ में कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आलस्य आपके पतन का कारण बनेगा। खराब चाल–चलन और अनैतिक संबंध हार और हानि देंगे।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. इस वर्ष विवाह हो तो तांबे का बर्तन (गागर) मूंग साबित भरकर संकल्प करके पति/पत्नी दोनों जल प्रवाह करें। यदि विवाह हो चुका हो तो भी यह उपाय करना लाभ देगा।
3. गुदा पर सुरमा लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 1 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। पिता–दादा की चिंता, परिवार में किसी को दिल का या मानसिक रोग की आशंका है। बुजुर्गो को दमा–सांस की बीमारी हो सकती है। शराब–बीयर आपकी बुद्धि को भ्रष्ट कर सकती है अतः इसका सेवन आपको वर्जित है। लोगों की निन्दा न करें।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लेवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप में काम वासना की अधिकता के लक्षण है। दूसरी स्त्री आप पर मोहित हो सकते हैं। मामा–मौसी से लाभ मिलेगा, उत्तम भवन–वाहन का सुख मिलेगा, उत्तम भोजन–शयन का शौक रहेगा। आप अपने परिवार या शहर/गांव/देश में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, यात्रा अधिक होगी और यात्रा से लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज ठीक रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष धर्म पर अड़िग और पक्के रहेंगे। धर्म पर कायम रहेंगे तो मिधि के काम से सोना बनेगा। प्राण जाय पर वचन न जायें वाली कहावत आप पर चरितार्थ होगी। लोहा, कोयला, रबड़ आदि के कामों से लाभ हो सकता है। व्यसनों से दूर रहेंगे तो बहुत लाभ होगा। इन्साफ पसंद वृत्ति रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किराये के मकान में रिहाइश न करें।
2. ठगी–धोखे से धन न कमाएं।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी कुछ अदला–बदली का योग है। किस्मत का असर स्थिर नहीं रहेगा। आपका शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव हो सकता है। कुछ बनते कामों में रूकावट भी आ सकती है। आपको नीला–काला कपड़ा पहनना हानिकारक हो सकता है। सरकारी विभाग द्वारा रिश्वत या गबन का केस बन सकता है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़–गेहूँ दान देवें।
2. दूध शरीर पर मल कर स्नान करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिनों–दिन आपके धन की बढ़ोत्तरी होती रहेगी, ऐसी संभावना है। आजीविका के नये साधन बनेंगे। आप अपनी ध ुन के पक्के रहेंगे। जिसके कारण आप बड़े से बड़े व्यधि के सामने अपना झंडा गाड़ लेंगे। आपकी संतान आपकी सहायता में रहेगी और संतान मुसीबत में दुश्मन को मार आयेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का काम न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

अंक ज्योतिष फल

नाम	Pradeep
जन्म तिथि	05/03/1987
मूलांक	5
भाग्यांक	6
नामांक	6
मूलांक स्वामी	बुध
भाग्यांक स्वामी	शुक्र
नामांक स्वामी	शुक्र
मित्र अंक	3, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4
सम अंक	1, 7, 8
मुख्य वर्ष	2003,2012,2021,2030,2039,2048,2057,2066
शुभ आयु	16,25,34,43,52,61,70,79
शुभ वार	गुरु, बुध, शुक्र
शुभ मास	मार्च, मई, सित
शुभ तारीख	5, 14, 23
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना,मरगज,ओपल
अनुकूल देव	लक्ष्मीनारायण
शुभ धातु	स्वर्ण
शुभ रंग	हरित
मंत्र	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः
शुभ यंत्र	गुरु यंत्र

10	5	12
11	9	7
6	13	8

अंक जीवन ग्राफ

आपका मूलांक एवं भाग्यांक वर्ष के अंकों से एवं आयु के अंको से जो संबंध बनाते हैं वे एक ग्राफ के रूप में नीचे दिए गए हैं। इस ग्राफ द्वारा आप यह साफ साफ जान सकते हैं कि कौन सा आयु का वर्ष आपके लिए लाभकारी हो सकता है या कौन सा वर्ष अनिष्टकारी हो सकता है। इस ग्राफ को बनाने के लिए मूलांक एवं भाग्यांक के आयु वर्ष एवं उनके अलग अलग अंकों से संबंध को लिया गया है। यदि ग्राफ में 60 से ऊपर नंबर आ रहे हैं तो वह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकता है एवं जिसे 40 से कम नंबर प्राप्त हुए हैं वह वर्ष आपको कुछ कष्टदायक हो सकता है।

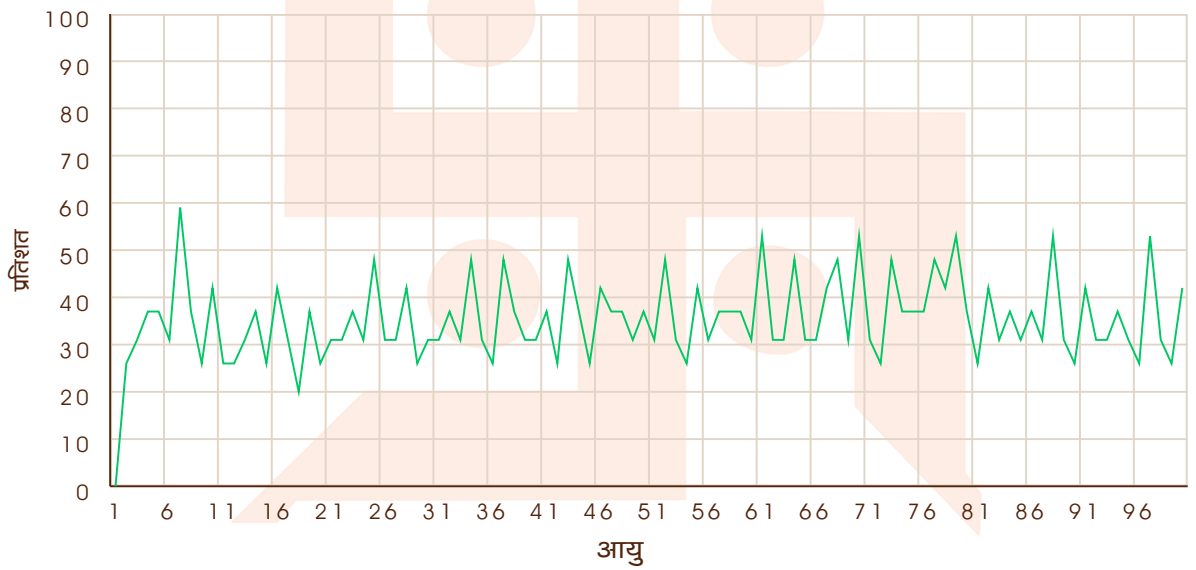

मुख्य वर्ष	2003,2012,2021,2030,2039,2048,2057,2066
शुभ आयु	16,25,34,43,52,61,70,79

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक पाँच होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक पाँच होता है। इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश आप रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट रहेंगे। यदि आप नौकरी का मार्ग चुनते हैं तो ऐसा रोजगार आपको अधिक पसन्द आयेगा। जहाँ लेन–देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुधग्रह के प्रभाववश आपके अन्दर वाक्पटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहेगी एवं सामने वाले व्यक्ति को आप अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। आप हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। आप थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले भी रहेंगे। जल्दबाजी के चक्कर में आप कभी–कभी हानियों का भी सामना करेंगे।

आपकी मानसिक स्थिति चंचल होने से आपको शीघ्र क्रोध आ जाया करेगा एवं कभी–कभी चिड़चिड़ाहट भी रहा करेगी। आप अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यों में रुचि लेंगे। इस कारण आपकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में आपको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ेगा।

मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण–अवगुण आपके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन–पठन की ओर आपकी विशेष रुचि रहेगी।

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन–मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज–सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान–शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा–कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 6 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 6 का स्वामी शुक्र है। मूलांक 5 और भाग्यांक 6 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक–भाग्यांक का मिलाजुला फल प्राप्त होगा। आप चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला के द्वारा अपना रोजगार–व्यापार चलाएंगे। आपको विभिन्न कलाओं में सफलाएं प्राप्त होंगी तथा

आप इनके माध्यम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। स्वभाव से आप कोमल हृदय के व्यक्ति रहेंगे तथा समाज में शीघ्र घुलने–मिलने की कला में निपुण रहेंगे। धन संग्रह की अपेक्षा आप भौतिक सुख–साधन जोड़ने पर अधिक ध्यान देंगे, हालांकि आपके पास संपत्ति अच्छी एकत्रित होगी एवं अपने कार्य के द्वारा काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को आप प्राप्त करेंगे। जीवन के मध्य अवस्था से आपकी आर्थिक स्थिति काफी मजबूत होती चली जाएगी, जो अंतिम अवस्था तक स्थायी रहेगी। समाज में आपको पर्याप्त मात्रा में मान–सम्मान प्राप्त होगा एवं लोग आपको समयोचित आदर प्रदान करेंगे।

आपका भाग्योदय 24 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 33 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 42 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की मित्रता 3 और 9 से है तथा भाग्यांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 3, 5, 6, 9 के अंक विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक–भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, मई, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करे तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 5 एवं भाग्यांक 6 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 3, 5, 6, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 5 ,6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75

5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68

6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनशाली रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

नामांक विचार

संसार में नाम नहीं तो कुछ भी नहीं। मनुष्य का सही नाम ही गगन चुम्बी होता है। सही फलदायी नाम से ही मनुष्य देश–विदेश में प्रसिद्धि पाता है। अतः हमेशा ऐसे नाम का चुनाव करना चाहिए जो आपको समाज में यश, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा प्रदान करे और सदियों तक समाज में आदर के साथ याद किया जाए। आपका नाम आपके भाग्य व प्रतिष्ठा को बढ़ाने में कितना साथ दे रहा है निम्न गणना से आप जान सकते हैं एवं नाम को ठीक कर अपने भाग्य की वृद्धि कर सकते हैं।

P r a d e e p

8+2+1+4+5+5+8

नाम का योग : 33 नामांक : 6

आपके नाम का कुल योग तैंतीस है। तीन एवं तीन के योग से छह आपका नामांक होता है। अंक तीन का स्वामी गुरु एवं नामांक छह का स्वामी शुक्र ग्रह है। इन दोनों ही ग्रहों के प्रभाव आपके नाम को संचालित करेंगे। गुरु के प्रभाव से आपका नाम काफी विस्तृत क्षेत्र में पहचान स्थापित करेगा। आपका नाम दूर–दूर तक प्रसारित होगा एवं रहन–सहन की परिस्थितियों के अनुसार दूरस्थ देशों के व्यक्तियों के मध्य आप लोकप्रिय होंगे। नामांक स्वामी शुक्र के प्रभाव से कला जगत में आपको लोकप्रियता प्राप्त हो सकती है। आपकी विभिन्न कलाओं में स्वाभाविक रुचि रहेगी एवं अच्छे अवसर यदि आपको कला के क्षेत्र में प्राप्त होते हैं तो आप उच्चकोटि की सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपका नाम लोकप्रिय व्यक्तियों के रूप में जाना जाएगा। शुक्र ग्रह अच्छी भौतिक संपदा देता है। अत : आपको नामांक के प्रभाव से सांसारिक भौतिक सुख सुविधाएं उत्तम प्राप्त होंगी।

आपके नाम का नामांक 6 है। यही आपका भाग्यांक भी है। इन दोनों के आपके मूलांक 5 से सम संबंध हैं। इनके संयुक्त प्रभाववश आपको अपने जीवन में भाग्यांक के प्रभाव का पूर्ण फल प्राप्त होगा। जिससे आपका नाम समाज के विभिन्न वर्गों में लोकप्रिय होगा। आपके कार्य क्षेत्र में आपके भाग्यांक के प्रभाववश आपका नाम उच्चता को प्राप्त करेगा। मित्रों सम्बंधियों में आप एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने में सफल होंगे। आपके कार्य क्षेत्र में आपका नाम सम्मान के साथ याद किया जाएगा और एक लम्बे समय तक अपनी पहचान बनाये र खेगा। मूलांक से सम संबंध होने के कारण आपको भाग्य का सहारा मध्यम श्रेणी का प्राप्त होगा। अत : आप अपनी मेहनत के द्वारा अपना नाम स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

आपके नामांक का आपके मूलांक 5 से मिलान ठीक नहीं है, लेकिन भाग्यांक 6 से मिलान हो रहा है। मूलांक से मिलान न होने के कारण आपका नाम पूर्णतः सफल नहीं हो सकेगा और जीवन में संघर्ष, अवनति आदि की वृद्धि करेगा। आप अपने नाम का पूर्ण शुभ फल पाने हेतु अपने नाम को नामांक से भी मिलान करना अच्छा रहेगा। आप ऐसे नाम का चुनाव करें जिसका नामांक आपके मूलांक तथा भाग्यांक दोनों से मिलान करे तथा उसका नामांक 9 आता हो और 1 न हो तो ऐसा नाम आपको अच्छी सांसारिक सफलताएं देगा। नाम परिवर्तन हेतु आपके लिए 6,3,5 अंक शुभ रहेंगे तथा 2,4,8 अंक अशुभ रहेंगे ।

नाम में परिवर्तन करने हेतु अंग्रेजी वर्णाक्षरों को अंकों में परिवर्तन करने की विधि उदाहरण सहित नीचे दी जा रही है। जिसकी सहायता से आप आसानी से नाम परिवर्तन अथवा नाम में वांछित संशोधन कर अपने अनुकूल नामांक बना सकते हैं। नाम परिवर्तन से आप मूलांक तथा भाग्यांक के साथ–साथ अपने नाम को सार्थक कर सकेंगे।

A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

1 2 3 4 5 8 3 5 1 1 2 3 4 5 7 8 1 2 3 4 6 6 6 5 1 7

उदाहरणार्थः–

एक अंक घटानाः–	G A N E S H A	G A N E S H
	3+1+5+5+3+5+1=23=5	3+1+5+5+3+5=22=4
एक अंक :–	R A M	R A M A
	2+1+4=7	2+1+4+1=8
दो अंक :–	B I N D R A	B R I N D R A
	2+1+5+4+2+1=15=6	2+2+1+5+4+2+1=17=8
तीन अंक :–	R A M C H A N D	R A M C H A N D R A
	2+1+4+3+5+1+5+4=25=7	2+1+4+3+5+1+5+4+2+1=28=1
चार अंक :–	K R I S H N A	K R E S H N A
	2+2+1+3+5+5+1=19=1	2+2+5+3+5+5+1=23=5
पाँच अंक :–	T E W A R I	T I W A R I
	4+5+6+1+2+1=19=1	4+1+6+1+2+1=15=6
छः अंक :–	A G G A R W A L	A G A R W A L
	1+3+3+1+2+6+1+3=20=2	1+3+1+2+6+1+3=17=8

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

बुध दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक पांच के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार के दिन आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार व्यापार संबंधी कार्य प्रारंभ करें तो यह आपके लिए अच्छा रहेगा। इन दिवसो में अनुकूल तारीखें भी हों तो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगा।

शुभ तारीखें

अंग्रेजी के किसी भी माह की 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखें आपके लिए कोई कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगी। इन तारीखों में आपके लिए अपना कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उच्च अधिकारी या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना, पत्र लेखन इत्यादि विशेष लाभप्रद रहेगा।

अशुभ तारीखें

अंग्रेजी माह की 2, 4, 11, 13, 20, 22, 29 एवं 31 तारीखों में किसी भी प्रकार का व्यापार संबंधी कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, अथवा पत्र व्यवहार संबंधी कार्य करना आपके लिए प्रतिकूल है। अतः आप इन तिथियों में कोई भी शुभ कार्य संपन्न न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखों अथवा 15 जून से 15 जुलाई एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के मध्य हुआ है, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा ये लोग रोजगार–व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपके सफल मित्र साबित होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

कोई भी महिला जिसका मूलांक 3, 5, 9 होता है तथा जिसका जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 दिनांको में हुआ हो वे आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगी तथा इन महिलाओं से आप स्नेहपूर्ण संबंध रख सकते हैं।

अनुकूल रंग

मूलांक के अनुसार आपके लिए हल्का खाकी, सफेद चमकीला उज्जवल रंग उत्तम रहेंगे। अतः ये आपके स्वास्थ्य आदि के लिए ठीक रहेंगे। हो सके तो आप इन रंगों का रुमाल हर समय अपने साथ रखें और यदि आप अपने ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग का पसंद करेंगे तो और भी अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उपयुक्त दिशा उत्तर है। इसलिए आपके लिए ऐसा मकान या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक तथा नामांक 5 हो। उत्तर दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। आप अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में ही करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला होना चाहिए, जो आपके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

शुभ वाहन नं

अगर आप स्वयं का वाहन खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए आपको पहले अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंकों के अनुसार पंजीकरण क्रमांक लेना हितकर रहेगा। आपका मूलांक 5 है एवं मित्रांक 3 एवं 9 हैं। अतः आपके लिए शुभ पंजीकरण क्रमांक 5234 = 5 आदि होना चाहिए। आपके वाहन का नंबर 104 = 5 इत्यादि हो तभी आपके लिए यह शुभ फलदायक रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तथा आप चर्म रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक चिंता, दुर्बलता, शारीरिक कमजोरी तथा मानसिक दुर्बलता से ग्रसित हो जाते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय विष्णु की पूजा, पूर्णिमा का व्रत कर के, केले का प्रसाद लें।

व्यवसाय

तार और टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, डाकघर, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंकिंग, बजट निर्माण, रेलवे इंजीनियरी, संपादक, तंबाकू व्यवसाय, रेडियो व्यवसाय, लेखक, पत्रकार, अनुवादक, राजनीति संबंधी कार्य, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालय, लाइब्रेरियन, यातायात संबंधी कार्य, इतिहास, खोज एवं पुरातत्व विभाग, आविष्कारक, मुनीम, पर्यटक एवं बुद्धि बल के समस्त कार्य।

व्रतोपवास

बुधवार को बुध अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें। हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए पन्ना शुभ रत्न है। उसके न मिलने पर उपरत्न मरगज, ओनेक्स, ग्रीन पेरनीडाट धारण करें। इसे आप सोने या चांदी में तीन से छह रत्ती में बनवा कर, बुधवार के दिन, शुक्ल पक्ष में दायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बुध ग्रह की उपासना करें भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दघाक्षरी मंत्र "ओम् ह्रीं ह्रीं श्री श्री लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्घन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

बुध गायत्री मंत्र – ऊँ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन विधारा की एक इंच लंबी जड़ ला कर, हरे धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या सोने या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे बुधवार के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ बुध के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

बुध की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को बुध के पदार्थ कांसी, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शास्त्रा, पफल, षट्रास भोजन, घृत, सर्व पुष्प आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

बुध को अनुकूल बनाए रखने हेतु बुध यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केघर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या घ्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, बुधवार को घुक्ल पक्ष में प्रातः काल धारण करें।

पुल्लिंग	लिंग	पुल्लिंग
05/03/1987	जन्म तिथि	**4-05/03/2014**
गुरुवार	दिन	मंगल–बुधवार
घंटे 07:15:00	जन्म समय	05:31:00 घंटे
घटी 02:23:21	जन्म समय(घटी)	58:02:21 घटी
India	देश	India
Jeypore	स्थान	Jeypore
उत्तर 18:52:00	अक्षांश	18:52:00 उत्तर
पूर्व 82:38:00	रेखांश	82:38:00 पूर्व
पूर्व 82:30:00	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:00:32	स्थानिक संस्कार	00:00:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:17:39	सूर्योदय	06:18:03
18:04:32	सूर्यास्त	18:04:40
23:40:37	चित्रपक्षीय अयनांश	24:03:28
मीन	लग्न	कुम्भ
गुरु	लग्न–लग्नाधिपति	शनि
मेष	राशि	मेष
मंगल	राशि–स्वामी	मंगल
भरणी	नक्षत्र	अश्विनी
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	केतु
3	चरण	3
ऐन्द्र	योग	ब्रह्म
कौलव	करण	बव
ले–लेखपाल	जन्म नामाक्षर	चो–चोखी
मीन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
चतुष्पाद	वश्य	चतुष्पाद
गज	योनि	अश्व
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	आद्य
मृग	वर्ग	सिंह
27	गत/तत्कालिक वर्ष	28

जन्म – विवरण / वर्ष – विवरण

नक्षत्र	पद	अंश	राशि	व	अ	ग्रह	व	अ	राशि	अंश	पद	नक्षत्र
उ०भाद्रपद	2	07:54:54	मीन			लग्न			कुंभ	05:19:25	4	धनिष्ठा
पू०भाद्रपद	1	20:22:32	कुंभ			सूर्य			कुंभ	20:16:24	1	पू०भाद्रपद
भरणी	3	23:11:21	मेष			चंद्र			मेष	08:38:20	3	अश्विनी
भरणी	1	14:59:35	मेष			मंग	व		तुला	03:24:24	4	चित्रा
शतभिषा	1	09:41:36	कुंभ	व	अ	बुध			मक	25:05:34	1	धनिष्ठा
उ०भाद्रपद	2	06:58:09	मीन			गुरु	व		मिथु	16:23:15	3	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	4	08:27:57	मक			शुक्र			मक	05:12:59	3	उत्तराषाढ़ा
ज्येष्ठा	4	27:01:19	वृश्चि			शनि	व		तुला	29:15:25	3	विशाखा
रेवती	1	18:12:16	मीन			राहु			तुला	05:08:22	4	चित्रा
हस्त	3	18:12:16	कन्या	व		केतु	व		मेष	05:08:22	2	अश्विनी
मूल	1	02:49:56	धनु			मु			मिथु	07:54:54	1	आर्द्रा

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:03:28

लग्न–चलित

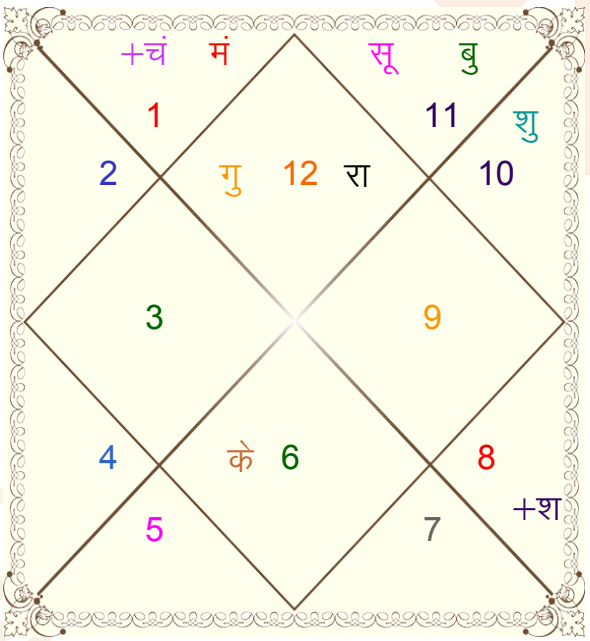

वर्ष लग्न कुंडली

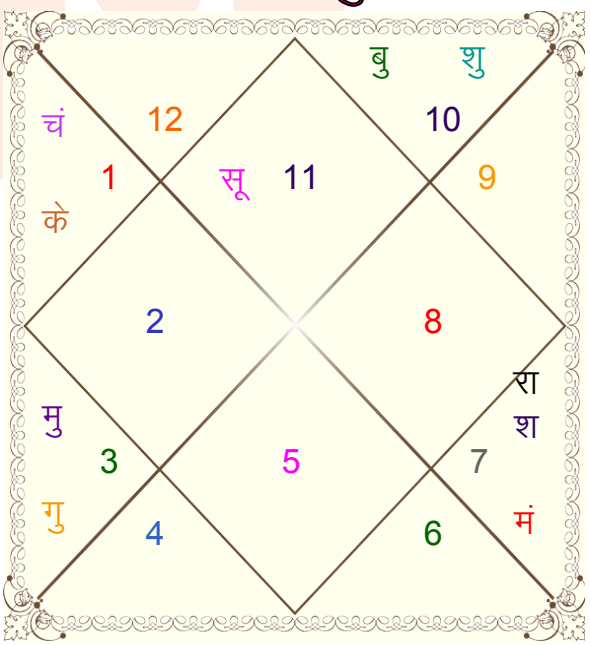

चन्द्र कुंडली

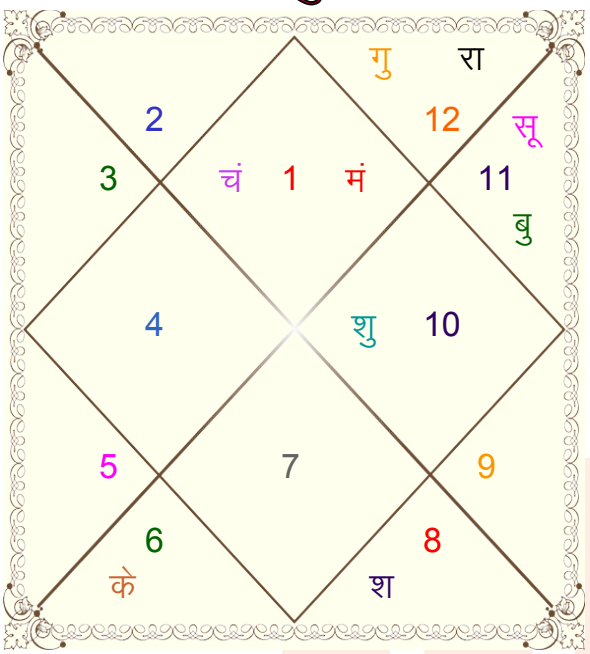

वर्ष चन्द्र कुंडली

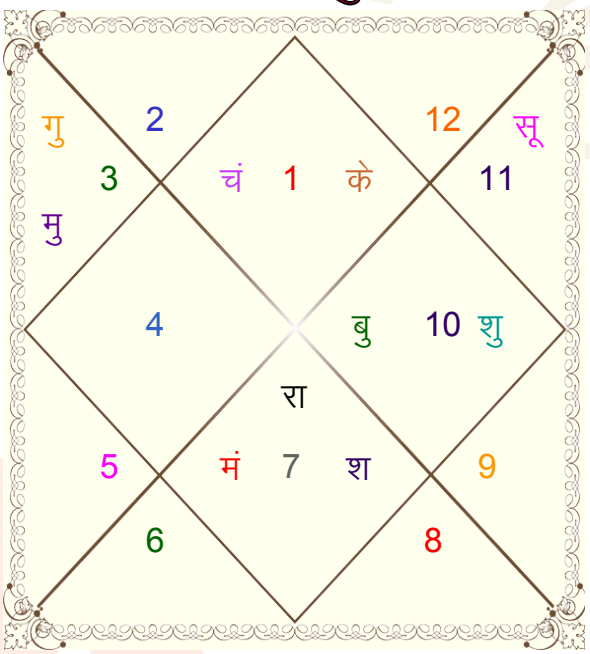

नवमांश कुंडली

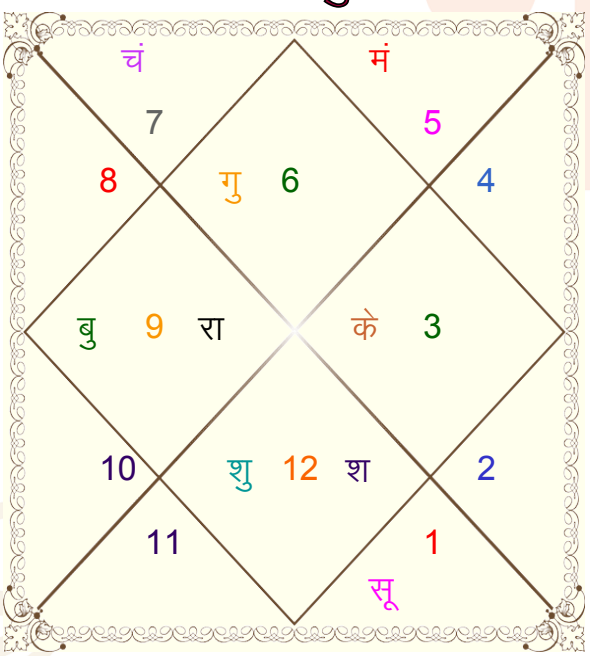

वर्ष नवमांश कुंडली

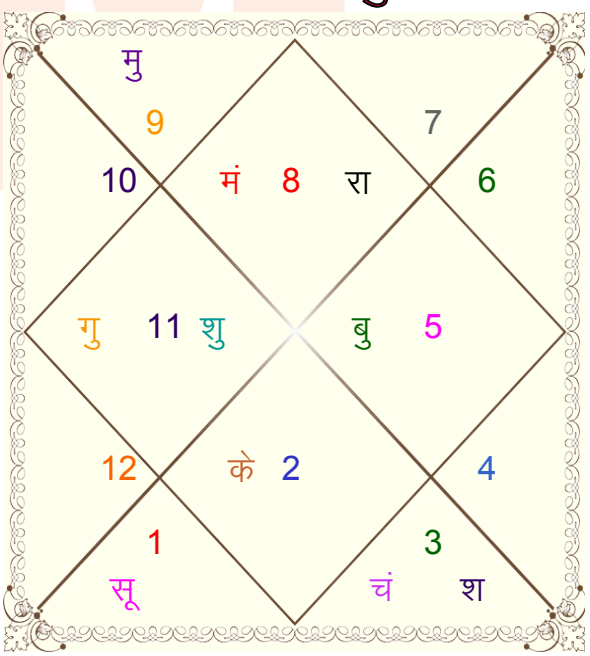

मैत्री सारिणी

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	....	मित्र	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र
चन्द्र	मित्र	....	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	सम	शत्रु	शत्रु	....	सम	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	सम	....	सम	मित्र
शुक्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	....	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	....

द्वादशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	कुंभ	कुंभ	मेष	तुला	मक	मिथु	मक	तुला
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	तुला	कर्क	मेष	कर्क	सिंह	मेष	मीन	धनु
चतुर्थांश	कुंभ	सिंह	कर्क	तुला	तुला	धनु	मक	कर्क
पंचमांश	मेष	मिथु	कुंभ	मेष	वृश्चि	धनु	वृष	तुला
षष्ठांश	वृष	सिंह	वृष	मेष	मीन	कर्क	वृश्चि	कन्या
सप्तमांश	मीन	मिथु	मिथु	तुला	धनु	कन्या	सिंह	मेष
अष्टमांश	कन्या	मक	मिथु	मेष	तुला	कन्या	वृष	वृश्चि
नवमांश	वृश्चि	मेष	मिथु	वृश्चि	सिंह	कुंभ	कुंभ	मिथु
दशमांश	मीन	सिंह	मिथु	वृश्चि	वृष	वृश्चि	तुला	कर्क
एकादशांश	कुंभ	सिंह	मिथु	तुला	कन्या	वृश्चि	मक	कर्क
द्वादशांश	मेष	तुला	कर्क	वृश्चि	वृश्चि	धनु	मीन	कन्या

द्वादशवर्गीय बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु
होरा	मित्र	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
द्रेष्काण	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र
चतुर्थांश	स्व	स्व	शत्रु	शत्रु	स्व	शत्रु	शत्रु
पंचमांश	सम	शत्रु	स्व	शत्रु	स्व	स्व	शत्रु
षष्ठांश	स्व	शत्रु	स्व	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
सप्तमांश	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	सम	शत्रु
अष्टमांश	मित्र	शत्रु	स्व	शत्रु	सम	स्व	शत्रु
नवमांश	मित्र	शत्रु	स्व	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
दशमांश	स्व	शत्रु	स्व	शत्रु	मित्र	स्व	शत्रु
एकादशांश	स्व	शत्रु	शत्रु	स्व	मित्र	शत्रु	शत्रु
द्वादशांश	सम	स्व	स्व	शत्रु	स्व	सम	शत्रु
शुभ	9	3	7	1	9	3	1
सम	3	0	0	5	3	3	0
अशुभ	0	9	5	6	0	6	11
कुल	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

हर्ष बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम बल	0	5	0	0	0	0	0
द्वितीय बल	0	0	0	0	0	0	5
तृतीय बल	0	5	0	0	5	0	5
चतुर्थ बल	0	5	0	5	0	5	5
कुल	0	15	0	5	5	5	15
बल	अतिक्षीण	बली	अतिक्षीण	क्षीण	क्षीण	क्षीण	बली

पंचवर्गीय बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
क्षेत्रीय बल	22.50	7.50	7.50	7.50	15.00	7.50	7.50
उच्च बल	14.47	17.29	7.27	5.55	17.93	10.91	18.97
हददा बल	11.25	3.75	3.75	3.75	15.00	3.75	3.75
द्रेष्काण	7.50	2.50	2.50	5.00	7.50	5.00	7.50
नवमांश	3.75	1.25	5.00	2.50	3.75	1.25	1.25
कुल	59.47	32.29	26.02	24.30	59.18	28.41	38.97
विंशोपक	14.87	8.07	6.50	6.07	14.80	7.10	9.74
बल	शुभ	सामान्य	सामान्य	सामान्य	शुभ	सामान्य	सामान्य

वर्षेश निर्णय

स्वामित्व	ग्रह	बल	लग्न पर दृष्टि	वर्षेश
जन्म लग्नाधिपति	गुरु	14.80	अतिशुभ	
वर्ष लग्नाधिपति	शनि	9.74	अतिशुभ	
मुन्था लग्नाधिपति	बुध	6.07	दृष्टि नहीं	गुरु
दिवापति	मंग	6.50	अतिशुभ	
त्रिराशिपति	गुरु	14.80	अतिशुभ	

सहम

सहम जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रदर्शित करने वाली विशेष स्थिति या बिन्दु है। ग्रह या भावों के विपरीत सहम जीवन की एक ही घटना से संबंध रखता है। आचार्य नीलकंठ के अनुसार सहम 50 हैं। यदि सहम और इसका स्वामी शुभ हो या शुभदृष्ट हो तो यह सांकेतिक घटना के लिए शुभ फल प्रदान करता है। ताजिक शास्त्र के अनुसार किसी भी घटना की अवधि को इसकी स्थिति, स्वामी तथा उस राशि की स्थिति से ज्ञात किया जाता है जिसमें यह स्थित है। नीचे सहमों की गणना करके उनकी संभावित तिथियां दी गई हैं जो अग्रिम फलादेश में सहायक सिद्ध हो सकेंगी।

सहम	राशि	अंश	स्वा	घटना तिथि
पुण्य	धनु	16:57:29	गुरु	03/08/2014
गुरु	मेष	23:41:20	मंगल	12/10/2014
ज्ञान	मेष	23:41:20	मंगल	12/10/2014
यश	कन्या	05:53:39	बुध	06/11/2014
मित्र	कन्या	28:29:08	बुध	01/12/2014
माहात्म्य	वृश्चिक	21:46:20	मंगल	17/04/2014
आशा	वृष	11:16:59	शुक्र	22/07/2014
समर्थ	मेष	01:10:26	मंगल	17/09/2014
भातृ	कन्या	22:27:14	बुध	25/11/2014
गौरव	मकर	12:31:29	शनि	01/05/2014
राजा	वृष	26:20:23	शुक्र	08/08/2014
पितृ	वृष	26:20:23	शुक्र	08/08/2014
मातृ	धनु	01:54:05	गुरु	21/07/2014
सुत	वृष	13:04:20	शुक्र	24/07/2014
जीव	कर्क	18:11:35	चन्द्र	17/06/2014
अम्बु	धनु	01:54:05	गुरु	21/07/2014
कर्म	मिथुन	27:00:34	बुध	13/08/2014
रोग	मेष	08:38:20	मंगल	25/09/2014
कामदेव	कन्या	25:56:31	बुध	29/11/2014
कलि	मिथुन	22:20:34	बुध	08/08/2014
क्षेम	मिथुन	22:20:34	बुध	08/08/2014
शास्त्र	कर्क	07:57:44	चन्द्र	07/06/2014
बन्धु	धनु	21:46:39	गुरु	07/08/2014
बंधक	धनु	21:46:39	गुरु	07/08/2014
मृत्यु	मेष	28:36:03	मंगल	17/10/2014

सहम

सहम	राशि	अंश	स्वा	घटना तिथि
परदेश	वृश्चिक	10:44:56	मंगल	07/04/2014
अर्थ	तुला	26:55:07	शुक्र	05/01/2015
परदारा	मकर	20:16:00	शनि	07/05/2014
अन्यकर्म	कर्क	14:42:19	चन्द्र	14/06/2014
वणिक	मेष	18:52:11	मंगल	06/10/2014
कार्यसिद्धि	कर्क	08:14:27	चन्द्र	07/06/2014
विवाह	वृष	11:16:59	शुक्र	22/07/2014
प्रसूति	मिथुन	26:37:06	बुध	13/08/2014
संताप	मकर	28:36:03	शनि	14/05/2014
श्रद्धा	मिथुन	07:08:00	बुध	23/07/2014
प्रीति	मिथुन	12:03:16	बुध	28/07/2014
बल	कन्या	05:53:39	बुध	06/11/2014
देह	कन्या	05:53:39	बुध	06/11/2014
जाडय	धनु	29:14:32	गुरु	13/08/2014
व्यापार	तुला	13:38:15	शुक्र	22/12/2014
जलपतन	धनु	29:14:32	गुरु	13/08/2014
शत्रु	मकर	09:28:23	शनि	29/04/2014
शौर्य	वृष	18:52:30	शुक्र	31/07/2014
उपाय	कर्क	18:11:35	चन्द्र	17/06/2014
दरिद्रता	धनु	16:57:29	गुरु	03/08/2014
गुरुता	मेष	25:03:01	मंगल	13/10/2014
जलपथ	तुला	21:03:59	शुक्र	30/12/2014
बंधन	मेष	23:01:28	मंगल	11/10/2014
कन्या	धनु	01:54:05	गुरु	21/07/2014
अश्व	तुला	07:19:36	शुक्र	15/12/2014

वर्ष त्रिपताकी कुंडली

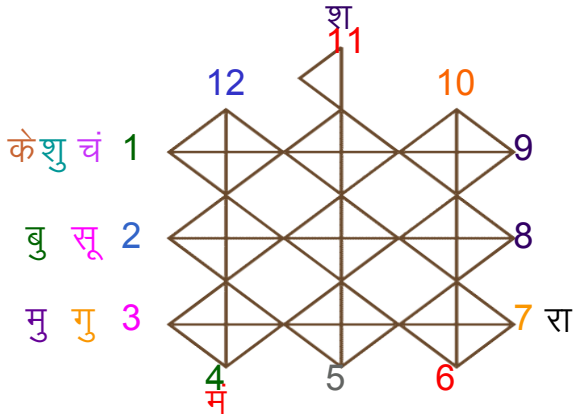

पात्यंश दशा

मंगल		शुक्र		लग्न		चन्द्र		गुरु	
05/03/2014		16/04/2014		09/05/2014		10/05/2014		21/06/2014	
16/04/2014		09/05/2014		10/05/2014		21/06/2014		25/09/2014	
मंग	10/03/2014	शुक्र	18/04/2014	लग्न	09/05/2014	चंद्र	15/05/2014	गुरु	16/07/2014
शुक्र	12/03/2014	लग्न	18/04/2014	चंद्र	09/05/2014	गुरु	26/05/2014	सूर्य	29/07/2014
लग्न	12/03/2014	चंद्र	20/04/2014	गुरु	09/05/2014	सूर्य	31/05/2014	बुध	14/08/2014
चंद्र	17/03/2014	गुरु	26/04/2014	सूर्य	10/05/2014	बुध	07/06/2014	शनि	28/08/2014
गुरु	29/03/2014	सूर्य	29/04/2014	बुध	10/05/2014	शनि	13/06/2014	मंग	08/09/2014
सूर्य	03/04/2014	बुध	03/05/2014	शनि	10/05/2014	मंग	18/06/2014	शुक्र	14/09/2014
बुध	10/04/2014	शनि	06/05/2014	मंग	10/05/2014	शुक्र	20/06/2014	लग्न	14/09/2014
शनि	16/04/2014	मंग	09/05/2014	शुक्र	10/05/2014	लग्न	21/06/2014	चंद्र	25/09/2014

सूर्य		बुध		शनि		मंगल	
25/09/2014		13/11/2014		12/01/2015		05/03/2015	
13/11/2014		12/01/2015		05/03/2015		00/00/0000	
सूर्य	02/10/2014	बुध	23/11/2014	शनि	19/01/2015	मंग	05/03/2015
बुध	10/10/2014	शनि	01/12/2014	मंग	25/01/2015	शुक्र	00/00/0000
शनि	17/10/2014	मंग	08/12/2014	शुक्र	29/01/2015	लग्न	00/00/0000
मंग	22/10/2014	शुक्र	12/12/2014	लग्न	29/01/2015	चंद्र	00/00/0000
शुक्र	25/10/2014	लग्न	12/12/2014	चंद्र	04/02/2015	गुरु	00/00/0000
लग्न	25/10/2014	चंद्र	19/12/2014	गुरु	18/02/2015	सूर्य	00/00/0000
चंद्र	31/10/2014	गुरु	04/01/2015	सूर्य	24/02/2015	बुध	00/00/0000
गुरु	13/11/2014	सूर्य	12/01/2015	बुध	05/03/2015	शनि	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

पात्यंश दशा पूरे 1 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

मुद्दा दशा

शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु	
05/03/2014		05/05/2014		23/05/2014		22/06/2014		14/07/2014	
05/05/2014		23/05/2014		22/06/2014		14/07/2014		06/09/2014	
शुक्र	15/03/2014	सूर्य	06/05/2014	चंद्र	25/05/2014	मंग	24/06/2014	राहु	22/07/2014
सूर्य	18/03/2014	चंद्र	07/05/2014	मंग	27/05/2014	राहु	27/06/2014	गुरु	29/07/2014
चंद्र	23/03/2014	मंग	08/05/2014	राहु	01/06/2014	गुरु	30/06/2014	शनि	07/08/2014
मंग	27/03/2014	राहु	11/05/2014	गुरु	05/06/2014	शनि	03/07/2014	बुध	15/08/2014
राहु	05/04/2014	गुरु	13/05/2014	शनि	10/06/2014	बुध	06/07/2014	केतु	18/08/2014
गुरु	13/04/2014	शनि	16/05/2014	बुध	14/06/2014	केतु	07/07/2014	शुक्र	27/08/2014
शनि	22/04/2014	बुध	19/05/2014	केतु	16/06/2014	शुक्र	11/07/2014	सूर्य	30/08/2014
बुध	01/05/2014	केतु	20/05/2014	शुक्र	21/06/2014	सूर्य	12/07/2014	चंद्र	03/09/2014
केतु	05/05/2014	शुक्र	23/05/2014	सूर्य	22/06/2014	चंद्र	14/07/2014	मंग	06/09/2014

गुरु		शनि		बुध		केतु		शुक्र	
06/09/2014		25/10/2014		22/12/2014		12/02/2015		05/03/2015	
25/10/2014		22/12/2014		12/02/2015		05/03/2015		00/00/0000	
गुरु	13/09/2014	शनि	03/11/2014	बुध	29/12/2014	केतु	13/02/2015	शुक्र	05/03/2015
शनि	21/09/2014	बुध	11/11/2014	केतु	01/01/2015	शुक्र	16/02/2015	सूर्य	00/00/0000
बुध	28/09/2014	केतु	15/11/2014	शुक्र	10/01/2015	सूर्य	18/02/2015	चंद्र	00/00/0000
केतु	30/09/2014	शुक्र	24/11/2014	सूर्य	12/01/2015	चंद्र	19/02/2015	मंग	00/00/0000
शुक्र	08/10/2014	सूर्य	27/11/2014	चंद्र	17/01/2015	मंग	21/02/2015	राहु	00/00/0000
सूर्य	11/10/2014	चंद्र	02/12/2014	मंग	20/01/2015	राहु	24/02/2015	गुरु	00/00/0000
चंद्र	15/10/2014	मंग	06/12/2014	राहु	28/01/2015	गुरु	27/02/2015	शनि	00/00/0000
मंग	18/10/2014	राहु	14/12/2014	गुरु	03/02/2015	शनि	02/03/2015	बुध	00/00/0000
राहु	25/10/2014	गुरु	22/12/2014	शनि	12/02/2015	बुध	05/03/2015	केतु	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

मुद्दा दशा पूरे 1 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा–सूक्ष्म

मंग–शुक्र–केतु		मंग–सूर्य–सूर्य		मंग–सूर्य–चंद्र		मंग–सूर्य–मंग	
17/07/2014 12:18		11/08/2014 08:52		17/08/2014 18:17		28/08/2014 09:57	
11/08/2014 08:52		17/08/2014 18:17		28/08/2014 09:57		04/09/2014 20:55	
केतु	18/07/2014 23:06	सूर्य	11/08/2014 16:32	चंद्र	18/08/2014 15:35	मंग	28/08/2014 20:23
शुक्र	23/07/2014 02:32	चंद्र	12/08/2014 05:20	मंग	19/08/2014 06:30	राहु	29/08/2014 23:14
सूर्य	24/07/2014 08:21	मंग	12/08/2014 14:16	राहु	20/08/2014 20:51	गुरु	30/08/2014 23:06
चंद्र	26/07/2014 10:04	राहु	13/08/2014 13:17	गुरु	22/08/2014 06:56	शनि	01/09/2014 03:26
मंग	27/07/2014 20:52	गुरु	14/08/2014 09:44	शनि	23/08/2014 23:25	बुध	02/09/2014 04:48
राहु	31/07/2014 14:21	शनि	15/08/2014 10:02	बुध	25/08/2014 11:38	केतु	02/09/2014 15:14
गुरु	03/08/2014 21:54	बुध	16/08/2014 07:46	केतु	26/08/2014 02:33	शुक्र	03/09/2014 21:04
शनि	07/08/2014 20:21	केतु	16/08/2014 16:43	शुक्र	27/08/2014 21:10	सूर्य	04/09/2014 06:01
बुध	11/08/2014 08:52	शुक्र	17/08/2014 18:17	सूर्य	28/08/2014 09:57	चंद्र	04/09/2014 20:55

मंग–सूर्य–राहु		मंग–सूर्य–गुरु		मंग–सूर्य–शनि		मंग–सूर्य–बुध	
04/09/2014 20:55		24/09/2014 01:08		11/10/2014 02:13		31/10/2014 08:00	
24/09/2014 01:08		11/10/2014 02:13		31/10/2014 08:00		18/11/2014 10:39	
राहु	07/09/2014 17:57	गुरु	26/09/2014 07:41	शनि	14/10/2014 07:08	बुध	02/11/2014 21:35
गुरु	10/09/2014 07:19	शनि	29/09/2014 00:27	बुध	17/10/2014 03:57	केतु	03/11/2014 22:56
शनि	13/09/2014 08:11	बुध	01/10/2014 10:24	केतु	18/10/2014 08:17	शुक्र	06/11/2014 23:22
बुध	16/09/2014 01:23	केतु	02/10/2014 10:16	शुक्र	21/10/2014 17:15	सूर्य	07/11/2014 21:06
केतु	17/09/2014 04:14	शुक्र	05/10/2014 06:27	सूर्य	22/10/2014 17:33	चंद्र	09/11/2014 09:19
शुक्र	20/09/2014 08:56	सूर्य	06/10/2014 02:54	चंद्र	24/10/2014 10:02	मंग	10/11/2014 10:41
सूर्य	21/09/2014 07:56	चंद्र	07/10/2014 13:00	मंग	25/10/2014 14:22	राहु	13/11/2014 03:53
चंद्र	22/09/2014 22:18	मंग	08/10/2014 12:51	राहु	28/10/2014 15:14	गुरु	15/11/2014 13:50
मंग	24/09/2014 01:08	राहु	11/10/2014 02:13	गुरु	31/10/2014 08:00	शनि	18/11/2014 10:39

मंग–सूर्य–केतु		मंग–सूर्य–शुक्र		मंग–चंद्र–चंद्र		मंग–चंद्र–मंग	
18/11/2014 10:39		25/11/2014 21:37		17/12/2014 04:58		03/01/2015 23:06	
25/11/2014 21:37		17/12/2014 04:58		03/01/2015 23:06		16/01/2015 09:23	
केतु	18/11/2014 21:05	शुक्र	29/11/2014 10:51	चंद्र	18/12/2014 16:29	मंग	04/01/2015 16:30
शुक्र	20/11/2014 02:55	सूर्य	30/11/2014 12:25	मंग	19/12/2014 17:20	राहु	06/01/2015 13:14
सूर्य	20/11/2014 11:52	चंद्र	02/12/2014 07:02	राहु	22/12/2014 09:15	गुरु	08/01/2015 05:01
चंद्र	21/11/2014 02:47	मंग	03/12/2014 12:51	गुरु	24/12/2014 18:04	शनि	10/01/2015 04:14
मंग	21/11/2014 13:13	राहु	06/12/2014 17:33	शनि	27/12/2014 13:33	बुध	11/01/2015 22:30
राहु	22/11/2014 16:04	गुरु	09/12/2014 13:44	बुध	30/12/2014 01:55	केतु	12/01/2015 15:54
गुरु	23/11/2014 15:56	शनि	12/12/2014 22:42	केतु	31/12/2014 02:46	शुक्र	14/01/2015 17:37
शनि	24/11/2014 20:16	बुध	15/12/2014 23:09	शुक्र	03/01/2015 01:47	सूर्य	15/01/2015 08:32
बुध	25/11/2014 21:37	केतु	17/12/2014 04:58	सूर्य	03/01/2015 23:06	चंद्र	16/01/2015 09:23

वर्ष योग

इक्कबाल

यदि वर्ष कुंडली में सभी ग्रह केन्द्र (1.4.7.10) और पणफर (2.5.8.11) स्थानों में हो तो इक्कबाल नामक योग होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

इन्दुवार

वर्ष कुंडली में यदि सूर्यादि सभी ग्रह आपीक्लिम (3.6.9.12) स्थानों में हो तो इन्दुवार योग होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

इत्थशाल

यदि लग्नेश और अन्य ग्रह (कार्येश) की परस्पर दृष्टि हो तथा दोनों ग्रह दीप्तांशों के अन्तर्गत हों तो इत्थशाल योग होता है। यह तीन प्रकार का होता है। वर्तमान, सम्पूर्ण और भविष्यत। सम्पूर्ण इत्थशाल तब होता है जबकि शीघ्रगामी ग्रह मन्दगति ग्रह से 1 कला के अंतर पर हो। वर्तमान इत्थशाल में शीघ्रगति वाले ग्रह के अंश कम एवं मन्दगति ग्रह के अंश अधिक हों तथा दोनों की परस्पर दृष्टि हो। भविष्यत इत्थशाल तब होता है जबकि शीघ्रगति ग्रह राशि के अन्तिम अंश में हो तथा दूसरी राशि पर मन्द गति ग्रह हो परन्तु मध्यान्तर दीप्तांशो के अन्तर्गत हों।

इस वर्ष आपकी भविष्यत् शीघ्र गति ग्रह सूर्य (कुंभ 20:16:24), एवं मन्दगति ग्रह शनि (तुला 29:15:25), के मध्य है।

वर्ष कुंडली में यह योग अत्यन्त ही शुभ एवं सफलता का प्रतीक माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से इस वर्ष में आपको स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय अविवाहितों का विवाह भी सम्पन्न होगा। व्यापार में साझेदार से संबंधों में मधुरता होगी तथा उससे यथोचित लाभ एवं सहयोग मिलेगा। राजनीति में सक्रिय लोगों को ऐसे समय में राजनैतिक लाभ प्राप्त कर सकते है। सूर्य राज्य कारक ग्रह है अतः कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के योग बनेंगे। साथ ही व्यापार में विस्तार की संम्भावना होगी। इस प्रकार यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ सिद्ध होगा तथा सौभाग्य से आप मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे। अतः वर्ष में प्राप्त सुअवसरों का लाभ उठाने के लिए यत्नशील रहें। इस वर्ष आपकी भविष्यत् शीघ्र गति ग्रह बुध (मक 25:05:34), एवं मन्दगति ग्रह शनि (तुला 29:15:25), के मध्य है।

वर्ष कुंडली में यह योग अत्यन्त ही शुभ एवं सफलता का प्रतीक माना जाता है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इस वर्ष में आपको सन्तति से पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। वे लोग

जो सन्तति की अपेक्षा कर रहे हैं उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति इस वर्ष में अवश्य होगी। उच्चशिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष मनोवांछित सफलता प्रदान करने में समर्थ होगा। साथ ही राजनीति में सक्रिय लोगों को राजनैतिक लाभ की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त अचानक धन लाभ के भी योग बनेंगे एवं कहीं से जमीन जायदाद आदि की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही शेयर लाटरी या सटटे आदि के द्वारा भी लाभ के योग बनेंगे अतः ऐसे समय में आप शेयर आदि पर पूंजी निवेश कर सकते है। ज्योतिष एवं पराविद्या के क्षेत्र में भी आप का सम्मान होगा तथा इनके ज्ञानार्जन में रूचिशील होंगे।

इसराफ

यदि शीघ्रगामी ग्रह मन्दगामी ग्रह से आगे हो तो इसराफ योग होता है यह इत्थशाल का विपरीत होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

नक्त

यदि लग्नेश और कार्येश में दृष्टि न हो और उन दोनों के मध्य दीप्तांशों के अन्तर्गत ऐसा शीघ्रगामी ग्रह हो जो लग्नेश और कर्मेश को देखता हो तो एक ग्रह के तेज को लेकर दूसरों को देता है। इस योग में किसी तीसरे व्यक्ति की सहायता से कार्य बनता है।

नक्त योग शनि तथा गुरु के मध्य है क्योंकि सूर्य शीघ्र गति ग्रह है तथा दोनों को देख रहा है।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस समय स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा अविवाहितों का विवाह होगा। साथ ही स्त्री के द्वारा भाग्योन्नति भी हो सकती है। धन वैभव अर्जित करने के लिए भी वर्ष उत्तम होगा तथा स्ववाक्चातुर्य से अपने प्रभाव में वृद्धि करेगें। उच्चाधिकारीवर्ग से आपको इस समय लाभ होगा तथा जो लोग राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय है वे राजनैतिक लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे।

यमया

यदि लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि न हो और कोई मन्दगति वाला ग्रह दीप्ताशों के अन्तर्गत हो तथा दोनों को देखता हो तो वह शीघ्रगति ग्रह मन्दगति वाले ग्रह को दे देता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

मणऊ

यदि लग्नेश एवं कर्मेश में इत्थशाल हो किन्तु कोई पाप ग्रह दोनों को या एक को भी शत्रु दृष्टि से देखता हो तथा दीप्तांशों के अन्तर्गत हो तो मणऊ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

कम्बूल

यदि लग्नेश और कार्येश में परस्पर इत्थशाल हो तथा इन दोनों में एक से भी चन्द्रमा इत्थशाल करता हो तो कम्बूल योग बनता है।

कम्बूल योग शनि और सूर्य के मध्य बन रहा है क्योंकि चन्द्रमा का सूर्य से इत्थशाल हो रहा है।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस वर्ष आप वन्धुवर्ग से वांछित लाभ एवं सहयोग अर्जित करेगें तथा आपसी संबन्धों मे मधुरता का भाव होगा। इस समय दूर समीप की लाभदायक यात्राएं भी संपन्न होंगी। साथ ही आप स्वपराक्रम एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन आदि में वृद्वि होगी तथा यदि प्रकाशन आदि के इच्छुक है तो इस वर्ष में आपको वांछित सफलता मिलेगी।

गैरी कम्बूल

लग्नेश एवं कार्येश दोनों का इत्शाल हो परंतु चन्द्रमा की इन पर दृष्टि न हो किन्तु वही चन्द्रमा बलवान होकर अग्रिम राशि में जाकर किसी अन्य बलवान ग्रह से इत्थशाल करे तो गैरी कम्बूल योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

खल्लासर

लग्नेश और कार्येश का परस्पर इत्थशाल हो लेकिन शून्यमार्गी चन्द्रमा किसी से इत्थशाल न करता हो तो खल्लासर नामक योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

रदद

यदि लग्नेश और कार्येश में कोई ग्रह अस्त नीच शत्रु क्षेत्री अथवा 6.8.12 में हो और परस्पर इत्थशाली हो, क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो रदद नामक योग बनता है।

रदद योग की सृष्टि शनि एवं सूर्य के मध्य हो रही है क्योंकि शनि सूर्य से युक्त है

इस योग के शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति में अत्यन्त ही सुदृढ़ता आएगी तथा आय पूर्ण होगी। इस समय आपकी महत्वाकांक्षाएं भी पूर्ण होगी एवं अधिकार सम्पन्न लोंगों से सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण रूके हुए कार्य आसानी से सम्पन्न होंगे। इस वर्ष में

आपको अचानक धन लाभ के भी बनते है। साथ ही किसी जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष एवं पराविद्या के क्षेत्र में आपका रूझान हो सकता है।

दुफालिकुत्थ

लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो (1) इन दोनों में से मन्दगति वाला ग्रह अपनी उच्च राशि /स्वराशि /नवांश / द्रेष्काण आदि में बलवान हो तथा (2) शीघ्रगामी ग्रह अपनी उच्च स्वराशि में न हो तथा निर्बल हो तो दुफालिकुत्थ योग बनता है।

दुफालिकुत्थ योग शनि एवं सूर्य के मध्य बन रहा है क्योंकि शीघ्रगति ग्रह सूर्य दुर्बल है तथा मन्दगति ग्रह शनि बलिष्ठ है ।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस वर्ष आपके कार्य क्षेत्र में विशिष्ट उन्नति एवं सफलता के योग बनेंगे। नौकरी करने वालों को इस समय प्रोन्नति मिलेगी तथा मान सम्मान एवं आर्थिक स्तर में वांछित वृद्धि होगी। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय आशातीत लाभ होगा एवं किसी नवीन योजना का शुभारम्भ भी होगा या वर्तमान कार्य में भी विस्तार हो सकता है। इस समय भाग्य की प्रबलता होगी तथा भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे। इसके अतिरिक्त कोई धार्मिक या मांगलिक कार्य भी घर में सम्पन्न होंगा। साथ ही पूंजीनिवेश के द्वारा भविष्य में लाभ के योग बनेंगे।

दुत्थकुत्थीर

यदि लग्नेश और कार्येश निर्बल होकर इत्थशाल करें और उनमें से एक किसी ग्रह से जो अपने उच्च या स्वगृह में बैठा हो, बलवान हो इत्थशाल करे तो दुत्थकुत्थीर योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

तम्बीर

इस योग में लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि नहीं होती किन्तु इन दोनों में से कोई एक ग्रह राशि के अन्त में होता है एवं आगामी राशि में स्वगृही ग्रह से दीप्तांशों के अन्तर्गत इत्थशाल करता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

कुत्थ

यदि वर्ष कुंडली में लग्नेश कार्येश बलवान हों तो कुत्थ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में लग्नेश एवं कार्येश बलवान है। अतः कुत्थ योग की सृष्टि हो रही है।

इस योग के प्रभाव से इस वर्ष में आपकी आय में आशातीत वृद्धि होगी जिसके आर्थिक सुदृढ़ता बनेगी। इस समय आपकी महत्वाकाक्षाएं भी पूर्ण होंगी तथा विलम्बित इच्छाओं की पूर्ति में आपको सफलता मिलेगी। साथ ही उच्चधिकार प्राप्त लोगों से आपके सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने मे आपको सफलता मिलेगी। बडे भाई से इस वर्ष में आपको वांछित सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके अतिरिक्त शुत्रु एवं विपक्ष पर अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे। इसी परिपेक्ष्य में आप कोई मुकद्दमा या चुनाव जीत सकते है या किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते है।

दुरूफ

यदि वर्ष कुंडली में लग्नेश एवं कार्येश निर्बल हो तो दुरूफयोग बनता है।

इस वर्ष आपकी वर्ष कुंडली में लग्नेश एवं कार्येश दुर्बल है अतः दुरूपयोग बन रहा है।

इस योग के प्रभाव इस वर्ष आपको स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्त होगी तथा दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। इस समय अविवाहितों के विवाह होने के भी प्रबल योग बनेंगे। साझेदार से इस समय आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलेगा तथा जो लोग राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय है उन्हें राजनैतिक लाभ की अवश्य प्राप्ति होगी। कार्य क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए भी वर्ष श्रेष्ठ माना जाएगा। इस समय नौकरी में पदोन्नति होगी जिससे मान सम्मान एवं धन की वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग के लिए वर्ष उत्तम फलदायक सिद्ध होगा तथा उनके कार्य में विस्तार होगा जिससे आर्थिक सुदृढ़ता बनेगी। अतः वर्ष का लाभ उठाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अथ वर्षेशफलम्

वर्ष कुण्डली में जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश, मुन्थेश, त्रिराशिपति एवं दिवारात्रिपति में से जो सबसे बलवान हो तथा लग्न पर दृष्टि रखता हो, वर्षेश कहलाता है। इसका अपना विशिष्ट महत्व होता है। यह अपने शुभाशुभत्व से वर्ष के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रभावित करता है क्योंकि यह वर्ष पञ्चाधिकारयों में बलवान तथा लग्न पर प्रभाव रखता है अतः इसकी स्थिति अन्य समस्त ग्रहों से प्रबल हो जाती है तथा अधिकाँश शुभाशुभ फल इसी के प्रभाव से प्राप्त होते हैं। पूर्णबली होने से सम्पूर्ण वर्ष में शुभ फल प्राप्त होते हैं, मध्यबली होने से शुभाशुभ मिश्रित फल तथा हीन बली होने से अनिष्ट फल अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। यथाः–

वर्षेश्वरो भवति यः स दशाधिपेऽब्दे।
ज्ञेयोऽखिलेऽब्दजनुषोर्बलमस्य चिन्त्यम्।।
वीर्योन्वितेऽत्र निखिलं शुभमब्दमाहुः।
हीनेत्वानिष्टफलता समता समत्वे।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक आपके समस्त शुभ एवं सांसारिक कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही इनमें आपको वांछित सफलता भी प्राप्त होगी। मानसिक स्थिति भी इस समय अच्छी रहेगी तथा मन में शान्ति एवं सन्तुष्टि बनी रहेगी। इस वर्ष में व्यक्तिगत सुख शान्ति तथा समृद्धि बनी रहेगी तथा पारिवारिक जनों से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। संतति पक्ष से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों को आप सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही धार्मिक नेताओं से सम्पर्क एवं तीर्थयात्रा के भी योग बनेंगे। इस समय आपकी बुद्धि तीक्ष्ण रहेगी तथा सभी लोग आपकी बुद्धिमता से प्रभावित रहेंगे तथा आप पर पूर्ण विश्वास करेंगे। अतः आपकी समाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश में अभिवृद्धि होगी।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति के लिए भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। इस समय व्यापार में आपकी इच्छित उन्नति एवं विस्तार होगा तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। साथ ही राज्य या सरकार के द्वारा आपको कोई विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। नौकरी या राजनीति में भी इस समय आपको महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी तथा सभी लोग आपके पराक्रम तथा प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। शत्रु या विरोधी पक्ष को इस समय आप पराजित करेंगे तथा नवीन आय स्रोतों में वृद्धि करके आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहेंगे। साथ ही कोई विशष्ट लाभ भी हो सकता है। अतः यह समय आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्य शाली रहेगा तथा प्रसन्नता पूर्वक आपका समय व्यतीत होगा।

अथ मुंथाफलम्

जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुंथा होती है और प्रतिवर्ष एक एक राशि बढ़ती है। अतः गत वर्ष संख्या में जन्म लग्न जोडे से तथा 12 से भाग देने पर शेषांक मुंथा की वर्तमान राशि होती है। मुंथा प्रतिमाह ढाई अंश तथा प्रतिदिन पाँच कला बढ़ती जाती है। यदि मुंथा शुभ ग्रह व अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रह या अपने स्वामी के साथ इत्यशाल करे तो शुभ फल की वृद्धि कर अशुभ फल का नाश करती है। यथाः–

शुभस्वामियुक्तेक्षितावीर्ययुक्तेन्थिहास्वामिसौम्येत्थशालं प्रपन्ना।
शुभं भावजं पोषयेन्नाशुभं साऽन्यथाभाव ऊह्यो विभृश्य।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका स्वास्थ्य उतम रहेगा तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आप उत्साह तथा परिश्रम से सम्पन्न करेंगे।साथ ही इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे तथा मन में स्फूर्ति का भाव विद्यमान रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि स्वच्छ एवं निर्मल रहेगी तथा आपकी बुद्धिमता से सभी लोग प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। संतति पक्ष से इस समय आपको वांछित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा अपने क्षेत्र में वे पूर्ण सफलताएं अर्जित करेंगे। साथ ही आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। इस समय कार्य क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी तथा प्रभाव में भी वृद्धि होगी। फलतः सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ साथ यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा।

इस समय आप की प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा धर्म संबधी कार्यो को करने के लिए तत्पर रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगे।साथ ही किसी शुभ या पुण्य अथवा परोपकार संबधी कार्य भी आप इस वर्ष में सम्पन्न कर सकते हैं। नाना प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों की भी इस समय आपको प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग इस समय आपसे प्रसन्न रहेगा तथा इनसे आपको इच्छित सहयोग एवं लाभ प्राप्त होता रहेगा फलतः आप सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

अथ मुंथेशफलम्

वर्ष कुण्डली में मुंथा जिस राशि में स्थित हो उस राशि का स्वामी मुंथेश कहलाता है। यह वर्ष के पंचाधिकारियों में एक प्रमुख ग्रह होता है। अतः शुभभावस्थ मुंथेश के प्रभाव से जातक विशिष्ट परिस्थतियों में उत्तम लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहता है। यदि वर्ष प्रवेश के समय मुंथेश षष्ठ, अष्टम, द्वादश तथा चतुर्थ भाव में स्थित हो या अस्त, वक्री एवं पापग्रहों से युक्त हो अथवा क्रूर ग्रहों के स्थान से चतुर्थ या सप्तम स्थान में स्थित हो तो शुभ फलदायक न होकर अशुभफल, धनहानि या शरीर संबधी कष्ट प्रदान करता है। यथाः–

षष्ठेऽष्टमेन्त्ये भुवि वेन्थिहेशोऽस्तङ्गोऽथ वक्रोऽशुभदृष्टियुक्तः।
क्रूराच्चतुर्थास्तगतश्च भव्यो न स्याद्रुजं यच्छति वित्तनाशम्।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से आप कष्ट तथा परेशानी की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी तथा यदा कदा आप अशान्ति की भी अनुभूति करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके संबध सामान्य रहेंगे तथा अवसरानुकूल उनसे आपको अल्प मात्रा में लाभ या सहयोग प्राप्त होता रहेगा। संतति पक्ष से भी इस समय आप सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको सामान्य सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा अपने कार्यक्षेत्र में वे परिश्रम पूर्वक उन्नतिशील रहेंगे। आर्थिक स्थिति आपकी इस समय मध्यम ही रहेगी तथापि आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा लेकिन यदा कदा व्यय भी की अधिकता से आप को इस क्षेत्र में परेशानी की अनुभूति हो सकती है लेकिन विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा ।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति के लिए वर्ष मध्यम रहेगा तथा परिश्रम एवं पराक्रम से ही आपको इच्छित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी परन्तु भाग्यबल की अल्पता रहेगी। अतः व्यापार आदि में नवीन कार्य प्रारंभ न करें तथा चलते हुए कार्य से ही सन्तुष्ट रहें। नौकरी या राजनीति में भी आपकी उन्नति की संभावनाएं रहेंगी परन्तु इनमें यदा कदा अनावश्यक विलम्ब तथा व्यवधान होगा परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी।शत्रुपक्ष से भी आप चिंतित रहेंगे परन्तु इनका सामना करने में आप समर्थ हो सकेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपके संबध सामान्य रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ परन्तु परिश्रमशील होगा।

अथ वर्षलग्नेशफलम्

वर्ष लग्न के स्वामी को वर्षलग्नेश कहते हैं। वर्ष के पंचाधिकारियों में इसकी विशेष महत्ता है। अतः वर्ष की अनेक शुभाशुभ घटनाओं में लग्नेश का प्रभाव रहता है। साथ ही जातक के स्वास्थ्य, कार्य एवं भाग्य को वर्ष में यह विशेष रूप से प्रभावित करता है। यदि वर्ष लग्नेश पंचवर्गी बल से पूर्ण बलवान हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों या शुभ ग्रहों से युति हो और स्वयं केन्द्र तथा त्रिकोण स्थान में स्थित हो तो वह सम्पूर्ण अरिष्टों को नष्ट करके सुख और धन देता है। यथाः–

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षित युतोऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणगोऽरिष्टम् नाशयेत्सुखवित्तदः।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपके सभी शुभ एवं सांसारिक महत्व के कार्य उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक सम्पन्न होंगे तथा इनमें आपको वांछित सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही आपके सभी रूके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा मानसिक संकल्पों में भी सफलता मिलेगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपको वांछित सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा संतति पक्ष से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति भी इस समय उत्तम रहेगी तथा आपके सभी कार्य बुद्धिमता से प्रभावित रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इस समय आपके भाग्योदय में भी वृद्धि होगी तथा भौतिक सुख संसाधन तथा वाहनादि को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए वर्ष शुभ रहेगा इस समय व्यापार में आपको इच्छित सफलता मिलेगी तथा इसमें विस्तार या नवीन कार्य प्रारंभ होगा तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। नौकरी या राजनीति में भी आपकी पदोन्नति होगी फलतः समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश बढ़ेगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय आपकी सुदृढ़ रहेगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

प्रथम मास

05/03/2014 05:31:00 से 04/04/2014 10:00:09 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कुम्भ	धनिष्ठा	05:19:25
सूर्य		कुम्भ	पू0भाद्रपद	20:16:24
चन्द्र		मेष	अश्विनी	08:38:20
मंगल	व	तुला	चित्रा	03:24:24
बुध		मकर	धनिष्ठा	25:05:34
गुरु	व	मिथुन	आर्द्रा	16:23:15
शुक्र		मकर	उत्तराषाढ़ा	05:12:59
शनि	व	तुला	विशाखा	29:15:25
राहु		तुला	चित्रा	05:08:22
केतु	व	मेष	अश्विनी	05:08:22
मुंथा		मिथुन	आर्द्रा	07:54:54

मासाधिपति : गुरु

मास–चक

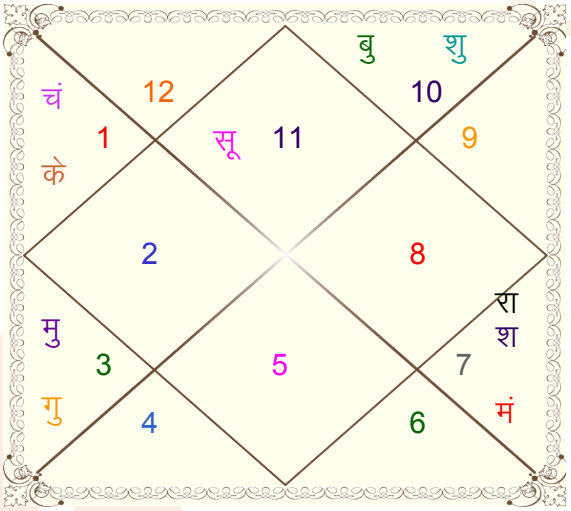

यह मास आपका प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी तथा सभी महत्पूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। साथ ही आपको पुत्र सुख तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा।इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग इसे मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही आप अनेक प्रकार के शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं शुभ समाचार भी प्राप्त होंगे। देवता तथा ब्राहमण के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा आप विधिपूर्वक इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनकूल लाभ प्राप्त करेंगे।इस समय आपको समाज में मान प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी एवं मानसिक चिन्ताएं भी दूर होंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा पदोन्नति भी मिल सकती है। इस समय आप देश विदेश की लाभदायक यात्रा भी कर सकते हैं।साथ ही अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहंगे।

द्वितीय मास

04/04/2014 10:00:09 से 05/05/2014 02:57:43 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		वृष	मृगशिरा	27:40:38
सूर्य		मीन	रेवती	20:16:24
चन्द्र		वृष	रोहिणी	14:46:35
मंगल	व	कन्या	चित्रा	26:39:26
बुध		मीन	पूर्वाभाद्रपद	00:09:59
गुरु		मिथुन	आर्द्रा	17:41:01
शुक्र		कुम्भ	धनिष्ठा	04:10:43
शनि	व	तुला	विशाखा	28:24:06
राहु		तुला	चित्रा	04:22:00
केतु	व	मेष	अश्विनी	04:22:00
मुंथा		मिथुन	आर्द्रा	10:24:54

मासाधिपति : बुध

मास–चक

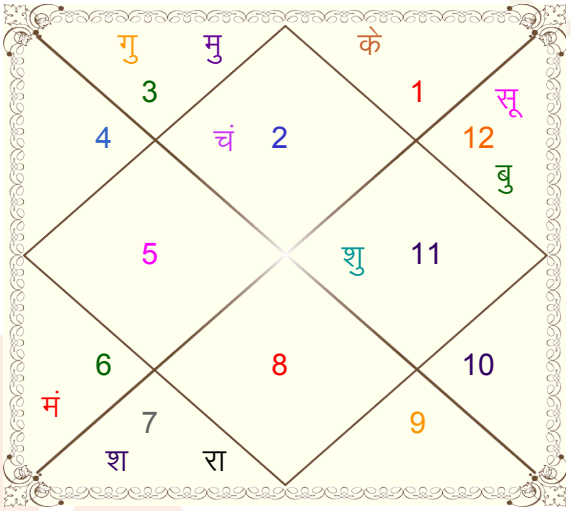

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे । साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी।इस समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी धनार्जन होगा।इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे । धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

तृतीय मास

05/05/2014 02:57:43 से 05/06/2014 06:51:02 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मीन	पू0भाद्रपद	02:25:18
सूर्य		मेष	भरणी	20:16:24
चन्द्र		मिथुन	पुनर्वसु	25:45:28
मंगल	व	कन्या	हस्त	16:28:36
बुध		वृष	कृतिका	00:25:07
गुरु		मिथुन	पुनर्वसु	21:30:15
शुक्र		मीन	उ0भाद्रपद	08:01:44
शनि	व	तुला	विशाखा	26:23:57
राहु	व	तुला	चित्रा	04:12:31
केतु	व	मेष	अश्विनी	04:12:31
मुंथा		मिथुन	आर्द्रा	12:54:54

मासाधिपति : बुध

मास–चक्र

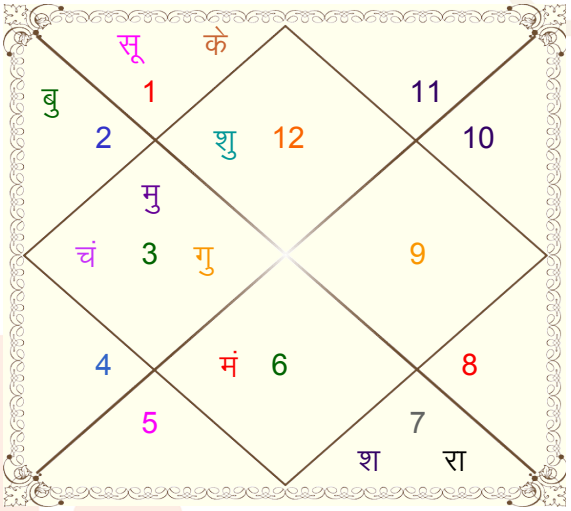

यह मास आपके लिए विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शत्रु बलवान रहेंगे जिसके कारण आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही पारिवारिक जनों से सम्बन्धों में भी तनाव का वातावरण रहेगा जिससे परिवार में अशान्ति रहेगी। अतः मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या अजीविका संबधी कार्यों में मंदी आएगी या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है।इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से आपका विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का योग भी बनता है एवं शरीर में कोई रोग भी हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री का आपको पूर्ण सुख मिलेगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा बुद्धि बल से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने के लिए उत्सुक होंगे।

चतुर्थ मास

05/06/2014 06:51:02 से 06/07/2014 17:00:30 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मिथुन	आर्द्रा	10:19:40
सूर्य		वृष	रोहिणी	20:16:24
चन्द्र		सिंह	मघा	11:24:30
मंगल		कन्या	हस्त	16:30:42
बुध		मिथुन	आर्द्रा	08:52:47
गुरु		मिथुन	पुनर्वसु	27:06:35
शुक्र		मेष	भरणी	14:07:10
शनि	व	तुला	विशाखा	24:09:26
राहु	व	तुला	चित्रा	03:09:24
केतु	व	मेष	अश्विनी	03:09:24
मुंथा		मिथुन	आर्द्रा	15:24:54

मासाधिपति : शनि

मास–चक्र

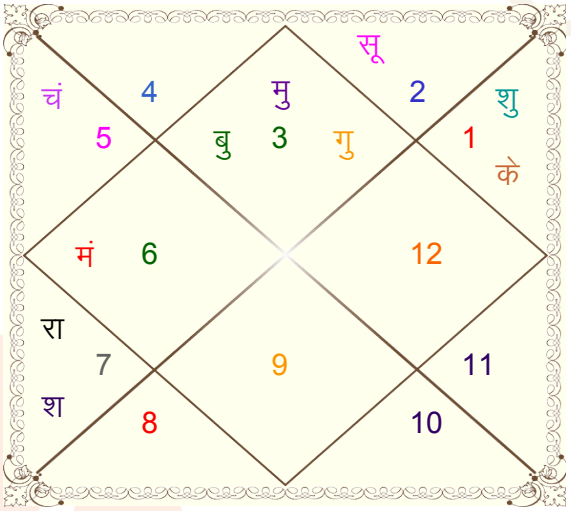

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन से भी आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में अभिवृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे चिन्तित, भयभीत एवं पराजित होंगे। आपके लाभमार्ग इस समय प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति में सुदृढता होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी आप काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे सुख भी प्राप्त करेंगे। सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में आप पूर्ण समर्थ रहेंगे तथा अपने उच्चाधिकारियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में भी आप सफल रहेंगे जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे । इस मास में धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पंचम् मास

06/07/2014 17:00:30 से 07/08/2014 02:54:58 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		वृश्चिक	ज्येष्ठा	27:52:01
सूर्य		मिथुन	पुनर्वसु	20:16:24
चन्द्र		तुला	चित्रा	01:38:49
मंगल		कन्या	चित्रा	26:33:30
बुध		मिथुन	मृगशिरा	01:19:19
गुरु		कर्क	पुष्य	03:44:22
शुक्र		वृष	रोहिणी	21:23:41
शनि	व	तुला	विशाखा	22:44:53
राहु	व	तुला	चित्रा	00:46:23
केतु	व	मेष	अश्विनी	00:46:23
मुंथा		मिथुन	आर्द्रा	17:54:54

मासाधिपति : गुरु

मास–चक्र

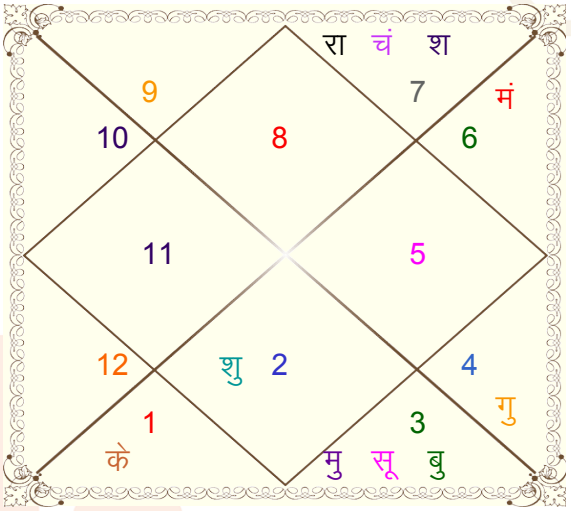

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को आप प्राप्त करेंगे। इस समय शत्रु पक्ष प्रबल होने से आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे साथ ही घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इस समय आप शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं अन्य कई प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे। अतः शारीरिक बल की भी आप में न्यूनता रहेगी।इस मास में आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते है। आपके सांसारिक कार्यो में कई प्रकार से विघ्न बाधाएं आएंगी अतः इन्हें समय पर पूर्ण करने में आप असमर्थ रहेंगे। साथ ही मुकद्दमें आदि कार्य में भी आपके धन का अपव्यय हो सकता है। अतः सोच समझकर बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे।अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या अन्य द्रव्यों को भी अर्जित कर सकेंगे जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

षष्ठ मास

07/08/2014 02:54:58 से 07/09/2014 06:07:44 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मिथुन	आर्द्रा	12:57:53
सूर्य		कर्क	आश्लेषा	20:16:24
चन्द्र		वृश्चिक	ज्येष्ठा	26:12:47
मंगल		तुला	स्वाति	12:21:36
बुध		कर्क	आश्लेषा	18:17:32
गुरु		कर्क	पुष्य	10:41:52
शुक्र		मिथुन	पुनर्वसु	29:19:53
शनि		तुला	विशाखा	22:49:01
राहु	व	कन्या	चित्रा	27:46:23
केतु	व	मीन	रेवती	27:46:23
मुंथा		मिथुन	पुनर्वसु	20:24:54

मासाधिपति : मंगल

मास–चक

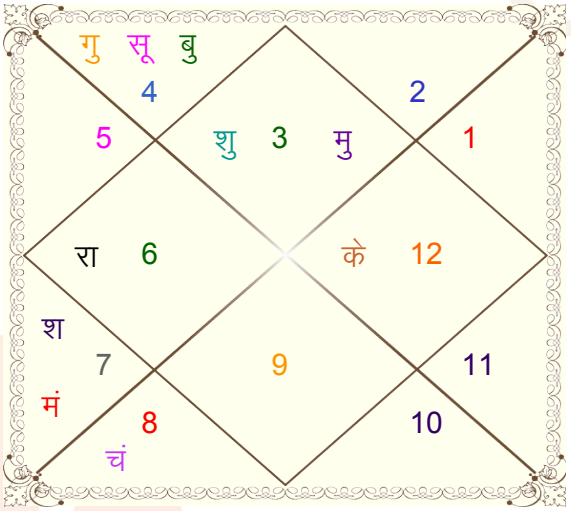

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे साथ ही आपके लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप इस मास में धनार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित होगा।इस समय सासारिक कार्यो को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं संतति से पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। अतः यह मास आपके लिए शुभ रहेगा।

सप्तम् मास

07/09/2014 06:07:44 से 07/10/2014 22:11:06 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		सिंह	पू0फाल्गुनी	24:38:39
सूर्य		सिंह	पू0फाल्गुनी	20:16:24
चन्द्र		मकर	श्रवण	21:19:35
मंगल		वृश्चिक	विशाखा	01:23:43
बुध		कन्या	हस्त	12:57:10
गुरु		कर्क	आश्लेषा	17:19:55
शुक्र		सिंह	मघा	07:33:33
शनि		तुला	विशाखा	24:23:45
राहु	व	कन्या	चित्रा	25:39:08
केतु	व	मीन	रेवती	25:39:08
मुंथा		मिथुन	पुनर्वसु	22:54:54

मासाधिपति : बुध

मास–चक

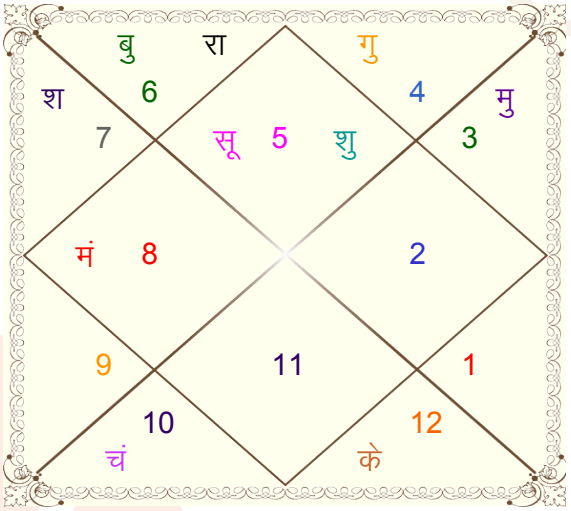

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।इस समय स्त्रीवर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा।साथ ही सौभाग्य से भी युक्त रहेंगे ।अतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे । सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उतम रहेगा।इस समय अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इस में आप सफल भी होंगे।मित्रों तथा संबंधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे भी यथोचित सुख सम्मान एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा।साथ ही मनोच्छित द्रव्य पदाथों की भी आपको इस मास में लाभ होने की सम्भावना रहेगी।संततिपक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा । समाज में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।फलतः आप मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं।इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आपको इस समय उपलब्धि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला रहेगा।

अष्टम् मास

07/10/2014 22:11:06 से 07/11/2014 01:47:22 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मिथुन	मृगशिरा	03:47:51
सूर्य		कन्या	हस्त	20:16:24
चन्द्र		मीन	उ0भाद्रपद	09:57:48
मंगल		वृश्चिक	ज्येष्ठा	22:20:30
बुध	व	तुला	स्वाति	07:41:48
गुरु		कर्क	आश्लेषा	22:59:05
शुक्र		कन्या	हस्त	15:42:03
शनि		तुला	विशाखा	27:07:15
राहु	व	कन्या	चित्रा	25:10:39
केतु	व	मीन	रेवती	25:10:39
मुंथा		मिथुन	पुनर्वसु	25:24:54

मासाधिपति : बुध

मास–चक

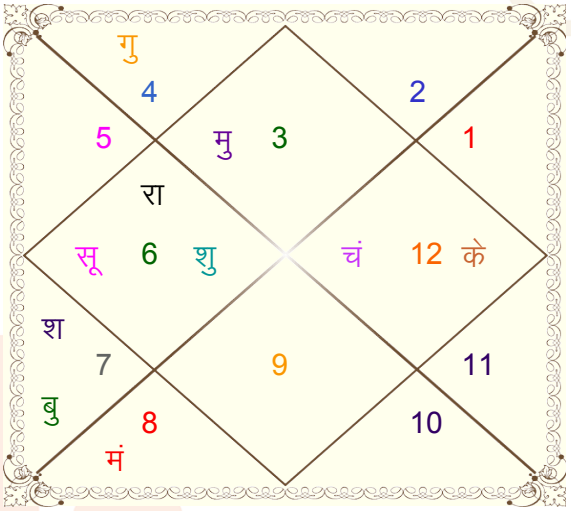

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी अतः इस समय आपके शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं आप से प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय सम्मान एवं सहयोग अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आप लाभार्जन करेंगे । अतः आपकी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी इससे समाज तथा मित्रवर्ग में प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।इस मास में आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी तथा पूर्व विलंबित हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफल रहेंगे एवं सर्वत्र आनन्द एवं प्रसन्नता का वातावरण विद्यमान रहेगा।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे । साथ ही इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है।अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी क्षति हो सकती है।अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

नवम् मास

07/11/2014 01:47:22 से 06/12/2014 18:57:41 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		सिंह	पू0फाल्गुनी	19:47:11
सूर्य		तुला	विशाखा	20:16:24
चन्द्र		मेष	भरणी	19:09:22
मंगल		धनु	पूर्वाषाढ़ा	14:25:37
बुध		तुला	चित्रा	02:54:15
गुरु		कर्क	आश्लेषा	26:57:26
शुक्र		तुला	विशाखा	23:27:13
शनि		वृश्चिक	विशाखा	00:29:36
राहु	व	कन्या	चित्रा	25:06:54
केतु	व	मीन	रेवती	25:06:54
मुंथा		मिथुन	पुनर्वसु	27:54:54

मासाधिपति : मंगल

मास–चक

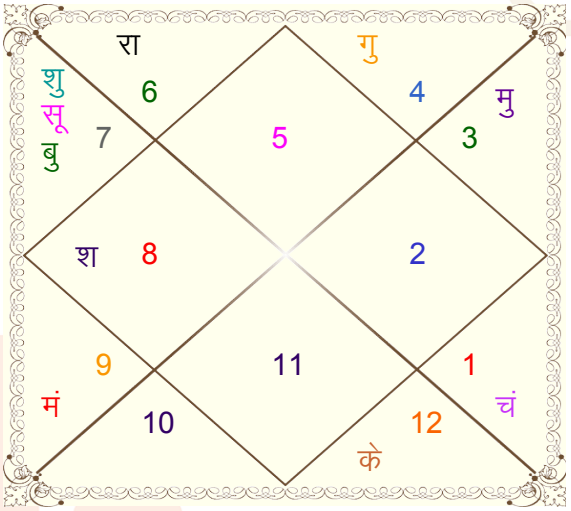

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे।इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी।इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रूके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

दशम् मास

06/12/2014 18:57:41 से 05/01/2015 06:19:54 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मिथुन	आर्द्रा	13:30:08
सूर्य		वृश्चिक	ज्येष्ठा	20:16:24
चन्द्र		वृष	रोहिणी	20:47:04
मंगल		मकर	उत्तराषाढ़ा	07:08:39
बुध		वृश्चिक	ज्येष्ठा	19:14:47
गुरु		कर्क	आश्लेषा	28:33:06
शुक्र		धनु	मूल	00:44:40
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	04:00:41
राहु	व	कन्या	चित्रा	23:43:14
केतु	व	मीन	रेवती	23:43:14
मुंथा		कर्क	पुनर्वसु	00:24:54

मासाधिपति : गुरु

मास–चक

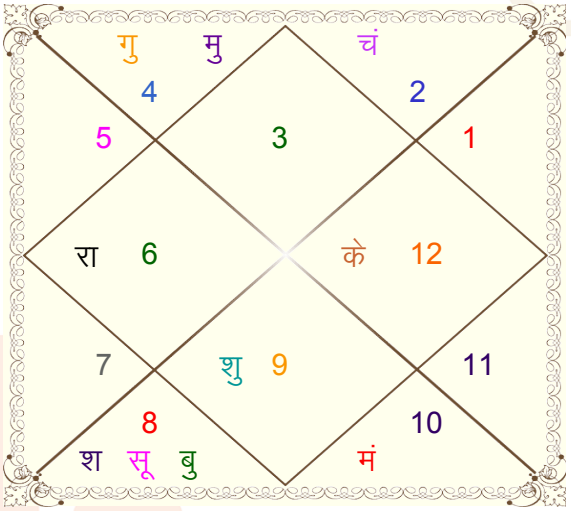

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे।साथ ही इस मास में मिष्ठान्न के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे।इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धि मतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

एकादश मास

05/01/2015 06:19:54 से 03/02/2015 17:55:05 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		धनु	पूर्वाषाढ़ा	16:05:48
सूर्य		धनु	पूर्वाषाढ़ा	20:16:24
चन्द्र		मिथुन	आर्द्रा	18:20:27
मंगल		कुम्भ	धनिष्ठा	00:08:30
बुध		मकर	उत्तराषाढ़ा	05:54:46
गुरु	व	कर्क	आश्लेषा	27:22:18
शुक्र		मकर	उत्तराषाढ़ा	07:42:27
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	07:11:55
राहु	व	कन्या	हस्त	20:38:11
केतु	व	मीन	रेवती	20:38:11
मुंथा		कर्क	पुनर्वसु	02:54:54

मासाधिपति : चन्द्र

मास–चक्र

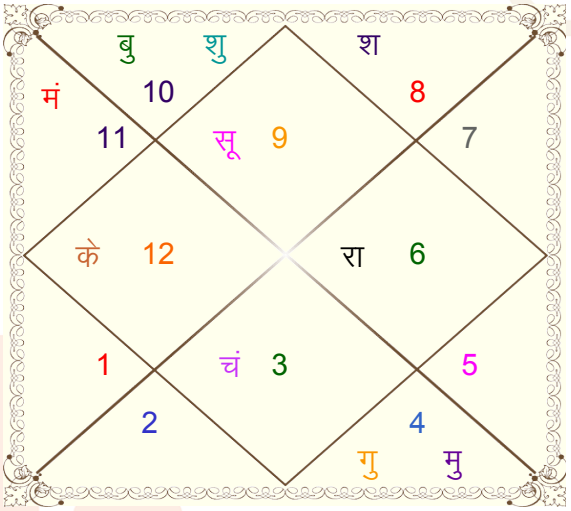

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

द्वादश मास

03/02/2015 17:55:05 से 05/03/2015 11:41:48 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कर्क	आश्लेषा	21:26:00
सूर्य		मकर	श्रवण	20:16:24
चन्द्र		कर्क	पुष्य	15:21:34
मंगल		कुम्भ	पू0भाद्रपद	23:10:27
बुध	व	मकर	श्रवण	11:34:30
गुरु	व	कर्क	आश्लेषा	23:59:42
शुक्र		कुम्भ	शतभिषा	14:30:17
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	09:35:48
राहु	व	कन्या	हस्त	17:29:46
केतु	व	मीन	रेवती	17:29:46
मुंथा		कर्क	पुष्य	05:24:54

मासाधिपति : चन्द्र

मास–चक्र

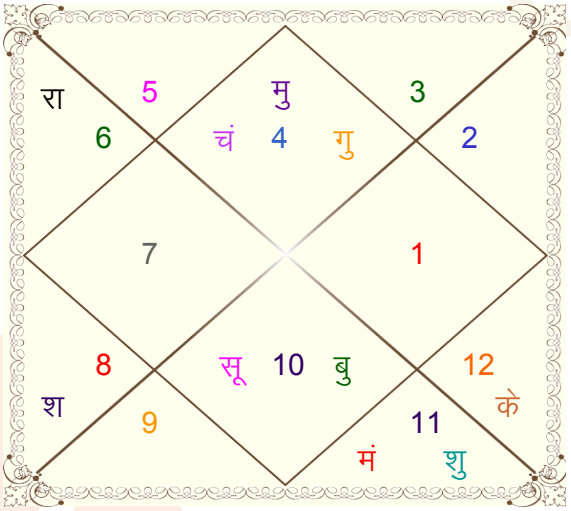

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस महीने आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आयस्रोतों में वृद्धि होगी तथा वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करेंगे। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा आपके चिर प्रतीक्षित महत्वपूर्ण कार्य भी इसी मास में सफल होंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा । साथ ही सांसारिक कार्यो को सफल बनाने में भी आप समर्थ होंगे। आपका उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा।

साथ ही इस मास में स्त्री एवं पुत्र से आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं आदि प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।